विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते॥ जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते॥

श्री सूर्याय नमः

श्री सरस्वत्यै नमः

श्री गणेशाय नमः

श्री विष्णवे नमः

श्री शंकराय नमः

युधिष्ठिर संवत्–५१५९
कलि संवत्–५१२४
विक्रम संवत्–२०७९
निम्बार्काब्द–५११७–१८
शक संवत्–१९४४
ईस्वी सन्–२०२२–२३

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र

श्रीसर्वेश्वर - जयादित्य - पञ्चाङ्गम्

गणितकर्ता : **आचार्य विनय झा** (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, गणितज्ञ)

प्रधान सम्पादक : **पं. अमित शर्मा** (जयपुर)

राजा – शनि
मन्त्री – गुरू
संवत्सर – नल
अक्षांश रेखांश
२६/५५ उत्तर
तथा ७५/४८ पूर्व
जयपुर

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
कलवाड़ा, तह. सांगानेर, जयपुर

मार्गदर्शक
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्,
वाराणसी

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

ठाकुर श्री सरसबिहारी जी सरकार

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान
पुरुषोत्तमो वासुदेवः साम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीय

सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्क परिषद्

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः। यः केशवं नमामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम्।।
ॐ जय जयेङ्गितज्ञाता नियमानन्द आत्मवान्। नियमेन वशे कुर्वन्भगवन्मार्गदर्शकः।।

हे आचार्यशिरोमणि!

आपश्री के आश्रित ''श्रीनिम्बार्क परिषद्'' द्वारा समस्त शास्त्रवचन पोषित आर्ष सूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित भारतवर्ष के मान्य आचार्यों द्वारा प्राप्त सम्मति एवं विद्वानों के परिश्रम से निर्मित यह

''श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग''

आपश्री को ही समर्पित है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	विषयसूची	१.
२.	सम्पादक	२.
३.	सूर्यसिद्धान्त की सार्वकालिक ग्राह्यता	३.
४.	नम्र निवेदन	४.
५.	व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ही शास्त्रीय	६.
६.	नल संवत्सरारम्भ २०७९	८.
७.	नल संवत्सर की सरकार का फल	९.
८.	वर्षलग्न, जगल्लग्न, सूर्यआर्द्राप्रवेश फल	१०.
९.	ग्रह-गोचर-उदयास्त-वक्रीमार्गी २०७९	११.
१०.	द्वादश राशि फल २०७९	१२.
११.	द्वादश संक्रान्ति का स्वरूप व फल	१४.
१२.	सूर्य ग्रहण निर्णय २०७९	१६.
१३.	चन्द्र ग्रहण निर्णय २०७९	१७.
१४.	एकादशी, प्रदोष आदि व्रत पर्वों की सूची	१८.
१५.	पंचक एवं त्रिपुष्कर योग सूची	१९.
१६.	संदिग्ध व्रतपर्व निर्णय	२०.
१७.	विवाह संस्कार मुहूर्त्त २०७९	२१.
१८.	उपनयन संस्कार मुहूर्त्त	२६.
१९.	मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त	२८.
२०.	गृहारम्भ मुहूर्त्त	३०.
२१.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	३३.
२२.	प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त	३७.
२३.	वाहन क्रय मुहूर्त्त	४०.
२४.	देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त	४२.
२५.	नामकरण संस्कार मुहूर्त्त	४४.
२६.	अन्नप्राशन संस्कार मुहूर्त्त	४६.
२७.	कर्णविध संस्कार मुहूर्त्त	४८.
२८.	विपणि व्यापार मुहूर्त्त	४९.
२९.	**चैत्र शुक्लपक्ष २०७९**	५२.
३०.	चैत्र शुक्लपक्ष कृत्य एवं मुहूर्त्त	५३.
३१.	**वैशाख कृष्णपक्ष २०७९**	५४.
३२.	मासकृत्य एवं नागशाप शान्तिप्रयोग	५५.
३३.	**वैशाख शुक्लपक्ष २०७९**	५६.
३४.	नृसिंह मन्त्र एवं द्वादशाक्षर मन्त्र जपविधि	५७.
३५.	**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष २०७९**	५८.
३६.	मासकृत्य एवं शनि-ग्रह शान्ति के उपाय	५९.
३७.	**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष २०७९**	६०.
३८.	मासकृत्य एवं बिल्ववृक्ष स्थापनाविधि	६१.
३९.	**आषाढ़ कृष्णपक्ष २०७९**	६२.
४०.	पंचगव्य निर्माण विधि	६३.
४१.	**आषाढ़ शुक्लपक्ष २०७९**	६४.
४२.	मासकृत्य	६५.
४३.	**श्रावण कृष्णपक्ष २०७९**	६६.
४४.	सर्पस्तोत्र एवं वर्षा शकुन विचार	६७.
४५.	**श्रावण शुक्लपक्ष २०७९**	६८.
४६.	मासकृत्य एवं सदन्त शिशुजन्म शान्ति	६९.
४७.	**भाद्रपद कृष्णपक्ष २०७९**	७०.
४८.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कृत्य	७१.
४९.	**भाद्रपद शुक्लपक्ष २०७९**	७२.
५०.	मासकृत्य	७३.
५१.	**आश्विन कृष्णपक्ष २०७९**	७४.
५२.	सांकल्पिक श्राद्धविधि	७५.
५३.	**आश्विन शुक्लपक्ष २०७९**	७६.
५४.	मासकृत्य	७७.
५५.	**कार्त्तिक कृष्णपक्ष २०७९**	७८.
५६.	मासकृत्य एवं दीपावली मुहूर्त्त	७९.
५७.	**कार्त्तिक शुक्लपक्ष २०७९**	८०.
५८.	मासकृत्य	८१.
५९.	**मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष २०७९**	८२.
६०.	आठ महाद्वादशियाँ	८३.
६१.	**मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष २०७९**	८४.
६२.	वारों में करणीय कृत्य, नजरदोष निवारण	८५.
६३.	**पौष कृष्णपक्ष २०७९**	८६.
६४.	प्राणायाम विधि	८७.
६५.	**पौष शुक्लपक्ष २०७९**	८८.
६६.	भूमि अवरोध निवारक दुर्लभ प्रयोग	८९.
६७.	**माघ कृष्णपक्ष २०७९**	९०.
६८.	मकरसंक्रान्ति कृत्य एवं माघमास नियम	९१.
६९.	**माघ शुक्लपक्ष २०७९**	९२.
७०.	सरस्वती पूजन मन्त्र एवं स्तोत्रादि	९३.
७१.	**फाल्गुन कृष्णपक्ष २०७९**	९४.
७२.	मासकृत्य एवं शिव पंचाक्षर मन्त्र जपविधि	९५.
७३.	**फाल्गुन शुक्लपक्ष २०७९**	९६.
७४.	होलिका मुहूर्त्त, जयन्ती विवेचन	९७.
७५.	**चैत्र कृष्णपक्ष २०७९**	९८.
७६.	तुलसी वृक्ष स्थापना विधि	९९.
७७.	आवश्यक मुहूर्तों का परिचय	१००.
७८.	२०७९ के बच्चों नामाक्षर, नक्षत्र व पाया	१०२.
७९.	नवग्रहों के वैदिक मन्त्र एवं स्तोत्रादि	११२.
८०.	अवकहड़ा चक्र	११३.
८१.	नवग्रह स्तोत्र एवं नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र	११३.
८२.	दिन व रात्रि की चौघड़िया सारणी	११३.
८३.	वर-वधु मेलापक सारणी	११४.
८४.	वैवाहिक अष्टकूट मेलापक चक्र	११६.
८५.	नाड़ीदोष विचार एवं परिहार	११७.
८६.	मंगली कुण्डली विचार एवं परिहार	११८.
८७.	शनि साढ़ेसाती विचार	११८.
८८.	जयपुर से अन्य नगरों की लग्नप्रवेश संस्कार सारणी	११९.
८९.	प्रमुख नगरों की अक्षांश रेखांश सारणी	१२०.
९०.	द्वादश मास फल २०७९	१२६.
९१.	द्वादश भावस्थ ग्रह फलादेश	१२७.
९२.	पर्व-निर्णय में सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता	१२८.
९३.	अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन	१२८.

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वरूप **जयादित्य** जय विष्णो जयाच्युत ।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥ - *व.पु.*

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ॥ - स्क.पु.

नल - नामसंवत्सर २०७९, २०२२-२३ ईस्वी

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित
राजस्थान का एकमात्र पञ्चांग

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

❋ संरक्षक ❋

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर, कोलकाता

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा

श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर
श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम, जयपुर, प्रन्यासी श्रीनिम्बार्क परिषद्

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

❋ मार्गदर्शक ❋

पं. आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक, जयविनोदी जयपुर पञ्चांग

पं. गङ्गाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन, अयोध्या

❋ पञ्चाङ्ग गणितकर्ता ❋

आचार्य विनय झा
संरक्षक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

❋ प्रधान सम्पादक ❋

पं. अमित शर्मा
अध्यक्ष, श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर

❋ सम्पादक ❋

पं. रमाकान्त शर्मा
ज्योतिषाचार्य, जयपुर

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
राजज्योतिषी, कलवाड़ा, जयपुर

पं. मोहित शर्मा
ज्योतिषाचार्य, जयपुर

डॉ. गोविन्दचन्द्र द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, विन्ध्यक्षेत्र, मीरजापुर

पं. साकेत झा
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, लुधियाना

मुदित मित्तल
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, जयपुर

❋ नवग्रह चित्रांकन ❋

श्री दृढ़व्रत गॉरिक
Drdha Vrata Gorrick - Navagraha artwork. Used with permission. Website: www.divyakala.com

❋ प्रकाशक ❋

श्रीनिम्बार्क परिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने, कलवाड़ा,
जयपुर, राजस्थान - ३०२०३७
www.nimbarkparishad.com

❋ विशिष्ट सहयोग ❋

डॉ. पारसनाथ ओझा
प्रधान संपादक, आदित्य पञ्चाङ्ग, काशी

डॉ. विजेन्द्र शर्मा
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. भोजराज शर्मा
वरिष्ठ अध्यापक, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. नीरज त्रिवेदी
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. रामेश्वर शर्मा
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. अशोक विश्वामित्र
अध्यक्ष, भगवद्गीता शोध संस्थान, गोवर्धन

डॉ. सिद्धार्थ माहेश्वरी, उदयपुर

श्रीद्वैपायन प्रधान, गुरुग्राम

❋ समर्थकाः विद्वांसः ❋

स्वामी श्रीराघवेन्द्रदास जी महाराज
धर्मशास्त्रमर्मज्ञ, हृषीकेश

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

पं. बजरंगलाल शर्मा
आचार्य, श्रीवैकुण्ठनाथ जी मन्दिर, हरिमार्ग, जयपुर

डॉ. शचीन्द्रनाथ उपाध्याय
आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

❋ मार्गदर्शक ❋

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी
देवतायन, ९६, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी,
उत्तरप्रदेश - २२१००६
www.vidvatparishad.org

✲ सूर्यसिद्धान्त की सार्वकालिक ग्राह्यता ✲

आचार्य विनय झा (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, सौरपक्षीय गणितकर्त्ता)

विक्रमादित्य के नवरत्न वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका–१.३१ में सूर्यसिद्धान्त को ''सौर'' सिद्धान्त की संज्ञा दी गयी तथा पञ्चसिद्धान्तिका–१.४२ में इसे 'सावित्र' सिद्धान्त कहा गया। अतः वराहमिहिर के अनुसार गायत्री मन्त्र के वैदिक देवता सविता ही सूर्यसिद्धान्त के प्रतिपादक हैं, तथा उनके काल में जितने सिद्धान्त उपलब्ध थे उनमें सूर्यसिद्धान्त को ही सर्वाधिक स्पष्ट उन्होंने कहा।

पञ्चसिद्धान्तिका–१.२३ में वराहमिहिर ने लिखा कि पूर्वाचार्यों के मतानुसार बीज के रहस्य को वे स्पष्ट करेंगे। इस प्रकरण का नाम ही करणावतार है, जिसका अर्थ है सिद्धान्तग्रन्थ पर आधारित व्यावहारिक गणना को सुगम बनाने वाली करणप्रक्रिया। परन्तु उपलब्ध पञ्चसिद्धान्तिका में करणप्रक्रिया स्पष्ट नहीं है, सम्पूर्ण मूल ग्रन्थ बचाया नहीं जा सका। भारत के विभिन्न प्रान्तों में जो सूर्यसिद्धान्तीय करणग्रन्थ और उनसे बनी पञ्चाङ्गोपयोगी मध्ययुगीन सारिणियाँ उपलब्ध हो सकीं उनमें जिस सिद्धान्त तथा करणप्रक्रिया का अनुसरण किया गया उसी के अनुसार सम्पूर्ण कल्प हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सॉफ्टवेयर २००० ई॰ में बनाया गया जिसे प्रकाशनार्थ स्वरूप २००४ ई॰ के आरम्भ में दिया गया।

मकरन्दीय करणप्रक्रिया भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। शाके १४०० हेतु काशी में बनी मकरन्दसारिणी में इसे **'श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन'** कहा गया जो सत्य है। केवल मङ्गल का बीज उसमें छूट गया था जिसे अन्य स्रोतों से लिया गया। बीज का रहस्य आजतक किसी ने प्रकाशित नहीं किया, केवल बीजों के गणितीय मान मध्ययुगीन सारिणियों में हैं। पूणाङ्क महायुग–भगणमानों द्वारा ग्रहगणित किया जाता है, तत्पश्चात उसमें बीजसंस्कार करके मध्यमग्रह बनाया जाता है। बर्जेस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अज्ञानतावश सूर्यसिद्धान्त में बीजसंस्कार को नहीं माना। आचार्य रङ्गनाथ के ही काल में सूर्यसिद्धान्त की जो पाण्डुलिपि उपलब्ध थी उसमें 'बीजोपनयन–अध्याय' तो था किन्तु बीजप्रक्रिया को किसी ने इस्लामी ग्रहगणित के तुल्य बनाने की चेष्टा में भ्रष्ट कर डाला और उस प्रयास में असफल होने पर अधूरा ही छोड़ दिया। बर्जेस को पता नहीं था कि सूर्यसिद्धान्त की सैकड़ों सारिणियाँ और करणप्रक्रियाऐं उपलब्ध रहीं हैं, जिनकी सहायता से बीजोपनयनाध्याय को पुनर्निर्मित किया जा सकता है।

बीज के रहस्य पर ही सूर्यसिद्धान्त और ब्रह्मसिद्धान्त का परस्पर सम्बन्ध स्थापित होता है। ब्रह्माजी की परमायु का गणित ब्रह्मसिद्धान्त है, उसी का कल्पगणित सूर्यसिद्धान्त कहलाता है। ब्रह्मसिद्धान्त केवल सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होता है। सूर्यसिद्धान्त प्रत्येक महायुग में सतयुग के अन्त में प्रकट होता है। सतयुग में फलकामी विद्याओं की आवश्यकता नहीं पड़ती, और सतयुग के पश्चात् सम्पूर्ण सूर्यसिद्धान्त को ग्रहण करने की क्षमता किसी में नहीं रहती, अतः सतयुग के अन्त में शेष तीनों युगों के लिये सूर्यसिद्धान्त प्रकट होता है। कलियुग में समस्त वेद–वेदाङ्गों सहित सूर्यसिद्धान्त की भी अवमानना होने लगती है। धर्म के एक पाद को कलियुग में जो लोग थामे रहते है उनके लिये सूर्यसिद्धान्त है।

अन्य सारे आर्ष सिद्धान्त सूर्यसिद्धान्त के ही विभिन्न कालखण्डों में प्रकट तात्कालिक तन्त्रग्रन्थ तथा करणग्रन्थ हैं। उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त भी सिद्धान्त के साथ–साथ एक तन्त्रग्रन्थ भी है, क्योंकि यह पिछले सतयुग के अन्त की ग्रहस्थिति से गणना का निर्देश देता है। परन्तु उस समय के बीजसंस्कार का अध्याय किसी ने मध्ययुग में भ्रष्ट कर दिया। किसी युगारम्भ से गणना की प्रक्रिया को तन्त्रप्रक्रिया कहते हैं, अन्य किसी काल के बीज द्वारा जो प्रक्रिया हो उसे करण कहते हैं। बिना कम्प्यूटर के सीधे सिद्धान्तग्रन्थ द्वारा कोई मानव पञ्चाङ्ग नहीं बना सकता। कम्प्यूटर उपलब्ध हो तो करण वा तन्त्र की आवश्यकता नहीं, सीधे सिद्धान्त द्वारा गणना कर सकते हैं। परन्तु कम्प्यूटर में भी यदि करणप्रक्रिया को अपनाया जाय तो गति बढ़ जाती है।

मन्दफल और शीघ्रफल की दोषपूर्ण व्याख्याऐं बर्जेस ने दीं, क्योंकि उनको मेरुकेन्द्रित सौरगणित का ज्ञान नहीं था। सही गणित मकरन्द जैसी प्राचीन सारिणियों में है, जिसपर बर्जेस ने ध्यान नहीं दिया। परन्तु उन सारिणियों में केवल परिणाम हैं, सूत्र नहीं। सूत्र सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थ में है जिसकी गणितीय व्याख्या आजतक किसी गणितज्ञ ने नहीं लिखी है। सूर्यसिद्धान्त की गणितीय व्याख्या मुझे डॉ. लक्ष्मण झा (एल.एन.मिथिला विश्वविद्यालय के अवैतनिक पूर्व कुलपति बालब्रह्मचारी साधु) की कृपा से प्राप्त हुई।

करणप्रक्रिया का अर्थ यह है कि सिद्धान्तग्रन्थ द्वारा पहले किसी पास वाले व्यतीत समय तक का मध्यम ग्रहगणित बनाकर रख लें और फिर उस समय से वाञ्छित समय तक की गणना करके जोड़ लें। मकरन्द सारिणी शाके १४०० अथवा १४७८ ईस्वी हेतु बनी थी, अर्थात् उस समय तक के ग्रहस्पष्ट के बाद की ही गणना हर वर्ष करनी पड़ती। परन्तु अन्य करणग्रन्थकारों की तरह मकरन्द में भी ऐसी करणप्रक्रिया का अनुसरण किया गया ताकि कुछ दशकों वा एकाध शताब्दी के पश्चात् करणग्रन्थ पुनः बनाना पड़े। दासता के कारण सैद्धान्तिक करणग्रन्थों का नवीनीकरण शाके १४०० के पश्चात नहीं हो सका।

पराशरी होरा में ग्रहों को देवता कहा गया जो जीवों को कर्मफल देने के लिये अवतरित हुए। परन्तु दृक्पक्षवादियों के अनुसार आकाशीय भौतिकपिण्ड ही कर्मफल देते हैं और पूजन द्वारा शान्त होते हैं! इससे बेहतर आधुनिक वैज्ञानिक हैं, जो भौतिक पिण्डों में दैवी शक्ति नहीं मानते। ज्योतिष के ग्रह देवता अदृश्य हैं व भुवर्लोक में निवास करते हैं। बाह्य चक्षु से जो दिखते हैं वे ऐन्द्रिक विषय हैं, देवता नहीं। ज्योतिष का प्रमाण फ़लादेश की जाँच है, न कि ऐन्द्रिक नक्षत्रसूचन। भौतिकवादियों को देवता में भी तभी विश्वास होगा जब परखनली में डालकर जाँच न कर लें और देवता के भार, चुम्बकत्व, आदि भौतिक लक्षणों का सत्यापन न कर लें। भौतिक पदार्थों में भौतिक लक्षण होते हैं तथा अभौतिक तत्वों में अभौतिक लक्षण।

---

१. पौलिश-रोमक-वशिष्ठ-सौर-पैतामहास्तु पञ्च सिद्धान्ताः।

२. पौलिशतिथिः स्फुटो अस्तु तस्यासन्नस्तु रोमकप्रोक्तः। स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ।।

३. पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद् यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम्। तत्तदिहाविकलमहं रहस्यमभ्युद्यतो वक्तुम्।।

❊ नम्र निवेदन ❊

सम्मानीय धर्मानुरागी जन !

'**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' का द्वितीय पुष्प विक्रम संवत् २०७९ के समस्त व्रतपर्वोत्सवों हेतु आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

गत वर्ष के प्रकाशन के पश्चात् एक बात बारम्बार मुख्य रूप से पूछी गई की इतने पञ्चाङ्गों के होते हुए एक नए पञ्चाङ्ग की आवश्यकता क्यों? तो इसका एकमेव समाधान यही निवेदित है कि '**तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णु मयं जगत्**' और उन धर्ममूर्ति भगवान् श्रीविष्णु के अनुगत समस्त धर्मपारायण जीवों द्वारा जिन वेद प्रतिपादित नियमों के पालन किया जाता है उनका नाम धर्म है और इन धर्मकृत्यों के व्यवस्थित पालन हेतु पञ्चाङ्ग नामक साधन का प्रणयन ऋषियों ने किया। सिद्धान्तग्रन्थों में इस रीति का विशद वर्णन है, जिसका अवलम्ब लेकर भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते आये हैं। परन्तु विगत कुछ समय से पञ्चाङ्ग निर्माण की विधि को लेकर मतभेद प्रकट हुए हैं तथा भिन्न भिन्न गणना विधि से पञ्चाङ्ग बनने से सामान्य जन में व्रतोपवास एवं पर्वों को लेकर सतत् संशय की स्थिति निर्मित हो गयी है।

'**वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।**' वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है। धर्माचरण के निर्णय हेतु '**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ**' इस भगवद्वाक्यानुसार एकमात्र शास्त्र ही प्रमाण है।

समस्त सिद्धान्त-ग्रंथों और पुराणों के अनुसार सूर्यसिद्धान्त के अनुसार ही ग्रह साधन और तिथ्यादि का निर्धारण करना चाहिए। व्यास जी का स्पष्ट वचन है (विष्णुधर्मोत्तर पुराण) कि ग्रहण आदि घटनाओं में जहाँ दर्शन की आवश्यकता हो वहाँ ग्रहस्पष्ट आदि को दृक्कर्म संस्कार द्वारा दर्शन योग्य बनाना चाहिए, किन्तु तिथ्यादि में उनका प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। निर्णयसिन्धु का भी वचन है कि अदृष्ट-फल हेतु सूर्यसिद्धान्त का प्रयोग करें नारद पुराण में सूर्यसिद्धान्त का विस्तृत गणित भी दिया गया है। अन्य सभी पुराणों में गणना के लिये सूर्यसिद्धान्त का ही प्रयोग किया गया है और सूर्यसिद्धान्त का ही निचोड़ भी प्रस्तुत किया गया है। धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने ने अपने कुम्भ तिथ्यादि निर्णय में स्कन्दपुराण के कलिमाहात्म्य से उद्धृत करते हुए लिखा है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

कुछ लोग प्रमाद के कारण दृक् सिद्धग्रह गणित के द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुसार श्राद्धादि वैदिक कर्म करते हैं, वे पितृशाप के कारण पुण्यक्षीण होने से दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

फिर भी यहां बहुत से ऐसे धार्मिक हैं, जो पुरातन आचारपद्धति को न छोड़ते हुए सूर्यपुत्र मय के द्वारा कहे गये सूर्यसिद्धान्त द्वारा निर्धारित काल में ही श्राद्धादि-कर्म करते हैं, व सुख प्राप्त करते हैं।

अदृष्ट-फल-सिध्यर्थ यथार्कगणितं कुरु ।
गणितं यदि दृष्टार्थ तद्दृष्ट्युद्भव तस्सदा ।। निर्णयसिन्धु

''अदृष्ट (प्रारब्ध) फल की सिद्धि हेतु सूर्यसिद्धान्त (अर्क-गणित) का प्रयोग करें, दृष्ट प्रयोजन यदि हो तो उसके लिए दृष्ट से उद्भूत गणित सदा प्रयुक्त करें।

कालिदास ज्योतिर्विदाभरण में लिखते हैं कि पञ्चाङ्ग में अधिकमास, क्षयमास, ग्रहों की संक्रान्ति आदि सूर्यसिद्धान्तीय गणना से ही लेनी चाहिए-

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात् साध्यौ तदा तावधिकक्षयौ।
मासौ तदा संक्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः।।

परम् आश्चर्य का विषय है कि सभी व्रत पर्वों के निर्धारण में सर्वमान्य एवं सर्वाधिक प्रतिष्ठित ग्रन्थ निर्णयसिन्धु है। उत्तरभारत के प्रायः सभी पञ्चाङ्ग निर्णयसिन्धु का अवलम्बन लेते हैं। इसी निर्णयसिन्धु के कर्ता सिद्धान्ततत्त्वविवेककार आचार्य कमलाकर भट्ट ने धर्मकृत्य निर्णय एवं फलादेश में दृश्यपक्ष को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को ही परम प्रामाणिक मानते हुए इसे वेदवत कहा है, '**प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यम्।**' तब सूर्यसिद्धान्त को भ्रमजाल बताने वाले निर्णयसिन्धु का भी त्याग क्यों नहीं कर देते। इसी प्रकार 'धर्मसिन्धु' के टीकाकार महामहोपाध्याय पण्डित सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर ने ५००० वर्षों के गणित का अध्ययन करने के उपरान्त सूर्यसिद्धान्त को ही परमप्रामाणिक सिद्ध किया व सन् १९२४ में ग्वालियर स्टेट में शास्त्रार्थ में वे सूर्यसिद्धान्त के पक्ष से विजयी हुए। ऐसी स्थिति में तो सूर्यसिद्धान्त के विरोधियों को निर्णयसिन्धु एवं धर्मसिन्धु दोनों का ही त्याग कर देना चाहिए।

दृक्गणित के पक्षपातियों का स्वसिद्धान्त के पक्ष में एकमेव कथन यह है कि उनकी गणना से ग्रह दर्शन प्रत्यक्ष होता है। इनके इस कथन पर वह कथा स्मरण हो आती है की जब गङ्गापुत्र भीष्म अपने पिता शान्तनु का श्राद्ध करने हरिद्वार गए। एकाग्रचित होकर उन्होंने जैसे ही विधिवत पिण्डदान देना आरम्भ किया, तो पिण्डवेदी पर बिछे कुशों में से एक हाथ निकलकर बाहर आया। शान्तनु स्वयं अपने निमित्त पिण्डदान लेने के लिये उपस्थित हो गए थे। धर्मनिष्ठ पुरूष भीष्म ने पिण्ड का दान उनके हाथ में न करके इस हेतु बनाई गयी वेदी के ऊपर रखे कुशों पर ही किया, क्योंकि शास्त्रों में कुशों पर ही पिण्डदान करने का विधान है- '**पिण्डो देयः कुशोष्वीति।**' पुत्र भीष्म की इस शास्त्रनिष्ठा पर शान्तनु अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्पष्ट है धर्माधर्म का विवेक सूक्ष्म और अदृष्ट है जो 'अपूर्व' को उत्पन्न करता है। उसी प्रकार ज्योतिष का प्रमाण भी फलादेश होता है, भौतिक ग्रहों की दृश्यता नहीं।

केवल ग्रहदर्शनार्थ ही दृक्कर्मसंस्कार का शास्त्र में आदेश है, तिथि आदि के निर्णय में नहीं। ग्रहों के उदय-अस्त, शृङ्ग तथा सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में ही दृक्कर्मसंस्कार करे, यह स्वयं सूर्यसिद्धान्त ही कहता है। श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध अध्याय आठ के पांचवें श्लोक में भी ज्योतिष को अतीन्द्रीय ही कहा गया है, उसके फलज्ञान को साक्षात् कहा गया है - '**ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानं अतीन्द्रियम्।**'

परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों से भौतिकवादियों का बोलबाला बढ़ गया है, जो भौतिक पिण्डों को ही ज्योतिषीय ग्रह मानते हैं, किन्तु ऐसा करने पर ज्योतिषीय-ग्रहस्पष्ट में कई अंशों तक का अंतर पड़ जाता है, और षोडश-वर्गों में कई तो एकदम अशुद्ध बन जाते हैं और फलादेश सही नहीं निकलते। हमारे पूर्वज अविवेकी नहीं थे जो अभी कुछ समय पूर्व तक केरल से लेकर तिब्बत तक सहस्रों वर्ष पर्यन्त सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्गों का प्रयोग करते आ रहे थे और ना ही आधुनिक पञ्चाङ्गकर्ता इतने मनोनिग्रही हैं कि उनके द्वारा सूर्यसिद्धान्तीय गणना को नकारा जाना स्वीकार किया जा सके।

जयपुराधीश महाराजा सवाई श्रीजयसिंह जी जो स्वयं ज्योतिष के विद्वान् थे, उन्होंने वेधशालाएँ निर्मित करवाकर ग्रहवेध द्वारा नवीनीकृत सारणियाँ बनवाई तथापि उनके शासन में व्रतपर्व-तिथि आदि निर्णयार्थ सूर्यसिद्धान्तीय गणना साधित पञ्चाङ्ग ही प्रकाशित किया गया जो विगत कुछ वर्षों पूर्व तक प्राचीन आर्षगणना द्वारा ही लगभग ढ़ाई शताब्दी से निरन्तर प्रकाशित होता रहा है। यह भारतख्यात सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ऐसे समय में भी धर्म की ध्वजा को थामे हुए था जब नवीन पञ्चाङ्गकर्ताओं ने अमावस्या में ही नवरात्र स्थापना करवा डाली थी और प्रत्येक पर्व-त्यौहारों के दो दो दिन पड़ने का क्रम आरम्भ हो गया था। आधुनिक दृग्गणित के पक्षपातियों ने सूर्यसिद्धान्त को कालबाह्य घोषित कर एकमेव दृग्गणित आधारित पञ्चाङ्ग को ही सर्वथा ग्राह्य बतलाते हुए समस्त धर्मशास्त्रीय प्रक्रिया का अतिक्रमण कर लिया तब जयपुर से प्रकाशित एकमात्र सौर पञ्चाङ्ग को भी विवशता में सूर्यसिद्धान्तीय गणना का त्याग करना पड़ा। यह घटना राजस्थान के ज्योतिष क्षेत्र के लिए अत्यन्त दुःखद थी।

ग्रहगणना सिद्धान्त का विवाद तो एक ओर रहा परन्तु वर्तमान में दृक्पक्षीय पञ्चाङ्गकर्ताओं की मनमानी पर्वों के निर्धारण में भी हतप्रभ कर देने वाली है। पर्वों के निर्धारण में अब शास्त्रवचन नहीं 'वर्तमानकाल की व्यवहारिता' को प्रयोग में लाने लगे हैं। अस्तु यह विषय इतना जटिल हो चुका है की इसका निराकरण सहज सम्भव नहीं लगने पर भी अगम्य नहीं है। बीज रूप में ही सही पर सिद्धान्त की रक्षा अवश्य ही हो, इस पावन उद्देश्य को लेकर संवत् २०७८ से इस 'श्रीसर्वेश्वर-जयादित्य-पञ्चाङ्ग' का प्रकाशन आरंभ हुआ है। श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणितज्ञ व त्रिस्कन्धज्योतिर्विद् आचार्य श्री विनय झा जी ने जयपुर के आराध्यदेव ठाकुर श्रीगोविन्ददेवजी मन्दिर के अक्षांश रेखांशों पर पञ्चाङ्ग हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सूक्ष्मगणितसाधन किया। आचार्य जी द्वारा साधित गणना से काशी, दरभंगा आदि अनेक स्थानों से पञ्चाङ्ग प्रकाशित हो रहे हैं।

जयपुर के प्राचीनतम पञ्चाङ्ग के प्रधान सम्पादक पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा जी ने जिस सरलता से इस प्रकल्प के प्रति अपना सहज मार्गदर्शन व आशीर्वाद दिया वह अमूल्य धरोहर है।

इस कार्य में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, काशी के महासचिव डॉ. श्री कामेश्वर उपाध्याय जी, व जयपुर निवासी ज्योतिषाचार्य प्रो. श्री सतीशचन्द्र शास्त्री जी, प्रो. श्री मोहनलाल शर्मा जी का प्रारम्भ से ही सतत् मार्गदर्शन व सहयोग रहा है। पंचांग के प्रथम प्रकाशन के साथ ही जयपुर के वरिष्ठ विद्वान् महामहोपाध्याय आचार्य श्री कलानाथ शास्त्री जी, महामहोपाध्याय आचार्य श्री दयानन्द भार्गव जी, प्रो. श्री अर्कनाथ चौधरी जी ने इसे शुभाशंसन के साथ भूषित किया। प्रो. श्री श्यामदेव जी मिश्र, प्रो. श्री विजेन्द्र जी शर्मा, डॉ. श्री गोविन्दचन्द्र जी द्विवेदी, पं. श्री साकेत जी झा ने पंचांग-निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

संवत्सर ही प्रजापति है, '**सम्वत्सर एव प्रजापतिः**' (शतपथ, १।६।३।५)। काल ही सर्वेश्वर और प्रजापति का भी पिता है। '**कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः**'(अथर्व० १९.५३.८)। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को गीता में अक्षय काल '**अहमेवाक्षयः कालः**' कहा है। कालरूपी सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का यह पञ्चाङ्ग जयपुर के धर्माकाश में भगवान् भुवनभास्कर आदित्य की भाँति उदित हुआ है। ऐसा यह '**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' धार्मिकों के समक्ष प्रस्तुत है।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, १९ नवंबर २०२१ को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीअलबेलीमाधुरीशरण जी महाराज जयपुर, महन्त श्रीबनवारीशरण जी जूसरी नागौर, महन्त श्रीवृन्दावनदासजी वृन्दावन, श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर श्रीपद्मनाभशरण देवाचार्यजी जयपुर, महंत श्रीसर्वेश्वरदासजी नायला, प्रो. बनवारीलाल जी गौड़, प्रो. सतीशचन्द्र जी शास्त्री, प्रो. मोहनलाल जी शर्मा, प्रो. भास्कर जी श्रोत्रिय, पं. रमाकान्त जी शर्मा, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद जी शर्मा, प्रो. नरेन्द्र जी अवस्थी, प्रो. अशोक जी तिवाड़ी, प्रो. राजधर जी मिश्र, प्रो. रामकुमार जी शर्मा, प्रो. उमेश जी नेपाल, प्रो. लक्ष्मीनारायण जी शर्मा, प्रो. कमलचन्द्र जी योगी, प्रो. कौशलेन्द्र जी शास्त्री, प्रो. सत्यम कुमारी जी, मुदित जी मित्तल द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर प्रभु और श्रीनिम्बार्क भगवान् को समर्पित कर विमोचन किया गया। श्रीनिम्बार्क परिषद् इन सभी महानुभावों के प्रति सदा कृतज्ञ है, इसके साथ ही परिषद् अपने सम्पादक मण्डल के सभी विद्वानों का इस यज्ञकर्म के सम्पादन हेतु भूरिशः अभिनन्दन करती है।

समस्त धर्मानुरागी जन धर्मफल की शाश्वत सिद्धि हेतु धर्मशास्त्रानुमोदित इस '**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' के अनुसार व्रतपर्वोत्सवों का पालन करें। इस पञ्चाङ्ग में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह सब श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद स्वरूप विद्वानों का अवदान है तथा प्रमादवश जो कुछ भी त्रुटि दृश्य हो, वह सब श्रीनिम्बार्क परिषद् की है जिनका परिमार्जन आप सभी के सहयोग एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। श्रीसर्वेश्वर प्रभु हम सभी पर सदा कृपा रखें!

- अमित शर्मा

सम्पादक, श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

अध्यक्ष, श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर

✻ शास्त्रानुसार व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ग्राह्यता ✻

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'वेदाद्याचार्य' (मुख्याचार्य- श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजन, अयोध्या)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः ।।

व्रतोत्सवादि सम्पादनार्थ एवं यज्ञोपनयनादि धार्मिककृत्यों के लिये सम्यक् कालपरिज्ञानार्थ तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणात्मक विशुद्ध **आर्षपञ्चाङ्ग** की आवश्यकता होती है। परन्तु विविध भारतीय पञ्चाङ्गों में भी व्रतोपवासादि के वैमत्य से प्रायः सर्वत्र कोलाहलश्रवण होता रहता है, एतदर्थ किञ्चिच्चिन्तन अपेक्षित है।

सम्प्रति कई प्रकार के पञ्चाङ्ग उपलब्ध होते हैं- **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय, आर्यसिद्धान्तपक्षीय (वाक्यविधि), ब्राह्मसिद्धान्तपक्षीय, दृग्गणितपक्षीय** आदि। मकरन्द-ग्रहलाघवादि के भेद से सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्ग का भी वैविध्य है तथा चित्रा-रैवतादिपक्षीय गणित के भेद से दृक्पञ्चाङ्ग भी कई प्रकार के हैं। कोई सूर्य-चन्द्रान्तरलक्षण से तथा कोई कलालक्षणभेद से तिथियों का द्वैविध्य वर्णन करते हैं।

भारत में ही कुछ पञ्चाङ्ग चैत्रशुक्लप्रतिपत् से, कुछ आषाढ़शुक्लप्रतिपत् से, कुछ श्रावणकृष्णप्रतिपत् से और कुछ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् से प्रारम्भ किये जाते हैं। कोई विक्रमसंवत्, कोई शकसंवत् तथा कोई अन्य स्थानीय लौकिकसंवत् का उपयोग करते हैं। कहीं पूर्णिमान्त तो कहीं अमान्तमास ग्रहण किये जाते हैं। सम्प्रदायभेदवाले पञ्चाङ्गों की तो इयत्ता ही नहीं है। परिणामतः भारत के सार्वभौम व्रतोत्सवादि भी दो या तीन विभिन्न दिनों में सम्पादित होते हैं तथा कुछ कृत्य तो पूर्णिमान्त-अमान्तमास के भेद से पक्ष-मासपर्यन्त भी आगे- पीछे हो जाते हैं।

वर्त्तमान में आर्षज्ञानविहीन नवीनों के द्वारा दृक्पञ्चाङ्ग के रूप में एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी गई है, जो नाविकपञ्चाङ्ग (नॉटिकल एल्मानैक) पर आधारित है, जहाँ ग्रहण जैसी घटनायें मांसचक्षुर्दृष्ट ही मान्य हैं।

शास्त्रनिष्ठ प्रामाणिक सनातनियों के लिये तो दृक्पञ्चाङ्ग सर्वथा अग्राह्य है। प्रत्येक धार्मिककृत्य के संकल्प में कल्प मन्वन्तर आदि का स्मरण करने के लिये प्राचीन आर्षसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ही उपयोगिता सिद्ध होती है।

दृग्गणितके पक्षपाती विद्वान् तिथ्यादिनिर्णय में इस पद्धति की उपयोगिता सिद्ध करते हैं-
यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् । दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।।

परन्तु महान् दैवज्ञ ब्रह्मगुप्त तो पैर से भी दृग्गणितके पादमात्र का स्पर्श नहीं करना चाहते-
प्रतिदिवसविसंवादात्तिथिकरणर्क्षदिवसमासानाम्। ग्रहणग्रहयोगादिषु पादं पादेन कः स्पृशेत् ।।

ग्रहलाघवकार ने भी **'सौरार्कोऽपि..'** में इसपर विचार किया है।

स्थूल दृग्गणित का भी जनक भारतीय ज्योतिषशास्त्र ही है। मल्लारि एवं सूर्यसिद्धान्तादि ने भी किञ्चित् कार्यभेद से दृक्पक्ष को ग्रहण किया है। भास्कराचार्य ने-
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैककृद्या ।।

यद्यपि कतिपयमतेन सूर्यसिद्धान्त का बीजोपनयनाध्याय सूर्यांशोक्तापेक्षया प्रक्षिप्त है, तथापि मयरचित सूर्यसिद्धान्त में इसे अप्रक्षिप्त और यात्रादि में प्रशस्त माना गया है-
कालेन दृक्समो यः स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते ।
बीजं विशेषसिद्धान्तरहस्यं परमं स्फुटम् । यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम् ।।

वराहमिहिर ने भी बीजसंस्कार को ग्रहण किया है-
पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद्यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम् । तत्तदिहाविकलमहरहरस्म्यभ्युद्यतो वक्तुम् ।।

मकरन्दानुसारि पञ्चाङ्गों में भी बीजसंस्कार किया जाता है, जिसपर विचारकों ने नित्य-नैमित्तिक-काम्यकर्मों में तत्तत् सिद्धान्तों के ग्रहण की चर्चा की है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदी ने ब्रह्मगुप्त के तन्त्रभ्रंश की व्याख्या में कहा है कि जिस तन्त्र में दृग्गणित इष्ट है, वहीं वह आदरणीय है-
''यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्''
इति विषयविषयेण वाक्येन दृग्गणितैक्यकृत्स्फुटक्रिया
यात्राविवाहोत्सरवविशेषविषयेष्वेव ग्राह्या, न तु धर्मशास्त्रोपयोगितिथ्यानयने ।

अर्थात् कदाचित् यात्रा - विवाहोत्सव आदि में ही दृग्गणित की ग्राह्यता हो सकती है, धर्मशास्त्रोपयोगी तिथ्यानयन में नहीं। **इस विवेचन से सर्वविध धर्मकृत्यों में दृग्गणित की ग्राह्यता निरस्त हो गई।**

सिद्धान्ततत्त्वविवेककार ने भी अदृष्ट फलसिद्ध्यर्थ सूर्योक्तप्रमाण की ही श्रुतिवद् ग्राह्यता सिद्ध की है- **अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि ।**
प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः ।।

शाकल्य संहिता में भी **'दृक् सिद्धा नेष्यते तिथिः'** से यही कहा है।

कालनिर्णय में भी **'तिथिनक्षत्रयोगानयनेऽबीजसंस्कृतो ग्राह्यः'** से यही बात कही है ।

भास्कराचार्यादि ने दृग्गणित को स्थूल और पुलस्त्य-वसिष्ठ-गर्गादि मुनिप्रणीत गणित को सूक्ष्म कहा है- **स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः ।**
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ।।

वासनाकार ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है-

स्थूलं लोकव्यवहारमात्रम्, यात्राविवाहादावपि सम्यक्फलसिद्ध्यर्थं मुनिप्रणीतं सूक्ष्ममेव ग्राह्यम्।

कथञ्चित् लोकव्यवहारमात्र के लिये ग्रहणास्तोदयादि में आवश्यकतानुसार स्थूल दृक्पक्ष को ग्रहण किया जा सकता है, परन्तु यात्रा-विवाहादि में भी अज्ञातज्ञापक सम्यक् फल की सिद्धि के लिये प्रत्यक्षानुमानागम्य और 'अज्ञातज्ञापकं शास्त्रम्'' के और अनुसार शास्त्रैकसमधिगम्य मुनिप्रोक्त सिद्धान्तपक्षीय सूक्ष्म गणित को ही ग्रहण करना उत्तम पक्ष है।

नृसिंह दैवज्ञ ने भी- **'भास्कराचार्याणामयमेवाशयः'** से इसी पक्ष को ग्रहण किया है।

तिथिस्वरूपनिर्णय में तो स्पष्ट घोषणा की गई है-

ततो धर्मशास्त्राद्युपयुक्ततिथिसाधनं नक्षत्रयोगकरणज्ञानं चोक्तम् ।

मत्स्यमहापुराण में **भगवान् वेदव्यास** का स्पष्ट उद्घोष है-

नैष शक्यः परिज्ञातुं याथातथ्येन केनचित् ।
गतागतं मनुष्येण ज्योतिषां मांसचक्षुषा ।।

ग्रहों की सूक्ष्म गति मनुष्यों के द्वारा अदृश्य है, एतदर्थ प्रत्यक्षातिरिक्त सभी व्रत-पर्व श्रौत-स्मार्तानुष्ठानार्थ आर्षसिद्धान्त की ही उपयोगिता सिद्ध है। **सनातनधर्मानुयायियों के सभी सिद्धान्त श्रुति-स्मृति-पुराण-तन्त्रागमादिमूलक ही हैं, इसलिये अनार्ष दृग्गणितमात्रदुराग्रही प्रत्यक्षवादियों के द्वारा धर्म-व्रताद्यनुष्ठानों का सूक्ष्म निर्णय असम्भव है।** ऋषिगण तपो-योगजसामर्थ्यातिशय के कारण अतीन्द्रियार्थदर्शी होते थे, यन्त्रादिनिर्माण-प्रयोगकुशल वैज्ञानिक सूक्ष्मज्ञ होते हुए भी ऋतम्भराप्रज्ञायुक्त अदृश्यदर्शी ऋषि नहीं हो सकते।

विष्णुधर्मोत्तर, कालार्क, ज्योतिःसिद्धान्तसंग्रह, लल्ल, मुञ्जाल, श्रीनिवासीय धर्मशास्त्रादि में उपर्युक्त आर्ष पक्ष ही सम्मानित है।

स्कन्दमहापुराण के कलिमाहात्म्य में तो सिद्धान्तपक्ष के त्याग का भयावह फल और सिद्धान्तपक्ष के ग्रहण का सुखद फल भी बता दिया गया है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

भगवान् वेदव्यास पुनः दृढ़ता से सूर्यसिद्धान्तारिक्त सिद्धान्त को अग्राह्य बताते हैं-

सौरोपनिषदेवाद्या कल्पे त्वस्मिन् सनातनी ।
यामादित्यः स्वयं प्राह मयाय परिपृच्छते ।।
कालज्ञानं तु तत्सिद्धं विशुद्धं नान्यदुच्यते ।
तद्विरुद्धं तु यत्सर्वमपरिग्राह्यमेव तत् ।।

जब दृग्गणितवादियों के यहाँ भी चित्रा- रेवत्यादि के भेद से अयनांशभेद होता है तब तदनुसार पञ्चाङ्गीय तिथ्यादिकों में भी भेद का होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थिति में निर्दुष्ट शास्त्रीय आर्षपक्ष का आश्रय ग्रहणकर एक स्थिर पञ्चाङ्गनिर्माण की महती उपयोगिता सिद्ध होती है।

सम्प्रति दक्षिणदेश में भी तिथि-नक्षत्र-मुहूर्तादि वैदिक विषयों में आर्षग्रन्थसिद्ध ग्रहस्थिति को ही ग्रहण करने की परम्परा है और ग्रहण तथा जातकर्मादि लौकिक विषयों में दृक्सिद्ध ग्रहों को ग्रहण किया जाता है।

सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डल गतिशील है, कालान्तर में अथवा देशभेदादि से गत्यादिमूलक गणितीय भेद हो सकते हैं; परन्तु कालान्तर या देशभेदादि के भी गणितीय भेद की उपपत्ति मुनिप्रणीत सूक्ष्म ज्योतिषीय सिद्धान्तों में ही बता दी गई है। इसलिये नवीन-प्राचीन का मानापमान अत्यन्त उपहासास्पद है। सम्प्रदायादि के भेद से भी व्रत-पर्वों का भेद दूषण नहीं, अपितु अमुकामुक सम्प्रदायनिष्ठों के लिये सम्मान्य है।

सभी प्राचीन आप्त आचार्यों और 'कुम्भतिथ्यादिनिर्णयः' आदि धर्मशास्त्रपरक ज्योतिषीय निबन्धों में सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाभाग आदि ने भी समारोहपूर्वक इसी पक्ष को समुद्घाटित किया है। मौलिक अध्येताओं के लिये भारतीय सूक्ष्म गणितसिद्धान्त सर्वकाल में मान्य रहेंगे।

वर्तमान में अतिशय चिन्ता का विषय यह है कि विविधपक्षीय पञ्चाङ्गनिर्माण के लिये अगणित सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं, जिनसे अल्प प्रयास में ही पञ्चाङ्ग तो तैयार हो जाते हैं; परन्तु पञ्चाङ्गों का सम्मान व्रतोपवासादि के मीमांसामूलक धर्मशास्त्रीय सूक्ष्मविचार से ही होता है, जिसकी सम्पूर्ति पारम्परिक शास्त्राध्ययन के अत्यन्ताभाव में प्रायः नहीं हो रही है।

अन्यों के लिये भी, विशेषतः ज्योतिषियों के लिये तो सन्ध्या-गायत्र्यादि के माध्यम से ज्योतिःशास्त्र के प्रथम प्रवर्त्तक भगवान् श्रीसूर्यनारायण की सम्यक् उपासना अत्यन्त अनिवार्य है। मैं पञ्चाङ्गविभाग के प्रबुद्ध प्रणेतृमण्डल एवं प्रयोक्ताओं से इस कमी को सदा के लिये दूर करने की महती अपेक्षा रखता हूँ और पञ्चाङ्ग किसी सम्प्रदायविशेष में बँधकर अल्पोपयोगी न हो जाय, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर, राजस्थान के द्वारा **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्** का प्रकाशन शास्त्रवादी सनातनियों के लिये अत्यन्त ही हर्ष का विषय है । सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा से पञ्चाङ्गप्रणेता, पञ्चाङ्गप्रयोक्ता एवं एतत्सिद्धान्तानुसार व्रत पर्वादि श्रौत-स्मार्तधर्मों के अनुष्ठाता के दृश्यादृश्य लोकद्वय मङ्गलमय हों।

शुभमिति दिक्

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टिरूपोऽव्यक्तस्वरूपःप्रकटस्वरूपः। सर्वेश्वरः सर्वगः सर्ववित्ता समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः।।
नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्। कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।।
विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत । जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ।।
जयस्व सर्वेश्वर विश्वमूर्त्ते सुरासुरैर्वन्दितपादपीठ । त्रैलोक्यमातुर्गुरवे वृषाङ्क भीतः शरण्यं शरणागतोऽस्मि।।
कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण। कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते।।
प्रतिपन्मुख्यराकान्त तिथिमण्डलपूजिता। कलात्मिका कलानाथा काव्यालापविनोदिनी।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ।।
जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल । जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ।।
लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चण्ड। भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदण्ड।।
नियमेन यदानन्दो जगद्भासयतेऽखिलम् । तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम् ।।
जयोस्तु जयादित्यं पञ्चांगं वेदसम्मतम्। सूर्यसिद्धान्त संवाहं श्रीनिम्बार्क प्रसादतः।
साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः। सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः।।

स्वस्ति श्रीः सूर्यसिद्धान्तमतेन समस्तजगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-ज्ञानाज्ञानबन्धमोक्षकारणस्य स्वाभावतोऽपास्तसमस्तदोषोऽनन्ताचिन्त्य विचित्रयावदात्म-वृत्तिस्वाभाविककल्याणगुणशक्तिवैभवाश्रयो जगज्जन्मादिहेतुरखिलशास्त्रैकवेद्यो मुक्तप्राप्यः परब्रह्मभगवदादिशब्दाभिधेय-श्चिदचित्पदार्थभिन्नाभिन्नसंबन्धाश्रयः श्रीपुरुषोत्तमोरमानिवास श्रीमहाविष्णोर्नाभिकमलोद्भवस्य चतुर्मुखब्रह्मणः परमायुः वर्षशतम्। तत्र पूर्वार्धं गतम्। उत्तरार्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमदिने श्वेतवराहकल्पसंज्ञे प्रथमकल्पे अह्नि त्रयोदशघटिकाः द्विचत्वारिंशत् पलानि च व्यत्यायन्। कृतत्रेताद्वापरकलियुगैरेकं महायुगं भवति। तैरेकसप्ततिमहायुगैः एकं मन्वन्तरम् । तैश्चतुर्दशभिरेकः कल्पः। तत् ब्रह्मणो दिनम्। तावती रात्रिः। एतादृशैः षष्ट्यधिकशतत्रयदिवसैरेकः ब्रह्मणो वर्षः। वर्तमानब्रह्मणो दिनमध्ये षण्मनवो गताः। इदानीं वर्तमानः सप्तमो वैवस्वतो मनुः। वैवस्वतमन्वन्तरेऽपि एकसप्ततिमहायुगमध्ये सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशतितमेऽपि महायुगे कृतत्रेताद्वापराख्यास्त्रयो युगपादाः गताः। कलियुगेऽपि ५१२३ वर्षाः गताः।।

महायुगप्रमाणम् - ४३ लक्ष २० सहस्रवर्षाः ।

कृतयुगप्रमाणम् - १७ लक्ष २८ सहस्रवर्षाः । **त्रेतायुगप्रमाणम्** - १२ लक्ष ९६ सहस्रवर्षाः।

द्वापरयुगप्रमाणम् - ८ लक्ष ६४ सहस्रवर्षाः । **कलियुगप्रमाणम्** - ४ लक्ष ३२ सहस्रवर्षाः।

कल्पादितः - १९७२९४९१२३ वत्सराव्यतीताः । **सृष्ट्यादितश्च** - १९५५८८५१२३ ।

श्रीरामरावणयोर्युद्धतो गताब्दाः - ८८०१६४ । **श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः** - ५२४८ ।

कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दाः -५१२३ । **सम्राट-युधिष्ठिर राज्यात्संवत्** ५१५९ ।

सम्राट-विक्रमादित्य राज्यात्संवत् २०७९ । **शाके** १९४४ । **अंग्रेजी सन्** २०२२-२३ ई. ।

तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत् **२०७९** तिथिमारभ्य गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रूद्रविंशतिकायां

नल नाम संवत्सरारम्भः ।

❋ नल नाम संवत्सर एवं वर्षेशादि फल ❋

श्री शुभसंवत् २०७९, शक १९४४, कलियुगाब्दारम्भ ५१२४,
(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❋❋ नल संवत्सर का स्वरूप ❋❋

तपस्वी जलमध्यस्थः चीरकृष्णाजिनाम्बरः। जटाभृच्छ्मश्रुलश्शान्तः कृष्णो भूतिविभूषणः।।

नल सम्वत्सर जल के मध्य स्थित होकर अत्यधिक तपस्या करता है। यह कृष्णमृग चर्म को वस्त्ररूप में धारण करता है। जटा धारण किये हुए हैं, इसकी बड़ी बड़ी दाढ़ी मूँछ हैं। इसका कृष्णवर्ण है, इसके अंगों में भस्म-विभूति सुशोभित है। तथा ये बड़े शान्त चित्त का है।

❋❋ नल सम्वत्सर के अधिष्ठातृ देव बलराम जी का ध्यान ❋❋

सीरोद्भासिकराम्भोजं नीलाम्बरसमावृतम्। बलराममहं वन्दे नलाह्वयमहर्निशम्।।

जिनके करकमल हल से सुशोभित हैं, जो नील वस्त्र धारण किये हुए हैं, उन नल नामक श्रीबलरामजी की मैं सदा वन्दना करता हूँ।

❋❋ नल नाम संवत्सर का फल ❋❋

नलाब्दे मध्य सस्यार्घ वृष्टिभिः प्रवराधरा। नृपसंक्षोभसंजाता भूरितस्कर भीतयः ।।
दुर्भिक्षं जायते घोरं धान्योषधि प्रपीडनम्। अनले चानिलो वाति कथितं चतवप्रिये ।।

इस वर्ष नल संवत्सर होने से वायुवेग के साथ वर्षा मध्यम होगी। अन्न की उपज में औसतन न्यूनता आयेगी। समय-समय पर प्रचण्ड वायु से जनधन की क्षति होगी। राज नेताओं में परस्पर विरोध तथा अशोभनीय घटनाएँ घटेगी। चोरी, डकैती, छिनैती आदि से जनता में भय व्याप्त रहेगी। अग्निकाण्ड-अग्निप्रकोप का भय अधिक रहेगा। नल संवत्सर में विविध धान्यों की उत्पत्ति होती है।

❋❋ नल संवत्सर में उत्पन्न जातकों के गुण ❋❋

सुबुद्धिशाली जलसस्यसंपद् वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ।
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः ।।
बहुपुत्रो अनन्तमित्रो द्रव्यलोभी कलहप्रियः। हानिःशोकस्तथादुःखं नले जातो भवेन्नरः।।

नलसंवत् में उत्पन्न हुआ मनुष्य जलसम्बन्धी, शस्य (धान्यसम्बन्धी) सम्पदा वाला, वैश्यवृत्ति में कुशल, सुशील, अल्प धन वाला, बहुतों का पालन करने वाला अतः स्वयं विलासिता रहित, तथा चपल अर्थात् अत्यधिक उद्यमशील होता है। वह अनेक पुत्रों व अनन्त मित्रों वाला, द्रव्यलोभी पर दानी, गुणी, शान्त, सदाचारी पर कलहप्रिय, हानि शोक व दुःख भोगने वाला होता है।

राजा शनि

मन्त्री गुरु **शस्येश सूर्य** **धान्येश शुक्र** **मेघेश बुध** **रसेश भौम**
नीरसेश शनि **फलेश बुध** **धनेश शनि** **दुर्गेश बुध**

✻ नल संवत्सर की सरकार ✻

✻✻ राजा शनि ✻✻

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृञ्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान् ।।

इस वर्ष शनि के राजा होने से लोगों में वातरोग की प्रबलता होगी। अनेक प्रकार के आतंक, चोरी डकैती, छिनैती, व्यभिचार जन्य घटनाओं से लोग दुःखी व भयभीत रहेंगे। वर्षा कम होगी अतः अन्न की भी कमी होगी। धान्य की फसल में रोग तथा कीटाणु अधिक लगेंगे। देश के राजनेताओं में युद्धस्तरीय वाद-विवाद की स्थिति बनी रहेगी। शनि वर्ष का स्वामी होने से खराब संकल्पों वाले चोरों, भष्टाचारियों और बहुत सी हिंसक घटनाओं के कारण समस्त राज्य आकुल रहेंगे। पशुधन व वाहन उद्योग की हानि होगी। बंधुओं का वियोग होने से मनुष्य रोएंगे। भुखमरी व रोग बहुत व्याकुल करेंगे। आकाश में जैसे ही बादल आते हैं वैसे ही पवन उनको उड़ा देता है। पृथ्वीपर पर आरोग्य नहीं रहता। जलाशय व नदियों में जल की कमी हो जाती है। कहीं पर अनाज जल के अभाव से नष्ट हो जाता है, कहीं जल भरी हुई भूमि में फल जाता है। शनि स्वामी होने से इन्द्र मन्द मन्द जल वर्षाता है अतः मानसूनी वर्षा में निरंतरता नहीं होगी।

नल संवत का राजा व प्राकृतिक स्वामी भी शनि ही है। स्वामी शनि होने से चैत्र माह में रोग, महामारी की पीड़ा बढ़ने के आसार हैं, वायु प्रबल रहेगी। वैशाख में अनाज का संग्रह होगा। ज्येष्ठ में राजनेताओं में परस्पर बहुत कटुता होगी पर जनता में सुख-शान्ति होगी। आषाढ़ में कालाबाजारी बढ़ेगा तथा कार्तिक में विक्रय होगा। मार्गशीर्ष, पौष और माघ में अनाज के भाव समान रहेंगे। फाल्गुन में बालकों को रोग की संभावना अधिक होगी, तस्करी व चोरी बढ़ेगी।

✻✻ मन्त्री गुरु ✻✻

विविध धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुरतोय घना मुदिता भवेत् ।
नृपतयो जनपालन तत्पराः सुरगुरौ ननु मन्त्रि समागतो।।

इस वर्ष गुरु के मन्त्री होने से सुवृष्टि तथा पृथिवी शस्यशालिनी होगी। ब्राह्मण-गण स्वधर्मकर्म में रुचिवान व स्वस्थ रहेंगे। उच्च स्तरीय राजनेताओं के कार्य से प्रजा में प्रसन्नता होगी।

✻✻ शस्येश सूर्य ✻✻

सस्याधिनाथे तरणौ ही पूर्व धान्यं समर्घ बहवोऽपि चौराः ।
युद्धं नृपाणं जलाठयाः स्वल्पं च सस्यं बहुभूतहाश्च ।।

इस वर्ष सूर्य के शस्येश होने से चोरी, डकैती एवं अपराधिक घटनाओं की भरमार रहेगी। धान्य में औसतन तेजी रहेगी। वर्षा अधिक होगी। प्रजाजन अनेक प्रकार के कष्टों से दुःखी रहेंगे। राजनीति में कलहपूर्ण वातावरण रहेगा।

✻✻ धान्येश शुक्र ✻✻

भृगौ पश्चिमधान्येशे पश्चाद्धान्यं न पच्यते।
शस्यं समर्घतां याति स्वल्पं क्षीरं गवामपि।।

इस वर्ष शुक्र के धान्येश होने से शीतकाल की उपज में कमी होगी। धान्य आदि के भाव में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। दूध, दही, घी एवं तरलीय पदार्थों में तेजी रहेगी।

✻✻ मेघेश बुध ✻✻

अमृत रश्मि सुते यदि वारिपे बहुजलं तुषधान्य रसादिकम् ।
द्विजवराय जनोत्सुक चेतसो विविधसौख्य युताधारणी तदा ।

इस वर्ष बुध के मेघेश होने से जौ, गेहूँ आदि चैती फसल की उपज अच्छी होगी। ब्राह्मण अपने धर्मकृत्यों में लगे रहेंगे। पृथ्वी शस्यशालिनी, प्रजा में प्रसन्नता रहेगी।

✻✻ रसेश भौम ✻✻

यदि धरातनयो रसपो भवेन्नरमुराशियुता जनता शुभाः।
नरपतिः विषमोजनतापदो न जल्दोबहुवृष्टिकरो भुनि।।

मंगल के रसेश होने से इस वर्ष तरली पदार्थों में न्यूनता होने से भाव में तेजी रहेगी। उच्चस्तरीय राजनेताओं के व्यवहार से प्रजा अप्रसन्न रहेगी। वर्षा औसतन न्यून होगी।

✻✻ नीरसेश शनि ✻✻

अयःपिण्डादिलोहानां कृष्णवस्त्रादि वस्तुनाम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरस नायके ।।

शनि के नीरसेश होने से इस वर्ष लोहा तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में तेजी तथा काली वस्तु एवं वस्त्रादि में औसतन तेजी रहेगी।

✻✻ फलेश बुध ✻✻

यदि बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा।
बहु तृणं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदो जनसौख्यमुदान्वितः।।

बुध के फलेश होने से इस वर्ष फल, पुष्प, पशुओं के खाद्य पदार्थ अधिक होंगे। प्रजा में सुख की अनुभूति होगी। वर्षा अधिक होगी।

✻✻ धनेश शनि ✻✻

द्रविणपे रविजे विरत्यं धनं गदरता धरणीपतयः सदा ।
अधनतां वणिजः कृषिजीविनो द्विजवराः
परपीडनमानसाः।।

इस वर्ष शनि के धनेश होने से लोगों के संग्रहीत धन में न्यूनता रहेगी। बचत कम होगी। वाणिज्य करने वाले तथा कृषि करने वाले लोगों को विशेषतया धन-धान्य में न्यूनता रहेगी। विप्रगण, बुद्धिजीवी वर्ग पर पीड़ा से आन्तरिक दुःखी रहेंगे। धनाढ्य लोग अधिक रोगी होंगे।

✻✻ दुर्गेश बुध ✻✻

विषमसाम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्र जनेषु विशेषताम् ।
शशिसुते यदि कोटकपालके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित् ।।

इस वर्ष बुध के दुर्गेश होने से लोगों के जीवन में सुख-दुःख दोनों परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। चोरी-ठगी कम होगी व राजनेता कूटनीति से काम लेंगे। धनवान एवं बाहुबलियों के लिए प्रत्येक राह प्रशस्त रहेंगे।

✻ वर्षलग्न एवं जगल्लग्न का सामान्यफल ✻

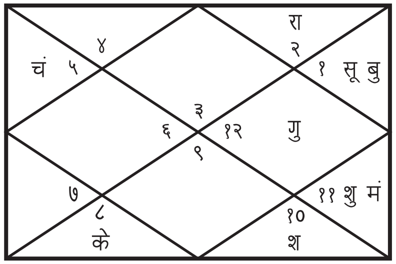

जगल्लग्न

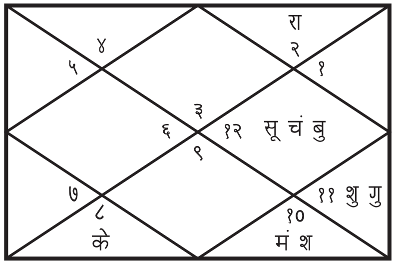

वर्षलग्न

संवत् २०७९ के वर्षलग्न तथा जगल्लग्न दोनों ही मिथुन लग्न है। संवत्सर के दशाधिकारियों में पाँच शुभ ग्रह तथा पाँच पाप ग्रह पदासीन हैं। मुख्य पद राजा शनि, मन्त्री पद पर गुरु एवं दुर्गेश बुध है। जगल्लग्नाधिपति बुध सूर्य के साथ एकादश भाव में, दशाधिकारियों में मुख्यपद पर आसीन शनि जगल्लग्न कुण्डली में अष्टमेश तथा नवमेश होकर अष्टमभाव में स्वक्षेत्री है। मन्त्री पदासीन गुरु सप्तमेश तथा दशमेश होकर दशमभाव में स्वक्षेत्री है। वर्षलग्न तथा जगल्लग्न दोनों कुण्डलियों के ग्रह की स्थिति के अनुसार देश-विदेश दोनों में तामसी प्रवृत्तियों की बाहुल्यता रहेगी। देश के दुष्ट तथा नीच प्रवृत्ति के लोगों के द्वारा कृत् अपराधों से समय-समय पर प्रजा में भय, तनाव आदि की स्थिति बनी रहेगी। अनेक प्रकार के नये पुराने रोगों से जनता त्रस्त रहेगी। व्यापार करने वाले व्यापरियों के कठिन परिश्रम करने पर भी उनके आय में औसतन न्यूनता रहेगी। देश में चोरी-डकैती, अपहरण, छिनैती तथा दुष्कर्म आदि कृत्यों की बाहुल्यता देखी जायेगी। देश देशान्तर दोनों में भूकम्प, अग्नि, जल, यान, वायुयान आदि दुर्घटनाओं से जन-धन दोनों की क्षति होगी।

देश के सीमावर्ती देशों पर तनाव तथा समय-समय पर अप्रिय घटनाएँ भी होती रहेगी। देश के नीच प्रवृत्ति के लोगों द्वारा ओछी राजनीति से देश के सैन्यबल में न्यूनता तथा खिन्नता देखी जायेगी एवं देश के मान-सम्मान पर आघात पहुँचेगा। देश में शिक्षा, यातायात, नई-नई तकनीकों से सम्बन्धित अनेक विचार विमर्श कर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार दोनों द्वारा विकसित किये जायेंगे। केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा किसानों, गरीब वर्ग के लोगों के एवं व्यापारियों के लिए अनेक लुभावने प्रस्ताव पारित किये जायेगें। पीली धातु तथा विदेशी मुद्राओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पेट्रोल, डीजल, केरोसीन तेल तथा तरलीय पदार्थों के मूल्यों में समय-समय पर वृद्धि बनी रहेगी। देश के कोष में न्यूनता आयेगी।

मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्य नष्टता उदग्दक्षिणयोः मेघा बहवोधान्य संग्रहः ।।
पश्चिमायां स्वल्प मेघाः छत्रभंगः च विग्रहः मध्यदेशेर्घ निष्पतिः चतुष्पद सरोगता ।।

जगल्लग्न मिथुन होने से सदा युद्ध की स्थिति बनी रहेगी। देश के पूर्व भाग में कृषि की क्षति, देश के उत्तर दक्षिण भाग में वर्षाधिक्य तथा उपज अधिक होगी, पश्चिम भाग में कम वर्षा होगी। देश के मध्य भाग में फसल की उत्पत्ति औसतन कम होगी। पशुओं में पीड़ा अधिक देखी जायेगी।

✻ सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश सामान्य फल ✻

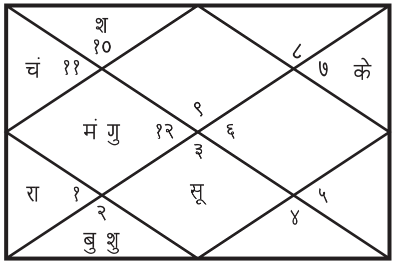

सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश

इस वर्ष २२ जून २०२२, आषाढ कृष्ण नवमी तिथि, बुधवार, रेवती नक्षत्र, शोभन योग, गर करण, कुम्भ राशि, धनुलग्न रात्रि २०:०८:२८ पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है। तिथि-वार, नक्षत्र, योग, करण तथा आर्द्रा प्रवेश लग्न के ग्रहानुसार देश के राजा उच्चस्तरीय राजनेता के व्यवहार से प्रजा में खिन्नता, चौरी, डकैती, अपहरण, व्यभिचार, परस्पर वैरभाव रहेगा।

अनेक प्रकार के रोग दुःख, कष्ट से प्रजा में भय तथा अशान्ति बनी रहेगी। उच्चस्तरीय राजनेता के वियोग की विशेष सम्भावना, लोग राज्य तथा केन्द्र की व्यवस्थाओं पीड़ित होने पर भी स्वकार्यों निरत रहते हुए सुखपूर्वक जीवनयापन करते रहेंगे। बुधवार को होने से अन्न के दाम सस्ते होंगे। झाँझावात के साथ कृषि योग्य वृष्टि होगी। चन्द्रमा तृतीय भाव में है। लग्नेश गुरु चतुर्थ भाव में जल राशि में है व लग्न पर भाग्येश सूर्य की पूर्ण दृष्टि से वर्षा अच्छी होगी। दक्षिण पश्चिमोत्तर के राज्यों में वर्षाधिक्य से जनधन की क्षति होगी। देश के सीमावर्ती देशों से वाद-विवाद की स्थिति बनी रहेगी।

सूर्यस्य शिवनक्षत्र प्रवेशे नवमी तिथी। तर्हि स्यात्समता भीतरेव माहुर्मनीषिणः।
शशिभृति पौष्णे सति यदि रोद्रम् । प्रविशति भानुः नरपति निधनम्।।
सति शोभन योगे चेद् रौद्रगः पद्मिनीपतिना।।
शोभनं कर्म कुर्वन्ति तर्हि सर्वे जनानृपाः। रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके ।।

स्तम्भ विचार- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र व आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र होने के कारण इस वर्ष चारों स्तम्भ हैं। अतः यह इस वर्ष वर्षा के लिए अनुकूलता, जड़ी बूटियों का उत्पादन अधिक, वायु का वेग अधिक व अनाज उपज अच्छी होने में शुभता रहेगी।

✻ अग्नि-वास चक्र ✻								
शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१, ९	२,१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
२,१०	३,११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
३,११	४,१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
४,१२	५,१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
५,१३	६,१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
६,१४	७,३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
७,१५	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
८	१, ९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

✻ शिव-वास ✻			
शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	शिव वासम्	फलम्
१, ८,	७, १४	श्मशाने	मृत्युः
२, ९	१, ८,	गौरीसन्निधौ	शुभम्
३, १०	२, ९	सभायाम्	तापकारक
४, ११	३, १०	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्ट
५, १२	४, ११	कैलाशे	सुखम्
६, १३	५, १२	वृषे	श्री प्राप्तिः
७, १४	६, १३	भोजने	कष्टप्राप्तिः

❊ ग्रहों के गोचर, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि विचार २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ सूर्य संचार ❊

सूर्य की इन द्वादश संक्रान्तियों का स्वरूप, फल, एवं पुण्यकाल आदि पृष्ठ १४-१५ पर दिया गया है।

राशि प्रवेश	सूर्य राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	१४ अप्रैल २०२२	११:००
वृषभ	१५ मई	०९:२७
मिथुन	१५ जून	१९:३२
कर्क	१७ जुलाई	११:०२
सिंह	१७ अगस्त	२२:२०
कन्या	१७ सितम्बर	२२:४४
तुला	१८ अक्टूबर	०९:११
वृश्चिक	१७ नवम्बर	०६:३१
धनु	१६ दिसम्बर	१८:३३
मकर	१५ जनवरी २०२३	०२:२८
कुम्भ	१३ फरवरी २०२३	१३:२४
मीन	१५ मार्च २०२३	०८:५५

❊ भौम संचार ❊

राशि प्रवेश	मंगल राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मकर	वर्षारम्भ से स्थित	-
कुम्भ	१० अप्रैल २०२२	०७:२४
मीन	१९ मई	१३:५९
मेष	२९ जून	०७:२९
वृषभ	१३ अगस्त	२२:०२
मिथुन	१४ मार्च २०२३	२३:०४

मंगल वक्री - १५ नवम्बर, ०७:५५ बजे

मंगल मार्गी - ३१ दिसम्बर, ००:५२ बजे

❊ १३ अगस्त २०२१ से १४ मार्च २०२३ तक वक्री-मार्गी गति के कारण मंगल वृष राशि में ही संचार करेगा।

❊ संवत् २०७९ में मंगल पूर्वदिशा में उदित रहेगा।

❊ बुध संचार ❊

राशि प्रवेश	बुध राशि संचार	
	दिनांक	घं.मि.
मेष	६ अप्रैल २०२२	०१:५९
वृषभ	२६ अप्रैल	२२:५४
वक्री मेष	२२ मई	१२:५८
वृषभ	७ जून	०९:३४
मिथुन	२९ जून	०३:१६
कर्क	१५ जुलाई	१३:५५
सिंह	३१ जुलाई	२२:२४
कन्या	२० अगस्त	१७:३९
वक्री सिंह	१७ सितम्बर	१७:१७
कन्या	३ अक्टूबर	०९:५३
तुला	२६ अक्टूबर	०५:२६
वृश्चिक	१२ नवम्बर	१५:५१
धनु	३० नवम्बर	१६:१९
मकर	७ फर. २०२३	०६:३८
कुम्भ	२५ फर. २०२३	०९:२३
मीन	१३ मार्च २०२३	२१:५०

उदय अस्त	बुध उदय अस्त	
	दिनांक	घं.मि.
उदय पश्चि.	१२ अप्रै.२०२२	१०:०३
अस्त पश्चि.	१४ मई	०६:२६
उदय पूर्व	३ जून	१७:२३
अस्त पूर्व	७ जुलाई	१९:५९
उदय पश्चि.	२८ जुलाई	०४:२८
अस्त पश्चि.	११ सितम्बर	०९:५६
उदय पूर्व	२९ सितम्बर	१०:४१
अस्त पूर्व	२४ अक्टूबर	१८:५३
उदय पश्चि.	१ दिसम्बर	२१:२५
अस्त पश्चि.	२ जन. २०२३	१५:३९
उदय पूर्व	१२ जन. २०२३	१३:४६
अस्त पूर्व	२५ फर. २०२३	१८:४३

बुध वक्री - ०८ मई, १३:१२ बजे

बुध मार्गी - ३१ मई, ०५:४० बजे

बुध वक्री - ०३ सितम्बर, ०२:०८ बजे

बुध मार्गी - २५ सितम्बर, १३:३६ बजे

बुध वक्री - २५ दिसम्बर, १८:०८ बजे

बुध मार्गी - १७ जनवरी, ०४:३८ बजे

❊ गुरु संचार ❊

राशि प्रवेश	गुरु राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	८ अप्रैल २०२२	११:४१

गुरु वक्री - २७ जुलाई, ०३:४४ बजे

गुरु मार्गी - २८ नवम्बर, ०५:१५ बजे

❊ संवत् २०७९ में गुरु पूर्वदिशा में उदित रहेगा।

❊ शुक्र संचार ❊

राशि प्रवेश	शुक्र राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	२६ अप्रैल २०२२	०४:३७
मेष	२२ मई	२१:५९
वृषभ	१७ जून	०४:०५
मिथुन	१२ जुलाई	०३:५८
कर्क	५ अगस्त	२२:४७
सिंह	३० अगस्त	११:५२
कन्या	२३ सितम्बर	१९:३२
तुला	१७ अक्टूबर	२२:२३
वृश्चिक	१० नवम्बर	२१:२८
धनु	४ दिसम्बर	१८:०२
मकर	२८ दिसम्बर	१३:४१
कुम्भ	२१ जनवरी २०२३	११:४८
मीन	१४ फरवरी २०२३	१६:२४
मेष	११ मार्च २०२३	०७:०१

❊ संवत् २०७९ में शुक्र पूरे वर्ष मार्गी रहेगा।

शुक्र अस्त- १ अक्टूबर २०२२, २१:०५ बजे, पूर्वदिशा में।

शुक्र उदय-२४ नवम्बर २०२२, २३:५० बजे, पश्चिम दिशा में।

❊ शनि संचार ❊

राशि प्रवेश	शनि राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	१३ फरवरी २०२३	०७:४८

शनि वक्री - ०३ जून, ०१:२३ बजे

शनि मार्गी - १८ अक्टूबर, ०२:१९ बजे

शनि अस्त- ३ फरवरी २०२३, ०८:०९ बजे, पश्चिम दिशा में।

शनि उदय- ९ मार्च २०२३, ११:५१ बजे, पूर्व दिशा में।

❊ राहु केतु संचार ❊

राहु २८ मई २०२२ को, ०३:५६ बजे, वृष से मेष में प्रवेश करेगा।

केतु २८ मई को, ०३:५६ बजे, वृश्चिक से तुला में प्रवेश करेगा।

✻ संवत् २०७९ का राशिफल ✻

- डॉ. पारसनाथ ओझा

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

(यहाँ ग्रहयोग पर आधारित एक वर्ष का स्थूल राशिफल दिया जा रहा है।)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में राहु द्वितीय, केतु अष्टम, मंगल शनि दशम एवं गुरू एकादश भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार संघर्ष स्वकार्यों में सफलता, परिवार में शुभकार्य, भूमि जायजाद का क्रय-विक्रय होगा। समय-समय पर जातक के स्वास्थ्य में न्यूनता, पारिवारिक चिन्ता, आन्तरिक मतभेद, आर्थिक चिन्ता, अनावश्यक कार्यों में तथा रोगादि में धनव्यय होता रहेगा। यत्न से व्यवसाय में सफलता, नौकरी में पदोन्नति, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। पत्नी-पुत्रादि से समय-समय पर मतान्तर तथा मानसिक खिन्नता बनी रहेगी। अनावश्यक वाद-विवाद की स्थिति बनेगी। माता-पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम नहीं रहेगा। विशेषकर वर्ष के ३, ४, ६, ८ मास नेष्ट रहेगा। जातक को राहु, शनि, केतु इन ग्रहों का जप, दान कराना आयु-आरोग्यता की दृष्टि से लाभप्रद रहेगा।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वु वे वो)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में राहु प्रथम, केतु सप्तम, मंगल शनि नवम एवं गुरू दशम भावगत रहेगा। ग्रहों को स्थिति के अनुसार धन-धान्य की वृद्धि, पुत्रोत्सव तथा भाग्योदय होगी। पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति, स्वकार्यों में सफलता मिलेगी। गृह में भूमि जायजाद, गृह निर्माण का कार्य एवं परिवार में शुभकार्य होंगे। कठिन परिश्रम से शिक्षा व्यवसाय आदि में सफलता मिलेगी। समय-समय पर मानसिक अशान्ति, रोगादि में धनव्यय, अनावश्यक वाद विवाद की स्थिति, नौकरी से असन्तुष्टि बनी रहेगी। समय-समय पर स्वजनों तथा मित्रों से मतान्तर की स्थिति भी बनती रहेगी। विशेषकर मास के वर्ष के ६, ५, ७, १० मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ हेतु राहु, केतु, मंगल, शनि ग्रह का जप तथा श्रीदुर्गाकवच का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

मिथुन (का की कु घ ङ छ के को हा)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु षष्ठभाव, शनि मंगल अष्टम, गुरू नवम एवं राहु द्वादश भावगत रहेगा। शनि की अढैया का प्रभाव रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वकार्यों में अरूचि, आलस्ययुक्त समय, मानसिक अशान्ति, परिवार में आन्तरिक मतभेद, स्वजन तथा मित्रादिकों से विचारान्तर, क्रय-विक्रय, लेनदेन आदि में धोखाधड़ी, नीच प्रवृत्ति के लोगों से संगति का योग रहेगा। जो धन धान्य, पद-प्रतिष्ठा की विशेष सम्भावना बनायेगा। १३ फरवरी से शनि की अढैया समाप्त हो जायेगी। तदनन्तर जातक के कार्यों में सफलता, शुभकार्य, आदि की प्राप्ति होगी। विशेषकर वर्ष १, ३, ५ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ हेतु शनि, राहु, केतु इन ग्रहों का जप दान कराना आयु आरोग्यता की दृष्टि से उत्तम रहेगा।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु पंचम, मंगल शनि सप्तम गुरु अष्ठम, एकादश भावगत रहेगा। ८ अप्रैल से गुरु भाग्यस्थ स्वगृही होने से शुभ रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में विकास-कार्य तथा शुभकार्य होंगे। शिक्षा में प्रगति, नौकरी में पदोन्नति, व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। १३ फरवरी २०२३ से इस राशि के लिए शनि की अढैया प्रारम्भ हो जायेगी। तब से स्वास्थ्य में न्यूनता, रोगादि में धनव्यय, मानसिक अशान्ति, अनेक यात्राएँ, आलस्य युक्त समय रहेगा। अनावश्यक वाद-विवाद, यत्न करने से स्वकार्य में सफलता, शुभकार्य तथा व्यवसायजन्य कार्य होंगे। गुरुजनों से मार्गदर्शन प्राप्त होने का योग बनेगा। वर्ष के ९, ११, १२ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ हेतु शनि, केतु इन ग्रहों का जप दान तथा हनुमद् आराधना करना श्रेयस्कर रहेगा।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु चतुर्थ, मंगल शनि षष्ठ, गुरु सप्तम एवं राहु दशम भावगत रहेगा। २२ अप्रैल से गुरु अष्टमस्थ स्वगृही होने से स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल रहेगा परन्तु विद्याजनित सुख देगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में माङ्गलिककार्य, शिक्षा में प्रगति, व्यवसाय में लाभ, नौकरी के अवसर प्राप्त, सुखद यात्राएँ, गृह निमार्ण, भूमि जायजाद, क्रय-विक्रय के कार्य होंगे। स्वजनों तथा इष्ट मित्रों के सहयोग से अभीष्टकार्य की सिद्धि, विपक्षी निर्बल, मुकद्दमा में सफलता की प्राप्ति। सामान्यतया वर्ष ३, ४, ७ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ गुरु का जप दान, गृह में दुर्गासप्तशती का पाठ कराना या करना लाभप्रद रहेगा।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) -

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु तृतीय, मंगल-शनि पंचम, गुरू षष्ठ एवं राहु नवम भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में शुभकार्य, परिश्रम से शिक्षा तथा व्यापार आदि में लाभ, २७ मई को राहु मेष तथा केतु तुला राशि में प्रवेश करेगा। तदनन्तर मानसिक अशान्ति, परिवार में मतभेद की स्थिति, वातजन्य विकार, रोगादि में धनव्यय, भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। वाहन आदि चोट-चपेट, चौरादि से धनक्षति की सम्भावना विशेष रहेगी। विपक्षी प्रबल, वाद-विवाद की स्थिति अनावश्यक बनेगी। कुसंगति तथा नीच प्रवृत्ति के लोगों की संगति का योग बनेगा। जिससे मान सम्मान पद प्रतिष्ठा आदि के लिए उत्तम नहीं रहेगा। विशेषकर वर्ष के ४, ७, ८, ११ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ हेतु शनि, राहु, केतु, मंगल इन ग्रहों का जप दान कराना तथा हनुमत्कवच का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

※ संवत् २०७९ का राशिफल ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु द्वितीय, २७ मई से प्रथम, मंगल, शनि चतुर्थ, गुरू पंचम एवं राहु अष्ठम तथा २७ मई से सप्तम भावगत रहेगा। शनि अढैया चल रही है जो १३ फरवरी २०२३ तक रहेगी। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक के स्वास्थ्य मध्यम, मानसिक, आर्थिक पारिवारिक चिन्ता, परिवार में आन्तरिक मतभेद, विपक्षी प्रबल, वादविवाद की स्थिति, अनावश्यक धनव्यय, अनेक यात्राऐं, भागदौड़, कुसंगति आदि का योग है। क्रय-विक्रय में धोखाधड़ी, लेनदेन आदि में सावधानी की आवश्यकता होगी। वाहन आदि से चोट-चपेट लगने का योग बन रहा है। प्रयाश से गृह में शुभकार्य, शिक्षा में सफलता, व्यापार लाभप्रद रहेगा। १३ फरवरी से शनि की अढैया समाप्त होने पर जातक के लिए लाभप्रद रहेगा। विशेषकर वर्ष २, ३, ६, ८ मास नेष्ट रहेगा। शान्त्यर्थ हेतु शनि, राहु, केतु, मंगल इन ग्रहों का जप दान करना, श्रीहनुमद् आराधना एवं शनि अराधना करना लाभप्रद रहेगा।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में केतु प्रथम, मंगल, शनि तृतीय गुरू चतुर्थं तथा राहु सप्तम भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य मध्यम, माङ्गलिककार्य, इष्टमित्रादि का सुख प्राप्त, वाहन, भूमि आदि का क्रय-विक्रय, गृह निर्माण का कार्य होगा। शिक्षा में प्रगति, परिवार में व्यवयाय लाभप्रद, नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। १३ फरवरी से इस राशि एव लग्न वाले जातक को शनि की अढैया प्रारम्भ हो जायेगी। जो २ वर्ष मास रहगी। यह समय जातक को शारीरिक मानसिक चिन्ता, कार्यसिद्धि में विलम्ब, अपनों से दूरी, अनावश्यक वाद-विवाद आदि की स्थिति बनेगी। शान्त्यर्थ हेतु शनि, राहु, केतु, का जप दान, शनि चालीसा का पाठ, हनुमद्दर्शन आराधना आदि करना लाभप्रद रहेगा।

धनु (ये यो भा भी भू घा फा ढा भे)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल, शनि द्वितीय, गुरू तृतीय, राहु षष्ठ एवं केतु द्वादश भावगत रहेगा। १३ फरवरी तक शनि की साढ़ेसाती रहेगी। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता आती रहेगी। मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी। परिवार कुटुम्बवर्ग, इष्टमित्रादिकों में वैचारिक मतभेद बना रहेगा। क्रय-विक्रय लेनदेन आदि में धोखाधड़ी की सम्भावना अधिक रहेगी। स्वकार्यो में अरुचि, उत्पन्न होगी। आलस्य युक्त समय व्यतीत होगा। कठिन परिश्रम से ही अभीष्टकार्य की सिद्धि मिलेगी। शनि के साढ़ेसाती समाप्त होते ही जातक के सभी कार्य सिद्धि होंगे।

मकर (भी जा जी खी खू खे खो गा गी)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में शनि प्रथम, गुरू द्वितीय, राहु पंचम एवं केतु एकादश भावगत रहेगा। इस राशि वाले जातक के लिए शनि की साढ़ेसाती रहेगी। इसके कारण जातक के स्वास्थ्य में समय-समय पर न्यूनता आती रहेगी। मानसिक चिन्ता, स्वजनों तथा इष्टमित्रादिकों से दूरी बनेगी। विलम्ब से अभीष्टकार्य की सिद्धि होगी। स्वकार्यों के प्रति अरूचि उत्पन्न होगी। क्रय-विक्रय, लेनदेन आदि कार्यों में सावधानी की आवश्यकता जरूरी होगा। स्थान परिवर्तन तथा नौकरी से असन्तुष्टि तथा खिन्नता उत्पन्न होगी। कठिन परिश्रम से शिक्षा में प्रगति होगी। परिवार में माङ्गलिककार्य तथा निर्माणादि कार्य होंगे। रोगादि में धनव्यय अधिक होंगे। वाहन आदि से सदा सावधानी रखनी चाहिए। धार्मिक कार्यों में रूचि उत्पन्न होगी। शनि, राहु, मंगल इन ग्रहों का जप दान, हनुमद्दर्शन करना श्रेयस्कर रहेगा।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

इस राशि एवं लग्न वाले जातकों के लिए वर्षपर्यन्त शनि की साढ़ेसाती रहेगी। जिसके कारण समय परेशानियों वाला होगा। जिससे स्वास्थ्य मध्यम, आर्थिक, मानसिक पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी। इष्टमित्रों से वैचारिक मतभेद उत्पन्न होगा। माता पिता के स्वास्थ्य में न्यूनता, व्यापार में अल्प लाभ, नूतन व्यापार की योजना बनेगी किन्तु वह विलम्ब से क्रियान्वित होगी। विपक्षी प्रबल होंगे। अनावश्यक वाद-विवाद की सम्भावना बनेगी। कोर्ट कचहरी में तथा रोगादि में पैसे अधिक खर्च होंगे। कठिन परिश्रम से अभीष्टकार्य की सिद्धि होगी। दाम्पत्य जीवन में कटुता तथा वैचारिक मतान्तर होगा। भौतिक सुख सुविधाओं पर अत्यधिक पैसे खर्च होंगे। वर्ष के ३, ९, ११ मास नेष्ट रहेगा। शनि, मंगल, राहु इन ग्रहों का जप दान तथा हनुमद् अराधना करना लाभप्रद रहेगा।

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

इस राशि एवं लग्न वाले जातकों के लिए वर्षारम्भ में राहु तृतीय, केतु नवम, मंगल, शनि एकादश एवं गुरू द्वादश भावगत रहेगा। ग्रहों के स्थिति के अनुसार यह वर्ष सामान्यतः शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में माङ्गलिक तथा विकाश के कार्य होंगे। शिक्षा में सफलता, व्यापार लाभप्रद, नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। अनेक सुखद तथा लाभप्रद यात्राएँ होंगी। स्त्री सुख, २ सन्तान सुख प्राप्त होंगे। स्वजनों तथा इष्टमित्रों के सहयोग से अभीष्टकार्य की सिद्धि होगी। भाई बहनों में सौहार्द बना रहेगा। अध्ययन-अध्यापन, लेखन-प्रकाशन आदि के कार्य सम्पादित होंगे। १३ फरवरी से इस राशि वाले जातकों के लिए शनि की साढ़ेसाती प्रारम्भ होगी जो जातक के स्वास्थ्य में न्यूनता, परिवार में आन्तरिक मतान्तर, अनावश्यक धनव्यय आदि होने ने की सम्भावना है। शान्त्यर्थ हेतु शनि का जप दान, श्रीशनिचालीसा, हनुमान चालीसा का पाठ तथा हनुमद्दर्शन करना लाभप्रद रहेगा।

※ सूर्य की १२ संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

मेष संक्रान्ति – १४ अप्रैल २०२२ – ११:०० से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०६:०९ – १८:४९

वसन्त ऋतु, खरमास समाप्ति, गुरुवार, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, कौलव करण, विषुव संक्रान्ति।

मेष संक्रान्ति बाघ पर सवार, जटिला, अग्निरूपा, तीन नेत्रों वाली, रक्तवर्णा कपालहस्ता, एकमुखी व कराली नाम की होती है। इसका सूर्य धाता है। इसमें मेषदान शुभ होता है। **यह मेष संक्रान्ति कौलव करण में होने से** सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। यह मन्दा नाम की विप्रसुखकारक है। उत्तराफाल्गुनी की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उ.फा. जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान।

वृष संक्रांति – १५ मई २०२२ – ०९:२७ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०५:४३ – १२:२३

ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, रविवार, स्वाती नक्षत्र, वणिज करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

वृष संक्रान्ति सिंह पर सवार, त्रिनेत्रा कपालहस्ता, श्वेतवर्णा, द्विहस्ता, एकमुखी व महाघोरा नाम की होती है। इसका सूर्य अर्यमा है। इसमें गौदान शुभ होता है। **यह वृष संक्रान्ति वणिज करण में होने से** मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। स्वाति की संक्रान्ति १५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। स्वाती जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान।

मिथुन संक्रांति – १५ जून २०२२ – १९:३२ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – १२:५४ – १९:१८

ग्रीष्म ऋतु, बुधवार, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, तैतिल करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

मिथुन संक्रान्ति वराह पर सवार, त्रिनेत्रा, एकमुखी, हरित वर्णा, अभयमुद्राधारी और कपालहस्ता, शुभ व विरुपाक्षी नाम की होती है। इसका सूर्य मित्र है। इसमें वस्त्र, अन्न, जल का दान शुभ होता है। **यह मिथुन संक्रान्ति तैतिल करण में होने से** पक्षी जाति की, गधे पर सवार, गुलाबी वस्त्र पहने, लाठी लिए, पक्वान्न खाते हुए, मिट्टी का लेपन किए, केतकी पुष्प लिए, युवा वय में, हँसती हुई अवस्था में सोती हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। उत्तराफाल्गुनी की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कर्क संक्रांति – १७ जुलाई २०२२, ११:०२ से
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०५:४५ – १२:३२

वर्षा ऋतु आरम्भ, दक्षिणायन आरम्भ, रविवार, शतभिषा नक्षत्र, बालव करण, याम्यायन संक्रान्ति।

कर्क संक्रान्ति अश्व पर सवार, गुलाबी रंग की, एकमुखी, द्विहस्ता, कपालहस्ता, कटका व महोदरी नाम की होती है। इसका सूर्य अरुण है। इसमें घृतधेनु का दान शुभ होता है। **यह कर्क संक्रान्ति बालव करण में होने से** भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। शतभिषा की संक्रान्ति १५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। शतभिषा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

सिंह संक्रांति – १७ अगस्त २०२२, २२:२० से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – १३:०० – १९:००

वर्षा ऋतु, बुधवार, अश्विनी नक्षत्र, वणिज करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

सिंह संक्रान्ति शुनक पर सवार, एकमुखी, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व चामरधारी व जिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य इन्द्र है। इसमें छाता व स्वर्ण शुभ होता है। **यह सिंह संक्रान्ति वणिज करण में होने से** मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। अश्विनी की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। अश्विनी नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कन्या संक्रान्ति १७ सितम्बर २०२२, २२:४४ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – १२:०३ – १८:२७

शरद ऋतु आरम्भ, शनिवार, मृगशिरा नक्षत्र, बालव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

कन्या संक्रान्ति गज पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, कृष्ण मुख व रक्तिम वर्ण की देह वाली, व सिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य विवस्वत है। इसमें वस्त्र व गौदान शुभ होता है। **यह कन्या संक्रान्ति बालव करण में होने से** भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। मृगशिरा की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। मृगशिरा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

❊ सूर्य की १२ संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

तुला संक्रान्ति १८ अक्टूबर २०२२, ०९:११ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०६:३० – १३:११

शरद ऋतु, मंगलवार, पुष्य नक्षत्र, कौलव करण, विषुव संक्रांति।

तुला संक्रान्ति कुक्कुर पर सवार, षडानन, त्रिनेत्रा, नीलवर्णा, कपालधारी, व मन्दा नाम की होती है। इसका सूर्य त्वष्टा है। इसमें धान्य व बीजों का दान शुभ होता है। यह तुला संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। पुष्य की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पुष्य नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

वृश्चिक संक्रांति – १७ नवम्बर २०२२, ०६:३१ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०६:५१ – १३:१५

हेमन्त ऋतु आरम्भ, गुरुवार, मघा नक्षत्र, तैतिल करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

वृश्चिक संक्रान्ति अजा पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, शक्तिधारी, नीलवर्णा, व आह्लादिनी नाम की होती है। इसका सूर्य विष्णु है। इसमें वस्त्रदान, दीपकदान शुभ होता है। **यह वृश्चिक संक्रान्ति तैतिल करण में होने से** पक्षी जाति की, गधे पर सवार, गुलाबी वस्त्र पहने, लाठी लिए, पक्वान्न खाते हुए, मिट्टी का लेपन किए, केतकी का पुष्प लिए, युवा वय में, हँसती हुई अवस्था में सोती हुई प्रवेश कर रही है। सोती हुई संक्रान्ति धर्म हेतु अनिष्ट, अन्नादि के भाव महंगे व अवर्षणकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में सोते नहीं रहना चाहिए। मघा की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। मघा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

धनु संक्रांति – १६ दिसम्बर २०२२, १८:३३ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ११:३० – १७:३०

हेमंत ऋतु, खरमास आरम्भ, शुक्रवार, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, कौलव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

धनु संक्रान्ति महिष पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, चित्रवर्णा व उज्वला नाम की होती है। इसका सूर्य अंशु है। इसमें वस्त्र व वाहनदान शुभ होता है। **यह धनु संक्रान्ति कौलव करण में होने से** सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। उत्तराफाल्गुनी की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

मकर संक्रांति – १५ जनवरी २०२३, ०२:२८ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०७:२३ – १२:३६

शिशिर ऋतु, उत्तरायण आरम्भ, खरमास समाप्ति, रविवार, चित्रा नक्षत्र, कौलव करण, सौम्यायनसंक्रान्ति।

मकर संक्रान्ति ऊँट पर सवार, त्रिनेत्रा, दंष्ट्रिकानना, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व वज्रधारी, व राक्षसी नाम की होती है। अन्य विवरण से द्विमुख, त्रिनेत्रा, कृष्णवर्ण, चार बाँहों, सात हाथों और तीन पैरों वाली, ऊपर देखती हुई, सात आयुध धारण किये हुए- दाएं हाथों में मुसल, तलवार, बाण, व बाएं हाथों में गदा, खेटक, पात्र, व शरासन धारण करती है। इसका सूर्य भग है। इसमें अग्निदान शुभ होता है। यह मकर संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। चित्रा की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। चित्रा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

कुम्भ संकांति – १३ फरवरी २०२३, १३:२४ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०७:१२ – १८:१३

शिशिर ऋतु, सोमवार, विशाखा नक्षत्र, बालव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

कुम्भ संक्रान्ति तुरग पर सवार, कपालहस्ता, नीलवर्णा, व भंजिका नाम की होती है। इसका सूर्य पूषा है। इसमें गौ के लिए घास व जलदान शुभ होता है। **यह कुम्भ संक्रान्ति बालव करण में होने से** भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे न रहे। विशाखा की संक्रान्ति ४५ मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। विशाखा जातकों को १ मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल,हल्दी,सरसों मिले जल से स्नान।

मीन संक्रांति – १५ मार्च २०२३, ०८:५५ से,
संक्रान्ति पुण्यकाल – ०८:५५ – १५:१९

वसंत ऋतु प्रारम्भ, खरमास आरम्भ, बुधवार, मूल नक्षत्र, कौलव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

मीन संक्रान्ति भालू पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, अरुण वर्णा व वक्रा नाम की होती है। इसका सूर्य पर्जन्य है। इसमें भूमि व माला का दान शुभ होता है।**यह मीन संक्रान्ति कौलव करण में होने से** सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किये, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। मूल की संक्रान्ति ३० मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें।

❊ संवत् २०७९ के ग्रहण ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ ई० में विश्व में चार ग्रहण लगेगें। जिसमें दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण होंगे। पहले दो भारत में अदृश्य होने से महत्त्व के नहीं होंगे। जो ग्रहण अपने भूखण्ड पर दिखाई नहीं देता उसका धार्मिक महत्त्व (सूतक आदि) नहीं होता है। दिन का चन्द्रग्रहण तथा रात्रि का सूर्यग्रहण विफल होता है।-

सूर्यग्रहो यदा रात्रै दिवा चन्द्रग्रहो यदि। तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद् दानं न च क्वचित्।।

१. खण्ड सूर्यग्रहण- वैशाखकृष्ण अमावस्या शनिवार (दिनांक ३० अप्रैल २०२२ ई०) को दक्षिण अमेरिका, अन्टार्कटिक के कुछ भूभाग, पैसेफिक, अटलान्टिक समुद्री क्षेत्र में दिखाई देगा। यूनिवर्सल समयानुसार (यू.टी.) ग्रहण का प्रारम्भ घ.१८ मि.४५, मध्य घ.२० मि.४५, मोक्ष घ.२२ मि.३८ पर होगा। सम्पूर्ण ग्रहण काल ३घ. ५३ मिनट का होगा। ग्रासमान ०.६४० होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

२. खग्रास चन्द्रग्रहण- वैशाखपूर्णिमा सोमवार (दिनांक १६ मई २०२२ ई०) को अफ्रीका, यूरोप, दक्षिण पश्चिम एशिया, उत्तर अमेरिका, पैसेफिक, अटलान्टिक समुद्री भाग तथा अन्टार्कटिका लन्दन, रोम, ब्रूसेल, ब्राजील, पेरिस, पुर्तगाल आदि के भूक्षेत्रों में दृश्य होगा। यूनिवर्सल समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि २६:२४, मध्य रा.शे. २८:११, मोक्ष रा.शे. २९:५५ पर होगा। जिसका ग्रासमान १.४१४ होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा अतः इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व व सूतक नहीं होगा।**

३. खण्डग्रास सूर्यग्रहण २५ अक्टूबर २०२२

कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार (दिनांक २५ अक्टूबर २०२२ ई०) को होगा। यह ग्रहण भारत में ग्रस्तास्त खण्ड सूर्यग्रहण के रूप में दिखाई देगा। भारतीय समयानुसार ग्रहण का विश्व में प्रारम्भ दि. १४:२८, व भारत में प्रारम्भ सायं १६:१५ पर होगा एवं मोक्ष सायं १८:३३ पर होगा। खण्ड सूर्यग्रहण की कुल समय ०७:०४:५५ घष्ठादि होगा। भारत में स्थान विशेष से सूर्योदय सूर्यास्त में भिन्नता के कारण ग्रहण के स्पर्श मोक्षादि काल में भिन्नता होगी। **ग्रहण का सूतक प्रातः सूर्योदय पूर्व ०४:१५ से प्रारम्भ हो जाएगा**, सूतक काल के नियम आगे दिए हैं।

ग्रहणफलः - यह ग्रहण दक्षिणायन में होने से वैश्य व शूद्रों के लिए हानिकारक कहा है। यह ग्रहण दिनमान के सातवें भाग में आरम्भ होने के कारण चोर, डाकुओं व मलेच्छों के लिए विनाशक होगा। यह ग्रहण तुला राशि में हो रहा है अतः पश्चिम समुद्र के निकटस्थ राज्यों गुजरात, महाराष्ट्र, गोआ, केरल, व अवन्ती अर्थात् मध्यप्रदेश राज्य व पाकिस्तान, बांग्लादेश में सरकार की हानि का योग बनेगा। साधुओं व वैश्यवर्ग को भी हानि होगी। तुला राशि व स्वाती नक्षत्र के जातकों के लिए हानिकारक रहेगा। ग्रहदृष्टि अनुसार युद्ध, अग्निकोप और चोरों का भय होगा पर गुरु की दृष्टि अशुभफलों को न्यून करेगी। ग्रहण कार्तिक मास में होने से अग्नि से आजीविका वाले व्यवसायों की हानि का योग है, उत्तरप्रदेश, बिहार व उड़ीसा में जनता पीड़ित होगी। उड़ीसा व आंध्रप्रदेश में राजनीतिक उठापटक का योग है, सेना में क्षत्रियों को ताप होगा। कपास, वस्त्र उद्योग में मन्दी होगी, अनाज और दालों में तेजी होगी। यदि ग्रहण के ७ दिन के भीतर अच्छी वर्षा हो जाए तो सब अशुभफल नष्ट हो जाता है। एक ही महीने में सूर्यग्रहण के एक पक्ष बाद ८ नवम्बर को चन्द्रग्रहण हो रहा है जिस कारण ब्राह्मणों को यज्ञों के फल मिलेंगे और यज्ञ करने की रुचि होगी। सेना में हलचल मचेगी, राजनेताओं में विरोध होगा, पर जनता के लिए शुभ रहेगा।

इस खण्डग्रास सूर्यग्रहण का **राशिफल** इस प्रकार है :-

मेष-	स्त्री कष्ट	**वृष-**	सुखदायक	**मिथुन-**	चिन्ता
कर्क-	कष्ट	**सिंह-**	श्रीप्रद	**कन्या-**	क्षति
तुला-	घात	**वृश्चिक-**	हानि	**धनु-**	लाभप्रद
मकर-	सुखदायक	**कुम्भ-**	मानहानि	**मीन-**	मृत्युतुल्यकष्ट

देश के प्रमुख स्थानों का ग्रहण प्रारम्भ, मध्य व सूर्यास्त अधोलिखित है। (स्टै.टा. घं.मि.)

स्थान	ग्रहण स्पर्श	मध्य	सूर्यास्त	स्थान	ग्रहण स्पर्श	मध्य	सूर्यास्त
जयपुर	१६:३२	१७:३३	१७:५०	भुवनेश्वर	१६:५७	१७:१४	१७:१६
अलवर	१६:३१	१७:३२	१७:४६	भोपाल	१६:४२	१७:३८	१७:४७
अजमेर	१६:३२	१७:३३	१७:५५	अयोध्या	१६:३८	१७:२२	१७:२४
उदयपुर	१६:३६	१७:३५	१८:००	गोरखपुर	१६:३८	१६:५९	१७:१९
कोटा	१६:३६	१७:३५	१७:५१	कानपुर	१६:३७	१७:२९	१७:२२
जोधपुर	१६:३१	१७:३३	१८:०१	लखनऊ	१६:३५	१७:२७	१७:२८
नागौर	१६:२९	१७:३२	१७:५८	कलकत्ता	१६:५१	१७:०१	१७:०३
भरतपुर	१६:३३	१७:३३	१७:४३	लुधियाना	१६:२३	१७:२६	१७:४५
बीकानेर	१६:२७	१७:३०	१७:५८	इन्दौर	१६:४२	१७:३९	१७:५३
श्रीगंगानगर	१६:२३	१७:२७	१७:५४	बैंगलुरु	१७:१२	१७:४९	१७:५६
करौली	१६:३४	१७:३४	१७:४५	हैदराबाद	१६:५९	१७:४६	१७:४८
चित्तौड़गढ़	१६:३६	१७:३५	१७:५५	अहमदाबाद	१६:३८	१७:३७	१८:०६
झालावाड़	१६:३७	१७:३६	१७:५०	चेन्नई	१७:१४	१७:२९	१७:४५
मथुरा	१६:३३	१७:३३	१७:४३	देहरादून	१६:२६	१७:२८	१७:३७
दिल्ली	१६:२९	१७:३०	१७:४२	मुम्बई	१६:५०	१७:४३	१८:०९
गुड़गाँव	१६:२९	१७:३१	१७:४३	रायपुर	१६:५१	१७:३०	१७:३२
आगरा	१६:३२	१७:३३	१७:४०	श्रीनगर	१६:१४	१७:२१	१७:४५
हरिद्वार	१६:२६	१७:२९	१७:३७	सोनीपत	१६:२८	१७:३०	१७:४२
काशी	१६:४०	१७:१४	१७:२२	नासिक	१६:४८	१७:४२	१८:०५
पटना	१६:४३	१७:११	१७:१४	जबलपुर	१६:४५	१७:३४	१७:३७

* संवत् २०७९ के ग्रहण *

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

४. खग्रास चन्द्रग्रहण ०८ नवम्बर २०२२

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार (दिनांक ०८ नवम्बर २०२२ ई०) को लगेगा। जो भारत में खग्रास चन्द्रग्रहण ही दृश्य होगा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण आस्ट्रेलिया, एशिया, पैसेफिक भूभाग, उत्तरी और मध्य अमेरिका में दृश्य होगा। भारत में चन्द्रोदय के समय ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण के रूप में दिखाई देगा। पूर्वोत्तर भारत के सुदूर भाग में खग्रास चन्द्रग्रहण का मध्य दिवा १६:२९ से अल्प दृश्य वाला दिखाई पड़ेगा। जिसका मोक्ष सायं १७:१२ पूर्वी भूभाग में दिखाई पड़ेगा। चन्द्रोदय के अनुसार ही विभिन्न स्थानों पर खग्रास चन्द्रग्रहण दृश्य होगा। जयुपर में चन्द्रोदय रात्रि १७:४०, ग्रहण का खग्रास पूर्ण सायं १७:१२ तथा ग्रहण मोक्ष रात्रि १८:१९ पर होगा। **ग्रहण का सूतक प्रातः सूर्योदय से प्रारम्भ हो जाएगा**, सूतककाल के नियम आगे दिए हैं।

ग्रहणफलः – यह ग्रहण दक्षिणायन में होने से वैश्य व शूद्रों के लिए हानिकारक कहा है। यह ग्रहण मेष राशि व भरणी नक्षत्र में हो रहा है अतः मेष व भरणी के जातकों के लिए हानिकारक होगा। यह ग्रहण पंजाब, मथुरा, उड़ीसा, कश्मीर, उत्तरी पाकिस्तान क्षेत्र, और चीन में उत्पात व हानि करेगा। अग्नि से सम्बंधित आजीविका वाले पीड़ित होंगे। ग्रहदृष्टि अनुसार घी, शहद, तेल, पेट्रोल में तेजी होगी, फसलों को नुकसान होगा, अकाल, अवृष्टि व चोरों का भय होगा। ग्रहण कार्त्तिक मास में होने से अग्नि से आजीविका वाले व्यवसायों की हानि का योग है, उत्तरप्रदेश, बिहार व उड़ीसा में जनता पीड़ित होगी। उड़ीसा व आंध्रप्रदेश में राजनीतिक उठापटक का योग बनेगा, सेना में क्षत्रियों को ताप होगा। गेंहूँ में तुरन्त तेजी होगी, रुई-धागे में तेजी होगी। यदि ग्रहण के ७ दिन के भीतर अच्छी वर्षा हो जाए तो सब अशुभफल नष्ट हो जाता है। सूर्यग्रहण के एक पक्ष बाद ८ नवम्बर को चन्द्रग्रहण हो रहा है जिस कारण ब्राह्मणों को यज्ञों के फल मिलेंगे और यज्ञ करने की रुचि होगी।

इस **खग्रास चन्द्रग्रहण** का **राशिफल** इस प्रकार है :-

मेष-	आघात	**वृष-**	हानि	**मिथुन-**	लाभप्रद	**कर्क-**	सौख्य
सिंह-	मानहानि	**कन्या-**	अतिकष्ट	**तुला-**	स्त्री कष्ट	**वृश्चिक-**	सुखप्रद
धनु-	चिन्ता	**मकर-**	कष्ठ्व्यथा	**कुम्भ-**	श्रीदः	**मीन-**	क्षतिकारक

* अन्य प्रमुख स्थानों का चन्द्रोदय तथा ग्रास मान अधोलिखित है। (स्टै.टा. घं.मि.)

स्थान	चन्द्रोदय	ग्रहणमोक्ष	ग्रासमान	स्थान	चन्द्रोदय	ग्रहण मोक्ष	ग्रासमान
जयपुर	१७:४०	१८:१९	००:३९	काशी	१७:१०	१८:१९	०१:०९
जोधपुर	१७:४९	१८:१९	००:३०	मुम्बई	१८:०१	१८:१९	००:१८
उदयपुर	१७:५७	१८:१९	००:३०	सूरत	१७:५६	१८:१९	००:२३
बीकानेर	१७:४५	१८:१९	००:३४	कोलकत्ता	१६:५२	१८:१९	१०:२७
दिल्ली	१७:२९	१८:१९	००:५०	लखनऊ	१७:१६	१८:१९	०१:०३
मथुरा	१७:३०	१८:१९	००:५१	राँची	१७:०३	१८:१९	०१:१६
उज्जैन	१७:४३	१८:१९	००:३६	नासिक	१७:५६	१८:१९	००:२३

* ग्रहणकाल के सूतक आदि के नियम *

सूर्यग्रहण का सूतक ग्रहण आरम्भ से १२ घण्टे पहले और चन्द्रग्रहण का सूतक ९ घण्टे पहले लगता है। चन्द्रमा ग्रस्त अवस्था में उदित होता है तो सूर्योदय से ही सूतक होता है।

सूतक काल में वृद्ध, बालक और रोगी को छोड़कर किसीको भोजन नहीं करना चाहिए। पर ग्रहण आरम्भ होने के एक पहर पहले से बालक, वृद्ध व रोगी को भी भोजन न करना चाहिए। सूर्य ग्रस्त अवस्था में अस्त हो तो रात्रि में भोजन न करे अगले दिन ग्रहणमुक्त सूर्य का दर्शन कर ही भोजन करे।

सूतक काल में मन्दिर में दर्शन मङ्गल करदे व देवमूर्ति आदि का स्पर्श न करे। सूतक का पका अन्न ग्रहण करने योग्य नहीं रहता है। पर दूध, दही, घी, जल सूतक में दूषित नहीं होता है। जल, सब्जी आदि खाद्य पदार्थों में ग्रहण के पहले कुशा और तिल डाल देने से यह दूषित नहीं होते।

ग्रहण के समय में सोने, व मल-मूत्र त्याग का भी निषेध है। सोने से रोग, मूत्रत्याग से दरिद्रता व मलत्याग से अधम योनि, मैथुन से शूकर योनि, उबटन करने से चर्मरोग और भोजन करने से अधोगति मिलती है। ग्रहण काल में केवल जप, तप करना चाहिए। ग्रहण के जप-तप, स्नान-दान का चन्द्रग्रहण में लाख गुणा और सूर्यग्रहण में १० लाख गुणा फल होता है। यदि गंगा स्नान प्राप्त हो जाए तो चन्द्रग्रहण में करोड़ गुणा और सूर्यग्रहण में दस करोड़ गुणा पुण्य कहा है।

ग्रहण के आरम्भ से पूर्व स्नान करना चाहिए, ग्रहणकाल में जप, पूजापाठ, हवन, करना चाहिए और ग्रहण समाप्त होने पर वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए व अन्न, तिल, वस्त्र, स्वर्ण, गौ आदि का दान करना चाहिए। ग्रहण समाप्ति के उपरान्त मोक्षस्नान करके ही सूतक समाप्त होता है।

सूर्य व चन्द्रग्रहण में श्राद्ध अवश्य करना चाहिए, इसका अमोघ फल सब शास्त्रों में कहा है। ग्रहण में श्राद्ध सूखे अन्न, घी व दक्षिणा से संकल्पपूर्वक करना चाहिए। आश्विन कृष्णपक्ष पृष्ठ पर आमान्न श्राद्ध की संक्षिप्त विधि दी है जो ग्रहणश्राद्ध में उपयोगी है।

जिसकी जन्मराशि या जन्मनक्षत्र पर ग्रहण हो, या ४,८,१२ वीं राशि पर ग्रहण हो उसको ग्रहण बहुत अनिष्टकारक होता है, उसे निम्न प्रकार से शान्ति व दान करना चाहिए। चन्द्रग्रहण में चाँदी का चन्द्रबिंब व सोने का सर्पबिम्ब बनवाए व सूर्यग्रहण में सोने के सूर्य और सर्पबिम्ब बनवाकर घी से पूर्ण किये ताम्बे या काँसे के पात्र में स्थापित कर तिल, वस्त्र, दक्षिणा आदि लेकर संकल्प करे **'ममजन्मराशि-जन्मनक्षत्रस्थित अमुकग्रहणसूचित सर्वानिष्टप्रशान्तिपूर्वकं एकादशस्थानस्थित-ग्रहणसूचित-शुभफलावाप्तये बिम्बदानं करिष्ये।'** फिर सूर्य, चन्द्र और राहु केतु को प्रणाम कर पढ़े,

तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन। हेमता प्रदानेन मम शांतिप्रदो भव ।।

विधुंतुंद नमस्तुभ्यं सिंहिकानन्दनाच्युत। दानेमानेन नागस्य रक्ष मां वेधजायान्।।

फिर इस दानवाक्य से ब्राह्मण को उपर्युक्त दान प्रदान करे, **'इदं सौवर्णं राहुबिम्बंनागं सौवर्ण रविबिम्बं/ राजतं चन्द्रबिम्बं वा घृतपूर्णताम्र/कांस्यपात्रनि हितं यथाशक्ति तिलवस्त्रदक्षिणासहितं ग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थं शुभफलप्राप्त्यर्थं च तुभ्यमहं सम्प्रददे।'**

सूर्यग्रहण में तुला, कन्या, वृष, मकर राशि व स्वाती नक्षत्र के जातकों को, व चन्द्रग्रहण में मेष, कर्क, वृश्चिक, मीन व भरणी नक्षत्र के जातकों को ग्रहणदुष्फल शान्ति हेतु यह करना चाहिए।

❊ संवत् २०७९ के व्रत-पर्व ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ पक्षों का आरम्भ दिन ❊

चैत्र शुक्ल	२ अप्रैल
वैशाख कृष्ण	१७ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	१ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	१७ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	३१ मई
आषाढ़ कृष्ण	१५ जून
आषाढ़ शुक्ल	३० जून
श्रावण कृष्ण	१४ जुलाई
श्रावण शुक्ल	२९ जुलाई
भाद्र. कृष्ण	१३ अगस्त
भाद्र. शुक्ल	२८ अगस्त
आश्विन कृष्ण	११ सितम्बर
आश्विन शुक्ल	२६ सितम्बर
कार्तिक कृष्ण	१० अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल	२६ अक्टूबर
मार्ग. कृष्ण	९ नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	२४ नवम्बर
पौष कृष्ण	९ दिसम्बर
पौष शुक्ल	२४ दिसम्बर

२०२३

माघ कृष्ण	७ जनवरी
माघ शुक्ल	२२ जनवरी
फाल्गु. कृष्ण	६ फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	२१ फरवरी
चैत्र कृष्ण	८ मार्च

❊ एकादशी व्रत ❊

चैत्र शुक्ल	१२ अप्रैल
चैत्र शुक्ल	१३ अप्रैल(निम्बार्क)
वैशाख कृष्ण	२६ अप्रैल
वैशाख कृष्ण	२७ अप्रैल (निम्बार्क)
वैशाख शुक्ल	१२ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	२६ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	१० जून
ज्येष्ठ शुक्ल	११ जून (निम्बार्क)
आषाढ़ कृष्ण	२४ जून
आषाढ़ कृष्ण	२५ जून (निम्बार्क)
आषाढ़ शुक्ल	१० जुलाई
श्रावण कृष्ण	२४ जुलाई
श्रावण शुक्ल	८ अगस्त
भाद्र. कृष्ण	२२ अगस्त
भाद्र. कृष्ण	२३अगस्त (निम्बार्क)
भाद्र. शुक्ल	६ सितम्बर
भाद्र. शुक्ल	७ सितम्बर (निम्बार्क)
आश्विन कृष्ण	२१ सितम्बर
आश्विन शुक्ल	६ अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण	२१ अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल	४ नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	१९ नवम्बर (स्मार्त्त)
मार्ग.कृष्ण	२० नवम्बर (वैष्णव)
मार्ग. शुक्ल	३ दिसम्बर
पौष कृष्ण	१९ दिसम्बर
पौष शुक्ल	२ जनवरी २०२३
माघ कृष्ण	१८ जनवरी २०२३
माघ शुक्ल	१ फरवरी २०२३
फाल्गु. कृष्ण	१६ फरवरी २०२३
फाल्गु. शुक्ल	३ मार्च २०२३
चैत्र कृष्ण	१८ मार्च २०२३

❊ प्रदोष व्रत ❊

चैत्र शुक्ल	१४ अप्रैल
वैशाख कृष्ण	२८ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	१३ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	२७ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	१२ जून
आषाढ़ कृष्ण	२६ जून
आषाढ़ शुक्ल	११ जुलाई
श्रावण कृष्ण	२५ जुलाई
श्रावण शुक्ल	९ अगस्त
भाद्र. कृष्ण	२४ अगस्त
भाद्र. शुक्ल	८ सितम्बर
आश्विन कृष्ण	२३ सितम्बर
आश्विन शुक्ल	७ अक्टूबर
कार्तिक कृष्ण	२२ अक्टूबर
कार्तिक शुक्ल	५ नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	२१ नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	५ दिसम्बर
पौष कृष्ण	२१ दिसम्बर

२०२३

पौष शुक्ल	४ जनवरी
माघ कृष्ण	१९ जनवरी
माघ शुक्ल	३ फरवरी
फाल्गु. कृष्ण	१८ फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	४ मार्च
चैत्र कृष्ण	१९ मार्च

❊ संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत❊

वैशाख कृष्ण	१९ अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	१९ मई
आषाढ़ कृष्ण	१७ जून
श्रावण कृष्ण	१६ जुलाई
भाद्र. कृष्ण	१५अगस्त
आश्विन कृष्ण	१३ सितम्बर
कार्तिक कृष्ण	१३ अक्टूबर
मार्ग. कृष्ण	११ नवम्बर
पौष कृष्ण	११ दिसम्बर
माघ कृष्ण	१० जनव. २०२३
फाल्गु. कृष्ण	९ फरवरी २०२३
चैत्र कृष्ण	१० मार्च २०२३

❊वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत❊

चैत्र शुक्ल	५ अप्रैल
वैशाख शुक्ल	४ मई
ज्येष्ठ शुक्ल	३ जून
आषाढ़ शुक्ल	२ जुलाई
श्रावण शुक्ल	१ अगस्त
भाद्र. शुक्ल	३१ अगस्त
आश्विन शुक्ल	२९ सितम्बर
कार्तिक शुक्ल	२८ अक्टूबर
मार्ग. शुक्ल	२७ नवम्बर
पौष शुक्ल	२६ दिसम्बर
माघ शुक्ल	२५ जनव. २०२३
फाल्गु. शुक्ल	२३ फरव. २०२३

❊ चन्द्र पूर्णिमा व्रत ❊

चैत्र	१६ अप्रैल
वैशाख	१५ मई
ज्येष्ठ	१३ जून
आषाढ़	१३ जुलाई
श्रावण	११ अगस्त
भाद्रपद	९ सितम्बर
आश्विन	९ अक्टूबर
कार्तिक	७ नवम्बर
मार्गशीर्ष	७ दिसम्बर
पौष	६ जनवरी २०२३
माघ	५ फरवरी २०२३
फाल्गुन	६ मार्च २०२३

❊ सत्यनारायण पूर्णिमा❊ (स्नान-दान)

चैत्र	१६ अप्रैल
वैशाख	१६ मई
ज्येष्ठ	१४ जून
आषाढ़	१३ जुलाई
श्रावण	१२ अगस्त
भाद्रपद	१० सितम्बर
आश्विन	९ अक्टूबर
कार्तिक	८ नवम्बर
मार्गशीर्ष	८ दिसम्बर
पौष	६ जनवरी २०२३
माघ	५ फरवरी २०२३
फाल्गुन	७ मार्च २०२३

※ संवत् २०७९ के व्रत-पर्व, सूर्यनक्षत्रप्रवेश आदि ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

※ मासिक शिवरात्रियाँ ※

(कृष्ण चतुर्दशी)

वैशाख	२९ अप्रैल
ज्येष्ठ	२८ मई
आषाढ़	२७ जून
श्रावण	२६ जुलाई
भाद्रपद	२५ अगस्त
आश्विन	२४ सितम्बर
कार्त्तिक	२३ अक्टूबर
मार्गशीर्ष	२२ नवम्बर
पौष	२१ दिसम्बर
माघ	२० जनवरी २०२३
फाल्गुन	१८ फरवरी २०२३
चैत्र	२० मार्च २०२३

※ मासिक कालाष्टमी ※

(कृष्णपक्ष)

वैशाख	२३ अप्रैल
ज्येष्ठ	२२ मई
आषाढ़	२१ जून
श्रावण	२० जुलाई
भाद्रपद	१९ अगस्त
आश्विन	१७ सितम्बर
कार्त्तिक	१७ अक्टूबर
मार्गशीर्ष	१६ नवम्बर
पौष	१६ दिसम्बर
माघ	१४ जनवरी २०२३
फाल्गुन	१३ फरवरी २०२३
चैत्र	१४ मार्च २०२३

※ पितृकार्य अमावस्या ※

(श्राद्ध)

चैत्र	२१ मार्च
वैशाख	३० अप्रैल
ज्येष्ठ	३० मई
आषाढ़	२८ जून
श्रावण	२८ जुलाई
भाद्रपद	२६ अगस्त
आश्विन	२५ सितम्बर
कार्त्तिक	२५ अक्टूबर
मार्गशीर्ष	२३ नवम्बर
पौष	२३ दिसम्बर
माघ	२१ जनवरी २०२३
फाल्गुन	२० फरवरी २०२३

※ देवकार्य अमावस्या ※

(स्नान दान)

चैत्र	२१ मार्च
वैशाख	३० अप्रैल
ज्येष्ठ	३० मई
आषाढ़	२९ जून
श्रावण	२८ जुलाई
भाद्रपद	२७ अगस्त
आश्विन	२५ सितम्बर
कार्त्तिक	२५ अक्टूबर
मार्गशीर्ष	२३ नवम्बर
पौष	२३ दिसम्बर
माघ	२१ जनवरी २०२३
फाल्गुन	२० फरवरी २०२३

※ सूर्यनक्षत्रप्रवेश ※

अश्विनी	१४ अप्रैल	११:०० बजे
भरणी	२७ अप्रैल	०३:१७ बजे
कृत्तिका	११ मई	२२:१८ बजे
रोहिणी	२५ मई	१९:२८ बजे
मृगशिरा	८ जून	१९:१३ बजे
आर्द्रा	२२ जून	२०:०८ बजे
पुनर्वसु	६ जुलाई	२१:५१ बजे
पुष्य	२० जुलाई	२३:२० बजे
आश्लेषा	३ अगस्त	२३:४१ बजे
मघा	१७ अगस्त	२२:२० बजे
पू.फा.	३१ अगस्त	१८:४८ बजे
उ.फा.	१४ सितम्बर	१२:४२ बजे
हस्त	२८ सितम्बर	०३:४८ बजे
चित्रा	११ अक्टूबर	१६:०४ बजे
स्वाती	२५ अक्टूबर	०१:३८ बजे
विशाखा	७ नवम्बर	०८:४१ बजे
अनुराधा	२० नवम्बर	१३:३४ बजे
ज्येष्ठा	३ दिसम्बर	१६:४७ बजे
मूल	१६ दिसम्बर	१८:३३ बजे
पूर्वाषाढ़	२९ दिसम्बर	१९:३१ बजे
	२०२३	
उ.षाढ़	११ जनवरी	२०:१४ बजे
श्रवण	२४ जनवरी	२१:२८ बजे
धनिष्ठा	६ फरवरी	२३:४४ बजे
शतभिषा	२० फरवरी	०३:२९ बजे
पू.भाद्र.	५ मार्च	०९:०९ बजे
उ.भाद्र.	१८ मार्च	१७:०९ बजे

※ पंचक ※

२५ अप्रैल	०८:०२ से	२९ अप्रैल	१८:५२ तक
२२ मई	१६:०३ से	२७ मई	०२:२८ तक
१८ जून	२४:११ से	२३ जून	१०:१२ तक
१६ जुलाई	०८:२० से	२० जुलाई	१७:५६ तक
१२ अगस्त	१६:२५ से	१७ अगस्त	०१:३६ तक
९ सितम्बर	००:२४ से	१३ सितम्बर	१२:१४ तक
६ अक्टूबर	०८:२१ से	१० अक्टूबर	१६:४८ तक
२ नवम्बर	१६:२४ से	७ नवम्बर	००:३० तक
३० नवम्बर	००:३६ से	४ दिसम्बर	०८:२५ तक
२७ दिसम्बर	०८:५८ से	३१ दिसम्बर	१६:२८ तक
२३ जनवरी	१७:१९ से	२८ जनवरी	००:२९ तक
२० फरवरी	०१:३२ से	२४ फरवरी	०८:२३ तक
१९ मार्च	०९:३५ से	वर्षान्त तक	–

※ त्रिपुष्कर योग ※

२३ अप्रैल	०६:०० से	२३ अप्रैल	०९:४६ तक
२६ अप्रैल	२६:१९ से	२७ अप्रैल	०५:५७ तक
१ मई	२६:१४ से	२ मई	०५:५२ तक
११ जून	२३:१० से	११ जून	२३:४९ तक
२५ जून	१२:१७ से	अगले सूर्योदय तक	
५ जुलाई	१४:५६ से	अगले सूर्योदय तक	
१४ अगस्त	२६:४० से	१४ अगस्त	२७:१८ तक
२३ अगस्त	११:३८ से	अगले सूर्योदय तक	
२८ अगस्त	२२:१७ से	अगले सूर्योदय तक	
६ सितम्बर	२४:१४ से	७ सितम्बर	०६:११ तक
१६ अक्टूबर	२५:४३ से	१७ अक्टूबर	०६:३० तक
२२ अक्टूबर	१२:५८ से	२२ अक्टूबर	१६:०२ तक
२० दिसम्बर	०७:१६ से	२० दिसम्बर	२१:०८ तक
२४ दिसम्बर	२५:०४ से	२५ दिसम्बर	११:३१ तक
१२ फरवरी	२२:३८ से	१२ फरवरी	२९:१० तक
२१ फरवरी	११:१५ से	अगले सूर्योदय तक	
२६ फरवरी	०८:२७ से	२६ फरवरी	२९:०५ तक

✻ संवत् २०७९ के संदिग्ध व्रत पर्व निर्णय ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

✻ गंगा दशहरा- ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष दशमी, ९ जून को गंगा दशहरा मनाया जाएगा। यह १० योग में जब ज्यादा योग प्राप्त हों तब मनाई जाती है, ९ जून को १० में से ८ योग प्राप्त हो रहे हैं :- १. ज्येष्ठमास २. शुक्लपक्ष ३. हस्त नक्षत्र ४. व्यतीपात योग, ५. कन्या राशिस्थ चन्द्र ६. वृष राशिस्थ सूर्य ७. गर करण ८. दशमी तिथि। केवल बुधवार व आनन्द योग नहीं मिल रहा है।

✻ आषाढ़ शुक्ल वैनायकी गणेश चतुर्थी - २ जुलाई को तृतीया १२:२७ तक है व ३ जुलाई को चतुर्थी १३:४५ तक है अतः चतुर्थी दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो रही है। ऐसे में धर्मसिन्धु के वचन, 'दिनद्वयेमध्याह्नव्यापित्वे.. तृतीयायोगप्राशस्त्यात्' अनुसार तृतीयासंयुता चतुर्थी गणेश व्रत में ग्राह्य होने से २ जुलाई को वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत होगा।

✻ रक्षाबन्धन- रक्षाबन्धन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। भद्रा में श्रावणी करने से राजा की हानि होती है। ''भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।।'' - निर्णयसिन्धु

निर्णयसिन्धु में कहा है, भद्रा उतरने पर रात्रि में भी रक्षाबन्धन किया जा सकता है, 'इदं भद्रायां न कार्यम्। तत्सत्त्वे तु रात्रावपि तदन्ते कुर्यादिति निर्णयामृते। इदं प्रतिपद्युतायां न कार्यम्।' श्रावण पूर्णिमा ११ अगस्त को रात्रि २०:२६ तक भद्रा है अतः इसके बाद रात्रि में ही रक्षाबन्धन किया जा सकेगा।

✻ गोवर्धन- प्रायः दीपावली के अगले दिन ही गोवर्धन मनाया जाता है। यह अमावस्या युक्त प्रतिपदा गौक्रीड़ा गोवर्धन में ग्राह्य होती है, परन्तु इस वर्ष दीपावली २४ अक्टूबर के अगले दिन २५ अक्टूबर को सूर्यग्रहण पड़ रहा है, जिसका सूतक सूर्योदय से ही रहेगा, इस कारण अन्नकूट आदि उत्सव करना असम्भव होगा। २५ अक्टूबर को १६:०२ तक अमावस्या है व २६ अक्टूबर को १५:०४ तक प्रतिपदा है। यद्यपि गौक्रीड़ा गोवर्धन उत्सव चन्द्रदर्शन निषेध होने से पूर्वविद्धा प्रतिपदा में कहा है, तब भी चन्द्र का स्थूल दर्शन द्वितीया की १२ घटी बाद होता है, जो २६ अक्टूबर को १९:५२ का समय सूर्यास्त के बाद का है। ऐसी स्थिति में यदि प्रतिपदा के पर्व का सामान्य निर्णय देखें तो स्कन्दपुराण में कहा है, जो प्रतिपदा तिथि दिनमान के पांच में से चौथे भाग अर्थात् अपराह्न में हो तो निःसन्देह वही ग्रहण करे, 'प्रतिपत्संमुखी कार्या या भवेदपराह्निकी'। २५ अक्टूबर को अपराह्न में प्रतिपदा नहीं है, २६ अक्टूबर को ही अपराह्न में प्रतिपदा है, अतः इस दृष्टि से २६ अक्टू० को गोवर्धन प्रशस्त कहा जा सकता है। और भी धर्मसिन्धु ने कहा है कि बलिपूजा गोवर्धन आदि कृत्य किसी कारण पूर्वविद्धा प्रतिपदा में नहीं कर सके तो परविद्धा प्रतिपदा में करें परंतु कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए और द्वितीया तिथि में नहीं करना चाहिए। 'बलिपूजादेःकेनचिन्निमित्तेन पूर्वविद्धायाम-नुष्ठानासंभवे परविद्धायामनुष्ठानंकार्यं नतु कर्मत्यागः तिथ्यन्तर परिग्रहोवा'। निर्णयसिन्धु में कहा है, 'प्रातर्गोवर्धनं पूजयेत्।' इस कारण से २६ अक्टूबर को अपराह्न १५:०४ से पूर्व ही प्रतिपदा में गोवर्धन व अन्नकूट महोत्सव करना शास्त्रसम्मत रहेगा।

✻ फाल्गुन कृष्ण प्रदोष- १७ फरवरी २०२३ को सूर्यास्त १८:१६ पर है व द्वादशी प्रदोषकाल का अतिक्रमण करके २०:३० तक है। अगले दिन १८ फरवरी को त्रयोदशी सूर्यास्त १८:१७ से पूर्व ही १८:०८ पर समाप्त हो रही है। अतः प्रदोषकाल में दोनों दिन त्रयोदशी की अव्याप्ति है। निर्णयसिन्धु में कहा है, 'त्रयोदशी तु सर्वमते शुक्ला पूर्वा कृष्णोत्तरा।', 'त्रयोदशतिथिः पूर्वः सितोत्थोऽथासितः पश्चात्' इति दीपिकोक्तेः' सबके मत में उपवास में त्रयोदशी शुक्लपक्ष की पूर्वा और कृष्णपक्ष की उत्तरा ग्राह्य होती है। परतिथि को ग्रहण करने से कृष्णपक्ष का दुर्लभ शनि प्रदोष भी मिल रहा है, 'मन्दवारे कृष्णपक्षेऽति प्रशस्तम्', अतः १८ फरवरी को शनिप्रदोष का व्रत शास्त्रसम्मत है।

✻ होलिका दहन मुहूर्त्त का सूक्ष्म शास्त्रीय विचार ✻

होलिका दहन फाल्गुन शुक्लपक्ष की भद्रारहित प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को ग्राह्य है। धर्मशास्त्र के सूक्ष्म विचार से ज्ञात होता है कि इस वर्ष ६ मार्च २०२२ में रात्रि २९:१८ के पश्चात् अर्थात् ७ मार्च २०२२ को प्रातः ०५:१८ से सूर्योदय ६:५१ पूर्व ही शुद्धतम होलिका दहन मान्य होगा।

दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिकां तत्र पूजयेत्।। - भविष्योत्तर
अर्थात् यदि पहले दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्तसे पूर्व पूर्णिमा समाप्त हो जाए तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके सूर्योदय होने से पहले रात्रि में होलिकादाह करना चाहिए।

श्रीजयसिंह कल्पद्रुम में भविष्योत्तरपुराण के उपरोक्त प्रमाण से स्पष्ट लिखा है कि - **'यदा तु प्रदोषे पूर्वदिने भद्रा भवति परदिने चास्तात्पूर्वमेव पंचदशी समाप्यते तदा सूर्योदयात्पूर्वं भद्रान्तं प्रतीक्ष्य होलिका दीपनीया।'** यही जयपुर की प्राचीन परंपरा यही रही है, देर रात्रि भद्रा उतरने पर २, ३, ५ बजे होलिकादहन सभी ने देखा है, परन्तु आज मनुष्यों की सुविधा का विचार कर शास्त्र के स्पष्ट तथ्यों व परम्परा को त्यागा जा रहा है व प्रमाणाभास के आधार पर सायं भद्रा के समय ही होलिकादहन करने का मिथ्या निर्णय दिया जा रहा है। भद्रा में होलिकादहन कथमपि शास्त्रसम्मत नहीं है क्योंकि-

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा । श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।। - निर्णयसिन्धु
श्रावणी कर्म और फाल्गुनी पूर्णिमा पर होलिकादन भद्रा होने पर नहीं करना चाहिए। भद्रा में श्रावणी करने से राजा की हानि तथा होलिकादहन से ग्राम दहन का भय उत्पन्न होता है।

नन्दायां नरकं घोरं भद्रायां देशनाशनम्। दुर्भिक्षं च चतुर्दश्यां करोत्येव हुताशनः।। -विद्याविनोद
प्रतिपदा में होलिकादाह से नरक, भद्रा में करने से देशनाश, और चतुर्दशी में दुर्भिक्ष होता है।

प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा। संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्भुतम्।। - चन्द्रप्रकाश
प्रतिपदा, चतुर्दशी, भद्रा और दिन, इनमें होली जलाना सर्वथा त्याज्य है। कुयोगवश यदि जला दी जाए तो वहाँ के राज्य, नगर और मनुष्य अद्भुत उत्पातों से एक ही वर्ष में हीन हो जाते हैं।

भद्रायां दीपिता होली राष्ट्रभंगं करोति वै। - पुराणसमुच्चय, भद्रा में होलीदाह से राष्ट्रभंग होता है।

अतः उपर्युक्त प्रचुर प्रमाणों से सिद्ध है कि पूर्णिमाव्यापिनी रात्रिपर्यन्त कभी भी भद्रारहित काल मिलने पर भद्रा में होलिका दाह पूर्णतः शास्त्रविरुद्ध एवं अनिष्टकारी है। जब लोगों द्वारा रातभर अनेक आयोजन किए जा सकते हैं तो क्या वे होलिकादहन के लिए एक रात्रि मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं कर सकते?

भद्रा पुच्छकाल में होलिका दहन केवल तब ही होता है जब यदि पहले दिन भद्रारहित प्रदोष न मिले, रात्रिभर भद्रा रहे (सूर्योदय होने से पहले न उतरे) और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही पूर्णिमा समाप्त हो जाए, तो ऐसे अवसर में सूर्योदय पूर्व भद्रा के पुच्छकाल में होलिकादीपन कर देना चाहिए।

पर चूँकि भद्राकाल सूर्योदय पर्यन्त व्याप्त नहीं है और रात्रिशेष २९:१८ पर ही समाप्त हो रहा है अतः रात्रि २९:१८ से पहले होलिका दहन शास्त्र एवं परम्परा के विरुद्ध होगा। जो पंचांग अभी कुछ वर्ष पूर्व तक भद्राबाद देर रात्रि होलिकादहन मुहूर्त्त देते आ रहे थे, अब किस नवीन दिव्यज्ञान के आधार पर भद्रा में होलीदाह का निर्णय दे रहे हैं? अपनी सुविधा हेतु शास्त्रवचनों व परम्परा का अनादर कथमपि कल्याण का हेतु नहीं है। अतः ७ मार्च २०२२ को सूर्योदयपूर्व ०५:१८ पश्चात् शास्त्रवचन एवं परम्परासिद्ध उत्तम मुहूर्त्त में होलिकादीपन कर उत्तम शुभफल की प्राप्ति करें ।

✻ चैत्र कृष्णपक्ष संकष्टी गणेश चतुर्थी संकष्टी गणेश चतुर्थी में चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी ग्राह्य है (संकष्ट-चतुर्थीचन्द्रोदयव्यापिनीग्राह्या- धर्मसिन्धु), १० मार्च को तृतीया २०:३५ तक है व चन्द्रोदय २१:१३ के समय चतुर्थी व्याप्त है, अगले दिन चन्द्रोदय के समय पंचमी है। अतः संकष्टी व्रत १० मार्च को होगा।

※ विवाह मुहूर्त्त २०७९ ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

※ **विवाह के मास-** चैत्र (मेषकासूर्य), वैशाख (वृषकासूर्य), ज्येष्ठ (वृष-मिथुनकासूर्य), आषाढ़ (मिथुनकासूर्य, शुक्लदशमीतक), कार्तिक (वृश्चिककासूर्य), मार्गशीर्ष (वृश्चिककासूर्य), पौष (मकरकासूर्य), माघ (मकरकासूर्य), फाल्गुन (कुम्भकासूर्य)। कार्तिक व पौष में प्रायः वृश्चिक और मकर का सूर्य नहीं मिलता है। ※ **वर्जित मास-** श्रावण, भाद्रपद, आश्विन।

※ **विवाह के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि, मंगल वर्जित)।

※ **विवाह तिथियाँ-** २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३

※ **विवाह नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती।

※ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त-** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा।

※ मृत्युबाण में विवाह वर्जित होता है। सूर्य के १, १०, १९, २८ गतांश पर मृत्युबाण होता है।

※ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त नक्षत्र चतुष्टयी** को मुहूर्तों में सम्मिलित किया गया है।

※ **विवाह हेतु वर्जित काल :-** ※ **मीन मलमास -** वर्षारम्भ से १४ अप्रैल २०२२ तक। ※ **देवशयन काल-** १० जुलाई से ४ नवम्बर २०२२ तक ※ **कर्क संक्रान्ति दोष-** १७ जुलाई २०२२ से।
※ **शुक्र अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल - २८ सितम्बर से २७ नवम्बर २०२२ तक
※ **धनु मलमास -** १६ दिसम्बर २०२२ से १४ जनवरी २०२३
※ **होलाष्टक -** २७ फरवरी से ७ मार्च तक
※ **मीन मलमास-** १५ मार्च २०२३ से वर्षान्त तक

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
१९ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ३ मंगलवार	अनुराधा	मेष	वृश्चिक	मीन	।ऽ।ऽऽ।।।।।	७	गोधूलि,	धनु- २३:०४-२५:१०
२० अप्रैल	वैशाख कृष्ण ४ बुधवार	मूल	मेष	धनु	मीन	।।।।।ऽऽऽ।।	७	गोधूलि,	मीन- २८:२०-२९:४२
२१ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ५ गुरुवार	मूल	मेष	धनु	मीन	।।।।।ऽऽऽ।।	७	मेष ०५:४२-०७:१८, मिथुन ०९:१३-११:२७,	गोधूलि, वृश्चिक २०:३८-२२:५७
२२ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ६ शुक्रवार	उ.षा.	मेष	धनु/ मकर	मीन	ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	७	-	वृश्चिक २०:३४-२२:५३ मीन २८:१२-२९:३४
२३ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ७ शनिवार	उ.षा.	मेष	मकर	मीन	ऽ।।।।ऽ।ऽ।।	७	मिथुन ०९:०५-११:१९	
२ मई	वैशाख शुक्ल ३ सोमवार	रोहिणी	मेष	वृष	मीन	ऽ।।।।।।।।।	९	-	मकर/कुम्भ २४:१९-२७:३२ मेष २८:५८-३०:३४
३ मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार	रोहिणी	मेष	वृष	मीन	ऽ।।।।।।।।।	९	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	
९ मई	वैशाख शुक्ल ८ सोमवार	मघा	मेष	सिंह	मीन	।।।।ऽऽ।।ऽ।	७	गोधूलि, वृश्चिक १९:२७-२१:४६, कुम्भ २५:३६-२७:०५, मेष २८:३१-३०:०७	
१० मई	वैशाख शुक्ल ९ मंगलवार	मघा	मेष	सिंह	मीन	।।।।ऽ।।।ऽ।	८	मिथुन ०७:५८-१०:१२	-

✻ विवाह मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
११ मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार	उ.फा.	मेष	सिंह/कन्या	मीन	।।ऽ।ऽऽ।।ऽ।	६	-	धनु २१:३८-२३:४३ मीन २६:५७-२८:१९
१२ मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरूवार	हस्त	मेष	कन्या	मीन	।।।ऽऽ।ऽ।।।	७	-	धनु/मकर २१:३४-२५:२४
१३ मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार	हस्त	मेष	कन्या	मीन	।।।ऽऽ।ऽ।।।	७	वृष/मिथुन ०५:५१-१०:०१	-
१८ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ३ बुधवार	मूल	वृष	धनु	मीन	।।।।।।।।।ऽ	९	-	मकर २३:१६-२५:००
२० मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्रवार	उ.षा.	वृष	मकर	मीन	।।।।।ऽ।ऽ।।	८	वृष ०५:२३-०७:१९ कर्क ०९:३३-११:५३	गोधूलि, धनु २१:०२-२३:०८
२५ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १० बुधवार	उ.भा.	वृष	मीन	मीन	।।ऽ।।।।ऽ।।	८	कर्क ०९:१३-११:३४	-
२६ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरूवार	रेवती	वृष	मीन	मीन	।।।।।ऽ।ऽ।।	८	-	धनु/मकर २०:३९-२४:२९
३१ मई	ज्येष्ठ शुक्ल १ मंगलवार	मृगशिरा	वृष	वृष	मीन	।।।।।ऽ।।।।	९	गोधूलि	मकर उत्तरार्ध २३:१५-००:०९
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल २ बुधवार	मृगशिरा	वृष	मिथुन	मीन	।।।।।।।।।।	१०	कर्क ०८:४६-११:०६	-
५ जून	ज्येष्ठ शुक्ल ६ रविवार	मघा	वृष	सिंह	मीन	।।।।ऽऽऽऽ।।	६	-	कुम्भ २३:५०-२५:१९ मेष/वृष २६:४५-३०:१६
६ जून	ज्येष्ठ शुक्ल ७ सोमवार	मघा	वृष	सिंह	मीन	।।।।ऽ।।ऽ।।	८	मिथुन/कर्क ०६:१२-१०:४६	धनु १९:५६-२२:०१
९ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार	हस्त	वृष	कन्या	मीन	।।।।ऽ।।ऽ।।	८	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	

❊ विवाह मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
११ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवार	स्वाती	वृष	तुला	मीन	।।।।।ऽऽ।।।	८	गोधूलि	धनु/मकर १९:३६-२३:२६
१२ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १३ रविवार	अनुराधा	वृष	वृश्चिक	मीन	।।।ऽऽ।।।।।	८	गोधूलि	कुम्भ २३:२२-२५:५१ मेष/वृष २६:१७-२९:४८
१३ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १४ सोमवार	अनुराधा	वृष	वृश्चिक	मीन	।।।ऽऽ।।।।।	८	कर्क ०७:५९-१०:१९	-
४ जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ५ सोमवार	मघा ०६:०३ तक	मिथुन	सिंह	मीन	ऽ।।।ऽऽ।ऽ।।	६	मिथुन ०४:२३-०६:०३	-
८ जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ९ शुक्रवार	स्वाती	मिथुन	तुला	मीन	।।।।ऽऽ।।।।	८	-	मकर १९:५६-२१:४०
४ नवम्बर	कार्तिक शुक्ल ११ शुक्रवार	पू.भा.	तुला	कुम्भ	मीन	**देवोत्थान एकादशी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**			
२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार	उ.भा.	वृश्चिक	मीन	मीन	।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ	६	-	कन्या २५:१८-०३:३३
८ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १५ गुरुवार	मृगशिरा	वृश्चिक	वृष/मिथुन	मीन	।ऽ।।ऽ।।ऽ।।	७	-	कन्या २४:५४-२७:०९
९ दिसम्बर	पौष कृष्ण १ शुक्रवार	मृगशिरा	वृश्चिक	मिथुन	मीन	।ऽ।।ऽऽ।ऽ।।	६	धनु ०७:४२-०९:४८, मीन १३:०२-१४:२८	-
१४ दिसम्ब	पौष कृष्ण ६ बुधवार	मघा	वृश्चिक	सिंह	मीन	ऽऽ।।ऽ।ऽ।।।	६	धनु ०७:२३-०९:२८	-
२५ जनवरी	माघ शुक्ल ४ बुधवार	उ.भा.	मकर	मीन	मीन	।।ऽ।।ऽ।ऽ।।	७	-	धनु २८:३७-३०:४३
२६ जनवरी	माघ शुक्ल ५ गुरुवार	रेवती	मकर	मीन	मीन	।।।।।।।।।।	१०	-	धनु/मकर २८:३३-३१:२१

✻ विवाह मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

<table>
<tr><th rowspan="2">दिनांक</th><th rowspan="2">मास पक्ष तिथि वार</th><th rowspan="2">चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)</th><th rowspan="2">सूर्य राशि</th><th rowspan="2">चन्द्र राशि</th><th rowspan="2">गुरु राशि</th><th rowspan="2">लतादि दशदोष रेखा दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।</th><th rowspan="2">रेखा संख्या</th><th colspan="2">विवाह लग्न समय</th></tr>
<tr><th>दिवा लग्न</th><th>रात्रि लग्न</th></tr>
<tr><td>२७ जनवरी</td><td>माघ शुक्ल ६ शुक्रवार</td><td>रेवती</td><td>मकर</td><td>मीन</td><td>मीन</td><td>||||||||||</td><td>१०</td><td>मकर/कुम्भ ०६:३५-०९:४८, गोधूलि,</td><td>मेष/वृष/मिथुन- ११:१४-१७:००</td></tr>
<tr><td>३१ जनवरी</td><td>माघ शुक्ल १० मंगलवार</td><td>रोहिणी</td><td>मकर</td><td>वृष</td><td>मीन</td><td>|||||ऽ||ऽ|</td><td>८</td><td>-</td><td>तुला २३:३६-२५:५५</td></tr>
<tr><td>६ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण १ सोमवार</td><td>मघा</td><td>मकर</td><td>सिंह</td><td>मीन</td><td>ऽ|||ऽ||ऽ||</td><td>७</td><td>-</td><td>तुला २३:१२-२५:३१, धनु/मकर २७:५०-०७:१६</td></tr>
<tr><td>९ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण ४ गुरुवार</td><td>उ.फा.</td><td>मकर</td><td>कन्या</td><td>मीन</td><td>||||ऽ|||||</td><td>९</td><td>कुम्भ ०७:२८-०८:५७, वृष/मिथुन ११:५९-१६:०८</td><td>गोधूलि</td></tr>
<tr><td>९ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण ४ गुरुवार</td><td>हस्त</td><td>मकर</td><td>कन्या</td><td>मीन</td><td>|||ऽऽऽ|ऽ||</td><td>६</td><td>-</td><td>तुला २३:००-२५:१९, धनु/मकर २७:३८-३१:१४</td></tr>
<tr><td>१० फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण ५ शुक्रवार</td><td>हस्त</td><td>मकर</td><td>कन्या</td><td>मीन</td><td>|||ऽऽऽ|ऽ||</td><td>६</td><td>कुम्भ ०७:२४-०८:५३ वृष/मिथुन ११:५५-१६:०४</td><td>गोधूलि</td></tr>
<tr><td>१५ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण १० बुधवार</td><td>मूल</td><td>कुम्भ</td><td>धनु</td><td>मीन</td><td>|ऽ|||ऽ|ऽ||</td><td>७</td><td>-</td><td>मकर २९:१९-३१:०४</td></tr>
<tr><td>१६ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण ११ गुरुवार</td><td>मूल</td><td>कुम्भ</td><td>धनु</td><td>मीन</td><td>|ऽ|||ऽ|ऽ||</td><td>७</td><td>कुम्भ ०७:००-०८:२९, मेष/वृष/मिथु. ०९:५५-१५:४१</td><td>गोधूलि</td></tr>
<tr><td>१७ फरवरी</td><td>फाल्गुन कृष्ण १२ शुक्रवार</td><td>उ.षा.</td><td>कुम्भ</td><td>धनु</td><td>मीन</td><td>ऽ||||ऽ||||</td><td>८</td><td>-</td><td>कन्या २०:१३-२२:२८</td></tr>
<tr><td>२२ फरवरी</td><td>फाल्गुन शुक्ल २ बुधवार</td><td>उ.भा.</td><td>कुम्भ</td><td>मीन</td><td>मीन</td><td>|ऽऽ|||||||</td><td>८</td><td colspan="2">फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त</td></tr>
<tr><td>२३ फरवरी</td><td>फाल्गुन शुक्ल ३ गुरुवार</td><td>रेवती</td><td>कुम्भ</td><td>मीन</td><td>मीन</td><td>|||||||||ऽ</td><td>९</td><td>-</td><td>मकर २८:४८-२०:३२</td></tr>
<tr><td>८ मार्च</td><td>चैत्र कृष्ण १ बुधवार</td><td>हस्त</td><td>कुम्भ</td><td>कन्या</td><td>मीन</td><td>|ऽ|||ऽ||||</td><td>८</td><td>-</td><td>मकर/कुम्भ २७:५६-३०:४९</td></tr>
<tr><td>९ मार्च</td><td>चैत्र कृष्ण २ गुरुवार</td><td>हस्त</td><td>कुम्भ</td><td>कन्या</td><td>मीन</td><td>|ऽ|||ऽ||||</td><td>८</td><td>वृष/मिथु./कर्क १०:०८-१६:३८</td><td>गोधूलि</td></tr>
</table>

❊ पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त विवाह मुहूर्त्त २०७९❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा, दोष- ऽ, शुद्ध रेखा- ।	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय	
								दिवा लग्न	रात्रि लग्न
२३ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ७ शनिवार	श्रवण	मेष	मकर	मीन	ऽऽ।।।।।ऽ।।	७	–	वृश्चिक/धनु २०:३०–२४:५४, मीन २८:०८–२९:३४
२४ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ८ रविवार	श्रवण	मेष	मकर	मीन	ऽऽ।।।।।ऽ।।	७	मेष ०५:३०–०७:०६ मिथुन ०९:०१–११:१६	–
२६ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार	अश्विनी	वृष	मेष	मीन	ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।	६	–	कुम्भ २४:२९–२५:५८, वृष २९:००–२९:३७
२७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार	अश्विनी	वृष	मेष	मीन	ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।	६	वृष ०५:३७–०६:५१ कर्क ०९:०५–११:२६	–
९ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार	चित्रा	वृष	कन्या	मीन	।।।।ऽऽ।ऽ।।	७	–	वृष २८:०५–३०:००
१० जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार	चित्रा	वृष	कन्या	मीन	।।।।ऽ।।ऽ।।	८	कर्क ०८:११–१०:३१ तुला १५:०२–१७:२१	–
२३ जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार	अश्विनी	मिथुन	मेष	मीन	।।।।।।।ऽ।।	९	कर्क ०७:२०–०९:४०	वृष २७:१०–२९:०६
७ जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ८ गुरुवार	चित्रा	मिथुन	कन्या	मीन	।।।।।।।ऽ।ऽ	८	–	मकर/कुम्भ २०:००–२३:१३ मेष २४:३९–२:१५
८ जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ९ शुक्रवार	चित्रा ०७:५५ तक	मिथुन	तुला	मीन	।।।।।।।ऽ।।	९	कर्क ०६:२१–०७:५५	–
४ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ११ रविवार	अश्विनी	वृश्चिक	मेष	मीन	।।।।।ऽ।।।।	९	मकर १०:०८–११:५२, मीन १३:२१–१४:४७	तुला २७:२५–२९:४४
१५ जनवरी	माघ कृष्ण ८ रविवार	चित्रा	मकर	कन्या	मीन	ऽ।।।।।।ऽ।।	८	मकर ०७:२२–०९:०६	–
२७ जनवरी	माघ शुक्ल ६ शुक्रवार	अश्विनी	मकर	मेष	मीन	।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	७	–	तुला २३:५२–२६:१०, धनु/मकर २८:२९–३१:२१
२८ जनवरी	माघ शुक्ल ७ शनिवार	अश्विनी	मकर	मेष	मीन	।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	७	मकर ०६:३१–०८:१५	–

※ उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त २०७९ ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

※ उपनयन के नाम- उपनयन को व्रतबन्ध, यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार से ब्रह्मविद्या, वेदाध्ययन का अधिकार मिलता है।

※ उपनयन की आयु- पंचम, षष्ठ, अष्टम, एकादश, द्वादश वर्ष में उपनयन कराना चाहिए।

※ उपनयन अयन- उपनयन संस्कार केवल उत्तरायण में ही किया जाता है।

※ उपनयन मास- माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास। (चैत्र मास में केवल ब्राह्मण बटुकों का उपनयन होता है।)

※ उपनयन के वार- रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि, मंगल वर्जित)।

※ उपनयन तिथियाँ- **शुक्लपक्ष-** २, ३, ५, १०, ११, १२ **कृष्णपक्ष-** २, ३, ५

※ उपनयन नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा, रेवती (कुल २२ नक्षत्र)।

※ वर्जित नक्षत्र- भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, विशाखा, मघा (कुल ५ नक्षत्र)।

पुनर्वसु में विप्र बटुकों का उपनयन वर्जित है- *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।(राजमार्तण्ड)*

※ उपनयन लग्न- २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ **※ वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११

※ उपनयन काल-पूर्वाह्न एवं मध्याह्न (अपराह्न वर्जित)

※ उपनयन में बाणदोष- रोगबाण में उपनयन नहीं होता है (अन्य चार बाणों में होता है)। सूर्य के ८, १७, २६ अंश पर रोगबाण होता है।

क्र.सं.	दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
१.	**६ अप्रैल**	चैत्र शुक्ल पञ्चमी बुधवार	रोहिणी	वृष/मिथुन ८:१७-१२:२६ सिंह/कन्या १४:४७-१८:४३	वृष	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
२.	**११ अप्रैल**	चैत्र शुक्ल दशमी सोमवार	आश्लेषा	वृष/मिथुन ७:५७-१२:०७ सिंह/कन्या १४:२७-१८:४६	कर्क	रवियोग अहोरात्र
३.	**२१ अप्रैल**	वैशाख कृष्ण पञ्चमी गुरुवार	मूल	वृष/मिथुन ७:१८-११:२७ सिंह/कन्या १३:४७-१८:१९	धनु	सिद्धयोग १४:३६ तक
४.	**३ मई**	वैशाख शुक्ल तृतीया भौमवार	हस्त	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ६:३०-१०:४०, सिंह/कन्या १३:००-१७:३२	वृष	सिद्धयोग २९:२६ तक
५.	**५ मई**	वैशाख शुक्ल चतुर्थी गुरुवार	आर्द्रा	वृष/मिथुन ७:२५-१०:३२ सिंह १२:५२-१८:५८	मिथुन	सिद्धयोग ७:२५ से
६.	**६ मई**	वैशाख शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार	पुनर्वसु	वृष/मिथुन ६:१८-९:२८ तक (पञ्चमी अन्त)	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग ६:४९ से
७.	**१३ मई**	वैशाख शुक्ल द्वादशी शुक्रवार	हस्त	वृष/मिथुन ५:५१-१०:०१ सिंह १२:२१-१४:३२ (द्वादशी अन्त)	कन्या	प्रदोष व्रत
८.	**२० मई**	ज्येष्ठ कृष्ण पञ्चमी शुक्रवार	उ.षा	मिथुन ७:४१-९:९३ सिंह/कन्या ११:५३-१६:२५	धनु/मकर	-
९.	**९ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी गुरुवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	कन्या	गङ्गा दशहरा, रवियोग अहोरात्र

❊ उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

क्रं.सं.	दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
१०.	**१० जून**	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी शुक्रवार	चित्रा	मिथुन ५:५६-८:११ सिंह/कन्या १०:३१-१५:०२	कन्या तुला	श्री निर्जला एकादशी, सिद्धयोग, रवियोग-अहोरात्र
११.	**१६ जून**	आषाढ कृष्ण तृतीया गुरुवार	पूर्वाषाढ	मथुन - ०५:३३-०७:४७ सिंह/कन्या - १०:०७-१४:३९	धनु	अमृतयोग-१२:३४ से
१२.	**१ जुलाई**	आषाढ शुक्ल द्वितीया शुक्रवार	पुष्य	सिंह/कन्या -०९:०९-१३:४०	कर्क	श्री जगन्नाथ रथ यात्रा
१३.	**४ जुलाई**	आषाढ शुक्ल पञ्चमी सोमवार	पू.फा.	सिंह/कन्या- ८:५७-१३:२८	सिंह	व्यतिपात दोष, रवियोग ६:०३ से, अमृतयोग १४:३५ तक
१४.	**४ नवम्बर**	कार्तिक शुक्ल एकादशी शुक्रवार	पू.भा.	**देवोत्थान एकादशी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन १३:४७-१६:४२	कुम्भ	भद्रादोष ०७-२५-१८:३४ सिद्धयोग १८:३४ तक
१५.	**२६ जनवरी २०२३**	माघ शुक्ल पञ्चमी गुरुवार	उ.भा	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन ८:२३-११:२२,वृष/मिथुन १२:५०-१७:००	मीन	वसन्त पञ्चमी सिद्धयोग १६:३६ तक
१६.	**३ फरवरी २०२३**	माघ शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवार	पुनर्वसु	वृष/मिथुन १२:२२-१६:३२	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि, रवियोग-अहोरात्र
१७.	**८ फरवरी २०२३**	फाल्गुन कृष्ण तृतीया बुधवार	पू.फा.	वृष/मिथुन १२:०३-१६:००	सिंह	-
१८.	**२२ फरवरी २०२३**	फाल्गुन शुक्ल द्वितीया बुधवार	उ.भा.	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ११:०७-१५:१७	मीन	फुलेरा दौज
१९.	**२४ फरवरी २०२३**	फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार	अश्विनी	वृष/मिथुन १०:५९-१५:०९	मेष	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
२०.	**२ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल दशमी/एकादशी गुरुवार	आर्द्रा/पुन.	वृष/मिथुन १०:३६-१४:४५	मिथुन	रवियोग
२१.	**३ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल एकादशी शुक्रवार	पुनर्वसु	भद्रान्त १०:११ बाद, वृष/मिथुन - १०:३२-१४:३१	कर्क	आमलकी एकादशी सर्वार्थसिद्धियोग १६:४४ तक
२२.	**९ मार्च २०२३**	चैत्र कृष्ण द्वितीया गुरुवार	हस्त	वृष/मिथुन १०:०८-१४:१८	कन्या	भैयादूज

❋ मुण्डन मुहूर्त्त २०७९ ❋

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❋ **मुण्डन के नाम-** मुण्डन को चौल, चूड़ा या वपन कहते हैं।
❋ **मुण्डन काल-** एक वर्ष के भीतर, तीसरे वर्ष या विषम वर्ष में किया जाता है।
❋ **मुण्डन अयन-** मुण्डन उत्तरायण में किया जाता है- *चौलोपवीतं नैवयाम्यायने स्यात्। मुहूर्तचिन्तामणि, ५.२६*
❋ **मुण्डन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशियनपूर्व
❋ **मुण्डनमें वर्जितमास-** चैत्र में मुण्डन वर्जित है- *चैत्रे चौलं न कारयेत्।*
❋ **मुण्डन पक्ष-** कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में।
❋ **मुण्डन के वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र - *ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।*

❋ **मुण्डन नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (१२ नक्षत्र)।
❋ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (५ नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं ।
❋ **मुण्डन लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ ❋ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११
❋ **मुण्डन तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,११,१३ (कुल ७)
❋ **वर्जित तिथियाँ-** १, ४,६, ८, ९,१२, १४, १५, ३०
❋ **मुण्डन समय-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न

क्रं.सं.	दिनांक	पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
१.	**१८ अप्रैल**	वैशाख कृष्ण द्वितीया सोमवार	स्वाती	वृष-मिथुन ७:२९-११:३९	तुला	-
२.	**२५ अप्रैल**	वैशाख कृष्ण दशमी सोमवार	धनिष्ठा	वृष-कन्या ०७:०६-१६:३३(भद्रारम्भ)	मकर/कुम्भ	अमृतयोग अहोरात्र
३.	**३ मई**	वैशाख शुक्ल तृतीया भौमवार	हस्त	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष-कन्या ६:३०-१७:३२	वृष	सिद्धयोग २९:२६ तक
४.	**६ मई**	वैशाख शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार	पुनर्वसु	वृष-मिथुन ६:१८-९:२८(पञ्चमी अन्त)	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग ६:४९ से
५.	**१३ मई**	वैशाख शुक्ल द्वादशी शुक्रवार	चित्रा	वृष-सिंह ५:५१-१४:३२ (द्वादशी अन्त)	कन्या	प्रदोष व्रत
६.	**१८ मई**	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया बुधवार	ज्येष्ठा	मिथुन-कर्क ७:२७-११:००(ज्येष्ठा अन्त)	वृश्चिक/धनु	-
७.	**२६ मई**	ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी गुरुवार	रेवती	वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९	मीन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग अहोरात्र श्री अपरा एकादशी
८.	**१ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया बुधवार	मृगशिरा	वृष-कर्क ०५:३६-११:२६	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि योग ११:२३ तक सिद्धयोग १९:२३ तक
९.	**२ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया गुरुवार	पुनर्वसु १४:०१ से	कन्या-तुला १४:०१-१७:५२	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग १४:०१ से अमृतयोग २१:२४ तक
१०.	**९ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी गुरुवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	कन्या	गङ्गा दशहरा, रवियोग अहोरात्र

✻ मुण्डन मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

क्रं.सं.	दिनांक	पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
११.	**१० जून**	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी शुक्रवार	चित्रा	मिथुन-कन्या ५:५६-१५:०२	कन्या/ तुला	श्री निर्जला एकादशी, सिद्धयोग, रवियोग-अहोरात्र
१२.	**२३ जून**	आषाढ़ कृष्ण दशमी गुरुवार	रेवती	भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व मुहूर्त्त कर्क-कन्या ०७:२०-१२:३७	मीन	सर्वार्थसिद्धि, सिद्धयोग-अहोरात्र
१३.	**३० जून**	आषाढ शुक्ल द्वितीया गुरुवार	पुनर्वसु	सिंह -तुला ०९:१२-१६:०३	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
१४.	**१ जुलाई**	आषाढ शुक्ल द्वितीया शुक्रवार	पुष्य	सिंह/कन्या -०९:०९-१३:४०	कर्क	श्री जगन्नाथ रथ यात्रा
१५.	**६ जुलाई**	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी बुधवार	हस्त ०७:५७ से	भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व मुहूर्त्त सिंह- तुला ०८:४९-१४:४५	कन्या	सर्वार्थसिद्धि योग ७:५७ से सिद्धयोग १४:४५ तक
१६.	**४ नवम्बर**	कार्तिक शुक्ल एकादशी शुक्रवार	पू.भा.	**देवोत्थान एकादशी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	कुम्भ	भद्रादोष ०७-२५-१८:३४ सिद्धयोग १८:३४ तक
१७.	**१९ जनवरी**	माघ कृष्ण द्वादशी गुरुवार	ज्येष्ठा १२:२३ तक	मीन १०:२०-११:४६	वृश्चिक/धनु	अमृतयोग ०९:३८ से
१८.	**२६ जनवरी २०२३**	माघ शुक्ल पञ्चमी गुरुवार	उ.भा	**वसन्त पञ्चमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	मीन	वसन्त पञ्चमी सिद्धयोग १६:३६ तक
१९.	**२७ जनवरी**	माघ शुक्ल षष्ठी शुक्रवार	रेवती	मिथुन (षष्ठी अन्त)१५:१७-१७:००	मीन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग अहोरात्र सिद्धयोग १५:१७ तक
२०.	**३ फरवरी २०२३**	माघ शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवार	पुनर्वसु	वृष/मिथुन १२:२२-१६:३२	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि, रवियोग-अहोरात्र
२१.	**१० फरवरी २०२३**	फाल्गुन कृष्ण पंचमी शुक्रवार	हस्त	मीन ०८:५३-१०:१९ वृष/मिथुन ११:३५-१३:४५(भद्रारम्भ)	कन्या	-
२२.	**१५ फरवरी**	फाल्गुन कृष्ण दशमी बुधवार	ज्येष्ठा	मीन ०८:३३-०९:५९ वृष/मिथुन	वृश्चिक	-
२३.	**२२ फरवरी २०२३**	फाल्गुन शुक्ल द्वितीया बुधवार	उ. भा	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन ११:०७-१५:१७	मीन	फुलेरा दौज
२४.	**२४ फरवरी २०२३**	फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार	अश्विनी	मीन ०७:५८-०९:२३ वृष/मिथुन १०:५९-१५:०९	मेष	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
२५.	**२ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल दशमी/एकादशी गुरुवार	पुनर्वसु	मिथुन/कर्क १४:१९-१७:०६	मिथुन	रवियोग

※ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) २०७९ ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

※ **गृहारम्भ मास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन
※ **गृहारम्भ नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १३ नक्षत्र)
※ **गृहारम्भ तिथि-** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियाँ
※ **गृहारम्भ वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार
※ **गृहारम्भ में सूर्यराशि-** जब सूर्य मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो

※ **गृहारम्भ में वर्ज्य-** अग्निबाण(सूर्य के २,११,२०,२९ गतांश) पंचक और भूशयनदोष (परिहारपूर्वक)
※ चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक और माघ में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।
※ चैत्र में शोक, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, भाद्रपद में मृत्यु, आश्विन में कलह, कार्तिक में हानि और माघ में अग्निभय उत्पन्न होता है।
※ **गृहारम्भ लग्न-** २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
※ **लग्न शुद्धि-** लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९ में शुभग्रह, लग्न से ३, ६, ११ में पापग्रह

क्रं. सं.	दिनांक	पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	शुभ अशुभ योगादि
१.	**१६ अप्रैल**	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनिवार	चित्रा	कन्या १६:२४ - १८:३९ तक	वायव्य	कन्या	मेष	रवियोग ०८:३७ तक
२.	**३ मई**	वैशाख शुक्ल तृतीया भौमवार	हस्त	**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	वायव्य	वृष	मेष	सिद्धयोग २९:२६ तक
३.	**११ मई**	वैशाख शुक्ल दशमी बुधवार	उ.फा.	पू.फा. अंत के पश्चात कन्या १५:५७ - १७:००	वायव्य	सिंह/कन्या	मेष	रवियोग अहोरात्र अमृतयोग १४:२६ से
४.	**१२ मई**	वैशाख शुक्ल एकादशी गुरुवार	उ.फा.	भद्रान्त १५:१४ के पश्चात् कन्या १५:१४ - १६:५६	वायव्य	कन्या	मेष	रवियोग १६:२५ तक
५.	**१६ मई**	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा सोमवार	अनुराधा	विशाखा अंत १३:५८ के पश्चात् कन्या १४:२५ - १६:४०	नैऋत्य	तुला	वृष	सिद्धयोग ०९:५८ से सर्वार्थसिद्धि योग १३:५८ से
६.	**१८ मई**	ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया बुधवार	मूल	कन्या लग्न १४:१८ - १६:१८ तक	नैऋत्य	धनु	वृष	-
७.	**९ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल दशमी गुरुवार	हस्त	**गङ्गा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	नैऋत्य	कन्या		गङ्गा दशहरा, रवियोग अहोरात्र
८.	**१० जून**	ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी शुक्रवार	चित्रा	भद्रारम्भ १३:५८ से पूर्व मिथुन ५:५६ - ८:११, कन्या १२:४७ - १३:५८	नैऋत्य	कन्या/तुला	वृष	श्री निर्जला एकादशी, सिद्धयोग, रवियोग अहोरात्र
९.	**११ जून**	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी शनिवार	स्वाती	कन्या १२:४३ - १४:५८	नैऋत्य	तुला	वृष	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
१०.	**१५ जुलाई**	श्रावण कृष्ण द्वितीया शुक्रवार	श्रवण	कन्या १०:३० - १२:४५	नैऋत्य	मकर	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
११.	**२० जुलाई**	श्रावण कृष्ण सप्तमी बुधवार	रेवती	कन्या १०:११ - १२:१६ सप्तमी अंत से पूर्व	नैऋत्य	मीन	कर्क	सिद्धयोग १२:१६ तक
१२.	**२५ जुलाई**	श्रावण कृष्ण द्वादशी सोमवार	मृगशिरा	कन्या ९:५१ - १२:०६ , वृश्चिक १४:२५ - १६:४४	नैऋत्य	वृष/मिथुन	कर्क	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र

❊ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

क्रं. सं.	दिनांक	पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय	नींव की दिशा	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	शुभ अशुभ योगादि
१३.	**४ अगस्त**	श्रावण शुक्ल सप्तमी गुरुवार	चित्रा	कन्या ९:११ - ११:२६ , वृश्चिक १३:४५ - १६:०४	नैऋत्य	तुला	कर्क	रवियोग १५:४९ तक अमृतयोग अहोरात्र
१४.	**१० अगस्त**	श्रावण शुक्ल त्रयोदशी बुधवार	उत्तराषाढ़ा	कन्या ८:४८ - ११:०३	नैऋत्य	धनु	कर्क	रवियोग ०८:१९ से
१५.	**१३ अगस्त**	भाद्रपद कृष्ण द्वितीया शनिवार	शतभिषा	कन्या ८:३६ - १०:५१, वृश्चिक/ धनु १३:१० - १७:३४	नैऋत्य	कुम्भ	कर्क	-
१६.	**२५ अगस्त**	भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी गुरुवार	पुष्य	कन्या ७:४९ - ९:५१ भद्रा एवं चतुर्दशी पूर्व	आग्नेय	कर्क	सिंह	सर्वार्थसिद्धि, गुरुपुष्ययोग १६:४५ तक
१७.	**२९ अगस्त**	भाद्रपद शुक्ल द्वितीया सोमवार	उ.फा.	कन्या ७:३३ - ९:४८, वृश्चिक/ धनु १२:०६ - १६:३१	आग्नेय	कन्या	सिंह	-
१८.	**१ सितम्बर**	भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी गुरुवार	स्वाति	कन्या ७:२१ - ९:३६ , वृश्चिक ११:५५ - १२:४०	आग्नेय	तुला	सिंह	सिद्धयोग १२:४० तक
१९.	**५ सितम्बर**	भाद्रपद शुक्ल दशमी सोमवार	मूल	कन्या ७:०५ - ९:२०, वृश्चिक/धनु ११:३९ - १६:०३	आग्नेय	धनु	सिंह	अमृतयोग, रवियोग-अहोरात्र
२०.	**७ सितम्बर**	भाद्रपद शुक्ल द्वादशी बुधवार	उत्तराषाढ़ा	कन्या ६:५७ - ९:१२, वृश्चिक/धनु ११:३१ - १५:५५	आग्नेय	मकर	सिंह	सिद्धयोग अहोरात्र
२१.	**८ सितम्बर**	भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार	श्रवण	कन्या ६:५३ - ९:०८, वृश्चिक ११:२७ - १३:४६	आग्नेय	मकर	सिंह	अमृतयोग १९:३१ तक रवियोग १३:०८ से
२२.	**१० सितम्बर**	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा शनिवार	शतभिषा	कन्या ६:४५ - ९:००	आग्नेय	मकर	सिंह	-
२३.	**४ नवम्बर**	कार्तिक शुक्ल एकादशी शुक्रवार	पूर्वाभाद्रपद	**देवप्रबोधिनी एकादशी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	आग्नेय	कुम्भ	तुला	भद्रादोष ०७-२५-१८:३४ सिद्धयोग १८:३४ तक
२४.	**१० नवम्बर**	मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया गुरुवार	रोहिणी	धनु ९:३७ - ११:४३, कुम्भ/मीन १३:२७ - १६:२२	आग्नेय	वृष	तुला	-
२५.	**११ नवम्बर**	मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया शुक्रवार	मृगशिरा	वृश्चिक/धनु ७:१४ - ११:३९, कुम्भ १३:२६ - १४:५२	आग्नेय	वृष	तुला	-
२६.	**२६ नवम्बर**	मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया शनिवार	मूल	वृश्चिक/धनु ७:०८ - ११:४३, कुम्भ/मीन १३:२७ - १६:२२	ईशान	धनु	वृश्चिक	-
२७.	**२८ नवम्बर**	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी सोमवार	उ.षा. १५:०२ तक	वृश्चिक/धनु - ०६:०७ - १०:३१ कुम्भ/मीन - १२:१६ - १५:०२	ईशान	मकर	वृश्चिक	अमृतयोग १७:४५ तक
२८.	**३० नवम्बर**	मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी बुधवार	धनिष्ठा	वृश्चिक/धनु - ०७:०१ - १०:२३ कुम्भ/मीन- १२:०८-१३:११ (भद्रारम्भ)	ईशान	कुम्भ	वृश्चिक	सिद्धयोग १३:१३ तक

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

क्रं. सं.	दिनांक	पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय	नींव की दिशा	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	शुभ अशुभ योगादि
२९.	**२ दिसम्बर**	मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शुक्रवार	उ.भा. ०९:२९ से	धनु- ०९:२९-१०:१६, कुम्भ/मीन १२:००-१४:५५	ईशान	मीन	वृश्चिक	अमृतयोग ०९:२९ तक रवियोग-अहोरात्र
३०.	**३ दिसम्बर**	मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी शनिवार	उ.भा.	वृश्चिक/धनु- ०७:०४-०९:१८(व्यतीपात पूर्व)	ईशान	मीन	वृश्चिक	अमृतयोग ०८:०३ से रवियोग-अहोरात्र
३१.	**९ दिसम्बर**	पौष कृष्ण प्रतिपदा शुक्रवार	मृगशिरा	प्रतिपदान्त ०९:३४ बाद मृगशिरान्त १३:५२ पूर्व कुम्भ- ११:३२-१३:०२	ईशान	मिथुन	वृश्चिक	-
३२.	**१८ जनवरी २०२३**	माघ कृष्ण एकादशी बुधवार	अनुराधा	कुम्भ/मीन ०८:५५-११:५० तक	ईशान	वृश्चिक	मकर	सर्वार्थसिद्धियोग १३:३० तक, सिद्धयोग ११:२३ से
३३.	**२६ जनवरी २०२३**	माघ शुक्ल पंचमी गुरूवार	उ.भा.	**वसन्त पंचमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन-०८:२३-११:१८,वृष/मिथुन-१२:५४-१६:३६	ईशान	मीन	मकर	वसन्त पञ्चमी सिद्धयोग १६:३६ तक
३४.	**३ फरवरी २०२३**	माघ शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवार	पुनर्वसु	कुम्भ/मीन - ०७:४३-१०:४६ वृष/मिथुन-१२:१४-१६:३२	ईशान	मिथुन	मकर	सर्वार्थसिद्धि, रवियोग-अहोरात्र
३६.	**१० फरवरी २०२३**	फाल्गुन कृष्ण पंचमी शुक्रवार	हस्त	कुम्भ- ०७:२४-०८:५३ वृष/मिथुन-११:५५-१६:०४	ईशान	कन्या	मकर	-
३७.	**१६ फरवरी २०२३**	फाल्गुन कृष्ण एकादशी गुरुवार	मूल	कुम्भ- ०७:०४-०९:५९ वृष/मिथुन-११:३५-१५:४५	वायव्य	धनु	कुम्भ	-
३८.	**२२ फरवरी २०२३**	फाल्गुन शुक्ल द्वितीया बुधवार	उ.भा.	**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन - ११:०७-१५:१७	वायव्य	मीन	कुम्भ	फुलेरा दौज
३९.	**१ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल नवमी बुधवार	मृगशिरा	वृष- १०:४०-१२:११ (मृगशिरा अंत)	वायव्य	मिथुन	कुम्भ	सर्वार्थसिद्धियोग १२:११ तक, रवियोग-अहोरात्र
४०.	**३ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल एकादशी शुक्रवार	पुनर्वसु	वृष/मिथुन १०:३२-१४:४१ प्रातः १०:११ पूर्व भद्रादोष है	वायव्य	मिथुन	कुम्भ	आमलकी एकादशी सर्वार्थसिद्धियोग १६:४४ तक
४१.	**४ मार्च २०२३**	फाल्गुन शुक्ल द्वादशी शनिवार	पुष्य	वृष/मिथुन - १०:२८-१४:३७	वायव्य	कर्क	कुम्भ	-
४२.	**९ मार्च २०२३**	चैत्र कृष्ण द्वितीया गुरूवार	हस्त	वृष/मिथुन - १०:०८-१४:१८	वायव्य	कन्या	कुम्भ	भैयादूज

✲ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०७९ ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

✲ **नूतन गृहप्रवेश मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास (सौम्यायन) का गृहप्रवेश सर्वोत्तम होता है- *अथ प्रवेशो नवसद्मनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये (वसिष्ठसंहिता)। अथ सौम्यायने कार्यं नववेश्मप्रवेशनम् (नारदसंहिता)। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठ मासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्याकार्त्तिक- मासयोः (नारदसंहिता) (सौम्य = मार्गशीर्ष)।*

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश मास-** श्रावण, कार्त्तिक एवं मार्गशीर्ष- *मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।*

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा- *अम्बुपेज्यानिलवासवेषु।(मु.चि.प्रक.१३,श्लो.२)*

✲ **गृहप्रवेश में वर्जित मास -** चैत्र, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष मासों में गृहप्रवेश सर्वथा वर्जित है। गृहप्रवेश में चान्द्रमास लिया जाता है, सौरमास नहीं। *चैत्रेऽर्थहानिः । परेषु नूनं हानिप्रदं पुत्रभयप्रदं च। (वसिष्ठसंहिता)*

✲ **नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र-**रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती।(कुल८)

✲ **गृहप्रवेश वार -** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

✲ **गृहप्रवेश तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियाँ

दिनांक	पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय	चन्द्र राशि	शुभ अशुभ योगादि
२३ अप्रैल	वैशाख कृष्ण ७ शनिवार	उ.षा.		मिथुन ९:०५-११:१९, सिंह/कन्या १३:४०-१८:११	मकर	**त्रिपुष्कर योग ०९:४६ तक त्रिपुष्कर योग में अत्यन्त शुभ मुहूर्त्त**
२५ अप्रैल	वैशाख कृष्ण १० सोमवार		धनिष्ठा	मिथुन ८:५७-११:१२, सिंह/कन्या १३:३२-१६:३३	कुम्भ	अमृतयोग अहोरात्र
२८ अप्रैल	वैशाख कृष्ण १३ गुरुवार	उ.भा./ रेवती		कन्या- वैधृति अन्त १७:११-१७:५१	मीन	अमृतयोग अहोरात्र
३ मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार	रोहिणी		**अक्षय तृतीया स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	वृष	सिद्धयोग २९:२६ तक
७ मई	वैशाख शुक्ल ६ शनिवार		पुष्य ०९:२० से	मिथुन ९:२०-१०:२४, सिंह/कन्या १२:४४-१७:१६	कर्क	अमृतयोग ११:२४ तक, रवियोग ०९:२० तक
११ मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार	उ.फा. १५:५७ से		कन्या १५:५७-१७:००	सिंह	रवियोग अहोरात्र अमृतयोग १४:२६ से
१२ मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार	उ.फा. १६:२५ तक		कन्या १५:१४(भद्रान्त) - १६:२५	कन्या	रवियोग १६:२५ तक
१४ मई	वैशाख शुक्ल १३ शनिवार	चित्रा		वृष/मिथुन ५:४७-९:५७	तुला	इसके आगे व्यतीपात दोष
२० मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्रवार	उ.षा. ०७:४१ से		मिथुन ०७:४१-०९:३३, सिंह/कन्या ११:५२-१६:२५	मकर	-
२५ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १० बुधवार	उ.भा.		कन्या १३:५०-१६:०५	मीन	अमृतयोग १३:३५ से
२६ मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार	रेवती		मिथुन ०६:५५-०९:०९, सिंह/कन्या ११:३०-१६:०१	मीन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग अहोरात्र श्री अपरा एकादशी

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

दिनांक	पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
१ जून	ज्येष्ठ शुक्ल २ बुधवार	मृगशिरा		मिथुन ०६:३२-०८:४३	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि योग ११:२३ तक सिद्धयोग १९:२३ तक
४ जून	ज्येष्ठ शुक्ल ५ शनिवार		पुष्य	मिथुन ०६:२०-०८:३४, सिंह/कन्या १०:५४-१५:२३	कर्क	-
९ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार	हस्त		**गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	कन्या	गङ्गा दशहरा, रवियोग अहोरात्र
१० जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार	चित्रा		मिथुन ०५:५६-०८:११, सिंह/कन्या १०:३१-१३:५८	कन्या/तुला	श्री निर्जला एकादशी, सिद्धयोग, रवियोग अहोरात्र
११ जून	ज्येष्ठ शुक्ल १२ शनिवार		स्वाती	सिंह/कन्या १०:२७-१४:५८	तुला	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
१८ जुलाई	श्रावण कृष्ण ५ सोमवार		उ.भा. १८:०१ से	धनु १८:०१-१९:१७	मीन	अत्यन्त आवश्यक होने पर ही
२० जुलाई	श्रावण कृष्ण ७ बुधवार		रेवती	सिंह/कन्या ०७:५४-१२:२६ वृश्चिक १४:४४-१७:०३	मीन	सिद्धयोग १२:१६ तक
२५ जुलाई	श्रावण कृष्ण १२ सोमवार		मृगशिरा	सिंह/कन्या ०७:३४-१२:०६ वृश्चिक १४:२५-१६:४४	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि योग अहोरात्र
३ अगस्त	श्रावण शुक्ल ६ बुधवार	चित्रा १५:५८ से		वृश्चिक/धनु १५:५८-१८:१३	कन्या	सर्वार्थसिद्धि योग १५:५८ तक रवियोग अहोरात्र
४ अगस्त	श्रावण शुक्ल ७ गुरुवार		चित्रा	सिंह/कन्या ०६:५५-११:२६ वृश्चिक/धनु १३:४५-१८:१०	तुला	रवियोग १५:४९ तक अमृतयोग अहोरात्र
१० अगस्त	श्रावण शुक्ल १३ बुधवार		उ.षा. ०८:१९ से	सिंह/कन्या ०८:१९-११:०३	धनु/मकर	रवियोग ०८:१९ से
१४ अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण पंचमी शुक्रवार		रोहिणी	कुम्भ/मीन -(व्यतीपात समाप्ति)१५:२०-१८:०९	वृष	-
२२ अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण १२ शनिवार		उ.फा.	कुम्भ/मीन १४:४२-१७:३७	सिंह	**त्रिपुष्कर योग १२:५८-१६:०२ त्रिपुष्कर योग में अत्यन्त शुभ मुहूर्त्त**
२७ अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल २ गुरुवार		अनुराधा	कुम्भ/मीन १४:२२-१७:१८	वृश्चिक	अमृतयोग १३:४१ से, सर्वार्थसिद्धि योग १३:५८ से
२८ अक्टूबर	कार्तिक शुक्ल ३ शुक्रवार		अनुराधा	वृश्चिक/धनु ०८:१०-११:५७	वृश्चिक	११:५७ के बाद रिक्ता तिथि दोष

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक	पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
३१ अक्टूबर	कार्त्तिक शुक्ल ७ सोमवार		उ.षा. ०८:२८ से	वृश्चिक/धनु ०८:२८-१२:२२ कुम्भ/मीन १४:०७-१७:०२	मकर	-
३ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १० गुरुवार		शतभिषा	वृश्चिक/धनु ०७:४६-१२:१० कुम्भ/मीन १३:५५-१६:५०	कुम्भ	सिद्धयोग २०:२० तक रवियोग अहोरात्र
४ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल ११ शुकवार	पू.भा.		**देवप्रबोधिनी एकादशी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**	कुम्भ	देव प्रबोधनी एकादशी सिद्धयोग १८:३४ तक
५ नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १२ शनिवार		उ.भा.	वृश्चिक/धनु ०७:३८-१२:०२ कुम्भ/मीन १३:५७-१६:४२	मीन	-
१० नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरुवार		रोहिणी	धनु ९:३७ - ११:४३, कुम्भ/मीन १३:२७ - १६:२२	वृष	-
१४ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ६ सोमवार		पुष्य ११:२९ से	कुम्भ/मीन १३:११-१६:०६	कर्क	सर्वार्थसिद्धि योग ११:२९से रवियोग ११:२९ से
१९ नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण १० शनिवार		उ.फा.	वृश्चिक/धनु ०६:५३-११:०७ कुम्भ/मीन १२:५१-१५:४७	कन्या	अमृतयोग अहोरात्र
२८ नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ५ सोमवार		उ.षा.	वृश्चिक/धनु - ०६:०७ - १०:३१ कुम्भ/मीन - १२:१६ - १५:०२	मकर	अमृतयोग १७:४५ तक
३० नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुधवार		धनिष्ठा/ शतभिषा	वृश्चिक/धनु - ०७:०१ - १०:२३ कुम्भ/मीन- १२:०८-१३:११(भद्रारम्भ)	कुम्भ	सिद्धयोग १३:१३ तक
२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुकवार		उ.भा. ९:२९ से	धनु- ०९:२९-१०:१६, कुम्भ/मीन १२:००-१४:५५	मीन	अमृतयोग ०९:२९ तक रवियोग-अहोरात्र
३ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शनिवार		उ.भा.	वृश्चिक/धनु- ०७:०४-०९:१८(व्यतीपात पूर्व)	मीन	अमृतयोग ०८:०३ से रवियोग-अहोरात्र
१६ जनवरी	माघ कृष्ण ९ सोमवार		स्वाती १४:४३ तक	वृष- १३:५०-१४:४३	तुला	१३:५० से पूर्व रिक्ता तिथि दोष
१८ जनवरी	माघ कृष्ण ११ बुधवार	अनुराधा		कुम्भ/मीन ०८:५५-११:५० तक	वृश्चिक	सर्वार्थसिद्धियोग १३:३० तक, सिद्धयोग ११:२३ से

✲ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त २०७९ ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक	पक्ष तिथि वार	नूतन प्रवेश नक्षत्र	जीर्ण प्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय	चन्द्रराशि	शुभ अशुभ योगादि
२६ जनवरी	माघ शुक्ल ५ गुरुवार	रेवती		**वसन्त पंचमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** कुम्भ/मीन-०८:२३-११:१८,वृष/मिथुन-१२:५४-१६:३६	मीन	वसन्त पञ्चमी सिद्धयोग १६:३६ तक
२७ जनवरी	माघ शुक्ल ६ शुक्रवार	रेवती		कुम्भ/मीन-०८:१९-११:१४ वृष/मिथुन- १२:५०-१७:००	मीन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग अहोरात्र सिद्धयोग १५:१७ तक
११ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण शनिवार	चित्रा		कुम्भ/मीन- ०७:२०-१०:१५ वृष/मिथुन- ११:५१-१६:००	कन्या/तुला	-
२२ फरवरी	फाल्गुन शुक्ल २ बुधवार	उ.भा.		**फुलेरा दौज स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त** वृष/मिथुन- ११:०७-१५:१७	मीन	फुलेरा दौज
१ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ९ बुधवार	मृगशिरा १२:११ तक		कुम्भ/मीन- ०६:५८-०९:०४ वृष- १०:४०-१२:११ (मृगशिरा अंत)	मिथुन	सर्वार्थसिद्धियोग १२:११ तक, रवियोग-अहोरात्र
४ मार्च	फाल्गुन शुक्ल १२ शनिवार		पुष्य	कुम्भ/मीन- ०६:५५-०८:५२ वृष/मिथुन- १०:२८-१४:३७	कर्क	-
✲ मुहूर्त्त पारिजातोक्त गृहप्रवेश मुहूर्त्त- मुहूर्त्त पारिजात ग्रन्थ में ५ नक्षत्रों- अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल व श्रवण को भी गृहप्रवेश में ग्राह्य कहा है, कई पंचांगों में इनके आधार पर मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, आवश्यकता पड़ने पर स्वमतानुसार इन्हें उपयोग में लिया जा सकता है।						
६ मई	वैशाख शुक्ल ५ शक्रवार	पुनर्वसु ०६:४९ से		वृष/मिथुन ६:४९-१०:२८, सिंह/कन्या १२:४८-१७:२०	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि व रवियोग ६:४९ से
१३ मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार	हस्त		वृष/मिथुन ०५:५१-१०:०१, सिंह/कन्या १२:२१-१६:५२	कन्या	प्रदोष व्रत
३ अगस्त	श्रावण शुक्ल ६ बुधवार	हस्त १५:५८ तक		सिंह/कन्या ०६:५९-११:३० वृश्चिक/धनु १३:४९-१५:५८	कन्या	सर्वार्थसिद्धि योग १५:५८ तक रवियोग अहोरात्र
२८ जनवरी	माघ शुक्ल ७ शनिवार	अश्विनी		कुम्भ/मीन- ०८:१५-११:१० वृष/मिथुन- १२:४६-१४:२३(भद्रारम्भ)	मेष	-
३ फरवरी	माघ शुक्ल १३ शुक्रवार	पुनर्वसु		कुम्भ/मीन- ०७:४३-१०:४६ वृष/मिथुन-१२:१४-१६:३२	मिथुन	सर्वार्थसिद्धि, रवियोग-अहोरात्र
३ मार्च	फाल्गुन शुक्ल ११ शुक्रवार	पुनर्वसु		वृष/मिथुन १०:३२-१४:४१ प्रातः १०:११ पूर्व भद्रादोष है	मिथुन/कर्क	आमलकी एकादशी सर्वार्थसिद्धियोग १६:४४ तक

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

✻ सन्तानोत्पत्ति के छठवें एवं बारहवें दिन प्रसूतिका स्नान करती है। इसे लोक में छठी एवं बरही का स्नान कहते हैं। यह संस्कार अनिवार्य कृत्य होने के कारण आवश्यक करणीय है। प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि विचार आवश्यक नहीं है। स्नान के दिन चन्द्रमा की दिशा का विचार किया जाता है। स्नान करते समय चन्द्रमा प्रसूतिका के सम्मुख या दक्षिण होना चाहिए।

✻ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती।

✻ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा।

✻ **स्नान की तिथियाँ-**१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, ३०।

✻ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण।

✻ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, ५/१२।

✻ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि ४, ९, १४ तथा ६, ८, १२ तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

चैत्र शुक्लपक्ष

३ अप्रैल चैत्र शुक्ल ०२ रविवार, ०७:५८ पश्चात्, १२:३२ पूर्व में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०८:३३-१२:३२

१४ अप्रैल चैत्र शुक्ल १३ गुरुवार ८:२३ पश्चात् उ.फा. में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ८:०४-११:४३, सिंह-कन्या १४:०३-१८:३५

वैशाख कृष्णपक्ष

१७ अप्रैल वैशाख कृष्ण ०१ रविवार स्वाती में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ७:१८-११:२७, सिंह १३:४७-१४:३६

२६ अप्रैल वैशाख कृष्ण ११ मंगलवार शतभिषा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०६:५८-११:०८, सिंह १३:२८-१५:४४

वैशाख शुक्लपक्ष

०३. मई वैशाख शुक्ल ०३ मंगलवार रोहिणी में।
अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

१०. मई वैशाख शुक्ल ०९ रिक्ता १५:०८ बाद, मंगलवार पू.फा. में।
समय- लग्न: कन्या १४:४९-१७:०४

१२. मई वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार भद्रान्त १५:१४ बाद उ.फा./हस्त में।
समय- लग्न: कन्या १५:१४-१६:५६
दोष- १५:११-१६:२३ वज्र त्रिघटी दोष

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

१७. मई ज्येष्ठ कृष्ण ०१ मंगलवार अनुराधा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३५-९:४५, सिंह-कन्या १२:०५-१४:२१

२०. मई ज्येष्ठ कृष्ण०५ शुक्रवार ०७:४१ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:४०-९:३३, सिंह-कन्या ११:५३-१६:२५

२२. मई ज्येष्ठ कृष्ण ०७ रविवार भद्रान्त ६:५१ बाद धनिष्ठा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०६:५१-०९:२५, सिंह-कन्या ११:४५-१६:१७

२६. मई ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार रेवती में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९, सिंह-कन्या ११:३०-१६:०१

२७ मई ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार १२:५७ बाद अश्विनी में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या १२:५७-१५:५७

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

३१. मई ज्येष्ठ शुक्ल ०१ मंगलवार रोहिणी/मृगशिरा में।
समय- लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:५०, सिंह-कन्या ११:१०-१५:४१

०९. जून ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में।
श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

१४. जून ज्येष्ठ शुक्ल १५ मंगलवार ज्येष्ठा में।
समय- लग्न: मिथुन ०५:४१-१०:१५, सिंह-कन्या १०:१५-१४:४७

आषाढ़ कृष्णपक्ष

१६. जून आषाढ़ कृष्ण ०२ गुरुवार १५:५४ बाद उत्तराषाढ़ा में।
समय- लग्न: वृश्चिक १६:५८-१९:१६

२३. जून आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७
दोष-९:५४-१२:१८ षड्घटी अतिगण्ड दोष

२६. जून आषाढ़ कृष्ण १३ रविवार १४:०३ बाद रोहिणी में।
समय- लग्न: वृश्चिक १६:१८-१८:३७

२८. जून आषाढ़ कृष्ण ३० मंगलवार मृगशिरा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०९:२०-१३:५२, वृश्चिक १६:११-१८:३०

❊ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

आषाढ़ शुक्लपक्ष

१०. जुलाई आषाढ़ शुक्ल ११ रविवार भद्रान्त ०९:३७ बाद अनुराधा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०९:३७-१३:०५, वृश्चिक १५:२४-१७:४३
दोष-क्षय नक्षत्र दोष

श्रावण कृष्णपक्ष

१४. जुलाई श्रावण कृष्ण ०१ गुरुवार उ.षा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०८:१८-१२:४९, वृश्चिक १५:०८-१७:२७

१७ जुलाई श्रावण कृष्ण ४ रिक्ता १५:३२ बाद १८:४२ पूर्व रविवार शतभिषा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १५:३२-१८:४२
दोष- इससे पूर्व तिथि का एवं इसके आगे नक्षत्र का अभाव

२४. जुलाई श्रावण कृष्ण ११ रविवार रोहिणी में
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:३८-१२:१०, वृश्चिक-धनु १४:२९-१८:५३

श्रावण शुक्लपक्ष

३१. जुलाई श्रावण शुक्ल ०३ रविवार १३:३२ बाद पू.फा. में।
समय- लग्न: वृश्चिक १४:०१-१६:२०

०४ अगस्त श्रावण शुक्ल ०७ गुरुवार चित्रा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:५५-११:२६, वृश्चिक-धनु १३:४५-१८:१०

०७ अगस्त श्रावण शुक्ल १० रविवार १३:०४ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:५३-११:१५

भाद्रपद कृष्णपक्ष

१४. अगस्त भाद्रपद कृष्ण ०३ रविवार पू.भा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:१२-१०:४३

१६. अगस्त भाद्रपद कृष्ण ०५ मंगलवार रेवती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:३३-१०:३९

२१. अगस्त भाद्रपद कृष्ण १० रविवार भद्रारम्भ १५:०३ पूर्व मृगशिरा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०३-१०:१९, वृश्चिक-धनु १२:३८-१७:०२

भाद्रपद शुक्लपक्ष

२८. अगस्त भाद्रपद शुक्ल ०१ रविवार पू.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०६-०९:५२, वृश्चिक-धनु १२:१०-१६:३५

३०. अगस्त भाद्रपद शुक्ल ०३ मंगलवार हस्त में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०७-०९:४४, वृश्चिक-धनु १२:०३-१६:२७

०१. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल ०५ गुरुवार स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०८-०९:३६, वृश्चिक-धनु ११:५५-१६:१९

०६. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल ११ मंगलवार पू.षा. में भद्रारम्भ १३:२८ पूर्व।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:१०-०९:१६, वृश्चिक ११:३५-१३:२८

०८. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल १३ गुरुवार १३:०८ बाद धनिष्ठा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १३:०८-१५:५१

आश्विन कृष्णपक्ष

११. सितम्बर आश्विन कृष्ण ०१ रविवार उ.भा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:१३-०८:५६, वृश्चिक-धनु ११:१५-१५:३९

आश्विन शुक्लपक्ष

०९. अक्टूबर आश्विन शुक्ल १५ रविवार भद्रान्त १४:२९ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन १५:३४-१८:०२

कार्त्तिक कृष्णपक्ष

११. अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण ०२ मंगलवार अश्विनी में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:१७-१३:४१, कुम्भ-मीन १५:२६-१८:००

२३. अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण १३ रविवार उ.फा. में भद्रारम्भ १६:३२ पूर्व।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:२९-१२:५४, कुम्भ-मीन १४:३८-१६:३२

२५. अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण ३० मंगलवार १४:५७ बाद स्वाती में।
समय- लग्न: कुम्भ-मीन १४:५७-१७:२५

कार्त्तिक शुक्लपक्ष

२७. अक्टूबर कार्त्तिक शुक्ल ०२ गुरुवार १३:५८ पश्चात् अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१४-१२:३८, मीन १५:५२-१७:१८

०६. नवम्बर कार्त्तिक शुक्ल १३, १६:०५ पूर्व रविवार रेवती में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:३४-११:५८

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष

१०. नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण ०२ गुरुवार रोहिणी में। **दोष:** ०९:३७ पूर्व परिघ पूर्वार्ध दोष
समय- लग्न: धनु ०९:३७-११:४३, मीन १४:५६-१६:२२

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

२०. नवम्बर	मार्गशीर्ष कृष्ण ११ रविवार हस्त में। **समय- लग्न:** वृश्चिक ०६:५३-०७:१०

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

२४. नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०१ गुरुवार अनुराधा में। **समय- लग्न:** वृश्चिक-धनु ०६:५७-१०:४७, कुम्भ-मीन १२:३२-१५:२७
०८. दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १५ गुरुवार रोहिणी में। **समय- लग्न:** वृश्चिक-धनु ०७:०९-०९:५२, कुम्भ-मीन ११:३६-१३:०६

पौष कृष्णपक्ष

१५. दिसम्बर	पौष कृष्ण ०७ गुरुवार भद्रान्त ०८:२७ बाद पू.फा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:२७-०८:५३, कुम्भ-मीन १०:३७-१३:३२

पौष शुक्लपक्ष

२५. दिसम्बर	पौष शुक्ल ०२ रविवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** धनु ०७:१८-०८:४५, कुम्भ-मीन १०:२९-१३:२४
२७. दिसम्बर	पौष शुक्ल ०५ मंगलवार धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** धनु ०७:१९-०८:३७, कुम्भ-मीन १०:२१-१३:१७
२९. दिसम्बर	पौष शुक्ल ०७ गुरुवार उ.भा. में। **समय- लग्न:** धनु ०७:२०-०८:२९, कुम्भ-मीन १०:१४-१३:०९
०१ जन. २०२३	पौष शुक्ल १० रविवार अश्विनी में १६:२९ पूर्व। **समय- लग्न:** धनु ०७:२१-०८:१७, कुम्भ-मीन १०:०२-१२:५७

माघ कृष्णपक्ष २०२३

१२. जनवरी	माघ कृष्ण ०५ गुरुवार १३:०२ पूर्व पूर्वाफाल्गुनी में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०९:१८-१२:१३
१७. जनवरी	माघ कृष्ण मंगलवार १०, १४:१८ बाद अनुराधा में। **समय- लग्न:** वृष १४:१८-१५:२५
१९. जनवरी	माघ कृष्ण १२ गुरुवार, ०९:३८ बाद, १२:२३ पूर्व ज्येष्ठा में। **समय- लग्न:** मीन १०:२०-११:४६

माघ शुक्लपक्ष २०२३

२६. जनवरी	माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में। **समय- लग्न:** कुम्भ-मीन ०८:२३-११:१८, वृष-मिथुन १२:५४-१७:०४
३१. जनवरी	माघ शुक्ल १० मंगलवार रोहिणी में। **समय- लग्न:** मीन ०९:३२-१०:५८, वृष-मिथुन १२:३४-१६:४४

फाल्गुन शुक्लपक्ष २०२३

२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२४. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में। **समय- लग्न:** मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९
२१. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०१ मंगलवार शतभिषा/पू.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०८:०९-०९:३५, वृष-मिथुन ११:११-१५:२१
२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२४. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में। **समय- लग्न:** मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९
०७. मार्च	फाल्गुन शुक्ल १५ मंगलवार पू.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०७:१४-०८:४० वृष-मिथुन १०:१६-१४:२६, सिंह १६:४६-१८:२८

चैत्र कृष्णपक्ष २०२३

०९. मार्च	चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में। **समय- लग्न:** मीन ०७:०६-०८:३२, वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८, सिंह १६:३८-१८:५४
१४. मार्च	चैत्र कृष्ण ०७ मंगलवार ज्येष्ठा में। **समय- लग्न:** मीन ०६:४७-०८:१२, वृष-मिथुन ०९:४८-१३:५८, सिंह १६:१८-१८:३२
१६. मार्च	चैत्र कृष्ण ०९ रिक्ता १३:०६ बाद गुरुवार, पूर्वाषाढ़ में। **समय- लग्न:** मिथुन १३:०६-१३:५०, सिंह १६:१०-१८:२७
१९. मार्च	चैत्र कृष्ण १३ रविवार धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** मीन ०६:३८-०७:५३ वृष-मिथुन ०९:२९-१३:३८, सिंह १५:५८-१८:१५

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ **तिथि:** २,३,५,७,८,१०,११,१२,१३,१५ ❊ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ❊ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ❊ **नक्षत्र:** अश्विनी, स्वाति, चित्रा, रेवती, शतभिषा, श्रवण, मृगशिरा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा *(मुहूर्त्त चिन्तामणि)* ❊ **अबूझ मुहूर्त्त:- अक्षय तृतीया-** ३ मई, **जानकी नवमी-** १० मई, **पीपल पूर्णिमा-** १६ मई, **गंगा दशहरा-** ९ जून, **भड़ल्या नवमी-** ८ जुलाई, **देवशयनी एकादशी-** १० जुलाई, **गणेश चतुर्थी-** ३१ अगस्त, **विजयादशमी-** ५ अक्तूबर, **धनतेरस-** २२ अक्टूबर, **देवउठान एकादशी-** ४ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** २५ जनवरी, **फुलेरा दौज-** २१ फरवरी

७ अप्रैल	चैत्र शुक्ल ६ गुरुवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०८:१३-१२:२२, सिंह-कन्या १४:४३-१९:१४
१६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ शनिवार चित्रा में भद्रान्त १३:२७ पश्चात्। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १४:०७-१८:३९
२५. अप्रैल	वैशाख कृष्ण १० सोमवार भद्रारम्भ १६:३३ पूर्व धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०७:०६-११:१६, सिंह-कन्या १३:३६-१६:३३
०३. मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
०६. मई	वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवार ६:४९ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:४९-१०:२८, सिंह-कन्या १२:४८-१७:२०
०७. मई	वैशाख शुक्ल ७, ११:२४ पश्चात् शनिवार पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १२:४४-१७:१६, **दोष-**इसके आगे गण्ड दोष
०८. मई	वैशाख शुक्ल ०७ रविवार ११:३७ पूर्व पुष्य में भद्रारम्भ पूर्व। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:११-१०:१६
१२. मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार भद्रान्त १५:१४ पश्चात् बाद उ.फा./हस्त में। **समय-**लग्न: कन्या १५:१४-१६:५६, **दोष-**१५:११-१६:२३ वज्र त्रिघटी दोष
१३. मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१, सिंह-कन्या १२:२१-१६:५२
२२. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०७ रविवार भद्रान्त ६:५१ बाद धनिष्ठा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:५१-०९:२५, सिंह-कन्या ११:४५-१६:१७
२६. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९, सिंह-कन्या ११:३०-१६:०१
२७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ५:३७-०९:०५, सिंह-कन्या ११:२६-१५:५७
०१. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६
०२. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरुवार, १४:०१ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १४:०१-१५:३४
०४.जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ शनिवार पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०६:२०-०८:३४, सिंह-कन्या १०:५४-१५:२६
०९. जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१०. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १०:३१-१३:५८
११. जून	ज्येष्ठ शुक्ल-१२ शनिवार स्वाती में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १०:२७-१४:५८, वृश्चिक १७:१७-१९:३६
२३. जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७, **दोष-**९:५४-१२:१८ षड्घटी अतिगण्ड दोष
२४. जून	आषाढ़ कृष्ण ११ गुरुवार अश्विनी में प्रातः १०:५९ पूर्व **समय-** लग्न: सिंह ०९:३६-१०:५९, **दोष-**इसके आगे नक्षत्र अभाव
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०, वृश्चिक १५:५९-१८:१८
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२०, **दोष-**परिघ योग ०८:५३ से
०७. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०८, १४:०६ पूर्व गुरुवार चित्रा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:४५-१३:१७
०८. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०९, १२:५९ पश्चात् स्वाति में। **समय-** लग्न: वृश्चिक १५:३१-१७:५०
१०. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ११ रविवार भद्रान्त ०९:३७ बाद अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:३७-१३:०५ , वृश्चिक-धनु १५:२४-१९:२३ **दोष-**क्षय नक्षत्र दोष
१५ जुलाई	श्रावण कृष्ण २ शुक्रवार श्रवण में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:१४-१२:४५, वृश्चिक-धनु १५:०४-१९:२८

✻ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

१७ जुलाई	श्रावण कृष्ण ४ रिक्ता १५:३२ बाद १८:४२ पूर्व रविवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १५:३२-१८:४२ **दोष-** इससे पूर्व तिथि का एवं इसके आगे नक्षत्र का अभाव
२० जुलाई	श्रावण कृष्ण ७ बुधवार रेवती में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:५४-१२:२६, वृश्चिक-धनु १४:४४-१९:०९
२१. जुलाई	श्रावण कृष्ण ०८, १२:०६ पूर्व गुरुवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:५०-१२:०६
२४. जुलाई	श्रावण कृष्ण ११ रविवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:३८-१२:१०, वृश्चिक-धनु १४:२९-१८:५३
२५. जुलाई	श्रावण कृष्ण १२ सोमवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०७:३४-१२:०६, वृश्चिक १४:२५-१६:४४ **दोष-**इसके बाद व्याघात दोष है
०३ अगस्त	श्रावण कृष्ण ११ बुधवार रोहिणी में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:५९-११:३०, वृश्चिक-धनु १३:४९-१८:१३
०४ अगस्त	श्रावण शुक्ल ०७ गुरुवार चित्रा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:५५-११:२६, वृश्चिक-धनु १३:४५-१८:१०
०७ अगस्त	श्रावण शुक्ल १० रविवार १३:०४ पूर्व अनुराधा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:५३-११:१५
२१. अगस्त	भाद्रपद कृष्ण १० रविवार भद्रारम्भ १५:०३ पूर्व मृगशिरा में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:०३-१०:१९, वृश्चिक-धनु १२:३८-१७:०२
२५. अगस्त	भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी गुरुवार भद्रारम्भ ०९:५१ पूर्व पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:०५-०९:५१
३१. अगस्त	भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी बुधवार रिक्तान्त/भद्रान्त १३:४२ पश्चात् चित्रा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १३:४२-१६:२३
०१. सितम्बर	भाद्रपद शुक्ल ०५ गुरुवार स्वाती में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०६:०८-०९:३६, वृश्चिक-धनु ११:५५-१६:१९
०७ सितंबर	भाद्रपद शुक्ल द्वादशी बुधवार उ.षा.-श्रवण में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:५७-०९:१२, वृश्चिक-धनु ११:३१-१५:५५
२६ सितम्बर	आश्विन शुक्ल १ सोमवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:१६-१४:४० **विशेष-शारदीय नवरात्र स्थापना**
२८ सितम्बर	आश्विन शुक्ल ३ बुधवार स्वाति में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु १०:०८-१४:३२
३०. सितम्बर	आश्विन शुक्ल ०५ शुक्रवार अनुराधा में। **समय-** लग्न: कन्या ०६:२१-०७:४२, वृश्चिक-धनु १०:००-१४:२५
०५. अक्टूबर	आश्विन शुक्ल १० बुधवार श्रवण में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:४१-१४:०५, मीन १७:१९-१८:०६ **विशेष-विजयादशमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
०७. अक्तूबर	आश्विन शुक्ल १३ शुक्रवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:३३-१३:५७, मीन १७:११-१८:३७
२२. अक्टूबर	कार्त्तिक कृष्ण १२ शनिवार १२:५८ बाद उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन १६:११-१७:३७ **विशेष: धनतेरस श्रेष्ठ मुहूर्त्त**
२६. अक्तूबर	कार्त्तिक शुक्ल १ बुधवार स्वाती में १४:४० पूर्व। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१८-१२:४२, मीन १५:५६-१७:२१
२७. अक्टूबर	कार्त्तिक शुक्ल ०२ गुरुवार १३:५८ पश्चात् अनुराधा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१४-१२:३८, मीन १५:५२-१७:१८
२८. अक्टूबर	कार्त्तिक शुक्ल ०३ शुक्रवार रिक्तारम्भ ११:५७ पूर्व अनुराधा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१०-११:५७
०३. नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १० गुरुवार शतभिषा में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:४६-१२:१०
०६. नवम्बर	कार्त्तिक शुक्ल १३, १६:०५ पूर्व रविवार रेवती में। **समय-** लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:३४-११:५८
२८. नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार १५:०२ बाद श्रवण में। **समय-** लग्न: धनु ०८:२६-१०:३१, वृष- १६:४७-१८:४२
३०. नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०७ बुधवार धनिष्ठा/शतभिषा में भद्रारम्भ १३:१३ पूर्व। **समय-** लग्न: धनु ०८:१८-१०:२३, वृष- १६:३९-१८:३५
०४. दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १२ रविवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: धनु ०७:५८-१०:०४, वृष- १६:१९-१८:१५ **गुणदोष-**व्यंजन द्वादशी, तिथिक्षय दोष
०९. दिसम्बर	पौष कृष्ण ०१, शुक्रवार ०९:३४ बाद, १३:५२ पूर्व मृगशिरा में। **समय-** लग्न: धनु ०७:४२-०९:४८, मीन १३:०२-१३:५२

❊ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

१५ जनवरी	माघ कृष्ण ०८ रविवार, १४:२४ रिक्तापूर्व चित्रा नक्षत्र में। **समय-** लग्नः मीन १०:३६-१२:०२, वृष १३:३८-१४:२४
१८ जनवरी	माघ कृष्ण ११, बुधवार १३:३० पूर्व अनुराधा में **समय-** लग्नः मीन १०:२४-११:५०
२६. जनवरी	माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में। **समय-** लग्नः मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४ **विशेष- वसन्त पंचमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२७. जनवरी	माघ शुक्ल ०६ शुक्रवार रेवती में। **समय-** लग्नः मीन ०९:४८-११:१४, वृष मिथुन १२:५०-१७:००
२८. जनवरी	माघ शुक्ल ०७ शनिवार अश्विनी में भद्रारम्भ १४:२३ पूर्व। **समय-** लग्नः मीन ०९:४४-११:१०, वृष १२:४६-१४:२३
०३. फरवरी	माघ शुक्ल १३ शुक्रवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्नः मीन ०९:२१-१०:४६, वृष-मिथुन १२:२२-१६:३२
१०. फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्नः मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४
११ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ६ शनिवार चित्रा में। **समय-** लग्नः मीन ०८:४९-१०:१५, वृष-मिथुन ११:५१-१६:००
२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय-** लग्नः मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२४. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में। **समय-** लग्नः मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९
०९. मार्च	चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में। **समय-** लग्नः मीन ०७:०६-०८:३२, वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८, सिंह १६:३८-१८:५४
१०. मार्च	चैत्र कृष्ण ०३ शुक्रवार भद्रारम्भ ०८:२९ पूर्व चित्रा में। **समय-** लग्नः मीन ०७:०२-०८:२८
१३ मार्च	चैत्र कृष्ण ६ सोमवार अनुराधा में वज्रारम्भ १५:०४ पूर्व **समय-** लग्नः मीन ०६:५०-०८:१६, वृष-मिथुन ०९:५२-१४:०२
१९. मार्च	चैत्र कृष्ण १३ रविवार धनिष्ठा में। **समय-** लग्नः मीन ०६:३८-०७:५३ **समय-** वृष-मिथुन ०९:२९-१३:३८, सिंह १५:५८-१८:१५

❊ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ देव प्रतिष्ठा नक्षत्र-	अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६ नक्षत्र)। *जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्क शुक्रे।* *दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षेसिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। मु.चि.,२.६१*
❊ देव प्रतिष्ठा मास-	चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) बृहस्पति के मतानुसार पौष और माघ सभी देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य हैं- *सर्वेषां पौषमाघौ द्वौ विबुधस्थापने शुभौ।* आषाढ़ यजमान विनाशक, श्रावण राज्य-राष्ट्रनाशक, भाद्रपद पृथ्वीनाशक, आश्विन राज्यनाशक, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष शत्रुवर्धक (बृहदैवज्ञरंजन)।
❊ देव प्रतिष्ठा वार-	सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। **मंगलवार को निषेध है।**
❊ देव प्रतिष्ठा लग्न-	२, ३, ५, ६, ८, ११, १२
❊ देव प्रतिष्ठा तिथि-	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ *द्वितीयसाद्विद्वयोः पञ्चम्यादितः तिसृषु क्रमात् ।* *दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। - नारदसंहिता* मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (४, ९, १४) को छोड़कर सभी तिथियाँ ग्राह्य हैं- रिक्तारवर्जे अर्थात् १, ८ तिथि भी ग्राह्य है।
❊ उग्रदेव प्रतिष्ठा-	काली, नृसिंह, वराह, वामन, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, भैरव आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है (वैखानससंहिता)।
❊ विशेषदेवता प्रतिष्ठा-	**सूर्य-** हस्त नक्षत्र, सिंहलग्न। **चन्द्रादि अष्टग्रह-** पुष्य नक्षत्र। **ब्रह्मा-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कुम्भ। **विष्णु-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कन्या। **शिव-पार्वती-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, मिथुन। **दुर्गा-** मूल नक्षत्र। **कुबेर-कार्तिकेय-** अनुराधा नक्षत्र।

✲ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७९ ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

२३. अप्रैल	वैशाख कृष्ण ०७, ०९:४६ से पूर्व शनिवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०७:१०-०९:४६
०६. मई	वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवार ६:४९ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:४९-१०:२८, सिंह-कन्या १२:४८-१७:२०
०७. मई	वैशाख शुक्ल ७, ११:२४ पश्चात् शनिवार पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १२:४४-१७:१६, **दोष-**इसके आगे गण्ड दोष
०८. मई	वैशाख शुक्ल ०७ रविवार ११:३७ पूर्व पुष्य में भद्रारम्भ पूर्व। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:११-१०:१६
११. मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार १५:५७ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** कन्या १५:५७-१७:००
१२. मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार भद्रान्त १५:१४ पश्चात् बाद उ.फा./हस्त में। **समय-** लग्न: कन्या १५:१४-१६:५६, **दोष-**१५:११-१६:२३ वज्र त्रिघटी दोष
१३. मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१, सिंह-कन्या १२:२१-१६:५२
१४. मई	वैशाख शुक्ल १३ शनिवार व्यतीपात् ११:३८ पूर्व चित्रा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ५:४७-०९:५७
२०. मई	ज्येष्ठ कृष्ण०५ शुक्रवार ०७:४१ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:४०-९:३३, सिंह-कन्या ११:५३-१६:२५
२१. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०६ शनिवार श्रवण में। **दोष-** क्षय नक्षत्र दोष **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:४०-९:२९, सिंह-कन्या ११:४९-१६:२१
२५. मई	ज्येष्ठ कृष्ण१० बुधवार भद्रान्त १३:३५ पश्चात् उत्तराभाद्रपद में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १३:३५-१६:०५
०१. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६
०२. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरुवार, १४:०१ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १४:०१-१५:३४
०४. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ शनिवार पुष्य में। **समय-** लग्न: मिथुन ०६:२०-०८:३४, सिंह-कन्या १०:५४-१५:२६
०९. जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१०. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:३१-१३:५८
११. जून	ज्येष्ठ शुक्ल-१२ शनिवार स्वाती में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:२७-१४:५८, वृश्चिक १७:१७-१९:३६
२३. जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७, **दोष-**९:५४-१२:१८ षड्घटी अतिगण्ड दोष
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०, वृश्चिक १५:५९-१८:१८
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२०, **दोष-**परिघ योग ०८:५३ से
२६. जनवरी	माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४ **विशेष- वसन्त पंचमी स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२७. जनवरी	माघ शुक्ल ०६ शुक्रवार रेवती में। **समय-** लग्न: मीन ०९:४८-११:१४, वृष मिथुन १२:५०-१७:००
२८. जनवरी	माघ शुक्ल ०७ शनिवार अश्विनी में भद्रारम्भ १४:२३ पूर्व। **समय-** लग्न: मीन ०९:४४-११:१०, वृष १२:४६-१४:२३
०३. फरवरी	माघ शुक्ल १३ शुक्रवार पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: मीन ०९:२१-१०:४६, वृष-मिथुन १२:२२-१६:३२
१०. फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में। **समय-** लग्न: मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४
११ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ६ शनिवार चित्रा में। **समय-** लग्न: मीन ०८:४९-१०:१५, वृष-मिथुन ११:५१-१६:००
२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय-** लग्न: मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२४. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में। **समय-** लग्न: मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९
०१. मार्च	फाल्गुन शुक्ल १० बुधवार मृगशिरा में। **समय-** लग्न: मीन ०७:३८-०९:०४, वृष-मिथुन १०:४०-१४:४९
०३. मार्च	फाल्गुन शुक्ल ११ शुक्रवार भद्रान्त १०:११ पश्चात् पुनर्वसु में। **समय- लग्न:** मीन ०७:२६-०८:५२ वृष-मिथुन १०:३२-१४:४१, सिंह १७:०२-१८:२५
०४. मार्च	फाल्गुन शुक्ल १२ शनिवार पुष्य में। **समय- लग्न:** मीन ०७:२६-०८:५२ वृष-मिथुन १०:२८-१४:३७, सिंह १६:५८-१८:२६

❊ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ **तिथियाँ-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ ❊ **वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ❊ **समय-** कुलपरम्परा अनुसार

❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६)

❊ **अबूझ मुहूर्त्त :- अक्षय तृतीया-** ३ मई, **जानकी नवमी-** १० मई, **पीपल पूर्णिमा-** १६ मई, **गंगा दशहरा-** ९ जून, **भड़ल्या नवमी-** ८ जुलाई, **देवशयनी एकादशी-** १० जुलाई, **गणेश चतुर्थी-** ३१ अगस्त, **विजयादशमी-** ५ अक्तूबर, **धनतेरस-** २२ अक्टूबर, **देवउठान एकादशी-** ४ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** २५ जनवरी, **फुलेरा दौज-** २१ फरवरी

१४. अप्रैल	चैत्र शुक्ल १३ गुरुवार ८:२३ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ७:४५-११:५५ सिंह-कन्या १४:१५-१८:४६
२५. अप्रैल	वैशाख कृष्ण १० सोमवार भद्रारम्भ १६:३३ पूर्व धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०७:०६-११:१६, सिंह-कन्या १३:३६-१६:३३
०३. मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
०६. मई	वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवार ६:४९ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:४९-०९:२८(पंचमी अंत)
११. मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार १५:५७ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** कन्या १५:५७-१७:००
१२. मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार भद्रान्त १५:१४ पश्चात् बाद उ.फा./हस्त में। **समय- लग्न:** कन्या १५:१४-१६:५६ दोष- १५:११-१६:२३ वज्र त्रिघटी दोष
१३. मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१ सिंह-कन्या १२:२१-१६:५२
२०. मई	ज्येष्ठ कृष्ण०५ शुक्रवार ०७:४१ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:४०-९:३३, सिंह-कन्या ११:५३-१६:२५
२६. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार रेवती में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९, सिंह-कन्या ११:३०-१६:०१
२७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार अश्विनी में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ५:३७-०९:०५, सिंह-कन्या ११:२६-१५:५७
०१. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६
०२. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरुवार, १४:०१ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १४:०१-१५:३४
०९. जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१०. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:३१-१३:५८
१६. जून	आषाढ़ कृष्ण ०२ गुरुवार १५:५४ बाद उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृश्चिक १६:५८-१९:१६
२३. जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७
३०. जून	आषाढ़ शुक्ल ०१, ०८:५२ बाद गुरुवार पुनर्वसु में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:१२-१३:४४
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०, वृश्चिक १५:५९-१८:१८
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२० **दोष**-परिघ योग ०८:५३ से
०८. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०९, शुक्रवार १२:५९ पश्चात् स्वाति में। **समय- लग्न:** वृश्चिक १५:३१-१७:५०
२०. जुलाई	श्रावण कृष्ण ७ बुधवार रेवती में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०७:५४-१२:२६, वृश्चिक-धनु १४:४४-१९:०९
२५. जुलाई	श्रावण कृष्ण १२ सोमवार मृगशिरा में **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०७:३४-१२:०६, वृश्चिक १४:२५-१६:४४ **दोष**-इसके बाद व्याघात दोष है
०३. अगस्त	श्रावण कृष्ण बुधवार ११ रोहिणी में **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०६:५९-११:३०, वृश्चिक-धनु १३:४९-१८:१३
०४. अगस्त	श्रावण शुक्ल ०७ गुरुवार चित्रा में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०६:५५-११:२६, वृश्चिक-धनु १३:४५-१८:१०

❋ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त २०७९ ❋

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

१०. अगस्त श्रावण शुक्ल १३ बुधवार ०८:१९ पश्चात् उ.षा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०८:१९-११:०३, वृश्चिक-धनु १३:२२-१७:४६

२५. अगस्त भाद्रपद कृष्ण १३ गुरुवार भद्रारम्भ ०९:५१ पूर्व पुष्य में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०५-०९:५१

२९. अगस्त भाद्रपद शुक्ल ०२ सोमवार उ.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०७-०९:४८, वृश्चिक-धनु १२:०६-१६:३१

३१. अगस्त भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी बुधवार रिक्तान्त/भद्रान्त १३:४२ पश्चात् चित्रा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १३:४२-१६:२३

०१. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल ०५ गुरुवार स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०८-०९:३६, वृश्चिक-धनु ११:५५-१६:१९

०७ सितंबर भाद्रपद शुक्ल १२ बुधवार उ.षा.-श्रवण में।
समय- लग्न: कन्या ०६:५७-०९:१२, वृश्चिक-धनु ११:३१-१५:५५

३०. सितम्बर आश्विन शुक्ल ०५ शुक्रवार अनुराधा में।
समय- लग्न: कन्या ०६:२१-०७:४२, वृश्चिक-धनु १०:००-१४:२५

०५. अक्टूबर आश्विन शुक्ल १० बुधवार श्रवण में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:४१-१४:०५, मीन १७:१९-१८:०६

०७. अक्टूबर आश्विन शुक्ल १३ शुक्रवार शतभिषा में।
समय- लग्न: कन्या-तुला ०६:२५-०९:३३, धनु ११:५२-१३:५७

१४. अक्टूबर कार्तिक कृष्ण ०५ शुक्रवार व्यतिपात बाद रोहिणी में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:०५-१३:२९, मीन १६:४६-१८:०९
दोष-व्यतिपात दोष १५:२० तक

२७. अक्टूबर कार्तिक शुक्ल ०२ गुरुवार १३:५८ पश्चात् अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१४-१२:३८, मीन १५:५२-१७:१८

२८. अक्टूबर कार्तिक शुक्ल ०३ शुक्रवार रिक्तारम्भ ११:५७ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१०-११:५७

०३. नवम्बर कार्तिक शुक्ल १० गुरुवार, शतभिषा में।
समय- लग्न: धनु १०:०५-१२:१०

१०. नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण ०२ गुरुवार रोहिणी में।
समय- लग्न: धनु ०९:३७-११:४३, मीन १४:५६-१६:२२
दोष: ०९:३७ पूर्व परिघ पूर्वार्ध दोष

२८. नवम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:२६-१०:३१,
समय- लग्न: मीन १३:४५-१५:११, वृष १६:४७-१८:४२

०२. दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शुक्रवार रिक्तान्त ०९:२९ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: धनु ०८:१०-१०:१६
मीन १३:२९-१४:५५, वृष १६:३१-१८:२७

०९. दिसम्बर पौष कृष्ण ०१, शुक्रवार ०९:३४ बाद मृगशिरा में।
समय- लग्न: धनु ०७:४२-०९:४८
मीन १३:०२-१४:२८, वृष १६:०४-१७:५९

१८. जनवरी माघ कृष्ण ११, बुधवार १३:३० पूर्व अनुराधा में
समय- लग्न: मीन १०:२४-११:५०

२६. जनवरी माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४

०३. फरवरी माघ शुक्ल १३ शुक्रवार पुनर्वसु में।
समय- लग्न: मीन ०९:२१-१०:४६, वृष-मिथुन १२:२२-१६:३२

१०. फरवरी फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में।
समय- लग्न: मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४

२२. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७
विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

२४. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में।
समय- लग्न: मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९

०९. मार्च चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में।
समय- लग्न: मीन ०७:०६-०८:३२
वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८, सिंह १६:३८-१८:५४

१०. मार्च चैत्र कृष्ण ०३ शुक्रवार भद्रारम्भ ०८:२९ पूर्व चित्रा में।
समय- लग्न: मीन ०७:०२-०८:२८

❋ श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम् ❋
प्रकाशक- श्रीनिम्बार्क परिषद् , जयपुर

✻ अन्नप्राशन मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

✻ **अन्नप्राशन तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,१३,१५ ✻ **अन्नप्राशन वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ✻ **अन्नप्राशन मास-** षष्ठ मास से आरम्भ कर सम मास बालकों के लिए एवं पंचम से आरम्भ कर विषम मास कन्याओं के लिए ✻ **अन्नप्राशन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६)

✻ **अबूझ मुहूर्त्त :- अक्षय तृतीया-** ३ मई, **जानकी नवमी-** १० मई, **पीपल पूर्णिमा-** १६ मई, **गंगा दशहरा-** ९ जून, **भड़ल्या नवमी-** ८ जुलाई, **देवशयनी एकादशी-** १० जुलाई, **गणेश चतुर्थी-** ३१ अगस्त, **विजयादशमी-** ५ अक्तूबर, **धनतेरस-** २२ अक्टूबर, **देवउठान एकादशी-** ४ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी-** २५ जनवरी, **फुलेरा दौज-** २१ फरवरी

६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल ५ बुधवार रोहिणी में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ८:१७-१२:२६ सिंह-कन्या १४:४७-१७:३९
१४ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १३ गुरुवार ८:२३ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ७:४५-११:५५ सिंह-कन्या १४:१५-१८:४६
२५. अप्रैल	वैशाख कृष्ण १० सोमवार भद्रारम्भ १६:३३ पूर्व धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०७:०६-११:१६, सिंह-कन्या १३:३६-१६:३३
२८. अप्रैल	वैशाख कृष्ण १३ गुरुवार उ.भा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०६:५०-११:००, सिंह-कन्या १३:२०-१७:५१
०३. मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
०६. मई	वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवार ६:४९ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: वृष-मिथुन ०६:४९-०९:२८(पंचमी अंत)
११. मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार १५:५७ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** कन्या १५:५७-१७:००
२०. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्रवार ०७:४१ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:४०-९:३३, सिंह-कन्या ११:५३-१६:२५
२५. मई	ज्येष्ठ कृष्ण १० बुधवार उ.भा. में भद्रारम्भ १३:३५ पूर्व। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३८-९:१३, सिंह ११:३४-१३:३५
०१. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६
०२. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरुवार, १४:०१ बाद पुनर्वसु में। **समय-** लग्न: सिंह-कन्या १४:०१-१५:३४
०९. जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१६. जून	आषाढ़ कृष्ण ०२ गुरुवार १५:५४ बाद उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** तुला १५:५४-१६:५८
२३. जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७
३०. जून	आषाढ़ शुक्ल ०१, ०८:५२ बाद गुरुवार पुनर्वसु में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:१२-१३:४४
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२० **दोष**-परिघ योग ०८:५३ से
०८. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०९, शुक्रवार १२:५९ पश्चात् स्वाती में। **समय- लग्न:** तुला १२:५९-१५:३१
१५ जुलाई	श्रावण कृष्ण २ शुक्रवार श्रवण में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:१४-१२:४५
२० जुलाई	श्रावण कृष्ण ७ बुधवार रेवती में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०७:५४-१२:१६
०४ अगस्त	श्रावण शुक्ल ०७ गुरुवार चित्रा में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०६:५५-११:२६, धनु १६:०४-१८:१०
१० अगस्त	श्रावण शुक्ल १३ बुधवार ०८:१९ पश्चात् उ.षा. में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:१९-११:०३, धनु १५:४०-१७:४६
२५. अगस्त	भाद्रपद कृष्ण १३ गुरुवार भद्रारम्भ ०९:५१ पूर्व पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०६:०५-०९:५१
२९. अगस्त	भाद्रपद शुक्ल ०२ सोमवार उ.फा. में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०६:०७-०९:४८, धनु १४:२५-१६:३१

✻ अन्नप्राशन मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

३१. अगस्त भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी बुधवार रिक्तान्त/भद्रान्त १३:४२ पश्चात् चित्रा में।
समय- लग्न: धनु १४:१७-१६:२३

०१. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल ०५ गुरुवार स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०८-०९:३६, धनु १४:१४-१६:१९

०८. सितम्बर भाद्रपद शुक्ल १३ गुरुवार श्रवण में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:११-०९:०८, धनु १३:४६-१५:५१

१२. सितम्बर आश्विन कृष्ण २ सोमवार रेवती में।
समय- लग्न: सिंह-तुला ०६:१३-११:११, धनु १३:३०-१५:३६

२८. सितम्बर आश्विन शुक्ल ३ बुधवार स्वाती में।
समय- लग्न: कन्या-तुला ०६:२०-१०:०८, धनु १२:२७-१४:३२

३०. सितम्बर आश्विन शुक्ल ५ शुक्रवार अनुराधा में।
समय- लग्न: कन्या ०६:२१-०७:४२, धनु १२:१९-१४:२५

०५. अक्टूबर आश्विन शुक्ल १० बुधवार श्रवण में।
समय- लग्न: धनु ११:५९-१४:०५, मीन १७:१९-१८:०६

०७. अक्टूबर आश्विन शुक्ल १३ शुक्रवार शतभिषा में।
समय- लग्न: कन्या-तुला ०६:२५-०९:३३, धनु ११:५२-१३:५७

१४. अक्टूबर कार्तिक कृष्ण ५ शुक्रवार व्यतीपात बाद रोहिणी में।
समय- लग्न: धनु ११:२४-१३:२९, मीन १६:४६-१८:०९
दोष-व्यतिपात दोष १५:२० तक

२७. अक्टूबर कार्तिक शुक्ल २ गुरुवार १३:५८ पश्चात् अनुराधा में।
समय- लग्न: धनु १०:३३-१२:३८, मीन १५:५२-१७:१८

२८. अक्टूबर कार्तिक शुक्ल ३ शुक्रवार रिक्तारम्भ ११:५७ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्न: धनु-कुम्भ १०:२९-११:५७

३१. अक्टूबर कार्तिक शुक्ल ७ सोमवार, ०८:२८ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में।
समय- लग्न: धनु १०:१७-१२:२२

३. नवम्बर कार्तिक शुक्ल १० गुरुवार, शतभिषा में।
समय- लग्न: धनु १०:०५-१२:१०

१०. नवम्बर मार्गशीर्ष कृष्ण २ गुरुवार रोहिणी में।
समय- लग्न: धनु ०९:३७-११:४३, मीन १४:५६-१६:२२
दोष: ०९:३७ पूर्व परिघ पूर्वार्ध दोष

२८. नवम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:२६-१०:३१,
समय- लग्न: मीन १३:४५-१५:११, वृष १६:४७-१८:४२

०२ दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शुक्रवार रिक्तान्त ०९:२९ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: धनु ०८:१०-१०:१६
मीन १३:२९-१४:५५, वृष १६:३१-१८:२७

०२ दिसम्बर पौष कृष्ण १ शुक्रवार ०९:३४ बाद, १३:५२ पूर्व मृगशिरा में।
समय- लग्न: कुम्भ ११:३२-१३:०२

२६. जनवरी माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४

०३. फरवरी माघ शुक्ल १३ शुक्रवार पुनर्वसु में।
समय- लग्न: मीन ०९:२१-१०:४६, वृष-मिथुन १२:२२-१६:३२

१०. फरवरी फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में।
समय- लग्न: मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४

२२. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७
विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

२४. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में।
समय- लग्न: मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९

०१. मार्च फाल्गुन शुक्ल १० बुधवार १२:११ पूर्व मृगशिरा में।
समय- लग्न: मीन ०७:३८-०९:०४, वृष-मिथुन १०:४०-१२:३५

०९. मार्च चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में।
समय- लग्न: मीन ०७:०६-०८:३२
वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८, सिंह १६:३८-१८:५४

१०. मार्च चैत्र कृष्ण ०३ शुक्रवार भद्रारम्भ ०८:२९ पूर्व चित्रा में।
समय- लग्न: मीन ०७:०२-०८:२८

❊ कर्णवेध संस्कार मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ कर्णवेध नक्षत्र – अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। **❊ तिथि –** २, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३ **❊ लग्न –** २, ३, ६, ७, ९, १२

❊ समय– जन्मदिन से १२वें या १६वें दिन, जन्म से ६, ७ या ८वें माह में अथवा जन्म से तीसरे या पांचवे वर्ष में कर्णवेध संस्कार किया जाता है। **❊ कर्णवेध वार –** सोम, बुध, गुरु, शुक्र

२५. अप्रैल वैशाख कृष्ण १० सोमवार भद्रारम्भ १६:३३ पूर्व धनिष्ठा में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ०७:०६-११:१६, कन्या १५:४८-१६:३३

०३. मई वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार रोहिणी में।
अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

०६. मई वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवार ६:४९ बाद पुनर्वसु में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ०६:४९-१०:२८, कन्या-तुला १५:०५-१८:५९

१३. मई वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१, कन्या-तुला १४:३७-१९:०३

२६. मई ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार रेवती में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९, कन्या-तुला १३:४६-१८:२०

२७ मई ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार अश्विनी में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ५:३७-०९:०५, कन्या-तुला १३:४२-१८:१६

०१. जून ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में।
समय– लग्न: वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६

०२. जून ज्येष्ठ शुक्ल ३ गुरुवार, १४:०१ बाद पुनर्वसु में।
समय– लग्न: कन्या-तुला १३:१९-१७:५२

०९. जून ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**

१०. जून ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व
समय– लग्न: कन्या १२:४७-१३:५८

२३. जून आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व
समय– लग्न: कन्या ११:५६-१२:३७,
दोष–९:५४-१२:१८ षड्घटी अतिगण्ड दोष

०१. जुलाई आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में।
समय– लग्न: कन्या-वृश्चिक ११:२५ - १५:५९

२८. नवम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार उ.षा. में।
समय– लग्न: धनु ०८:२६-१०:३१,
समय– लग्न: मीन १३:४५-१५:११, वृष १६:४७-१८:४२

०९ दिसम्बर पौष कृष्ण ०१, शुक्रवार ०९:३४ बाद मृगशिरा में।
समय– लग्न: धनु ०७:४२-०९:४८
मीन १३:०२-१४:२८, वृष १६:०४-१७:५९

१८ जन. २०२३ माघ कृष्ण ११, बुधवार १३:३० पूर्व अनुराधा में
समय– लग्न: मीन १०:२४-११:५०

२७. जनवरी माघ शुक्ल ०६ शुक्रवार रेवती में।
समय– लग्न: मीन ०९:४८-११:१४, वृष मिथुन १२:५०-१७:००

०३. फरवरी माघ शुक्ल १३ शुक्रवार पुनर्वसु में।
समय– लग्न: मीन ०९:२१-१०:४६, वृष-मिथुन १२:२२-१६:३२

१०. फरवरी फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में।
समय– लग्न: मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४

२२. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में।
समय– लग्न: मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७
विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त

२४. फरवरी फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में।
समय– लग्न: मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९

०९. मार्च चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में।
समय– लग्न: मीन ०७:०६-०८:३२, वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८

१०. मार्च चैत्र कृष्ण ०३ शुक्रवार भद्रारम्भ ०८:२९ पूर्व चित्रा में।
समय– लग्न: मीन ०७:०२-०८:२८

१३ मार्च चैत्र कृष्ण ६ सोमवार अनुराधा में वज्रारम्भ १५:०४ पूर्व
समय– लग्न: मीन ०६:५०-०८:१६, वृष-मिथुन ०९:५२-१४:०२

अबूझ मुहूर्त्त :- अक्षय तृतीया– ३ मई , **जानकी नवमी–** १० मई , **पीपल पूर्णिमा–** १६ मई , **गंगा दशहरा–** ९ जून , **भड़ल्या नवमी–** ८ जुलाई , **देवशयनी एकादशी–** १० जुलाई, **गणेश चतुर्थी–** ३१ अगस्त, **विजयादशमी–** ५ अक्तूबर, **धनतेरस–** २२ अक्टूबर, **देवउठान एकादशी–** ४ नवम्बर, **वसन्त पञ्चमी–** २५ जनवरी, **फुलेरा दौज–** २१ फरवरी

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त २०७९ ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

❊ तिथि: २,३,५,७,८,१०,११,१२,१३,१५ **❊ पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण **❊ वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि **❊ मंगलवार का निषेध**

❊ नक्षत्र: तीनों उत्तरा, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, रेवती, स्वाती, अनुराधा, श्रवण

१४ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १३ गुरुवार ८:२३ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ७:४५-११:५५ सिंह-कन्या १४:१५-१८:४६
१६ अप्रैल	चैत्र शुक्ल १५ शनिवार चित्रा में भद्रान्त १३:२७ पश्चात्। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १४:०७-१८:३९
२१. अप्रैल	वैशाख कृष्ण ०५, १४:३६ पूर्व गुरुवार मूल में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ७:१८-११:२७, सिंह १३:४७-१४:३६
२३. अप्रैल	वैशाख कृष्ण ०७, ०९:४६ से पूर्व शनिवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०७:१०-०९:४६
२५. अप्रैल	वैशाख कृष्ण १० सोमवार भद्रारम्भ १६:३३ पूर्व धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०७:०६-११:१६, सिंह-कन्या १३:३६-१६:३३
०३. मई	वैशाख शुक्ल ३ मंगलवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया-स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
०७. मई	वैशाख शुक्ल ७, ११:२४ पश्चात् शनिवार पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १२:४४-१७:१६ दोष-इसके आगे गण्ड दोष
०८. मई	वैशाख शुक्ल ०७ रविवार ११:३७ पूर्व पुष्य में भद्रारम्भ पूर्व। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०६:११-१०:१६
११. मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार १५:५७ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** कन्या १५:५७-१७:००
१२. मई	वैशाख शुक्ल ११ गुरुवार भद्रान्त १५:१४ पश्चात् बाद उ.फा./हस्त में। **समय- लग्न:** कन्या १५:१४-१६:५६ दोष- १५:११-१६:२३ वज्र त्रिघटी दोष
१३. मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१ सिंह-कन्या १२:२१-१६:५२
१८. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०३ बुधवार ११:०० पश्चात् मूल में भद्रारम्भ १६:१८ पूर्व। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १२:०१-१६:१८
२०. मई	ज्येष्ठ कृष्ण०५ शुक्रवार ०७:४१ पश्चात् उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:४०-९:३३, सिंह-कन्या ११:५३-१६:२५
२२. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ०७ रविवार भद्रान्त ६:५१ बाद धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०६:५१-०९:२५, सिंह-कन्या ११:४५-१६:१७
२६. मई	ज्येष्ठ कृष्ण ११ गुरुवार रेवती में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३८-०९:०९, सिंह-कन्या ११:३०-१६:०१
२७ मई	ज्येष्ठ कृष्ण १२ शुक्रवार अश्विनी में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ५:३७-०९:०५, सिंह-कन्या ११:२६-१५:५७
०१. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०२ बुधवार ११:२३ तक मृगशिरा में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ०५:३६-०८:४६
०४. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ०५ शनिवार पुष्य में। **समय- लग्न:** मिथुन ०६:२०-०८:३४, सिंह-कन्या १०:५४-१५:२६
०९. जून	ज्येष्ठ शुक्ल १० गुरुवार हस्त में। **श्री गंगा दशहरा स्वयंसिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
१०. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:३१-१३:५८
११. जून	ज्येष्ठ शुक्ल-१२ शनिवार स्वाती में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:२७-१४:५८, वृश्चिक १७:१७-१९:३६
१६. जून	आषाढ़ कृष्ण ०२ गुरुवार १५:५४ बाद उत्तराषाढ़ा में। **समय- लग्न:** वृश्चिक १६:५८-१९:१६
२३. जून	आषाढ़ कृष्ण १० गुरुवार रेवती/अश्विनी में भद्रारम्भ १२:३७ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:४०-१२:३७
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०, वृश्चिक १५:५९-१८:१८
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२० **दोष**-परिघ योग ०८:५३ से
०७. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०८, १४:०६ पूर्व गुरुवार चित्रा में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:४५-१३:१७

✻ विपणि व्यापार मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

०८. जुलाई — आषाढ़ शुक्ल ०९, शुक्रवार १२:५९ पश्चात् स्वाती में।
समय- लग्न: वृश्चिक १५:३१-१७:५०

१०. जुलाई — आषाढ़ शुक्ल-११ रविवार भद्रान्त ०९:३७ बाद अनुराधा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०९:३७-१३:०५, वृश्चिक-धनु १५:२४-१९:२३
दोष-क्षय नक्षत्र दोष

२० जुलाई — श्रावण कृष्ण ७ बुधवार रेवती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:५४-१२:२६, वृश्चिक-धनु १४:४४-१९:०९

२१. जुलाई — श्रावण कृष्ण ०८, १२:०६ पूर्व गुरुवार अश्विनी में
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:५०-१२:०६

२४. जुलाई — श्रावण कृष्ण ११ रविवार रोहिणी में
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:३८-१२:१०, वृश्चिक-धनु १४:२९-१८:५३

२५. जुलाई — श्रावण कृष्ण १२ सोमवार मृगशिरा में
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०७:३४-१२:०६, वृश्चिक १४:२५-१६:४४
दोष-इसके बाद व्याघात दोष है

०३ अगस्त — श्रावण कृष्ण बुधवार ११ रोहिणी में
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:५९-११:३०, वृश्चिक-धनु १३:४९-१८:१३

०४ अगस्त — श्रावण शुक्ल ०७ गुरुवार चित्रा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:५५-११:२६, वृश्चिक-धनु १३:४५-१८:१०

०७ अगस्त — श्रावण शुक्ल १० रविवार १३:०४ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:५३-११:१५

१०- अगस्त — श्रावण शुक्ल १३ बुधवार ०८:१९ पश्चात् उ.षा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०८:१९-११:०३, वृश्चिक-धनु १३:२२-१७:४६

२१. अगस्त — भाद्रपद कृष्ण १० रविवार भद्रारम्भ १५:०३ पूर्व मृगशिरा में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०३-१०:१९, वृश्चिक-धनु १२:३८-१७:०२

२५. अगस्त — भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी गुरुवार भद्रारम्भ ०९:५१ पूर्व पुष्य में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०५-०९:५१

२९. अगस्त — भाद्रपद शुक्ल ०२ सोमवार उ.फा. में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०७-०९:४८, वृश्चिक-धनु १२:०६-१६:३१

३१. अगस्त — भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी बुधवार रिक्तान्त/भद्रान्त १३:४२ पश्चात् चित्रा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु १३:४२-१६:२३

०१. सितम्बर — भाद्रपद शुक्ल ०५ गुरुवार स्वाती में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:०८-०९:३६, वृश्चिक-धनु ११:५५-१६:१९

०५. सितम्बर — भाद्रपद शुक्ल १० सोमवार मूल में।
समय- लग्न: सिंह-कन्या ०६:१०-०९:२०, वृश्चिक-धनु ११:३९-१६:०३

०७ सितंबर — भाद्रपद शुक्ल द्वादशी बुधवार उ.षा.-श्रवण में।
समय- लग्न: कन्या ०६:५७-०९:१२, वृश्चिक-धनु ११:३१-१५:५५

३०. सितम्बर — आश्विन शुक्ल ०५ शुक्रवार अनुराधा में।
समय- लग्न: कन्या ०६:२१-०७:४२, वृश्चिक-धनु १०:००-१४:२५

०२. अक्टूबर — आश्विन शुक्ल ०७ रविवार मूल में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:५२-१४:१७

०५. अक्टूबर — आश्विन शुक्ल १० बुधवार श्रवण में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:४१-१४:०५, मीन १७:१९-१८:०६

१४. अक्टूबर — कार्तिक कृष्ण ०५ शुक्रवार व्यतीपात बाद रोहिणी में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०९:०५-१३:२९, मीन १६:४६-१८:०९
दोष-व्यतिपात दोष १५:२० तक

२२. अक्टूबर — कार्तिक कृष्ण १२ शनिवार १२:५८ बाद उ.भा. में।
समय- लग्न: मीन १६:११-१७:३७
विशेष: धनतेरस अतिश्रेष्ठ मुहूर्त्त

२७. अक्टूबर — कार्तिक शुक्ल ०२ गुरुवार १३:५८ पश्चात् अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१४-१२:३८, मीन १५:५२-१७:१८

२८. अक्टूबर — कार्तिक शुक्ल ०३ शुक्रवार रिक्तारम्भ ११:५७ पूर्व अनुराधा में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०८:१०-११:५७

०६. नवम्बर — कार्तिक शुक्ल १३, १६:०५ पूर्व रविवार रेवती में।
समय- लग्न: वृश्चिक-धनु ०७:३४-११:५८

१०. नवम्बर — मार्गशीर्ष कृष्ण ०२ गुरुवार रोहिणी में।
समय- लग्न: धनु ०९:३७-११:४३, मीन १४:५६-१६:२२
दोष: ०९:३७ पूर्व परिघ पूर्वार्ध दोष

२६. नवम्बर — मार्गशीर्ष शुक्ल०३ शनिवार मूल में।
समय- लग्न: धनु ०८:३४-१०:३९

२८. नवम्बर — मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:२६-१०:३१,
समय- लग्न: मीन १३:४५-१५:११, वृष १६:४७-१८:४२

✻ विपणि व्यापार मुहूर्त्त २०७९ ✻

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

०२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शुक्रवार रिक्तान्त ०९:२९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:१०-१०:१६ मीन १३:२९-१४:५५, वृष १६:३१-१८:२७
०३. दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल १० शनिवार व्यतिपात पूर्व उत्तराभाद्रपद रेवती में। **समय- लग्न:** धनु ०८:०६-०९:१८ **दोष**-०९:१८ बाद व्यतिपात दोष
०९. दिसम्बर	पौष कृष्ण ०१, शुक्रवार ०९:३४ बाद मृगशिरा में। **समय- लग्न:** धनु ०७:४२-०९:४८ मीन १३:०२-१४:२८, वृष १६:०४-१७:५९
१५ जनवरी	माघ कृष्ण ०८ रविवार, १४:२४ रिक्तापूर्व चित्रा नक्षत्र में। **समय- लग्न:** मीन १०:३६-१२:०२, वृष १३:३८-१४:२४
१८ जनवरी	माघ कृष्ण ११, बुधवार १३:३० पूर्व अनुराधा में **समय- लग्न:** मीन १०:२४-११:५०
२६. जनवरी	माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४
२८. जनवरी	माघ शुक्ल ०७ शनिवार अश्विनी में भद्रारम्भ १४:२३ पूर्व। **समय- लग्न:** मीन ०९:४४-११:१०, वृष १२:४६-१४:२३
१०. फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में। **समय- लग्न:** मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४
११ फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ६ शनिवार चित्रा में। **समय- लग्न:** मीन ०८:४९-१०:१५, वृष-मिथुन ११:५१-१६:००
२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**
२४. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०५ शुक्रवार अश्विनी में। **समय- लग्न:** मीन ०७:५८-०९:२३, वृष-मिथुन १०:५९-१५:०९
०४. मार्च	फाल्गुन शुक्ल १२ शनिवार पुष्य में। **समय- लग्न:** मीन ०७:२६-०८:५२ वृष-मिथुन १०:२८-१४:३७, सिंह १६:५८-१९:१४
०९. मार्च	चैत्र कृष्ण ०२ गुरुवार हस्त में। **समय- लग्न:** मीन ०७:०६-०८:३२ वृष-मिथुन १०:०८-१४:१८, सिंह १६:३८-१८:५४
१०. मार्च	चैत्र कृष्ण ०३ शुक्रवार भद्रारम्भ ०८:२९ पूर्व चित्रा में। **समय- लग्न:** मीन ०७:०२-०८:२८
१३ मार्च	चैत्र कृष्ण ६ सोमवार अनुराधा में वज्रारम्भ १५:०४ पूर्व **समय- लग्न:** मीन ०६:५०-०८:१६, वृष-मिथुन ०९:५२-१४:०२
१९. मार्च	चैत्र कृष्ण १३ रविवार धनिष्ठा में। **समय- लग्न:** मीन ०६:३८-०७:५३ वृष-मिथुन ०९:२९-१३:३८, सिंह १५:५८-१८:१५

उन्नत व्यापार मुहूर्त्त

११. मई	वैशाख शुक्ल १० बुधवार १५:५७ पश्चात् उ.फा. में। **समय- लग्न:** कन्या १५:५७-१७:००
१३. मई	वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त में। **समय- लग्न:** वृष-मिथुन ५:५१-१०:०१, सिंह-कन्या १२:२१-१६:५२
१०. जून	ज्येष्ठ शुक्ल ११ शुक्रवार चित्रा में भद्रारम्भ १३:५८ पूर्व **समय- लग्न:** सिंह-कन्या १०:३१-१३:५८
०१. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०२ शुक्रवार पुष्य में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०९:०९-१३:४०, वृश्चिक १५:५९-१८:१८
०६. जुलाई	आषाढ़ शुक्ल ०७ बुधवार भद्रारम्भ १४:४५ पूर्व हस्त में। **समय- लग्न:** सिंह-कन्या ०८:४९-१३:२० **दोष**-परिघ योग ०८:५३ से
२८. नवम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल ०५ सोमवार उ.षा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:२६-१०:३१, मीन १३:४५-१५:११ वृष १६:४७-१८:४२
०२ दिसम्बर	मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शुक्रवार रिक्तान्त ०९:२९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** धनु ०८:१०-१०:१६, मीन १३:२९-१४:५५, वृष १६:३१-१८:२७
२६. जनवरी	माघ शुक्ल ०५ गुरुवार उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०९:५२-११:१८, वृष मिथुन १२:५४-१७:०४
१०. फरवरी	फाल्गुन कृष्ण ०५ शुक्रवार हस्त में। **समय- लग्न:** मीन ०८:५३-१०:१९, वृष-मिथुन ११:५५-१६:०४
२२. फरवरी	फाल्गुन शुक्ल ०२ बुधवार ०९:५९ बाद उ.भा. में। **समय- लग्न:** मीन ०८:०५-०९:३१, वृष-मिथुन ११:०७-१५:१७ **विशेष-फुलेरा दौज स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त्त**

चैत्र शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २ अप्रैल से १६ अप्रैल, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २:४:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		ब्रत–पर्व–उत्सव
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२ अप्रैल से १६ अप्रैल, २०२२
२	१ श	१३:४०	११:५०	रेवती	१२:३३	११:२३	ऐन्द्र	०५:४८	०८:४२	बव	१३:४०	बाल	४४:१०	३०:४८	६:२२	१८:४१	मे·१२:३३	११:२३	धाता	१९	२	**विक्रम नववर्ष आरम्भः, नवरात्र घटस्थापना,**
३	२ र	१५:०१	१२:२२	अश्वि·	१५:२५	१२:३२	वैधृ·	०४:०१	०७:५८	कौल	१५:०१	तैति	४६:०९	३०:५२	६:२१	१८:४२	मेष	अहोरात्र	आनन्द	२०	३	**सिंजारा, मत्स्यावतार जयन्ती**:३ (अपराह्ने)
४	३ चं	१७:३६	१३:२३	भरणी	१९:३०	१४:०८	विष्कु·	०३:१२	०७:३७	गर	१७:३६	वणि	४९:१९	३०:५६	६:२०	१८:४२	वृ·३५:४१	२०:३७	सुस्थिर	२१	४	**गणगौर पूजा, मत्स्यावतार जयन्ती** (वैष्णव), मन्वादि
५	४ मं	२१:१८	१४:५०	कृत्ति·	२४:३९	१६:१०	प्रीति	०३:१६	०७:३८	विष	२१:१८	बव	५३:२९	३१:००	६:१९	१८:४३	वृष	अहोरात्र	गद	२२	५	**अंगारकी वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी,**
६	५ बु	२५:५३	१७:३९	रोहि·	३०:३७	१८:३३	आयु·	०४:०४	०७:५५	बाल	२५:५३	कौल	५८:२३	३१:०३	६:१८	१८:४३	वृष	अहोरात्र	शुभ	२३	६	**श्रीपञ्चमी, रंगपञ्चमी,** श्री रामराज्य महोत्सव,
७	६ गु	३०:६०	१८:४१	मृग·	३७:०६	२१:०७	सौभा·	०५:२२	०८:२६	तैति	३०:६०	गर	६०:००	३१:०८	६:१७	१८:४४	मि·०३:५०	०७:४९	मृत्यु	२४	७	श्रीयमुना जयन्ती, स्कन्द षष्ठी,
८	७ शु	३६:१६	२०:४६	आर्द्रा	४३:४०	२३:४४	शोभ·	०६:५५	०९:०२	गर	०३:३९	वणि	३६:१६	३१:१२	६:१६	१८:४४	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	२५	८	दुर्गापूजा प्रारम्भ (बंगाल), सूर्यसप्तमी, मोदन व्रत
९	८ श	४१:१२	२२:४३	पुन·	४९:५४	२६:१२	अतिग·	०८:२३	०९:३६	विष	०८:४९	बव	४१:१२	३१:१६	६:१५	१८:४५	क·३३:२४	१९:३६	छत्र	२६	९	**महाष्टमी**, अशोकाष्टमी, नवपद पूजा (जैन),
१०	९ र	४५:२८	२४:२५	पुष्य	५५:२६	२८:२४	सुकर्मा	०९:२८	१०:०१	बाल	१३:२८	कौल	४५:२८	३१:२०	६:१४	१८:४५	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	२७	१०	**श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्तिः**, श्रीमहानवमी,
११	१० चं	४८:४५	२५:४२	आश्ले·	५९:५९	अहोरात्र	धृति	०९:५७	१०:११	तैति	१७:१६	गर	४८:४५	३१:२४	६:१२	१८:४६	कर्क	अहोरात्र	सौम्य	२८	११	**नवरात्रोत्थापन, नवरात्र व्रतपारणा**, जयन्ती ग्रहणम्
१२	११ मं	५०:५१	२६:३२	आश्ले·	००:०१	०६:१२	शूल	०९:३५	१०:०१	वणि	१९:५८	विष	५०:५१	३१:२८	६:११	१८:४६	सिं·००:०१	०६:१२	आनन्द	२९	१२	**श्रीकामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**,
१३	१२ बु	५१:४२	२६:५१	मघा	०३:२५	०७:३२	गण्ड	०८:१९	०९:३०	बव	२१:२७	बाल	५१:४२	३१:३१	६:१०	१८:४७	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	३०	१३	**श्रीकामदा एकादशी (निम्बार्क), हरि दमनोत्सव,**
१४	१३ गु	५१:१५	२६:३९	पू·फा·	०५:३६	०८:२३	वृद्धि	०६:०३	०८:३४	कौल	२१:३९	तैति	५१:१५	३१:३५	६·०९	१८:४७	कं·२०:५६	१४:३२	गद	३१	१४	**प्रदोष व्रतम्, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)**,
१५	१४ शु	४९:३४	२५:५८	उ·फा·	०६:३१	०८:४५	ध्रुव व्याघ·	०२:४७ ५५:४५	०७:१५ २९:२९	गर	२०:३४	वणि	४९:३४	३१:३९	६:०८	१८:४८	कन्या	अहोरात्र	शुभ	१	१५	**शिव दमनोत्सव चतुर्दशी; नृसिंह दोलोत्सव;**
१६	१५ श	४६:४६	२४:५०	हस्त	०६:१६	०८:३७	हर्षण	५३:२५	२७:२९	विष	१८:१९	बव	४६:४६	३१:४३	६:०७	१८:४८	तु·३५:४२	२०:२४	मृत्यु	२	१६	**चैत्रपूर्णिमा** (व्रत–स्नान–दान), **श्रीहनुमानजयन्ती,**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अप्रैल	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२	१ श	११:१८:००:५६	११:२७:१८:२७	०९:२३:५५:१५	११:२१:२३:३४	१०:२८:३१:२५	१०:०१:५९:१७	०९:२५:००:०४	०७:०२:५७:४३	४५:२३:५३	उ·०४:२१:०१	– ५:०४	०६:४९:६०
३	२ र	११:१९:००:०४	००:१०:०५:०८	०९:२४:४०:२७	११:२३:११:५४	१०:२८:४५:४३	१०:०३:०४:४७	०९:२५:०५:३५	०७:०२:५४:३३	४५:२५:५४	उ·०४:४४:४१	– ४:४५	०७:२५:२९
४	३ चं	११:१९:५९:१०	००:२२:३७:५१	०९:२५:२५:४१	११:२४:५९:३९	१०:२८:५९:५९	१०:०४:१०:२८	०९:२५:११:०१	०७:०२:५१:२२	४५:२७:५५	उ·०५:०८:१६	– ४:२६	०८:०४:२२
५	४ मं	११:२०:५८:१५	०१:०४:५८:२८	०९:२६:१०:५८	११:२६:४६:४७	१०:२९:१४:१४	१०:०५:१६:२१	०९:२५:१६:२४	०७:०२:४८:११	४५:२९:५५	उ·०५:३१:४५	– ४:०८	०८:४२:३३
६	५ बु	११:२१:५७:१६	०१:१७:०९:२८	०९:२६:५६:१६	११:२८:३३:१३	१०:२९:२८:२७	१०:०६:२२:२५	०९:२५:२१:४३	०७:०२:४५:०१	४५:३१:५५	उ·०५:५५:०९	– ३:५०	०९:२८:२१
७	६ गु	११:२२:५६:१६	०१:२९:१३:४९	०९:२७:४१:३६	००:००:१८:५४	१०:२९:४२:३९	१०:०७:२८:३९	०९:२५:२६:५७	०७:०२:४१:५०	४५:३३:५४	उ·०६:१८:२६	– ३:३२	१०:१४:२२
८	७ शु	११:२३:५५:१३	०२:११:१४:५२	०९:२८:२६:५७	००:०२:०३:४४	१०:२९:५६:४८	१०:०८:३५:०४	०९:२५:३२:०८	०७:०२:३८:३९	४५:३५:५४	उ·०६:४१:३७	– ३:१४	११:०३:५२
९	८ श	११:२४:५४:०८	०२:२३:१६:३०	०९:२९:१२:२१	००:०३:४७:३९	११:००:१०:५६	१०:०९:४१:३९	०९:२५:३७:१४	०७:०२:३५:२९	४५:३७:५२	उ·०७:०४:४०	– २:५६	११:५६:५२
१०	९ र	११:२५:५३:०१	०३:०५:२२:२६	०९:२९:५७:४६	००:०५:३०:३५	११:००:२५:०३	१०:१०:४८:२३	०९:२५:४२:१५	०७:०२:३२:१८	४५:३९:५१	उ·०७:२७:३७	– २:३८	१२:५०:२६
११	१० चं	११:२६:५१:५१	०३:१७:३५:५५	१०:००:४३:१३	००:०७:१२:२६	११:००:३९:०७	१०:११:५५:१७	०९:२५:४७:१२	०७:०२:२९:०८	४५:४१:४९	उ·०७:५०:२६	– २:२१	१३:४५:४८
१२	११ मं	११:२७:५०:३९	०३:२९:५९:४८	१०:०१:२८:४२	००:०८:५३:०७	११:००:५३:०९	१०:१३:०२:२१	०९:२५:५२:०५	०७:०२:२५:५७	४५:४३:४६	उ·०८:१३:०७	– २:०४	१४:४२:०८
१३	१२ बु	११:२८:४९:२५	०४:१२:३६:२३	१०:०२:१४:१२	००:१०:३२:३१	११:०१:०७:०८	१०:१४:०९:३३	०९:२५:५६:५३	०७:०२:२२:४६	४५:४५:४३	उ·०८:३५:४०	– १:४७	१५:३८:०९
१४	१३ गु	११:२९:४८:०९	०४:२५:२७:२०	१०:०२:५९:४४	००:१२:१०:३४	११:०१:२१:०६	१०:१५:१६:५३	०९:२६:०१:३७	०७:०२:१९:३६	४५:४७:३९	द·२१:११:१८	– १:३१	१६:३५:०३
१५	१४ शु	००:००:४६:५०	०५:०८:३३:३७	१०:०३:४५:१८	००:१३:४७:०८	११:०१:३५:०१	१०:१६:२४:२३	०९:२६:०६:१६	०७:०२:१६:२५	४५:४९:३५	उ·०९:२०:१९	– १:१५	१७:३३:१६
१६	१५ श	००:०१:४५:२९	०५:२१:५५:२५	१०:०४:३०:५२	००:१५:२२:०६	११:०१:४८:५४	१०:१७:३२:००	०९:२६:१०:५०	०७:०२:१३:१४	४५:५१:३१	उ·०९:४२:२५	– ०:५९	१८:३२:४७

५ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

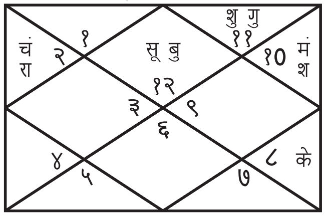

१२ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

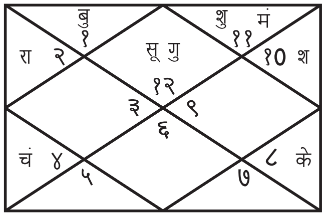

चैत्र शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २ अप्रैल से १६ अप्रैल, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं ।
याम्य गोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:४२

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 **व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार** (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२	१ श	पंचांग फलश्रवण, गुड़ी पड़वा, चेटीचण्ड–श्रीझूलेलाल जयन्ती, ①
३	२ र	कड़क पूजा (बंगाल), वैधृति पुण्यम्; ① **गण्डान्तः १७:३८, पंचकान्तः ११:२३;**
४	३ चं	**भद्रारंभः २६:०४घं·**, गौरी तृतीया, मनोरथ तृतीया, मेवाड़ उत्सव आरम्भ;
५	४ मं	**भद्रांतः १४:५०घं·;**
६	५ बु	गुरु हरगोविन्द पुण्यदिवस, मेवाड़ उत्सव समाप्त, कल्पादि; ②
७	६ गु	अशोक षष्ठी (बंगाल); ②आश्वन्यांबुधः घं·०१:५९, शतभिषायांशुक्रः घं·१२:४१;
८	७ शु	**भद्रारंभः २०:४६घं·**, मीनेगुरुः घं·११:४१, महानिशा पूजा;
९	८ श	**भद्रांतः ९:४६घं·**, श्री भवानी उत्पत्ति;
१०	९ र	**श्रीरामजन्मभूमि दर्शन अयोध्या**, कुम्भेमङ्गलः घं·०७:२४ ③
११	१० चं	धर्मराजदशमी, **गण्डान्तारम्भः २३:४७;** ③स्वामीनारायण जयन्ती (अक्षरधाम);
१२	११ मं	लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव, **भद्रा १४:१०–२६:३२घं·, गण्डान्तः १२:३५,** ④
१३	१२ बु	मदन द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, मासान्तः; ④बुधःपश्चिमोदितः घं·१०:०३;
१४	१३ गु	**मेष संक्रान्ति पुण्यकालं,०६:०९–१८:४९घं·**, अनंग त्रयोदशी; ⑤
१५	१४ शु	**भद्रारंभः २५:५८घं·, मासादिः;**
१६	१५ श	**भद्रांतः १३:२७घं·, वैशाखस्नान आरम्भ, मन्वादि, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, छत्रपति शिवाजी पुण्यदिवस; ⑤ आश्वन्यांमेषेरविः घं·११:००, भरण्यांबुधः घं·२३:२२;

❀ चैत्रशुक्लपक्ष - कृत्य एवं मुहूर्त्त ❀

❀**नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा–** यदि उदयकाल में प्रतिपदा का मान स्वल्प भी हो तो उसी दिन वर्षारम्भ होता है। यह चान्द्रवर्ष होता है- *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद २, वर्षनिर्णय)।*

❀ **वासन्तिक नवरात्रि–** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्त्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है- *''परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु, द्वितीय परिच्छेद)।''* **घटस्थापना मुहूर्त्त - प्रातःकाल ०८:४२ मिनट तक**
नवरात्रि में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में कभी भी कलशस्थापन नहीं करना चाहिए।(रुद्रयामल) अतः वैधृति से पहले ऐन्द्र योग में ८:४२ से पूर्व ही कलश–स्थापन करें। **अखण्ड दीप जलाने का मन्त्र -**

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **श्रीरामनवमी**– चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। श्रीरामचन्द्रजी व तीनों भाइयों को निम्न मंत्र से अर्घ्य दें–

दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।
परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोनघ ।।

❀ **दुर्गापाठ हवन व बलिदान–** नवमी तिथि में दुर्गापाठ का हवन करना चाहिए– *''नवम्यां पूजां विधाय होमः कार्यः''* (धर्मसिन्धु)। नवरात्रि पारणा दशमी में होती है– *''दशम्यामेव पारणा''*।

❀ **निम्बपत्रभक्षण–** चैत्र शुक्लपक्ष में निम्ब की सुकोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें मरीचि (कालीमिर्च), सेंधा नमक, हींग, जीरा एवं आजवाइन को सम मात्रा में मिला कर खाने से वर्षपर्यन्त रक्तविकार एवं चर्मरोग नहीं होता है।

''पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचिं लवणं हिंगुं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये।।''

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०७–१३:४५
१५	१२:०२–१३:४३

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि· भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२	०६:५७	०८:३३	१०:२८	१२:४२	१५:०२	१७:१९	१९:३४	२१:५३	००:११	०२:१७	०४:०१	०५:३०
३	०६:५३	०८:२९	१०:२४	१२:३८	१४:५८	१७:१५	१९:३०	२१:४९	००:०७	०२:१३	०३:५७	०५:२६
४	०६:४९	०८:२५	१०:२०	१२:३४	१४:५४	१७:११	१९:२६	२१:४५	००:०३	०२:०९	०३:५३	०५:२३
५	०६:४५	०८:२१	१०:१६	१२:३०	१४:५१	१७:०७	१९:२२	२१:४१	००:००	०२:०५	०३:४९	०५:१९
६	०६:४१	०८:१७	१०:१२	१२:२६	१४:४७	१७:०३	१९:१८	२१:३७	२३:५६	०२:०१	०३:४६	०५:१५
७	०६:३७	०८:१३	१०:०८	१२:२२	१४:४३	१६:५९	१९:१४	२१:३३	२३:५२	०१:५७	०३:४२	०५:११
८	०६:३३	०८:०९	१०:०४	१२:१९	१४:३९	१६:५५	१९:१०	२१:२९	२३:४८	०१:५३	०३:३८	०५:०७
९	०६:२९	०८:०५	१०:००	१२:१५	१४:३५	१६:५१	१९:०६	२१:२५	२३:४४	०१:४९	०३:३४	०५:०३
१०	०६:२५	०८:०१	०९:५७	१२:११	१४:३१	१६:४७	१९:०२	२१:२१	२३:४०	०१:४५	०३:३०	०४:५९
११	०६:२१	०७:५७	०९:५३	१२:०७	१४:२७	१६:४३	१८:५८	२१:१७	२३:३६	०१:४१	०३:२६	०४:५५
१२	०६:१७	०७:५३	०९:४९	१२:०३	१४:२३	१६:३९	१८:५४	२१:१३	२३:३२	०१:३७	०३:२२	०४:५१
१३	०६:१३	०७:४९	०९:४५	११:५९	१४:१९	१६:३५	१८:५०	२१:०९	२३:२८	०१:३३	०३:१८	०४:४७
१४	०६:०९	०७:४५	०९:४१	११:५५	१४:१५	१६:३२	१८:४६	२१:०५	२३:२४	०१:३०	०३:१४	०४:४३
१५	०६:०५	०७:४१	०९:३७	११:५१	१४:११	१६:२८	१८:४३	२१:०१	२३:२०	०१:२६	०३:१०	०४:३९
१६	०६:०१	०७:३७	०९:३३	११:४७	१४:०७	१६:२४	१८:३९	२०:५७	२३:१६	०१:२२	०३:०६	०४:३५

अप्रैल	卐 **सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग** 卐
२	**अमृतयोग** ११:५० तक; **द·ति·**२;**द·न·**रे;
३	**सर्वार्थसिद्धि**·अ १२:३२ तक; **सिद्ध**·३ १२:२२ से; **द·ति·**२; **द·न·**भ;
४	**रवियोग**ःकृ १४:०८ से;
५	**सर्वार्थसिद्धि**·कृ १६:१० तक; **रवियोग**ःकृ १६:१० तक;
६	**सर्वार्थसिद्धि**·मृ–·रो अहोरात्र; **रवियोग**ःमृ १८:३३ से;**अमृत**·६;
७	**रवियोग**ःमृ २१:०७ तक;
८	**मृत्यु**·७ २०:४६ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·पुन २३:४४ से;
९	**सिद्ध**·९ २२:४३ से; **रवियोग**ःपु २६:१२ तक;
१०	**सर्वार्थसिद्धि**·पु २८:२४ तक; **रवि पुष्य–**२८:२४ तक;**रवियोग** २८:२४ से;
११	**अमृत**·१० २५:४२ तक; **रवियोग**ःआश्ले अहोरात्र; **सिद्ध**·११ २५:४२ से;
१२	**मृत्यु**·११ २६:३२ तक; **अमृत**·१२ २६:३२ से;
१३	**सिद्ध**·१२ २६:५१ तक; **मृत्यु**·१३ २६:५१ से;
१४	**अमृत**·१३ २६:३९ तक; **रवियोग**ःउफा ०८:२३ से; **द·न·**उफा; **मृत्यु**·१४;
१५	**अमृत**·१४ २५:५८ तक; **रवियोग**ःह ०८:४५ से;
१६	**मृत्यु**·१५ २४:५० तक; **रवियोग**ःह ०८:३७ तक; **अमृत**·१ २४:५० से;

❀ सृष्टि और सतयुग का आरम्भ **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** को ही हुआ था। इस दिन संवत्सर पूजन, नवरात्रि घटस्थापन, पंचांग श्रवण, निज गृह पर ध्वजारोपण करें, श्रीठाकुरजी को नवीन पोशाक धारण करावें, वंदनवार लगावें, शंखध्वनि पूर्वक **नवसंवत्सर २०७९** का अभिनन्दन करें। **चैत्र शुक्ल नवमी** को उपवास व भक्तिपूर्वक विधिविधान से भगवान् श्री रामचन्द्रजी का प्राकट्य महोत्सव करें। **श्रीरामनवमी** पूर्वविद्धा त्याज्य है। नवमी पूर्वविद्धा हो तो दशमी में व्रत करे और दशमी की वृद्धि ना हो तो पारणा का त्याग करने में भी कोई दोष नहीं। श्रीसनत्कुमारों ने कहा है **– चैत्र शुक्ल एकादशी** को श्रीभगवान् को डोल पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक पूजाकर उन्हें झुलावें।

❀ **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** १६ अप्रैल को परम महाभागवत अंजनीनन्दन श्री हनुमान्जी का जयन्ती उत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न करें।

वैशाख कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १७ अप्रैल से ३० अप्रैल, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १७:४:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१७ अप्रैल से ३० अप्रैल
१७	१ र	४२:५९	२३:१८	चित्रा	०४:५६	०८:०४	वज्र	४७:३३	२४:०७	बाल	१५:००	कौल	४२:५९	३१:४७	६:०६	१८:४९	तुला	अहोरात्र	पद्म	३	१७	श्रीमहावीरजी रथयात्रा,
१८	२ चं	३८:२३	२१:२६	स्वाती विशा·	०२:४१ ५६:५८	०७:१० २९:५७	सिद्धि	४१:०१	२२:३०	तैति	१०:४७	गर	३८:२३	३१:५१	६:०५	१८:४९	वृ·४५:२८	२४:१६	छत्र	४	१८	आशा द्वितीया,
१९	३ मं	३३:०७	१९:१९	अनु·	५६:०४	२८:३०	व्यति·	३३:५८	१९:३९	वणि	०५:५०	विष	३३:०७	३१:५४	६:०४	१८:५०	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	५	१९	**संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी,चन्द्रोदय घं·२१:४२**
२०	४ बु	२७:२४	१७:०१	ज्ये·	५२:०७	२६:५४	वरी·	२६:३३	१६:४०	बव	००:१९	बाल	२७:२४	३१:५८	६:०३	१८:५०	ध·५२:०७	२६:५४	ध्वांक्ष	६	२०	सती अनुसुइया जयन्ती,
२१	५ गु	२१:२४	१४:३६	मूल	४७:५८	२५:१३	परिघ	१८:५४	१३:३६	तैति	२१:२४	गर	४८:२०	३२:०२	६:०२	१८:५१	धनु	अहोरात्र	धूम्र	७	२१	
२२	६ शु	१५:१९	१२:०९	पू·षा·	४३:५२	२३:२४	शिव	११:१२	१०:३०	वणि	१५:१९	विष	४२:१९	३२:०६	६:०१	१८:५१	म·५७:५२	२९:१०	प्रवर्द्ध	८	२२	**बूढ़ा बास्योड़ा**, श्रीकोकिला षष्ठी,
२३	७ श	०९:२४	०९:४६	उ·षा·	४०:०१	२२:०१	सिद्ध साध्य	०३:३६ ५२:३८	०७:२७ २८:२०	बव	०९:२४	बाल	३६:३२	३२:०९	६:००	१८:५२	मकर	अहोरात्र	राक्षस	९	२३	**श्रीकालाष्टमी**,
२४	८ र ९ र	०३:४८ ५४:५५	०७:३१ २९:१९	श्रवण	३६:३६	२०:३८	शुभ	४९:१९	२५:४३	कौल	०३:४८	तैति	३१:११	३२:१३	५:५९	१८:५२	मकर	अहोरात्र	गद	१०	२४	
२५	१० चं	५४:२३	२७:४३	धनि·	३३:५०	१९:३०	शुक्ल	४२:५८	२३:०९	वणि	२६:२८	विष	५४:२३	३२:१७	५:५८	१८:५३	कु·०५:०९	०८:०२	शुभ	११	२५	
२६	११ मं	५०:५४	२६:१९	शत·	३१:५३	१८:४३	ब्रह्म	३७:१७	२०:५२	बव	२२:३२	बाल	५०:५४	३२:२०	५:५७	१८:५४	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	१२	२६	**श्रीवरूथिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**,
२७	१२ बु	४८:२८	२५:२०	पू·भा·	३०:५५	१८:१८	ऐन्द्र	३२:२५	१८:५५	कौल	१९:३४	तैति	४८:२८	३२:२४	५:५७	१८:५४	मी·१६:०४	१२:२२	पद्म	१३	२७	**श्रीवरूथिनी एकादशी (निम्बार्क)**,
२८	१३ गु	४७:११	२४:४८	उ·भा·	३१:०३	१८:२१	वैधृ·	२८:२८	१७:१९	गर	१७:४२	वणि	४७:११	३२:२७	५:५६	१८:५५	मीन	अहोरात्र	छत्र	१४	२८	**प्रदोष व्रतम्**, वैधृति पुण्यम्,
२९	१४ शु	४७:१०	२४:४७	रेवती	३२:२३	१८:५२	विष्कु·	२५:२९	१६:०६	विष	१७:०२	बव	४७:१०	३२:३१	५:५५	१८:५५	मे·३२:२३	१८:५२	श्रीवत्स	१५	२९	**मास शिवरात्रि**,
३०	३० श	४८:२४	२५:१६	अश्वि·	३४:५९	१९:४३	प्रीति	२३:३०	१५:१८	चतु	१७:३८	नाग	४८:२४	३२:३४	५:५४	१८:५६	मेष	अहोरात्र	सौम्य	१६	३०	**शनैश्चरी अमावस्या (देव–पितृकार्य)**,

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१७	१ र	००:०२:४४:०६	०६:०५:३२:१०	१०:०५:१६:२८	००:१६:५५:२२	११:०२:०२:४४	१०:१८:३९:४६	०९:२६:१५:१९	०७:०२:१०:०४	४५:५३:२५	उ·१०:०४:२१	– ०:४३	१९:३४:२७
१८	२ चं	००:०३:४२:४०	०६:१९:२२:३२	१०:०६:०२:०६	००:१८:२६:४६	११:०२:१६:३२	१०:१९:४७:३९	०९:२६:१९:४३	०७:०२:०६:५३	४५:५५:२०	उ·१०:२६:०७	– ०:२८	२०:३८:२४
१९	३ मं	००:०४:४१:१३	०७:०३:२४:३२	१०:०६:४७:४४	००:१९:५६:११	११:०२:३०:१७	१०:२०:५५:३९	०९:२६:२४:०२	०७:०२:०३:४२	४५:५७:१३	उ·१०:४७:४३	– ०:१३	२१:४२:४५
२०	४ बु	००:०५:३९:४३	०७:१७:३५:३२	१०:०७:३३:२४	००:२१:२३:२७	११:०२:४३:५९	१०:२२:०३:४७	०९:२६:२८:१७	०७:०२:००:३२	४५:५९:०६	उ·११:०९:०८	+ ०:०१	२२:४६:५०
२१	५ गु	००:०६:३८:११	०८:०१:५२:३१	१०:०८:१९:०५	००:२२:४८:२५	११:०२:५७:३९	१०:२३:१२:०२	०९:२६:३२:२६	०७:०१:५७:२१	४६:००:५८	उ·११:३०:२२	+ ०:१५	२३:४८:०७
२२	६ शु	००:०७:३६:३७	०८:१६:१२:००	१०:०९:०४:४७	००:२४:१०:५४	११:०३:११:१५	१०:२४:२०:२४	०९:२६:३६:३०	०७:०१:५४:१०	४६:०२:५०	उ·११:५१:२५	+ ०:२९	००:४३:२८
२३	७ श	००:०८:३५:००	०९:००:३०:०४	१०:०९:५०:३०	००:२५:३०:४४	११:०३:२४:४८	१०:२५:२८:५२	०९:२६:४०:२८	०७:०१:५०:६०	४६:०४:४०	उ·१२:१२:१६	+ ०:४२	०१:३५:०४
२४	८ र	००:०९:३३:२२	०९:१४:४३:०५	१०:१०:३६:१४	००:२६:४७:४२	११:०३:३८:१८	१०:२६:३७:२७	०९:२६:४४:२२	०७:०१:४७:४९	४६:०६:३०	उ·१२:३२:५५	+ ०:५५	०२:१९:१८
२५	१० चं	००:१०:३१:४१	०९:२८:४७:५५	१०:११:२१:५८	००:२८:०१:३७	११:०३:५१:४५	१०:२७:४६:०९	०९:२६:४८:१०	०७:०१:४४:३८	४६:०८:२०	उ·१२:५३:२२	+ १:०७	०३:०१:११
२६	११ मं	००:११:२९:५८	१०:१२:४१:४९	१०:१२:०७:४४	००:२९:१२:१४	११:०४:०५:०९	१०:२८:५४:५६	०९:२६:५१:५३	०७:०१:४१:२८	४६:१०:०८	उ·१३:१३:३६	+ १:१९	०३:३७:४७
२७	१२ बु	००:१२:२८:१३	१०:२६:२२:३६	१०:१२:५३:३०	०१:००:१९:१९	११:०४:१८:२९	११:००:०३:५०	०९:२६:५५:३०	०७:०१:३८:१७	४६:११:५५	उ·१३:३३:३७	+ १:३०	०४:१३:३९
२८	१३ गु	००:१३:२६:२६	११:०९:४८:४५	१०:१३:३९:१७	०१:०१:२२:३९	११:०४:३१:४५	११:०१:१२:४९	०९:२६:५९:०२	०७:०१:३५:०७	४६:१३:४२	उ·१३:५३:२५	+ १:४१	०४:४८:४३
२९	१४ शु	००:१४:२४:३७	११:२२:५९:२७	१०:१४:२५:०४	०१:०२:२१:५६	११:०४:४४:५८	११:०२:२१:५४	०९:२७:०२:२८	०७:०१:३१:५६	४६:१५:२८	उ·१४:१२:५९	+ १:५२	०५:२३:०१
३०	३० श	००:१५:२२:४६	००:०५:५४:४३	१०:१५:१०:५२	०१:०३:१६:५५	११:०४:५८:०८	११:०३:३१:०५	०९:२७:०५:४८	०७:०१:२८:४५	४६:१७:१३	उ·१४:३२:१९	+ २:०१	०६:०१:३६

२० **अप्रैल** सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

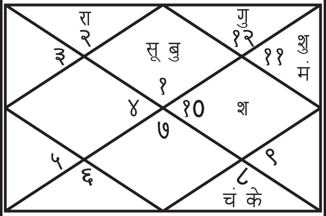

२६ **अप्रैल** सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

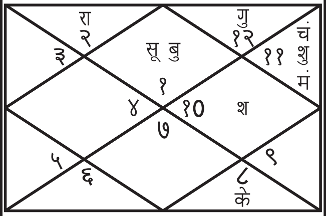

वैशाख कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १७ अप्रैल से ३० अप्रैल, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५०:४४

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१७	१ र	श्रीएकलिंगजी पाटोत्सव (मेवाड़) ;
१८	२ चं	पूर्वभाद्रेशुक्रः घं·१०:२७, शतभिषायांमङ्गलः घं·२:०१;
१९	३ मं	**भद्रा ८:२४–१९:१९घं·**, व्यतीपात पुण्यम्;
२०	४ बु	**गण्डान्तारम्भः २१:१८**;
२१	५ गु	**गण्डान्तः ८:२९**, गुरु तेगबहादुर जयन्ती, श्रीमलूकदासजी जयन्ती;
२२	६ शु	**भद्रा १२:०९–२२:५७घं·**, उत्तरभाद्रेगुरुः घं·२१:३०;
२३	७ श	**अभिजितनक्षत्रः २५:५७–४३:४६**, गुरु अर्जुनदेव जयन्ती, ①
२४	८ र	; ① कृत्तिकायांबुधः घं·३:३३;
२५	१० चं	**पंचकारंभः ०८:०२, भद्रा १६:३३–२७:४३घं·**;
२६	११ मं	**पंचक, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती**, वृषेबुधः घं·२२:५४, मीनेशुक्रः घं·४:३७;
२७	१२ बु	**पंचक**, भरण्यांरविः घं·०३:१७;
२८	१३ गु	**पंचक, भद्रारंभः २४:४८घं·**;
२९	१४ शु	**पंचकान्तः १८:५२, भद्रांतः १२:४३घं·, गण्डान्तः १२:४१–२५:०५**, ②
३०	३० श	श्रीशुकदेव जयन्ती; ② उत्तरभाद्रेशुक्रः घं·२:०४;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०२–१३:४३
१५	११:५८–१३:४२

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

इस मास में भगवान् श्रीहरि की पूजा करने से दारुण पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। वैशाख में प्रात:काल पीपल वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन जल देने से अपूर्व पुण्य की प्राप्ति व कुल का तारण होता है– **''अनेन अनेककुलतारणं फलम् ।''**

वैशाख स्नान का महत्त्व– चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व संकल्पपूर्वक स्नान करने से समस्त पाप का नाश होता है। अशक्त होने की स्थिति में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करना चाहिए। वैशाखमास में तुलसीपत्र से भगवान् विष्णु की त्रिकाल पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है–

माधवं सकलं मासं तुलस्या योऽर्चयेन्नरः ।
त्रिसन्ध्यं मधुहन्तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः।

❀ शनि, रवि, मंगल को दाढ़ी–बाल न बनवायें ❀

शनि, रवि और मंगलवार को दाढ़ी, बाल, नाखून कटवाने से आयु घटती है। शेष दिनों में क्षौर कराने से आयु बढ़ती है। अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और मघा नक्षत्र में भी दाढ़ी–बाल कटवाने से आयु की हानि होती है। **युक्षयोऽनुराधाग्निस्त्र्युत्तरारोहिणीमघे।।** जो लोग प्रतिदिन दाढ़ी बनाते हैं, उनपर यह दोष नहीं लगता है।

❀ नागशाप, कालसर्प व राहु–केतु शान्त्यर्थ वैदिक प्रयोग ❀

संकल्प– ॐ ... देशकाल संकीर्त्य ... अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक नामाहं मम जन्मकुण्डल्यां सामुद्रिकलक्षणे वा सर्पशापजनित–दोषोपशान्तये च ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञानाद् अज्ञानाद् वा कृतस्य सर्पवधस्य तदुत्थदोषस्य परिहारार्थं जीविका– व्यवसाय– विद्या– विवाह– सत्पुत्र स्वास्थ्य– राजसत्ता– पदप्रतिष्ठासम्बन्धी समस्तविघ्ननिरसनपूर्वकं साफल्यं सम्प्राप्तये, प्राप्तश्रीरक्षणार्थं, राहुकेतुजनित समस्त–अशुभफल निवारणार्थं शुभफलप्राप्तिकामनया नागशापशान्त्यर्थं कालसर्पदोषशान्त्यर्थं च श्रीसर्पदेवताप्रीत्यर्थं यजुर्वेदीय त्रिमन्त्रात्मक सर्पसूक्तस्य द्वादशशत पाठ कर्माऽहं करिष्ये/ ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

विनियोगः – ॐ अस्य सर्पसूक्तस्य देवश्रवा ऋषिः भुरिगुष्णिक् अनुष्टुप् निचृदनुष्टुप् नानाछन्दांसि सर्पसमूह देवता मम संकल्प सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

सर्पगायत्री–भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात्।।

❀ सर्पसूक्तम् ❀

ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।१।।
येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।२।।
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँरनु ।
ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।३।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
१७	०५:५८	०७:३३	०९:२९	११:४३	१४:०३	१६:२०	१८:३५	२०:५३	२३:१२	०१:१८	०३:०२	०४:३१
१८	०५:५४	०७:२९	०९:२५	११:३९	१३:५९	१६:१६	१८:३१	२०:५०	२३:०८	०१:१४	०२:५८	०४:२७
१९	०५:५०	०७:२६	०९:२१	११:३५	१३:५५	१६:१२	१८:२७	२०:४६	२३:०४	०१:१०	०२:५४	०४:२४
२०	०५:४६	०७:२२	०९:१७	११:३१	१३:५१	१६:०८	१८:२३	२०:४२	२३:००	०१:०६	०२:५०	०४:२०
२१	०५:४२	०७:१८	०९:१३	११:२७	१३:४७	१६:०४	१८:१९	२०:३८	२२:५७	०१:०२	०२:४७	०४:१६
२२	०५:३८	०७:१४	०९:०९	११:२३	१३:४४	१६:००	१८:१५	२०:३४	२२:५३	००:५८	०२:४३	०४:१२
२३	०५:३४	०७:१०	०९:०५	११:१९	१३:४०	१५:५६	१८:११	२०:३०	२२:४९	००:५४	०२:३९	०४:०८
२४	०५:३०	०७:०६	०९:०१	११:१६	१३:३६	१५:५२	१८:०७	२०:२६	२२:४५	००:५०	०२:३५	०४:०४
२५	०५:२६	०७:०२	०८:५७	११:१२	१३:३२	१५:४८	१८:०३	२०:२२	२२:४१	००:४६	०२:३१	०४:००
२६	०५:२२	०६:५८	०८:५३	११:०८	१३:२८	१५:४४	१७:५९	२०:१८	२२:३७	००:४२	०२:२७	०३:५६
२७	०५:१८	०६:५४	०८:५०	११:०४	१३:२४	१५:४०	१७:५५	२०:१४	२२:३३	००:३८	०२:२३	०३:५२
२८	०५:१४	०६:५०	०८:४६	११:००	१३:२०	१५:३६	१७:५१	२०:१०	२२:२९	००:३४	०२:१९	०३:४८
२९	०५:१०	०६:४६	०८:४२	१०:५६	१३:१६	१५:३२	१७:४७	२०:०६	२२:२५	००:३०	०२:१५	०३:४४
३०	०५:०६	०६:४२	०८:३८	१०:५२	१३:१२	१५:२८	१७:४३	२०:०२	२२:२१	००:२७	०२:११	०३:४०

अप्रैल	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
१७	**मृत्यु**·१ २३:१८ तक;
१८	**मृत्यु**·२ २१:२६ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·अनु २९:५७ से;
१९	**सिद्ध**·३ १९:१९ तक;
२१	**सिद्ध**·५ १४:३६ तक; **रवियोग**:पूषा २५:१३ से; **द·ति**·६;
२२	**सिद्ध**·६ १२:०९ तक; **रवियोग**:पूषा २३:२४ तक; **मृत्यु**·७ १२:०९ से; **द·ति**·६,
२३	**त्रिपुष्कर**:७+उषा ९:४६ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·श्र २२:०१ से;
२४	**सिद्ध**·८ ७:३१ तक; **अमृत**·१० २९:१९ से;
२५	**अमृत**·१० २७:४३ तक; **सिद्ध**·११ २७:४३ से;
२६	**मृत्यु**·११ २६:१९ तक; **अमृत**·१२ २६:१९ से; **त्रिपुष्कर**:१२+पूभा २६:१९ से सूर्योदय तक;
२७	**सिद्ध**·१२ २५:२० तक; **मृत्यु**·१३ २५:२० से;
२८	**अमृत**·१३ २४:४८ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·रे १८:२१ से; **मृत्यु**·१४ २४:४८ से;
२९	**सर्वार्थसिद्धि** अहोरात्र; **अमृत**·१४ २४:४७ तक;
३०	**मृत्यु**·१५ २५:१६ तक;

❀ वैशाख मास में विशेष दान ❀

वैशाख में जलदान करने का विशेष पुण्य है। मिट्टी के घड़े द्रोण कलश में सुगन्धित शीतल जल भरकर दान करने का अपूर्व महत्व होता है। **इस मास में शिवलिंग पर कलश से जल टपकाने की व्यवस्था करना अक्षय पुण्यकारी होता है।** गर्मी से बचाने वाली वस्तु, मटका, जल दान, जूता, चप्पल, छाता, कपड़ा, पंखा, चंदन, मलमल वस्त्र, कर्पूर, ताम्बूल, फूल माला, सुगन्धित पदार्थ, शर्बत, अंगूर, तरबूज, खीरा, आम्र आदि दान करने से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। वैशाख में प्रपा (प्याऊ) लगाने का महत्व है। प्यासे पशु पक्षियों को पानी दें।

प्रपा कार्याच वैशाखे देवे देया गलन्तिका।
उपानद्व्यजनंछत्रं सूक्ष्मवासांसि चंदनम् ॥

वैशाख शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १ मई से १६ मई, २०२२

ग्रहस्थितिः– १:५:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः; **गुरु संवत्सर परिवर्तन** :**५:५:२०२२** ईस्वी, तिथि ४, ०:१९:४३ घ.प.वि.;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१ मई से १६ मई
१	१ र	५०:५३	२६:१४	भरणी	३८:४७	२१:२४	आयु·	२२:३१	१४:५३	किं	१९:३१	बव	५२:३३	३२:३८	५:५३	१८:५६	वृ·५४:५५	२७:५१	कालदंड	१७	१	गुरु अंगददेव जयन्ती, विश्व मजदूर दिवस,
२	२ चं	५४:२८	२७:३९	कृत्ति·	४३:४२	२३:२१	सौभा·	२२:२७	१४:५१	बाल	२२:३४	कौल	५६:०८	३२:४१	५:५२	१८:५७	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१८	२	छत्रपति शिवाजी जयन्ती,
३	३ मं	५८:५६	२९:२६	रोहि·	४९:३०	२५:३९	शोभ·	२३:०९	१५:०७	तैति	२६:३८	गर	६०:००	३२:४५	५:५१	१८:५७	वृष	अहोरात्र	मातङ्ग	१९	३	**अक्षय तृतीया, श्री परशुराम जयन्ती,**
४	४ बु	६०:००	अहोरात्र	मृग·	५५:५३	२८:१२	अतिग·	२४:२६	१५:३७	वणि	३१:२४	वणि	३३:०४	३२:४८	५:५१	१८:५८	मि·२२:३९	१४:५४	अमृत	२०	४	**वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी,**
५	४ गु	०३:५८	०७:२५	आर्द्रा	६०:००	अहोरात्र	सुकर्मा	२६:०१	१६:१४	विष	०३:५८	बव	३८:१२	३२:५१	५:५०	१८:५८	मिथुन	अहोरात्र	काण	२१	५	
६	५ शु	०९:०७	०९:२८	आर्द्रा	०२:३०	०६:४९	धृति	२७:३७	१६:५२	बाल	०९:०७	कौल	४३:१६	३२:५५	५:४९	१८:५९	क·५२:१६	२६:४४	पद्म	२२	६	**श्रीमद् आद्य शंकराचार्य जयन्ती,**
७	६ श	१३:५९	११:२४	पुन·	०८:५०	०९:२०	शूल	२८:५३	१७:२२	तैति	१३:५९	गर	४७:४९	३२:५८	५:४८	१८:५९	कर्क	अहोरात्र	छत्र	२३	७	**श्रीमद् रामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगंगासप्तमी,**
८	७ र	१८:१०	१३:०३	पुष्य	१४:३३	११:३७	गण्ड	२९:३६	१७:३८	वणि	१८:१०	विष	५१:३३	३३:०१	५:४८	१९:००	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	२४	८	श्रीकामदा सप्तमी, शर्करा सप्तमी, निम्ब सप्तमी
९	८ चं	२१:२२	१४:२०	आश्ले·	१९:२१	१३:३१	वृद्धि	२९:३१	१७:३५	बव	२१:२२	बाल	५४:११	३३:०४	५:४७	१९:०१	सिं·१९:२१	१३:३१	सौम्य	२५	९	**श्रीदुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयन्ती,**
१०	९ मं	२३:२५	१५:०८	मघा	२३:०१	१४:५९	ध्रुव	२८:३२	१७:११	कौल	२३:२५	तैति	५५:३६	३३:०७	५:४६	१९:०१	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	२६	१०	**श्री जानकी नवमी (स्मार्त्त, वैष्णव),**
११	१० बु	२४:१२	१५:२६	पू·फा·	२५:२८	१५:५७	व्याघ·	२६:३४	१६:२३	गर	२४:१२	वणि	५५:४५	३३:१०	५:४५	१९:०२	क·४०:५३	२२:०७	प्रवर्द्ध	२७	११	**श्री महावीर स्वामी कैवल्यज्ञान,**
१२	११ गु	२३:४२	१५:१४	उ·फा·	२६:४०	१६:२५	हर्षण	२३:३५	१५:११	विष	२३:४२	बव	५४:३७	३३:१३	५:४५	१९:०२	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	२८	१२	**श्री मोहिनी एकादशी (स्मार्त्त, वैष्णव),**
१३	१२ शु	२१:५८	१४:३२	हस्त	२६:४०	१६:२४	वज्र	१९:३८	१३:३६	बाल	२१:५८	कौल	५२:१९	३३:१६	५:४४	१९:०३	तु·५६:१४	२८:१४	अमृत	२९	१३	**प्रदोष व्रतम्,** श्री परशुराम द्वादशी,
१४	१३ श	१९:०७	१३:२२	चित्रा	२५:३४	१५:५७	सिद्धि	१४:४७	११:३८	तैति	१९:०७	गर	४८:५७	३३:१९	५:४४	१९:०३	तुला	अहोरात्र	काण	३०	१४	**श्री नृसिंह जयन्ती (स्मार्त्त),**
१५	१४ र	१५:१८	११:५०	स्वाती	२३:३१	१५:०७	व्यति·	०९:०८	०९:२२	वणि	१५:१८	विष	४४:४२	३३:२२	५:४३	१९:०४	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	३१	१५	**श्री नृसिंह जयन्ती (वैष्णव), पूर्णिमा व्रतम्,**
१६	१५ चं	१०:३८	०९:५८	विशा·	२०:४०	१३:५८	वरी· परिघ	०२:४७ ५३:०५	०६:४९ २८:०१	बव	१०:३८	बाल	३९:४१	३३:२५	५:४२	१९:०४	वृ·०६:२७	०८:१७	मित्र	१	१६	**वैशाखी पूर्णिमा (स्नान–दान), बुद्ध पूर्णिमा,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

मध्यम गुरु संवत्सरारम्भ :ति–:४, ०:१८:४ घ·प·वि·

दिनाङ्क मई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१	१ र	००:१६:२०:५२	००:१८:३५:१५	१०:१५:५६:४०	०१:०४:०७:१९	११:०५:११:१३	११:०४:४०:२०	०९:२७:०९:०३	०७:०१:२५:३५	४६:१८:५६	उ·१४:५१:२५	+ २:११	०६:००:४४
२	२ चं	००:१७:१८:५७	०१:०१:०२:३३	१०:१६:४२:२८	०१:०४:५२:५०	११:०५:२४:१४	११:०५:४९:४१	०९:२७:१२:१२	०७:०१:२२:२४	४६:२०:३९	उ·१५:१०:१६	+ २:२०	०६:३९:१४
३	३ मं	००:१८:१६:६०	०१:१३:१८:४५	१०:१७:२८:१७	०१:०५:३३:१०	११:०५:३७:१२	११:०६:५९:०८	०९:२७:१५:१५	०७:०१:१९:१३	४६:२२:२१	उ·१५:२८:५२	+ २:२८	०७:२१:५७
४	४ बु	००:१९:१५:००	०१:२५:२६:३३	१०:१८:१४:०६	०१:०६:०८:०३	११:०५:५०:०५	११:०८:०८:३९	०९:२७:१८:१३	०७:०१:१६:०३	४६:२४:०१	उ·१५:४७:१३	+ २:३६	०८:०८:०९
५	४ गु	००:२०:१२:५९	०२:०७:२९:०७	१०:१८:५९:५४	०१:०६:३७:११	११:०६:०२:५४	११:०९:१८:१५	०९:२७:२१:०४	०७:०१:१२:५२	४६:२५:४१	उ·१६:०५:१९	+ २:४३	०८:५५:०३
६	५ शु	००:२१:१०:५६	०२:१९:२९:५९	१०:१९:४५:४३	०१:०७:००:१७	११:०६:१५:३८	११:१०:२७:५५	०९:२७:२३:५०	०७:०१:०९:४१	४६:२७:१९	उ·१६:२३:०८	+ २:५०	०९:४७:५१
७	६ श	००:२२:०८:५१	०३:०१:३३:०८	१०:२०:३१:३२	०१:०७:१७:०७	११:०६:२८:१९	११:११:३७:४१	०९:२७:२६:२९	०७:०१:०६:३१	४६:२८:५६	उ·१६:४०:४२	+ २:५६	१०:४०:५५
८	७ र	००:२३:०६:४४	०३:१३:४२:०१	१०:२१:१७:२०	वक्री ०७:२७:२८	११:०६:४०:५४	११:१२:४७:३०	०९:२७:२९:०३	०७:०१:०३:२०	४६:३०:३२	उ·१६:५७:५९	+ ३:०२	११:३५:२६
९	८ चं	००:२४:०४:३५	०३:२५:५९:४५	१०:२२:०३:०८	०१:०७:३१:१२	११:०६:५३:२५	११:१३:५७:२४	०९:२७:३१:३०	०७:०१:००:०९	४६:३२:०६	उ·१७:१४:५९	+ ३:०७	१२:३१:०७
१०	९ मं	००:२५:०२:२४	०४:०८:२८:५७	१०:२२:४८:५६	०१:०७:२८:१२	११:०७:०५:५२	११:१५:०७:२२	०९:२७:३३:५१	०७:००:५६:५९	४६:३३:४०	उ·१७:३१:४१	+ ३:११	१३:२७:०५
११	१० बु	००:२६:००:११	०४:२१:११:३९	१०:२३:३४:४३	०१:०७:१८:२९	११:०७:१८:१३	११:१६:१७:२५	०९:२७:३६:०६	०७:००:५३:४८	४६:३५:१२	उ·१७:४८:०७	+ ३:१५	१४:२३:१०
१२	११ गु	००:२६:५७:५६	०५:०४:०९:१५	१०:२४:२०:३०	०१:०७:०२:०९	११:०७:३०:२९	११:१७:२७:३१	०९:२७:३८:१५	०७:००:५०:३७	४६:३६:४२	उ·१८:०४:१५	+ ३:१८	१५:२०:३३
१३	१२ शु	००:२७:५५:४०	०५:१७:२२:२२	१०:२५:०६:१६	०१:०६:३९:२४	११:०७:४२:४१	११:१८:३७:४१	०९:२७:४०:१८	०७:००:४७:२७	४६:३८:११	उ·१८:२०:०४	+ ३:२१	१६:१९:१७
१४	१३ श	००:२८:५३:२२	०६:००:५०:५१	१०:२५:५२:०१	०१:०६:१०:३८	११:०७:५४:४७	११:१९:४७:५५	०९:२७:४२:१४	०७:००:४४:१६	४६:३९:३९	उ·१८:३५:३६	+ ३:२३	१७:१९:२१
१५	१४ र	००:२९:५१:०२	०६:१४:३३:४८	१०:२६:३७:४५	०१:०५:३६:१९	११:०८:०६:४८	११:२०:५८:१३	०९:२७:४४:०४	०७:००:४१:०५	४६:४१:०५	उ·१८:५०:४८	+ ३:२५	१८:२२:४०
१६	१५ चं	०१:००:४८:४१	०६:२८:२९:३५	१०:२७:२३:२८	०१:०४:५७:०९	११:०८:१८:४३	११:२२:०८:३४	०९:२७:४५:४८	०७:००:३७:५५	४६:४२:२९	उ·१९:०५:४२	+ ३:२६	१९:२७:०२

४ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

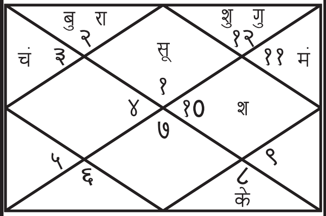

१२ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

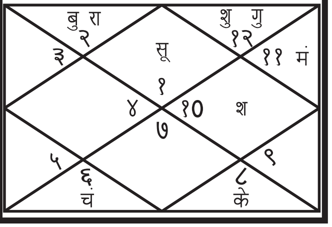

वैशाख शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १ मई से १६ मई, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःवसन्त वृषार्कतः ऋतुःग्रीष्म ।
उत्तरायणं । सौम्यगोलः, ति·१५ अयनांशाः२२:५०:४६

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१	१ र	;
२	२ चं	;
३	३ मं	त्रेतायुगादि, रोहिणीव्रत (जैन), मातंगी जयन्ती;
४	४ बु	**भद्रा १८:२४–३१:२५घं·, श्रीपरशुराम जयन्ती (निम्बार्क)** ;
५	४ गु	**भद्रांतः ७:२५घं·**;
६	५ शु	संत श्री सूरदास जयन्ती, पूर्वभाद्रेमङ्गलः घं·१३:१८;
७	६ श	**श्री स्कन्दषष्ठी**, चन्दनषष्ठी;
८	७ र	**भद्रा १३:०३–२५:४५घं·**, कमला सप्तमी, वक्रःबुधः घं·१३:१२;
९	८ चं	**गण्डान्तः ७:०५–१९:५६**;
१०	९ मं	;
११	१० बु	**भद्रारंभः २७:२४घं·**, कृत्तिकायांरविः घं·२२:१८, ⓵
१२	११ गु	**श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती, भद्रांतः १५:१४घं·**;
१३	१२ शु	; ⓵ रेवत्यांशुक्रः घं·१३:३०;
१४	१३ श	**मासान्तः**, बुधःपश्चिमास्तः घं·०६:२६;
१५	१४ र	**भद्रा ११:५०–२२:५६घं·, वृष संक्रान्ति पुण्यकालं**,०५:४३–**१२:२३घं·**, गुरु अमरदास जयन्ती, व्यतीपात पुण्यम्, वृषेरविः घं·०९:२७;
१६	१५ चं	**कूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, पीपल पूर्णिमा**, मेला देवयानी सांभर, मासादिः;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५८–१३:४२
१५	११:४६–१३:४३

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

❀ **अक्षयतृतीया–** वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दो दिन पूर्वाह्न में होने पर अगली तिथि ग्राह्य होती है। द्वितीया विद्धा अग्राह्य व चतुर्थी विद्धा शुभ होती है– ***वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते। सापूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। दिनद्वयेपितद्व्याप्तौपरैव।*** *(निर्णयसिन्धु)।* इसमें जप, होम, पितृतर्पण, दान आदि का अक्षयफल होता है। यह युगादि तिथि भी है। तिल या स्वर्णदान विशेष फलदायी है।

❀ **चन्दनोत्सव–** भी इसी दिन करें। श्रीठाकुरजी को अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर–कपूर–चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन–वस्त्र धारण करावें, आभूषण–पुष्पादि से श्रृंगार कर सिंहासन पर विराजमान करें।

❀ **श्रीगंगासप्तमी–** वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन महर्षि जह्नु ने अपने दाहिने कान से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ा था। गंगा सप्तमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी होने, या न होने पर पूर्वातिथि ग्राह्य होती है।

❀ श्रीनृसिंह मंत्रराज ❀

विनियोगः– ॐ अस्य श्री नृसिंह मन्त्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः नृसिंह देवता हं बीजं ई शक्तिः श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः

सौम्य ध्यान –जान्वोरासक्ततीक्ष्णस्वनखरुचिलसद्बाहुसंस्पृष्टं,
केशश्चक्रं खड्गं च दोर्भ्यां दधदनलसमज्योतिषा ग्रस्तदैत्यः ।
ज्वालामालापरीतं रविशशिदहनत्रीक्षणं दीप्तजिह्वं,
दंष्ट्रोग्रं धूतकेशं वदनमपि वहन् पातु वो नारसिंहः ।।

मन्त्रः– **ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।**
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।

इस मन्त्र के दस हज़ार जप से पुरश्चरण होता है व ३२ हज़ार जप के बाद मन्त्र प्रयोग का अधिकारी बनता है। जप पूर्णता के लिए प्रतिदिन श्रीनरसिंह भगवान् की पूजा करते रहना चाहिए। इस मंत्र के जप के बाद द्वादशाक्षर मन्त्र का जप भी करना चाहिए।

❀ द्वादशाक्षर मन्त्र ❀

विनियोगः–ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव देवता ॐ बीजं नमः शक्तिः श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। **ध्यानम्ः–**

हरिमुज्ज्वल चक्रदराब्ज गदाकुलदोः परिघं सितपद्मगतम्।
वलयांगदहारकिरीटधरं नवकुन्दरुचं प्रणमामि सदा। (प्रपंचसारे)

मन्त्रः – **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	०५:०२	०६:३८	०८:३४	१०:४८	१३:०८	१५:२५	१७:३९	१९:५८	२२:१७	००:२३	०२:०७	०३:३६
२	०४:५८	०६:३४	०८:३०	१०:४४	१३:०४	१५:२१	१७:३६	१९:५४	२२:१३	००:१९	०२:०३	०३:३२
३	०४:५४	०६:३०	०८:२६	१०:४०	१३:००	१५:१७	१७:३२	१९:५०	२२:०९	००:१५	०१:५९	०३:२८
४	०४:५०	०६:२६	०८:२२	१०:३६	१२:५६	१५:१३	१७:२८	१९:४६	२२:०५	००:११	०१:५५	०३:२४
५	०४:४६	०६:२२	०८:१८	१०:३२	१२:५२	१५:०९	१७:२४	१९:४३	२२:०१	००:०७	०१:५१	०३:२०
६	०४:४२	०६:१८	०८:१४	१०:२८	१२:४८	१५:०५	१७:२०	१९:३९	२१:५७	००:०३	०१:४७	०३:१७
७	०४:३९	०६:१५	०८:१०	१०:२४	१२:४४	१५:०१	१७:१६	१९:३५	२१:५४	२३:५९	०१:४३	०३:१३
८	०४:३५	०६:११	०८:०६	१०:२०	१२:४०	१४:५७	१७:१२	१९:३१	२१:५०	२३:५५	०१:४०	०३:०९
९	०४:३१	०६:०७	०८:०२	१०:१६	१२:३७	१४:५३	१७:०८	१९:२७	२१:४६	२३:५१	०१:३६	०३:०५
१०	०४:२७	०६:०३	०७:५८	१०:१२	१२:३३	१४:४९	१७:०४	१९:२३	२१:४२	२३:४७	०१:३२	०३:०१
११	०४:२३	०५:५९	०७:५४	१०:०८	१२:२९	१४:४५	१७:००	१९:१९	२१:३८	२३:४३	०१:२८	०२:५७
१२	०४:१९	०५:५५	०७:५०	१०:०५	१२:२५	१४:४१	१६:५६	१९:१५	२१:३४	२३:३९	०१:२४	०२:५३
१३	०४:१५	०५:५१	०७:४६	१०:०१	१२:२१	१४:३७	१६:५२	१९:११	२१:३०	२३:३५	०१:२०	०२:४९
१४	०४:११	०५:४७	०७:४२	०९:५७	१२:१७	१४:३३	१६:४८	१९:०७	२१:२६	२३:३१	०१:१६	०२:४५
१५	०४:०७	०५:४३	०७:३९	०९:५३	१२:१३	१४:२९	१६:४४	१९:०३	२१:२२	२३:२७	०१:१२	०२:४१
१६	०४:०३	०५:३९	०७:३५	०९:४९	१२:०९	१४:२५	१६:४०	१८:५९	२१:१८	२३:२४	०१:०८	०२:३७

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
१	**मृत्यु**·१ २६:१४ तक; **द·न·भ**; **त्रिपुष्कर**:२+कृ २६:१४ से;
२	**मृत्यु**·२ २७:३९ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·रो २३:२१ से;
३	**सिद्ध**·३ २९:२६ तक; **रवियोग**:मृ २५:३९ से;
४	**सर्वार्थसिद्धि**·मृ २८:१२ तक; **रवियोग**:मृ २८:१२ तक;
५	**मृत्यु**·४ ०७:२५ तक; **सिद्ध**·५ ०७:२५ से;
६	**सर्वार्थसिद्धि–रवियोग**:पुन ०६:४९ से; **सिद्ध**·६ ०९:२८ से, **द·ति**·६
७	**अमृत**·६ ११:२४ तक; **रवियोग**:पुन ०९:२० तक, **द·ति**·६;
८	**सर्वार्थसिद्धि**·पु–**रविपुष्ययोग** ११:३७ तक; **सिद्ध**·८ १३:०३ से;
९	**रवियोग**:म १३:३१ से;
१०	**रवियोग**:म–पूफा अहोरात्र;
११	**रवियोग**:पूफा–उफा अहोरात्र; **अमृत**·११ १५:२६ से;
१२	**रवियोग**:उफा १६:२५ तक; **द·न**·उफा;
१३	**मृत्यु**·१२ १४:३२ तक;
१४	**सिद्ध**·१४ १६:२२ से; **सर्वार्थसिद्धि**·स्वा–**रवियोग**:स्वा १५:५७ से;
१५	**रवियोग**:स्वा १५:०७ तक; **अमृत**·१५ ११:५० से;
१६	**अमृत**·१५ ०९:५८ तक; **सिद्ध**·१ ०९:५८ से; **सर्वार्थ**·अनु १३:५८ से;

❀ **वैशाख शुक्ल तृतीया** को भगवान् श्री परशुरामजी का अवतार व त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई। उस दिन वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। यह अक्षय तृतीया श्रीहरि भगवान् को बहुत प्यारी है, इस में स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितृ–तर्पण का अक्षय फल प्राप्त होता है। ३ मई।

❀ **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी** १५ मई को श्रीनृसिंह भगवान् का व्रतपूर्वक, विधिपूर्वक जन्मोत्सव करें। यह व्रत नृसिंह भगवान् की तुष्टि के लिए पूर्णिमा से युक्त चतुर्दशी में करें। जो मनुष्य अज्ञानता से त्रयोदशी विद्ध चतुर्दशी का व्रत करता है, वह धन और सन्तान से वियोग पाता है इस कारण त्रयोदशी से युक्त चतुर्दशी का परित्याग करें, ऐसी स्कन्द पुराण में श्रीनृसिंह भगवान् की उक्ति है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १७ मई से ३० मई, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १७:५:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१७ मई से ३० मई
१७	१ मं २ मं	०५:१९ ५४:१२	०७:४९ २९:३०	अनु·	१७:११	१२:३४	शिव	४८:३४	२५:०७	कौल	०५:१९	तैति	३२:२८	३३:२८	५:४२	१९:०५	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	२	१७	**श्रीठाकुरजी की जलसेवा आरम्भ, श्रीनारद जयन्ती,**
१८	३ बु	५३:२७	२७:०४	ज्ये·	१३:१७	११:००	सिद्ध	४१:००	२२:०५	वणि	२६:३१	विष	५३:२७	३३:३०	५:४१	१९:०५	ध·१३:१७	११:००	ध्वांक्ष	३	१८	वृन्दावन परिक्रमा व वनविहार,
१९	४ गु	४७:१९	२४:३६	मूल	०९:१०	०९:२१	साध्य	३३:२०	१९:०१	बव	२०:२३	बाल	४७:१९	३३:३३	५:४१	१९:०६	धनु	अहोरात्र	धूम्र	४	१९	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२२:३१,**
२०	५ शु	४१:१८	२२:१२	पू·षा·	०५:०१	०७:४१	शुभ	२५:४४	१५:५८	कौल	१४:१७	तैति	४१:१८	३३:३६	५:४०	१९:०७	म·१८:६०	१३:१६	प्रवर्द्ध	५	२०	**अभिजित नक्षत्रारम्भः ४७:०१,**
२१	६ श	३५:३८	१९:५५	उ·षा· श्रवण	०१:०५ ५६:२६	०६:०६ २८:४०	शुक्ल	१८:२३	१३:०१	गर	०८:२६	वणि	३५:३८	३३:३८	५:४०	१९:०७	मकर	अहोरात्र	सुस्थिर	६	२१	**अभिजित नक्षत्रान्तः ४:५०,**
२२	७ र	३०:२९	१७:५१	धनि·	५४:३५	२७:२९	ब्रह्म	११:२३	१०:१३	विष	०२:५९	बव	३०:२९	३३:४१	५:३९	१९:०८	कुं·२५:५८	१६:०३	मातङ्ग	७	२२	**श्रीकालाष्टमी,**
२३	८ चं	२६:०२	१६:०४	शत·	५२:२५	२६:३७	ऐन्द्र वैधृति	०४:५६ ५४:११	०७:३७ २९:१८	कौल	२६:०२	तैति	५४:०७	३३:४३	५:३९	१९:०८	कुंभ	अहोरात्र	अमृत	८	२३	श्री दादूदयाल पुण्यदिवस, मेला चनानी माताजी,
२४	९ मं	२२:२७	१४:३७	पू·भा·	५१:१२	२६:०७	विष्कु·	५४:०७	२७:१७	गर	२२:२७	वणि	५१:०१	३३:४५	५:३८	१९:०९	मी·३६:२४	२०:१२	काण	९	२४	
२५	१० बु	१९:५३	१३:३५	उ·भा·	५१:०३	२६:०३	प्रीति	४९:५९	२५:३८	विष	१९:५३	बव	४९:०१	३३:४८	५:३८	१९:०९	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	१०	२५	रोहिणी नौतपा आरम्भ,
२६	११ गु	१८:२९	१३:०१	रेवती	५२:०६	२६:२८	आयु·	४६:५०	२४:२२	बाल	१८:२९	कौल	४८:१३	३३:५०	५:३८	१९:१०	मे·५२:०६	२६:२८	मित्र	११	२६	**श्रीअपरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
२७	१२ शु	१८:१९	१२:५७	अश्वि·	५४:२३	२७:२३	सौभा·	४४:४१	२३:३०	तैति	१८:१९	गर	४८:४२	३३:५२	५:३७	१९:१०	मेष	अहोरात्र	वज्र	१२	२७	**प्रदोष व्रतम्,**
२८	१३ श	१९:२५	१३:२३	भरणी	५७:५५	२८:४७	शोभ·	४३:३२	२३:०२	वणि	१९:२५	विष	५०:२६	३३:५४	५:३७	१९:११	मेष	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१३	२८	**वटसावित्री व्रतारम्भ (उत्तर भारत), मास शिवरात्रि,**
२९	१४ र	२१:४५	१४:१९	कृत्ति·	६०:००	अहोरात्र	अतिग·	४३:१९	२२:५६	शकु	२१:४५	चतु	५३:२१	३३:५६	५:३७	१९:११	वृ·१३:६०	११:१३	धूम्र	१४	२९	**वटसावित्री द्वितीय दिन,** मुनि शान्तिनाथ जयन्ती,
३०	३० चं	२५:१२	१५:४१	कृत्ति·	०२:३५	०६:३९	सुकर्मा	४३:५५	२३:११	नाग	२५:१२	किं	५७:१७	३३:५८	५:३६	१९:१२	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१५	३०	**ज्येष्ठी अमावस्या (देव–पितृकार्य), वटसावित्री व्रतपूर्ति**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क मई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
१७	१ मं	०१:०१:४६:१७	०७:१२:३५:५७	१०:२८:०९:१०	०१:०४:१३:५५	११:०८:३०:३३	११:२३:१८:५९	०९:२७:४७:२५	०७:००:३४:४४	४६:४३:५२	उ·१९:२०:१७	+ ३:२६	२०:३०:५२
१८	३ बु	०१:०२:४३:५३	०७:२६:५०:०३	१०:२८:५४:४९	०१:०३:२७:३५	११:०८:४२:१७	११:२४:२९:२७	०९:२७:४८:५६	०७:००:३१:३३	४६:४५:१४	उ·१९:३४:३२	+ ३:२६	२१:३५:१०
१९	४ गु	०१:०३:४१:२६	०८:११:०८:४२	१०:२९:४०:२७	०१:०२:३९:११	११:०८:५३:५६	११:२५:३९:५९	०९:२७:५०:२०	०७:००:२८:२३	४६:४६:३३	उ·१९:४८:२८	+ ३:२५	२२:३१:३९
२०	५ शु	०१:०४:३८:५८	०८:२५:२८:११	११:००:२६:०१	०१:०१:४९:५२	११:०९:०५:२९	११:२६:५०:३४	०९:२७:५१:३८	०७:००:२५:१२	४६:४७:५१	उ·२०:०२:०३	+ ३:२४	२३:२७:३२
२१	६ श	०१:०५:३६:२८	०९:०९:४४:३७	११:०१:११:३३	०१:०१:०१:०२	११:०९:१६:५५	११:२८:०१:१२	०९:२७:५२:५०	०७:००:२२:०१	४६:४९:०७	उ·२०:१५:१८	+ ३:२२	२४:१३:२१
२२	७ र	०१:०६:३३:५७	०९:२३:५४:३६	११:०१:५७:०३	०१:००:१३:५३	११:०९:२८:१६	११:२९:११:५३	०९:२७:५३:५४	०७:००:१८:५१	४६:५०:२२	उ·२०:२८:१३	+ ३:२०	००:५७:४७
२३	८ चं	०१:०७:३१:२४	१०:०७:५५:०८	११:०२:४२:३०	००:२९:२९:३०	११:०९:३९:३१	००:००:२२:३७	०९:२७:५४:५३	०७:००:१५:४०	४६:५१:३४	उ·२०:४०:४७	+ ३:१७	०१:३५:३२
२४	९ मं	०१:०८:२८:५०	१०:२१:४३:४३	११:०३:२७:५४	००:२८:४८:५३	११:०९:५०:३९	००:०१:३३:२४	०९:२७:५५:४५	०७:००:१२:२९	४६:५२:४५	उ·२०:५२:६०	+ ३:१३	०२:११:४४
२५	१० बु	०१:०९:२६:१४	११:०५:१८:२७	११:०४:१३:१५	००:२८:१२:५२	११:१०:०१:४१	००:०२:४४:१४	०९:२७:५६:३०	०७:००:०९:१९	४६:५३:५४	उ·२१:०४:५१	+ ३:०९	०२:४७:१०
२६	११ गु	०१:१०:२३:३७	११:१८:३८:०५	११:०४:५८:३३	००:२७:४२:१२	११:१०:१२:३६	००:०३:५५:०७	०९:२७:५७:०८	०७:००:०६:०८	४६:५५:००	उ·२१:१६:२१	+ ३:०५	०३:२१:५०
२७	१२ शु	०१:११:२०:५८	००:०१:४२:११	११:०५:४३:४८	००:२७:१७:२६	११:१०:२३:२४	००:०५:०६:०३	०९:२७:५७:४०	०७:००:०२:५७	४६:५६:०५	उ·२१:२७:३०	+ २:००	०३:५८:३४
२८	१३ श	०१:१२:१८:१८	००:१४:३१:०४	११:०६:२८:५९	००:२६:५८:५९	११:१०:३४:०६	००:०६:१७:०१	०९:२७:५८:०६	०६:२९:५९:४६	४६:५७:०८	उ·२१:३८:१६	+ २:५४	०४:३७:२५
२९	१४ र	०१:१३:१५:३७	००:२७:०५:४७	११:०७:१४:०७	००:२६:४७:०७	११:१०:४४:४१	००:०७:२८:०२	०९:२७:५८:२५	०६:२९:५६:३६	४६:५८:०८	उ·२१:४८:४०	+ २:४८	०५:१७:०३
३०	३० चं	०१:१४:१२:५४	०१:०९:२८:०६	११:०७:५९:१२	००:२६:४१:५८	११:१०:५५:०९	००:०८:३९:०६	०९:२७:५८:३७	०६:२९:५३:२५	४६:५९:०७	उ·२१:५८:४१	+ २:४२	०६:०३:२७

१९ मई सूर्योदयकालीन तिथिः४

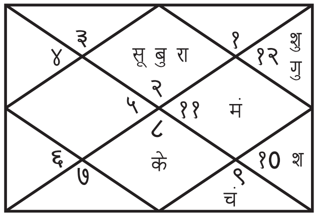

२६ मई सूर्योदयकालीन तिथिः११

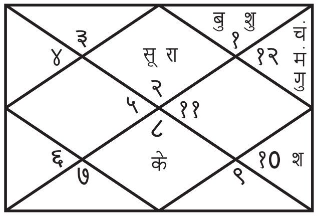

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १७ मई से ३० मई, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः—कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५०:४९

दिनाङ्क मई	तिथि वार	व्रत—पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
१७	१ मं	**पत्रकारिता दिवस, गण्डान्तारम्भः २९:२४;**
१८	३ बु	**भद्रा १६:१८—२७:०४घं·, गण्डान्तः १६:३६;**
१९	४ गु	मीनेमङ्गलः घं·१३:५९;
२०	५ शु	कृष्ण पंचमी (जैन) ;
२१	६ श	**भद्रारंभः१९:५५घं·;**
२२	७ र	**पंचकारम्भः १६:०३, भद्रांतः ६:५१घं·**, आश्वन्यांमेषेबुधः घं·१२:५८, ①
२३	८ चं	**पंचक**, वैधृति पुण्यम्, उत्तरभाद्रेमङ्गलः घं·२५:२८;
२४	९ मं	**पंचक, भद्रारंभः २६:०३घं·;** ① आश्वन्यांशुक्रः घं·२१:५९;
२५	१० बु	**पंचक, भद्रांतः १३:३५घं·**, रोहिण्यांरविः घं·१९:४८;
२६	११ गु	**पंचकान्तः २६:२८, गण्डान्तारम्भः २०:१९;**
२७	१२ शु	**गण्डान्तः ८:३९**, मधुसूदन द्वादशी, मुनि अनन्तनाथ जयन्ती, ②
२८	१३ श	**भद्रा १३:२३—२५:४७घं·**, वीर सावरकर जयन्ती;
२९	१४ र	; ② कन्यायां केतुर्मीने राहुश्च घं·२७:५६;
३०	३० चं	**शनि जयन्ती, सोमवती अमावस्या, बड़पूजन**, संत ज्ञानेश्वर जयन्ती;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५६—१३:४३
१५	११:५६—१३:४५

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **वटसावित्री व्रत**— यह त्रिदिवसीय व्रत ज्येष्ठ मास के दोनों पक्षों (कृष्ण-शुक्ल) में होता है। भविष्य पुराण के अनुसार ज्येष्ठ की अमावास्या में पूर्ण होता है तथा स्कन्द पुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा में मनाया जाता है—

"अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले तथासति त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनाऽनेन पूजयेत्।"(भवि.),

"ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे पूर्णिमायां तथा व्रतम्। चीर्णं पुरा महाभक्त्या कथितं ते मया नृप।" (स्कन्द)

अमावास्या में इसकी पूर्ति होती है— *अत्र व्रते त्रयोदश्यादिदिनत्रयमुपवासः* (धर्मसिन्धु)। यह सौभाग्य रक्षक व्रत है। इसमें उपवास के बिना भी पूजन किया जाता है। वट के मूल में ब्रह्माजी, मध्य में विष्णुजी एवं अग्र भाग में शिवजी का निवास है— *वटमूलेस्थितो ब्रह्मा वटमध्ये जनार्दनः। वटाग्रे तु शिवो देवः सावित्रीवटसंश्रिता।।* कतिपय स्त्रियाँ केवल पूजन से सावित्री व्रत करती हैं।

❀**शनिजयन्ती**— ज्येष्ठ अमावास्या के दिन शनि देव की जयन्ती मनायी जाती है। आज शनि का पूजन एवं दान किया जाता है। कालावस्त्र, तिल, तेल का दान शनिजनित कष्ट को दूर करता है।

शनिग्रह का ध्यानमंत्र— नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी, गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम् ।।

नीलवस्त्र धारण करने वाले, शूल धारण करने वाले, मुकुट धारण करने वाले, गृध्रवाहन पर स्थित शस्त्रधारण करने वाले, धनुष से युक्त, चार भुजाधारी भगवान् सूर्य के पुत्र प्रशान्त शनि हमारे लिए हमेशा वरदायी हों।

शनि गायत्री— ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शनिमन्त्र— ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

❀ शनि दोष शान्ति के उपाय

पुस्तक - 'नवग्रह विज्ञान'

छायादान— लोहा, कांसा या स्टील की कटोरी या कड़ाही में सरसों तेल भरकर पाँच का सिक्का एवं काली तिल डालकर शनिवार के दिन दोपहर में तेल में अपने चेहरे की छाया देखकर दान करने से शनिग्रह का दोष तत्काल दूर होता है। इससे स्वास्थ्य एवं मन पर शीघ्र शुभ प्रभाव पड़ता है।

उतारा(भैरवप्रयोग)—एक रोटी में गुड़-घी लगाके अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर शनिवार को कुत्ते को खिलाने से व्यापक लाभ होता है। रोटी घुमाते समय कोई टोके नहीं। इससे प्रभामण्डल ठीक हो जाता है।

सिक्का का उतारा— शनिवार रात्रि में किसी चौराहे पर जाकर पाँच सिक्कों को मुट्ठी में बंदकर अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर वहीं पर छोड़ दें। यह प्रयोग एक या दो बार करने से ही अद्भुत लाभ देता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१७	०३:५९	०५:३५	०७:३१	०९:४५	१२:०५	१४:२१	१६:३६	१८:५५	२१:१४	२३:२०	०१:०४	०२:३३
१८	०३:५५	०५:३१	०७:२७	०९:४१	१२:०१	१४:१८	१६:३२	१८:५१	२१:१०	२३:१६	०१:००	०२:२९
१९	०३:५१	०५:२७	०७:२३	०९:३७	११:५७	१४:१४	१६:२९	१८:४७	२१:०६	२३:१२	००:५६	०२:२५
२०	०३:४७	०५:२३	०७:१९	०९:३३	११:५३	१४:१०	१६:२५	१८:४३	२१:०२	२३:०८	००:५२	०२:२१
२१	०३:४३	०५:१९	०७:१५	०९:२९	११:४९	१४:०६	१६:२१	१८:४०	२०:५८	२३:०४	००:४८	०२:१८
२२	०३:४०	०५:१५	०७:११	०९:२५	११:४५	१४:०२	१६:१७	१८:३६	२०:५४	२३:००	००:४४	०२:१४
२३	०३:३६	०५:१२	०७:०७	०९:२१	११:४१	१३:५८	१६:१३	१८:३२	२०:५१	२२:५६	००:४१	०२:१०
२४	०३:३२	०५:०८	०७:०३	०९:१७	११:३७	१३:५४	१६:०९	१८:२८	२०:४७	२२:५२	००:३७	०२:०६
२५	०३:२८	०५:०४	०६:५९	०९:१३	११:३४	१३:५०	१६:०५	१८:२४	२०:४३	२२:४८	००:३३	०२:०२
२६	०३:२४	०५:००	०६:५५	०९:०९	११:३०	१३:४६	१६:०१	१८:२०	२०:३९	२२:४४	००:२९	०१:५८
२७	०३:२०	०४:५६	०६:५१	०९:०५	११:२६	१३:४२	१५:५७	१८:१६	२०:३५	२२:४०	००:२५	०१:५४
२८	०३:१६	०४:५२	०६:४७	०९:०२	११:२२	१३:३८	१५:५३	१८:१२	२०:३१	२२:३६	००:२१	०१:५०
२९	०३:१२	०४:४८	०६:४३	०८:५८	११:१८	१३:३४	१५:४९	१८:०८	२०:२७	२२:३२	००:१७	०१:४६
३०	०३:०८	०४:४४	०६:३९	०८:५४	११:१४	१३:३०	१५:४५	१८:०४	२०:२३	२२:२८	००:१३	०१:४२

मई	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग
१७	**मृत्यु**·१ ०७:४९ तक; **अमृत**·२ २९:३० तक; **सिद्ध**·३ २९:३० से;
१८	**मृत्यु**·३ २७:०४ तक;
१९	**मृत्यु**·४ २४:३६ तक; **सिद्ध**·५ २४:३६ से; **द·ति**·४;
२०	**सिद्ध**·६ २२:१२ से;
२१	**अमृत**·६ १९:५५ तक; **द्विपुष्कर**:७+ध २८:४० से; **सर्वार्थसिद्धि**·श्र—**रवियोग**:श्र ०६:०६—२८:४०;
२२	**द्विपुष्कर**:७+ध १७:५१ तक; **सिद्ध**·८ १७:५१ से;
२४	**सर्वार्थसिद्धि**·उभा २६:०७ से;
२५	**अमृत**·११ १३:३५ से;
२६	**सर्वार्थसिद्धि**·र—·अ अहोरात्र;
२७	**सर्वार्थसिद्धि**·अ २७:२३ तक; **मृत्यु**·१२ १२:५७ तक;
२८	**सिद्ध**·१४ १३:२३ से;
२९	**अमृत**·१५ १४:१९ से;
३०	**अमृत**·१५ १५:४१ तक; **सर्वार्थसिद्धि**·रो ०६:३९ से; **सिद्ध**·१ १४:४१ से;

❀ **सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास** में जलमंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीहरि की सेवा करें। जल क्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और भोग धरें।

❀ **माँ गंगा का स्वरूप** — **१**· चतुर्भुजा, **२**· त्रिनेत्रा, **३**· एक हाथ में पूर्णकुम्भ, **४**· एक हाथ में श्वेत कमल, **५**· एक हाथमें अभयमुद्रा, **६**· एक हाथ में वरद मुद्रा, **७**· नदी नद से सुशोभित, **८**· श्वेतछत्र से सुशोभित, **९**· छरहरी देह युक्त, **१०**· देव, ऋषि आदि से संस्तुत।
—(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड— २७/१४२—१४५)

❀ **गंगा पूजा** — दश संख्या की वस्तु से गंगा पूजन का विशेष महत्व है। दशविध पुष्प, दशांग, दशविध फल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलादि से पूजा करें।

❀ **कलौ गंगा हि केवलम्**— कलियुग में मनुष्य के उद्धार के लिए एकमात्र गंगा ही साधन हैं—

ध्यानं कृते मोक्ष हेतुः त्रेतायां पुष्करं परम् ।
द्वापरे तद्वद् यज्ञाः कलौ गंगैव केवलम् ॥

गंगातट पर वास मात्र से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है—

वास एव हि गंगायां ब्रह्मज्ञानस्य कारणम्॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ३१ मई से १४ जून, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ३१:५:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	३१ मई से १४ जून
३१	१ मं	२९:३३	१७:२५	रोहि·	०८:१२	०८:५३	धृति	४५:०८	२३:४०	बव	२९:३३	बाल	६०:००	३४:००	५:३६	१९:१२	मि·४१:१६	२२:०७	मातङ्ग	१६	३१	करवीर व्रत, गंगा दशाश्वमेध स्नानप्रारम्भ १० तिथि यावत्,
जून	२ बु	३४:२७	१९:२३	मृग·	१४:२८	११:२३	शूल	४६:४४	२४:१८	बाल	०१:५७	कौल	३४:२७	३४:०२	५:३६	१९:१३	मिथुन	अहोरात्र	अमृत	१७	१	
२	३ गु	३९:३१	२१:२४	आर्द्रा	२१:०२	१४:०१	गण्ड	४८:२४	२४:५७	तैति	०६:६०	गर	३९:३१	३४:०४	५:३६	१९:१३	मिथुन	अहोरात्र	काण	१८	२	**रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, हल्दीघाटी मेला,**
३	४ शु	४४:१९	२३:१९	पुन·	२७:२७	१६:३४	वृद्धि	४९:४९	२४:३१	वणि	११:५९	विष	४४:१९	३४:०५	५:३६	१९:१४	क·१०:५३	०९:५७	लुम्ब	१९	३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, गुरु अर्जुनदेव पुण्य दिवस,
४	५ श	४८:२८	२४:५८	पुष्य	३३:२०	१८:५५	ध्रुव	५०:४२	२५:५२	बव	१६:३०	बाल	४८:२८	३४:०७	५:३५	१९:१४	कर्क	अहोरात्र	मित्र	२०	४	मेला भन्दे के बालाजी (जयपुर), श्रुति पंचमी (जैन),
५	६ र	५१:३९	२६:१५	आश्ले·	३८:२०	२०:५५	व्याघ·	५०:५१	२५:५५	कौल	२०:१२	तैति	५१:३९	३४:०८	५:३५	१९:१५	सिं·३८:२०	२०:५५	वज्र	२१	५	**श्री स्कन्दषष्ठी**, श्री अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा,
६	७ चं	५३:४१	२७:०४	मघा	४२:१६	२२:३०	हर्षण	५०:०६	२५:३७	गर	२२:४९	वणि	५३:४१	३४:१०	५:३५	१९:१५	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२२	६	
७	८ मं	५४:२८	२७:२२	पू·फा·	४४:६०	२३:३५	वज्र	४८:२२	२४:५६	विष	२४:१५	बव	५४:२८	३४:११	५:३५	१९:१५	सिंह	अहोरात्र	धूम्र	२३	७	**श्री दुर्गाष्टमी व्रतम्, मेला क्षीरभवानी कश्मीरे,**
८	९ बु	५३:५९	२७:१०	उ·फा·	४६:२८	२४:१०	सिद्धि	४५:३८	२३:५०	बाल	२४:२३	कौल	५३:५९	३४:१२	५:३५	१९:१६	क·००:२९	०५:४७	प्रवर्द्ध	२४	८	**श्री महेश नवमी (माहेश्वरी समाज)**, श्रीहरि जयन्ती,
९	१० गु	५२:१६	२६:२९	हस्त	४६:४३	२४:१६	व्यति·	४१:५४	२२:२०	तैति	२३:१६	गर	५२:१६	३४:१४	५:३५	१९:१६	कन्या	अहोरात्र	राक्षस	२५	९	**श्री गंगा दशहरा व्रतम्,**
१०	११ शु	४९:२५	२५:२१	चित्रा	४५:५१	२३:५५	वरी·	३७:१५	२०:२९	वणि	२०:५९	विष	४९:२५	३४:१५	५:३५	१९:१७	तु·१६:२५	१२:०९	मुसल	२६	१०	**श्री निर्जला भीमसेनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**,
११	१२ श	४५:३५	२३:४९	स्वाती	४३:५९	२३:१०	परिघ	३१:४६	१८:१७	बव	१७:३६	बाल	४५:३५	३४:१६	५:३५	१९:१७	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	२७	११	**निर्जला एकादशी (निम्बार्क)**, मुनि सुपार्श्वनाथ जयन्ती,
१२	१३ र	४०:५४	२१:५७	विशा·	४१:१७	२२:०६	शिव	२५:३५	१५:४९	कौल	१३:२०	तैति	४०:५४	३४:१७	५:३५	१९:१९	वृ·२७:०२	१६:२३	उत्पात	२८	१२	**प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ (दक्षिण भारत),
१३	१४ चं	३५:३४	१९:४८	अनु·	३७:५५	२०:४५	सिद्ध	१८:४९	१३:०६	गर	०८:१९	वणि	३५:३४	३४:१७	५:३५	१९:१८	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	२९	१३	**पूर्णिमा (व्रत)**, वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन,
१४	१५ मं	२९:४५	१७:२९	ज्ये·	३४:०५	१९:१३	साध्य	११:३६	१०:१३	विष	०२:४३	बव	२९:४५	३४:१८	५:३५	१९:१८	ध·३४:०५	१९:१३	मुद्गर	३०	१४	**पूर्णिमा (स्नान–दान)**, ज्येष्ठाभिषेक, जलसेवा पूर्ति,

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

मई जून	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः (मा/व) रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
३१	१ मं	०१:१५:१०:१०	०१:२१:४०:२६	११:०८:४४:१३	००:२६:४३:३६	११:११:०५:३०	००:०९:५०:१२	०९:२७:५८:४२	०६:२९:५०:१४	४७:००:०३	उ·२२:०८:२०	+ २:३५	०६:०३:११
जून	२ बु	०१:१६:०७:२४	०२:०३:४५:४३	११:०९:२९:११	००:२६:५१:५६	११:११:१५:४४	००:११:०१:२०	०९:२७:५८:४१	०६:२९:४७:०४	४७:००:५७	उ·२२:१७:३६	+ २:२७	०६:४९:०७
२	३ गु	०१:१७:०४:३८	०२:१५:४७:१३	११:१०:१४:०५	००:२७:०६:५१	११:११:२५:५०	००:१२:१२:३१	वक्री २७:५८:३४	०६:२९:४३:५३	४७:०१:४९	उ·२२:२६:२९	+ २:२०	०७:४०:१६
३	४ शु	०१:१८:०१:५०	०२:२७:४८:४६	११:१०:५८:५५	००:२७:२८:०८	११:११:३५:४९	००:१३:२३:४४	०९:२७:५८:१९	०६:२९:४०:४२	४७:०२:३९	उ·२२:३४:५९	+ २:११	०८:३३:०३
४	५ श	०१:१८:५९:०१	०३:०९:५४:११	११:११:४३:४१	००:२७:५५:३५	११:११:४५:४०	००:१४:३४:६०	०९:२७:५७:५९	०६:२९:३७:३२	४७:०३:२६	उ·२२:४३:०६	+ २:०३	०९:२६:४०
५	६ र	०१:१९:५६:११	०३:२२:०६:४५	११:१२:२८:२३	००:२८:२८:५६	११:११:५५:२३	००:१५:४६:१८	०९:२७:५७:३१	०६:२९:३४:२१	४७:०४:११	उ·२२:५०:४८	+ १:५४	१०:२१:४२
६	७ चं	०१:२०:५३:२०	०४:०४:२९:२१	११:१३:१३:०१	००:२९:०७:५३	११:१२:०४:५९	००:१६:५७:३८	०९:२७:५६:५७	०६:२९:३१:१०	४७:०४:५४	उ·२२:५८:०७	+ १:४४	११:१७:३८
७	८ मं	०१:२१:५०:२८	०४:१७:०४:२५	११:१३:५७:३५	००:२९:५२:०९	११:१२:१४:२६	००:१८:०८:६०	०९:२७:५६:१७	०६:२९:२७:५९	४७:०५:३४	उ·२३:०५:०२	+ १:३४	१२:१२:५३
८	९ बु	०१:२२:४७:३५	०४:२९:५३:४२	११:१४:४२:०४	०१:००:४१:२७	११:१२:२३:४६	००:१९:२०:२४	०९:२७:५५:३०	०६:२९:२४:४९	४७:०६:१२	उ·२३:११:३३	+ १:२४	१३:०९:२३
९	१० गु	०१:२३:४४:४०	०५:१२:५८:१५	११:१५:२६:२९	०१:०१:३५:२८	११:१२:३२:५७	००:२०:३१:५०	०९:२७:५४:३६	०६:२९:२१:३८	४७:०६:४८	उ·२३:१७:४०	+ १:१४	१४:०७:१३
१०	११ शु	०१:२४:४१:४५	०५:२६:१८:२१	११:१६:१०:४९	०१:०२:३३:५४	११:१२:४२:००	००:२१:४३:१९	०९:२७:५३:३६	०६:२९:१८:२७	४७:०७:२१	उ·२३:२३:२३	+ १:०३	१५:०६:२२
११	१२ श	०१:२५:३८:४८	०६:०९:५३:३२	११:१६:५५:०५	०१:०३:३६:२९	११:१२:५०:५५	००:२२:५४:४९	०९:२७:५२:३०	०६:२९:१५:१७	४७:०७:५१	उ·२३:२८:४१	+ ०:५२	१६:०८:०४
१२	१३ र	०१:२६:३५:५१	०६:२३:४२:३४	११:१७:३९:१६	०१:०४:४२:५८	११:१२:५९:४०	००:२४:०६:२१	०९:२७:५१:१७	०६:२९:१२:०६	४७:०८:१९	उ·२३:३३:३४	+ ०:४१	१७:११:४५
१३	१४ चं	०१:२७:३२:५३	०७:०७:४३:३१	११:१८:२३:२२	०१:०५:५३:०४	११:१३:०८:१८	००:२५:१७:५५	०९:२७:४९:५७	०६:२९:०८:५५	४७:०८:४५	उ·२३:३८:०३	+ ०:२९	१८:१५:३७
१४	१५ मं	०१:२८:२९:५४	०७:२१:५३:५३	११:१९:०७:२३	०१:०७:०६:३४	११:१३:१६:४६	००:२६:२९:३१	०९:२७:४८:३२	०६:२९:०५:४४	४७:०९:०८	उ·२३:४२:०७	+ ०:१८	१९:१९:३४

३ जून सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

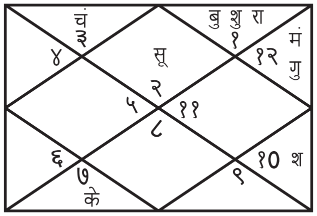

१० जून सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

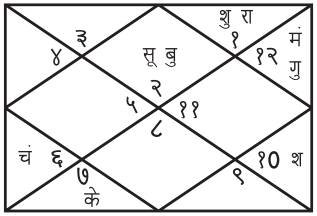

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ३१ मई से १४ जून, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:५१

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३१	१ मं	मार्गी बुधः घं·०५:४०;
जून	२ बु	;
२	३ गु	भरण्यांशुक्रःघं·२८:२०, वक्रःशनिःघं·२५:२३;
३	४ शु	**भद्रा १०:२३–२३:१९घं·**, उमा चतुर्थी (बंगाल) ①
४	५ श	महादेव विवाह (उड़ीसा) ; ① बुधःपूर्वोदितः घं·१७:२३;
५	६ र	**गण्डान्तः१४:२८–२७:२१**, साईं टेऊँराम पुण्यतिथि, ②
६	७ चं	**भद्रारंभः२७:०४घं·**;
७	८ मं	**भद्रांतः१५:१७घं·**, श्रीधूमावती जयन्ती, वृषेबुधः घं·०९:३४;
८	९ बु	मृगशिरायांरविः घं·१९:१३;
९	१० गु	**श्री बटुकभैरव जयन्ती**, व्यतीपात पुण्यम्;
१०	११ शु	**ठाकुर श्रीसरसबिहारीजी पाटोत्सव**, **भद्रा १३:५८–२५:२१घं·**, ③
११	१२ श	**चम्पाद्वादशी**;
१२	१३ र	; ② आरोग्य षष्ठी, विश्व पर्यावरण दिवस;
१३	१४ चं	**भद्रारंभः१९:४८घं·**; ③ रेवत्यांमङ्गलः घं·२१:२४;
१४	१५ मं	**भद्रांतः६:४०घं·**, **गण्डान्तः१३:३७–२४:४९**, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, वटसावित्री व्रतपूर्ति, मन्वादि, बिल्व त्रिरात्रि व्रत, सन्त कबीर जयन्ती, सरयू जयन्ती, मासान्तः, कृत्तिकायांशुक्रः घं·०९:०६;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५७–१३:४५
१५	११:५९–१३:४८

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ निर्जला एकादशी– आज के दिन आचमन को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार से जल का ग्रहण नहीं किया जाता है। इसे करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। एकादशी व्रत करके द्वादशी में जलकुम्भ और शर्करा दान करे। दान देते समय निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करे–

देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक।
उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।

❀ त्रिविक्रम(वामन) पूजन– ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि में भगवान् त्रिविक्रम विष्णु की दिन–रात पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से गो–अयन यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

❀ बिल्वत्रिरात्रिव्रत(स्कन्दपुराण)– ज्येष्ठ पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार हो, तब यह व्रत होता है। इस वर्ष यह दुर्लभ संयोग बन रहा है। इस दिन सरसों मिले हुए जल से स्नान करके 'श्रीवृक्ष'(बिल्ववृक्ष) का गन्ध पुष्पादि से पूजन करे और एक समय भोजन करे। बिल्ववृक्ष के समीप उमा महेश्वर का पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करे।

'श्रीनिकेत नमस्तुभ्यं हरप्रिय नमोऽस्तु ते।
अवैधव्यं च मे देहि श्रियं जन्मनि जन्मनि।।'

तो सब प्रकारके अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। *(संक्षिप्त)*

❀ बिल्ववृक्ष स्थापना विधि ❀ (भविष्यपुराणोक्त)

❀ इस मंत्र से बिल्व वृक्ष का स्थापन करे – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनाद् इतो मुक्षीय मामुतः।।

❀ इस मन्त्र से वृक्ष को गंधोदक से स्नान करवाए –

ॐ सुनावम् आ रुहेयम् अस्रवन्तीम् अनागसम्। शतारित्राँ स्वस्तये।।

❀ इस मन्त्र से वृक्ष पर अक्षत चढ़ाए –

ॐ मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ।।

❀ इस मन्त्र से धूप, वस्त्र, माला चढ़ाए –

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ या वृता ।।

तदुपरान्त रुद्रदेव, दुर्गा और कुबेर का पूजन करे। दूसरे दिन ७ ब्राह्मणों को भोजन करवाए। सुन्दर पुष्प, चूर्ण आदि से बिल्ववृक्ष को रंजित करे। लाल सूत्र से ५, ७ या ९ बार वेष्टित करे। वृक्ष के मूल में धान्य बोए। उत्तराभिमुख होकर शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश, शेष, अनन्त, इन्द्र, वनपाल, सोम, सूर्य व पृथ्वी का पूजन करे। तिल अक्षत से हवन करें तथा घी और भात का नैवेद्य दे। यक्षों के लिए उड़द और भात का भोग लगाए। ग्रहों की तुष्टि के लिए बाँस के पात्र पर नैवेद्य दे। बिल्व वृक्ष को दक्षिण दिशा से दूध की धारा प्रदान करें। यूप का आरोपण करें। वृक्ष का कर्णवेध संस्कार करें और भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें। ब्राह्मण को दक्षिणा प्रदान करें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३१	०३:०४	०४:४०	०६:३६	०८:५०	११:१०	१३:२६	१५:४१	१८:००	२०:१९	२२:२५	००:०९	०१:३८
जून	०३:००	०४:३६	०६:३२	०८:४६	११:०६	१३:२२	१५:३७	१७:५६	२०:१५	२२:२१	००:०५	०१:३४
२	०२:५६	०४:३२	०६:२८	०८:४२	११:०२	१३:१९	१५:३४	१७:५२	२०:११	२२:१७	००:०१	०१:३०
३	०२:५२	०४:२८	०६:२४	०८:३८	१०:५८	१३:१५	१५:३०	१७:४८	२०:०७	२२:१३	२३:५७	०१:२७
४	०२:४९	०४:२४	०६:२०	०८:३४	१०:५४	१३:११	१५:२६	१७:४५	२०:०३	२२:०९	२३:५३	०१:२३
५	०२:४५	०४:२१	०६:१६	०८:३०	१०:५०	१३:०७	१५:२२	१७:४१	२०:००	२२:०५	२३:५०	०१:१९
६	०२:४१	०४:१७	०६:१२	०८:२६	१०:४६	१३:०३	१५:१८	१७:३७	१९:५६	२२:०१	२३:४६	०१:१५
७	०२:३७	०४:१३	०६:०८	०८:२२	१०:४२	१२:५९	१५:१४	१७:३३	१९:५२	२१:५७	२३:४२	०१:११
८	०२:३३	०४:०९	०६:०४	०८:१८	१०:३९	१२:५५	१५:१०	१७:२९	१९:४८	२१:५३	२३:३८	०१:०७
९	०२:२९	०४:०५	०६:००	०८:१४	१०:३५	१२:५१	१५:०६	१७:२५	१९:४४	२१:४९	२३:३४	०१:०३
१०	०२:२५	०४:०१	०५:५६	०८:११	१०:३१	१२:४७	१५:०२	१७:२१	१९:४०	२१:४५	२३:३०	००:५९
११	०२:२१	०३:५७	०५:५२	०८:०७	१०:२७	१२:४३	१४:५८	१७:१७	१९:३६	२१:४१	२३:२६	००:५५
१२	०२:१७	०३:५३	०५:४८	०८:०३	१०:२३	१२:३९	१४:५४	१७:१३	१९:३२	२१:३८	२३:२२	००:५१
१३	०२:१३	०३:४९	०५:४५	०७:५९	१०:१९	१२:३५	१४:५०	१७:०९	१९:२८	२१:३४	२३:१८	००:४७
१४	०२:०९	०३:४५	०५:४१	०७:५५	१०:१५	१२:३२	१४:४७	१७:०५	१९:२४	२१:३०	२३:१४	००:४३

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
३१	**मृत्यु**·१ १७:२५ तक; **अमृत**·२ १७:२५ तक; **द्विपुष्कर**:२+मृ १७:२५ से;
जून	**सर्वार्थ**·मृ ११:२३ तक; **सिद्ध**·२ १९:२३ तक; **मृत्यु**·३ १९:२३ से;
२	**अमृत**·३ २१:२४ तक; **सर्वार्थ·–रवियोग**:पुन १४:०१ से; **मृत्यु**·४ २१:२४ से;
३	**सर्वार्थ**·पुन–**रवियोग**:पुन १६:३४ तक; **अमृत**·४ २३:१९ तक; **द·ति**·४;
४	**द·ति**·४;**मृत्यु**·५ २४:५८ तक; **रवियोग**:आश्ले १८:५५ से; **अमृत**·६ २४:५८ से
५	**मृत्यु**·६ २६:१५ तक; **रवियोग**:आश्ले २०:५५ तक;
६	**मृत्यु**·७ २७:०४ तक;
७	**सिद्ध**·८ २७:२२ तक; **रवियोग**:उफा २३:३५ तक;
८	**रवियोग**:उफा–ह अहोरात्र; **सर्वार्थ**·ह २४:१० से;
९	**सिद्ध**·१० २६:२९ तक; **रवियोग**:ह–चि अहोरात्र;
१०	**सिद्ध**·११ २५:२१ तक; **रवियोग**:चि २३:५५ तक; **मृत्यु**·१२ २५:२१ से;
११	**सर्वार्थ**·स्वा २३:१० तक; **त्रिपुष्कर**:१२+वि २३:१०–२३:४९ तक;
१२	**सिद्ध**·१३ २१:५७ तक; **रवियोग**:अनु २२:०६ से;
१३	**सर्वार्थ**·अनु–**रवियोग**:अनु २०:४५ तक; **अमृत**·१५ १९:४८ से;
१४	**मृत्यु**·१ १७:२९ से;

卐 गंगा दशहरा – ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, दशमी, बुधवार, **हस्त** नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, वृषभ राशिस्थ सूर्य, ये दस योग से गंगा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगास्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। यह नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हो, वही ग्रहण करना चाहिये। पूजन का विशेष मन्त्र है– **ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा।** इसी मन्त्र से भगवती गंगा का बार बार स्मरण कर पूजन पदार्थ अर्पित करे।

卐 निर्जला एकादशी– वृष वा मिथुन राशिस्थ सूर्य हो, तब ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करें। इस एक ही व्रत के प्रभाव से बारह द्वादशियों के व्रत करने का फल प्राप्त होता है। – पद्मपुराण

आषाढ़ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १५ जून से २९ जून, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १५:६:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१५ जून से २९ जून
१५	१ बु	२३:३९	१५:0२	मूल	२९:५८	१७:३४	शुभ / शुक्ल	0४:0६ / ५२:२१	0७:१६ / २८:0१	कौल	२३:३९	तैति	५0:३३	३४:१९	५:३४	१९:१८	धनु	अहोरात्र	ध्वज	३१	१५	गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती,
१६	२ गु	१७:२७	१२:३४	पू·षा·	२५:४८	१५:५४	ब्रह्म	४८:५0	२५:0७	गर	१७:२७	वणि	४४:२३	३४:२0	५:३५	१९:१९	म·३९:४६	२१:२९	धाता	१	१६	
१७	३ शु	११:२२	१0:0८	उ·षा·	२१:४६	१४:१८	ऐन्द्र	४१:२६	२२:0९	विष	११:२२	बव	३८:२७	३४:२0	५:३५	१९:१९	मकर	अहोरात्र	आनन्द	२	१७	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी,**
१८	४ श	0५:३७	0७:५0	श्रवण	१८:0७	१२:५0	वैधृ·	३४:२२	१९:२0	बाल	0५:३७	कौल	३२:५५	३४:२0	५:३५	१९:१९	कुं·४६:२८	२४:११	प्रवर्द्ध	३	१८	वैधृति पुण्यम्,
१९	५ र / ६ र	00:२२ / ५५:२७	0५:४४ / २७:५५	धनि·	१५:00	११:३५	विष्कु·	२७:४९	१६:४३	तैति	00:२२	गर	२७:५९	३४:२१	५:३५	१९:२0	कुंभ	अहोरात्र	मातङ्ग	४	१९	कोकिला पंचमी (जैन),
२0	७ चं	५२:0६	२६:२६	शत·	१२:३८	१0:३९	प्रीति	२१:५३	१४:२१	विष	२३:५0	बव	५२:0६	३४:२१	५:३६	१९:२0	मी·५६:२६	२८:१0	अमृत	५	२0	
२१	८ मं	४९:२५	२५:२१	पू·भा·	११:0९	१0:0३	आयु·	१६:४३	१२:१७	बाल	२0:३७	कौल	४९:२५	३४:२१	५:३६	१९:२0	मीन	अहोरात्र	काण	६	२१	**श्री कालाष्टमी,**
२२	९ बु	४७:५२	२४:४५	उ·भा·	१0:४४	0९:५३	सौभा·	१२:२६	१0:३४	तैति	१८:२९	गर	४७:५२	३४:२१	५:३६	१९:२0	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	७	२२	
२३	१0 गु	४७:३३	२४:३७	रेवती	११:२९	१0:१२	शोभ·	0९:0६	0९:१४	वणि	१७:३३	विष	४७:३३	३४:२१	५:३६	१९:२१	मे·११:२९	१0:१२	मित्र	८	२३	मुनि नेमीनाथ जयन्ती,
२४	११ शु	४८:३१	२५:0१	अश्वि·	१३:२८	१0:५९	अतिग·	0६:४५	0८:१८	बव	१७:५२	बाल	४८:३१	३४:२१	५:३६	१९:२१	मेष	अहोरात्र	वज्र	९	२४	**योगिनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
२५	१२ श	५0:४२	२५:५४	भरणी	१६:४२	१२:१७	सुकर्मा	0५:२६	0७:४७	कौल	१९:२८	तैति	५0:४२	३४:२१	५:३७	१९:२१	वृ·३२:४१	१८:४१	ध्वांक्ष	१0	२५	**योगिनी एकादशी (निम्बार्क),**
२६	१३ र	५४:0१	२७:१३	कृत्ति·	२१:0५	१४:0३	धृति	0५:0३	0७:३८	गर	२२:१४	वणि	५४:0१	३४:२१	५:३७	१९:२१	वृष	अहोरात्र	धूम्र	११	२६	**प्रदोष व्रतम्,**
२७	१४ चं	५८:१५	२८:५५	रोहि·	२६:२९	१६:१३	शूल	0५:३१	0७:५0	विष	२६:0२	बव	५८:१५	३४:२0	५:३७	१९:२१	मि·५९:२८	२९:२४	प्रवर्द्ध	१२	२७	**मास शिवरात्रि,**
२८	३0 मं	६0:00	अहोरात्र	मृग·	३२:३६	१८:४0	गण्ड	0६:३९	0८:१७	चतु	३0:३६	नाग	६0:00	३४:२0	५:३७	१९:२१	मिथुन	अहोरात्र	राक्षस	१३	२८	**अमावस्या (पितृकार्य),**
२९	३0 बु	0३:0४	0६:५१	आर्द्रा	३९:0७	२१:१७	वृद्धि	0८:१२	0८:५५	नाग	0३:0४	किं	३५:३५	३४:१९	५:३८	१९:२१	मिथुन	अहोरात्र	मुसल	१४	२९	**अमावस्या (देवकार्य),**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जून	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१५	१ बु	0१:२९:२६:५४	0८:0६:१0:३८	११:१९:५१:१९	0१:0८:२३:१४	११:१३:२५:0६	00:२७:४१:0९	0९:२७:४६:६0	0६:२९:0२:३४	४७:0९:२८	उ·२३:४५:४७	+ 0:0६	२0:१९:२७
१६	२ गु	0२:00:२३:५३	0८:२0:३0:२४	११:२0:३५:१0	0१:0९:४२:५२	११:१३:३३:१६	00:२८:५२:४९	0९:२७:४५:२२	0६:२८:५९:२३	४७:0९:४६	उ·२३:४९:0१	– 0:0६	२१:१५:२३
१७	३ शु	0२:0१:२0:५२	0९:0४:४९:१४	११:२१:१८:५६	0१:११:0५:१४	११:१३:४१:१७	0१:00:0४:३0	0९:२७:४३:३७	0६:२८:५६:१२	४७:१0:0१	उ·२३:५१:५0	– 0:१८	२२:0५:४६
१८	४ श	0२:0२:१७:४९	0९:१९:0३:२८	११:२२:0२:३६	0१:१२:३0:१0	११:१३:४९:0९	0१:0१:१६:१३	0९:२७:४१:४७	0६:२८:५३:0२	४७:१0:१४	उ·२३:५४:१५	– 0:३१	२२:५0:३५
१९	५ र	0२:0३:१४:४६	१0:0३:0९:५४	११:२२:४६:११	0१:१३:५७:२९	११:१३:५६:५१	0१:0२:२७:५८	0९:२७:३९:५0	0६:२८:४९:५१	४७:१0:२४	उ·२३:५६:१४	– 0:४३	२३:३१:५९
२0	७ चं	0२:0४:११:४२	१0:१७:0५:४२	११:२३:२९:४१	0१:१५:२७:0२	११:१४:0४:२४	0१:0३:३९:४५	0९:२७:३७:४८	0६:२८:४६:४0	४७:१0:३१	उ·२३:५७:४८	– 0:५६	२४:0९:१५
२१	८ मं	0२:0५:0८:३८	११:00:४८:३७	११:२४:१३:0५	0१:१६:५८:३८	११:१४:११:४७	0१:0४:५१:३३	0९:२७:३५:३९	0६:२८:४३:२९	४७:१0:३६	उ·२३:५८:५७	– १:0८	00:४५:५३
२२	९ बु	0२:0६:0५:३३	११:१४:१७:0३	११:२४:५६:२३	0१:१८:३२:१0	११:१४:१९:0१	0१:0६:0३:२३	0९:२७:३३:२४	0६:२८:४0:१९	४७:१0:३८	उ·२३:५९:४१	– १:२१	0१:२१:३९
२३	१0 गु	0२:0७:0२:२७	११:२७:३0:0५	११:२५:३९:३६	0१:२0:0७:२८	११:१४:२६:0४	0१:0७:१५:१४	0९:२७:३१:0४	0६:२८:३७:0८	४७:१0:३८	उ·२३:५९:५९	– १:३३	0१:५६:५0
२४	११ शु	0२:0७:५९:२१	00:१0:२७:३८	११:२६:२२:४२	0१:२१:४४:२६	११:१४:३२:५८	0१:0८:२७:0७	0९:२७:२८:३८	0६:२८:३३:५७	४७:१0:३५	उ·२३:५९:५३	– १:४६	0२:३६:१६
२५	१२ श	0२:0८:५६:१४	00:२३:१0:१९	११:२७:0५:४३	0१:२३:२२:५७	११:१४:३९:४१	0१:0९:३९:0२	0९:२७:२६:0६	0६:२८:३0:४६	४७:१0:२९	उ·२३:५९:२१	– १:५८	0३:१४:५३
२६	१३ र	0२:0९:५३:0७	0१:0५:३९:३२	११:२७:४८:३७	0१:२५:0२:५३	११:१४:४६:१४	0१:१0:५0:५८	0९:२७:२३:२८	0६:२८:२७:३६	४७:१0:२१	उ·२३:५८:२४	– २:१0	0३:५९:५0
२७	१४ चं	0२:१0:४९:५९	0१:१७:५७:२0	११:२८:३१:२६	0१:२६:४४:0८	११:१४:५२:३६	0१:१२:0२:५५	0९:२७:२0:४५	0६:२८:२४:२५	४७:१0:१0	उ·२३:५७:0२	– २:२३	0४:४६:0४
२८	१५ मं	0२:११:४६:५१	0२:00:0६:२४	११:२९:१४:0८	0१:२८:२६:३७	११:१४:५८:४८	0१:१३:१४:५४	0९:२७:१७:५७	0६:२८:२१:१४	४७:0९:५६	उ·२३:५५:१५	– २:३५	0५:३४:४३
२९	३0 बु	0२:१२:४३:४३	0२:१२:0९:४८	११:२९:५६:४४	0२:00:१0:१३	११:१५:0४:५0	0१:१४:२६:५५	0९:२७:१५:0३	0६:२८:१८:0३	४७:0९:४0	उ·२३:५३:0३	– २:४७	0६:२७:२५

१८ जून सूर्योदयकालीन तिथिः४

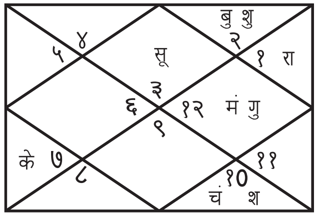

२४ जून सूर्योदयकालीन तिथिः११

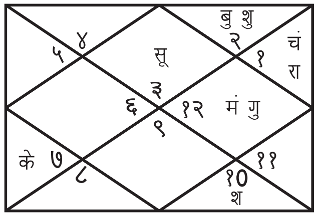

आषाढ़ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १५ जून से २९ जून, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३0 अयनांशा:२२:५0:५३

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१५	१ बु	**मिथुन संक्रान्ति पुण्यकालं,१२:५४–१९:१८घं·**, मिथुनेरविः घं·१९:३२;
१६	२ गु	**भद्रारंभः २३:२०घं·**, मासादिः, रोहिण्यांबुधःघं·१०:३९; ①
१७	३ शु	**चन्द्रोदय घं·२२:०६, भद्रांतः १०:०८घं·,** ②
१८	४ श	**पंचकारंभः २४:११;** ① वृषेशुक्रः घं·२८:०५;
१९	५ र	**पंचक, भद्रारंभः २७:५५घं·**, नागपंचमी बंगाल;
२०	७ चं	**पंचक, भद्रांतः१५: ०८घं·;** ② **अभिजितनक्षत्रः ७:४५–२५:३१;**
२१	८ मं	**पंचक;**
२२	९ बु	**पंचक, गण्डान्तारम्भः २८:०४**, आर्द्रायांरविः घं·२०:०८;
२३	१० गु	**पंचकान्तः १०:१२, भद्रा १२:३७–२४:३७घं·, गण्डान्तः १६:२१;**
२४	११ शु	मृगशिरायांबुधः घं·२८:५४;
२५	१२ श	रोहिण्यांशुक्रः घं·१२:३७;
२६	१३ र	**भद्रारंभः २७:१३घं·;**
२७	१४ चं	**भद्रांतः १६:०२घं·;**
२८	३० मं	मिथुनेबुधः घं·२७:१६;
२९	३० बु	आश्वन्यांमङ्गलः घं·०७:२९;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५९–१३:४९
१५	१२:0२–१३:५१

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

वृष्टिविचार– आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन आकाश में वर्षा सम्बन्धी यदि पञ्चनिमित्त न दिखें, तो दो मास तक वृष्टि नहीं होती है, ये पञ्चनिमित्त हैं– १.बादल २.गर्जन ३.वायु ४.विद्युत् तथा ५.वर्षण–

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे
निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च।
विद्युन्नगजर्त्यथ नैव मेघो मासद्वयं
तत्र न वर्षणं स्यात् ।।

योगिनी एकादशी– आषाढ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कुष्ठनाश होता है। अतः इस व्रत को करने वाला त्वचारोग से रहित होता है–

आषाढे कृष्णपक्षे तु योगिनी–व्रतमाचरेत्। अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठो नश्यति वै ध्रुवम्।।

❀ पंचगव्य निर्माण विधि ❀

इससे गोमूत्र – ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। १० ग्राम
इससे गोबर – ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।२ ग्राम
इससे दूध– ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवा वाजस्य संगथे।। ७० ग्राम
दही– ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्।।३० ग्राम
इससे घृत – ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।। १० ग्राम
इससे कुशोदक – ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
इससे मिलाएं– ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भाजयतेह नः। उषतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्गमाम वः। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।
अभिमन्त्रण– ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोऽबधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।

पञ्चगव्य में देवताओं– गोमूत्र में वरुणदेव, गोबर में अग्निदेव, दही में वायुदेव, दूध में चन्द्रदेव और घृत में सूर्यदेव का निवास होता है। वृद्धशातातप में कहा है, ब्रह्मकूर्च (पञ्चगव्य+कुशोदक) पीने से त्वचा, हड्डी, उदर में स्थित पाप भस्म हो जाता है। यह अभक्ष्य–अपेय शुद्धि तथा धर्मान्तरण–शुद्धि का दिव्य माध्यम है।

❀ श्रीमद्भागवतमहापुराण के सप्तम स्कन्ध के एकादश अध्याय में धर्म के तीस लक्षण बतलाये गये हैं–

१. सत्य २. दया ३. तप ४. शौच ५. तितिक्षा ६. शम ७. दम ८. अहिंसा ९. ब्रह्मचर्य १०. त्याग ११. स्वाध्याय १२. आर्जव (सीधापन) १३. संतोष १४. समदृष्टि १५. सेवा १६. भोगनिवृत्ति १७. अनहंकार १८. मौन १९. आत्मविमर्श २०. बलिवैश्वदेव(संविभाग) २१. प्राणियों में आत्मदेवता बुद्धि २२. श्रवण २३. कीर्तन २४. स्मरण २५. सेवा २६. पूजा २७ प्रणाम २८. दास्य भाव २९. मित्र भाव तथा ३०. आत्मसमर्पण भाव

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५	0२:0५	0३:४१	0५:३७	0७:५१	१0:११	१२:२८	१४:४३	१७:0१	१९:२0	२१:२६	२३:१0	00:४0
१६	0२:0२	0३:३७	0५:३३	0७:४७	१0:0७	१२:२४	१४:३९	१६:५८	१९:१६	२१:२२	२३:0६	00:३६
१७	0१:५८	0३:३४	0५:२९	0७:४३	१0:0३	१२:२0	१४:३५	१६:५४	१९:१३	२१:१८	२३:0३	00:३२
१८	0१:५४	0३:३0	0५:२५	0७:३९	0९:५९	१२:१६	१४:३१	१६:५0	१९:0९	२१:१४	२२:५९	00:२८
१९	0१:५0	0३:२६	0५:२१	0७:३५	0९:५६	१२:१२	१४:२७	१६:४६	१९:0५	२१:१0	२२:५५	00:२४
२0	0१:४६	0३:२२	0५:१७	0७:३१	0९:५२	१२:0८	१४:२३	१६:४२	१९:0१	२१:0६	२२:५१	00:२0
२१	0१:४२	0३:१८	0५:१३	0७:२७	0९:४८	१२:0४	१४:१९	१६:३८	१८:५७	२१:0२	२२:४७	00:१६
२२	0१:३८	0३:१४	0५:0९	0७:२४	0९:४४	१२:00	१४:१५	१६:३४	१८:५३	२0:५८	२२:४३	00:१२
२३	0१:३४	0३:१0	0५:0६	0७:२0	0९:४0	११:५६	१४:११	१६:३0	१८:४९	२0:५५	२२:३९	00:0८
२४	0१:३0	0३:0६	0५:0२	0७:१६	0९:३६	११:५२	१४:0७	१६:२६	१८:४५	२0:५१	२२:३५	00:0४
२५	0१:२६	0३:0२	0४:५८	0७:१२	0९:३२	११:४९	१४:0४	१६:२२	१८:४१	२0:४७	२२:३१	00:00
२६	0१:२२	0२:५८	0४:५४	0७:0८	0९:२८	११:४५	१४:00	१६:१८	१८:३७	२0:४३	२२:२७	२३:५७
२७	0१:१९	0२:५४	0४:५0	0७:0४	0९:२४	११:४१	१३:५६	१६:१५	१८:३३	२0:३९	२२:२३	२३:५३
२८	0१:१५	0२:५१	0४:४६	0७:00	0९:२0	११:३७	१३:५२	१६:११	१८:३0	२0:३५	२२:२0	२३:४९
२९	0१:११	0२:४७	0४:४२	0६:५६	0९:१६	११:३३	१३:४८	१६:0७	१८:२६	२0:३१	२२:१६	२३:४५

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
१५	**अमृत**·१ १५:0२ तक; **सिद्ध**·२ १५:0२ से;
१६	**अमृत**·३ १२:३४ से;
१७	**अमृत**·४ १0:0८ तक; **सर्वार्थ**·श्र १४:१८ से;
१८	**सर्वार्थ**·श्र १२:५0 तक; **सिद्ध**·४ 0७:५0 तक; **मृत्यु**·५ 0७:५0 से;
१९	**अमृत**·५ 0५:४४ तक; **मृत्यु**·६ 0५:४४ से; **रवियोग**:श ११:३५ से;
२0	**मृत्यु**·७ २६:२६ से; **रवियोग**:श १0:३९ तक;
२१	**सिद्ध**·८ २५:२१ तक;**सर्वार्थ**·उभा १0:0३ से; **द·ति**·८;
२३	**सर्वार्थ**·रे–अ अहोरात्र; **सिद्ध**·१0 २४:३७ तक;
२४	**सर्वार्थ**·अ १0:५९ तक; **सिद्ध**·११ २५:0१ तक; **मृत्यु**·१२ २५:0१ से;
२५	**त्रिपुष्कर**:१२+कृ १२:१७ से;
२६	**सिद्ध**·१३ २७:१३ तक;
२७	**सर्वार्थ**·रो·मृ अहोरात्र; **अमृत**·१५ २८:५५ से;
२९	**अमृत**·१ 0६:५१ से;

व्रतों में **एकादशी व्रत** प्रधान है। एकादशी और भगवत्महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत्महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। कूर्मपुराण, ***अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।***
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ।।
जो सूर्योदय पूर्व ५५ घटी (४५ घटी निम्बार्क) के उपरान्त यदि दशमी हो तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे। वैष्णवाचार्यों ने पूर्वविद्धा तिथि का त्याग वैष्णवों का लक्षण माना है– *"पूर्वविद्धा तिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"*। इस नारदपंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्वविद्धा तिथि का त्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः वैष्णव व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है।

आषाढ़ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ३० जून से १३ जुलाई, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ३०:६:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	३० जून से १३ जुलाई
३०	१ गु	०८:०५	०८:५२	पुन·	४५:३५	२३:५२	ध्रुव	०९:५४	०९:३६	बव	०८:०५	बाल	४०:३२	३४:१९	५:३८	१९:२२	क·२८:६०	१७:१४	सिद्धि	१५	३०	**गुप्त नवरात्र आरम्भः,**
जुलाई	२ शु	१२:५२	१०:४७	पुष्य	५१:३६	२६:१७	व्याघ·	११:२३	१०:१२	कौल	१२:५२	तैति	४५:०२	३४:१८	५:३८	१९:२२	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	१६	१	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा,** श्रीरामबलराम रथोत्सव,
२	३ श	१७:०१	१२:२७	आश्ले·	५६:४९	२८:२२	हर्षण	१२:२४	१०:३६	गर	१७:०१	वणि	४८:४५	३४:१७	५:३९	१९:२२	सिं·५६:४९	२८:२२	मानस	१७	२	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,**
३	४ र	२०:१४	१३:४५	मघा	६०:००	अहोरात्र	वज्र	१२:४२	१०:४४	विष	२०:१४	बव	५१:२५	३४:१६	५:३९	१९:२२	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१८	३	
४	५ चं	२२:१९	१४:३५	मघा	००:५९	०६:०३	सिद्धि	१२:०८	१०:३१	बाल	२२:१९	कौल	५२:५४	३४:१५	५:३९	१९:२२	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१९	४	श्रीद्वारकाधीश पाटोत्सव कांकरोली,
५	६ मं	२३:०९	१४:५६	पू·फा·	०३:५८	०७:१५	व्यति·	१०:३६	१९:५४	तैति	२३:०९	गर	५३:०६	३४:१४	५:४०	१९:२२	क·१९:३२	१३:२८	धूम्र	२०	५	**श्रीस्कन्द षष्ठी,** कर्दमषष्ठी·मनसापूजा (बंगाल)
६	७ बु	२२:४३	१४:४५	उ·फा·	०५:४३	०७:५७	वरी·	०८:०३	०८:५३	वणि	२२:४३	विष	५२:०२	३४:१३	५:४०	१९:२२	कन्या	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२१	६	विवस्वत सप्तमी, विवस्वत सूर्यपूजा,
७	८ गु	२१:०३	१४:०६	हस्त	०६:१३	०८:१०	परिघ	०४:३१	०७:२९	बव	२१:०३	बाल	४९:४७	३४:१२	५:४१	१९:२२	तु·३६:०२	२०:०६	राक्षस	२२	७	**श्रीदुर्गाष्टमी,** श्रीपरशुराम अष्टमी (उड़ीसा),
८	९ शु	१८:१५	१२:५९	चित्रा	०५:३४	०७:५५	शिव सिद्ध	००:०१ ५४:४०	०५:४२ २७:३४	कौल	१८:१५	तैति	४६:२८	३४:११	५:४१	१९:२२	तुला	अहोरात्र	मुसल	२३	८	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र समाप्तिः, भड़ल्या नवमी,**
९	१० श	१४:२७	११:२८	स्वाती	०३:५४	०७:१५	साध्य	४८:३८	२५:०९	गर	१४:२७	वणि	४२:१४	३४:०९	५:४१	१९:२२	वृ·४७:०५	२४:३१	सिद्धि	२४	९	**गुप्तनवरात्रोत्थापन,** मन्वादि, गिरिजा पूजा,
१०	११ र	०९:४८	०९:३७	विशा· अनु·	०१:२२ ५६:४६	०६:१५ २८:५७	शुभ	४१:५७	२२:२९	विष	०९:४८	बव	३७:१३	३४:०८	५:४२	१९:२२	वृश्चिक	अहोरात्र	उत्पात	२५	१०	**श्रीहरिशयनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
११	१२ चं १३ चं	०४:२९ ५४:१२	०७:३० २९:११	ज्ये·	५४:२२	२७:२७	शुक्ल	३४:४८	१९:३७	बाल	०४:२९	कौल	३१:३८	३४:०६	५:४२	१९:२१	ध·५४:२२	२७:२७	पद्म	२६	११	**सोम प्रदोष व्रतम्, चातुर्मास्य व्रताराम्भः,**
१२	१४ मं	५२:३४	२६:४४	मूल	५०:१७	२५:५०	ब्रह्म	२७:१९	१६:३९	गर	२५:३९	वणि	५२:३४	३४:०५	५:४३	१९:२१	धनु	अहोरात्र	छत्र	२७	१२	**श्रीशिवशयन चतुर्दशी,** चौमासी चौदस (जैन),
१३	१५ बु	४६:२०	२४:१५	पू·षा·	४६:०५	२४:०९	ऐन्द्र	१९:४१	१३:३६	विष	१९:२७	बव	४६:२०	३४:०३	५:४३	१९:२१	धनु	अहोरात्र	श्रीवत्स	२८	१३	**पूर्णिमा (व्रत, स्नान, दान), श्रीगुरुपूर्णिमा,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जून	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
३०	१ गु	०२:१३:४०:३५	०२:२४:११:०३	००:००:३९:१३	०२:०१:५४:५२	११:१५:१०:४१	०१:१५:३८:५७	०९:२७:१२:०४	०६:२८:१४:५३	४७:०९:२२	उ·२३:५०:२७	– २:५९	०६:२७:४५
जुलाई	२ शु	०२:१४:३७:२६	०३:०६:१४:०८	००:०१:२१:३६	०२:०३:४०:२९	११:१५:१६:२०	०१:१६:५१:००	०९:२७:०८:५९	०६:२८:११:४२	४७:०९:०१	उ·२३:४७:२५	– ३:११	०७:२०:३९
२	३ श	०२:१५:३४:१७	०३:१८:२२:३४	००:०२:०३:५२	०२:०५:२६:५८	११:१५:२१:४९	०१:१८:०३:०५	०९:२७:०५:५०	०६:२८:०८:३१	४७:०८:३७	उ·२३:४३:५८	– ३:२२	०८:१५:१३
३	४ र	०२:१६:३१:०८	०४:००:३९:३०	००:०२:४६:०१	०२:०७:१४:१६	११:१५:२७:०७	०१:१९:१५:१२	०९:२७:०२:३५	०६:२८:०५:२०	४७:०८:११	उ·२३:४०:०७	– ३:३३	०९:१०:३४
४	५ चं	०२:१७:२७:५९	०४:१३:०७:३८	००:०३:२८:०४	०२:०९:०२:१८	११:१५:३२:१४	०१:२०:२७:२०	०९:२६:५९:१५	०६:२८:०२:०९	४७:०७:४२	उ·२३:३५:५१	– ३:४४	१०:०५:४५
५	६ मं	०२:१८:२४:५०	०४:२५:४९:०५	००:०४:०९:६०	०२:१०:५१:०१	११:१५:३७:०९	०१:२१:३९:३०	०९:२६:५५:५१	०६:२७:५८:५९	४७:०७:११	उ·२३:३१:११	– ३:५५	११:०१:२६
६	७ बु	०२:१९:२१:४१	०५:०८:४५:२०	००:०४:५१:४९	०२:१२:४०:२०	११:१५:४१:५३	०१:२२:५१:४१	०९:२६:५२:२२	०६:२७:५५:४८	४७:०६:३७	उ·२३:२६:०६	– ४:०५	११:५८:२३
७	८ गु	०२:२०:१८:३३	०५:२१:५७:०५	००:०५:३३:३१	०२:१४:३०:१२	११:१५:४६:२६	०१:२४:०३:५४	०९:२६:४८:४८	०६:२७:५२:३७	४७:०६:०१	उ·२३:२०:३७	– ४:१५	१२:५६:३९
८	९ शु	०२:२१:१५:२४	०६:०५:२४:१६	००:०६:१५:०५	०२:१६:२०:३२	११:१५:५०:४७	०१:२५:१६:०८	०९:२६:४५:१०	०६:२७:४९:२६	४७:०५:२३	उ·२३:१४:४४	– ४:२५	१३:५६:३९
९	१० श	०२:२२:१२:१६	०६:१९:०६:०५	००:०६:५६:३३	०२:१८:११:१८	११:१५:५४:५६	०१:२६:२८:२३	०९:२६:४१:२८	०६:२७:४६:१६	४७:०४:४२	उ·२३:०८:२७	– ४:३४	१४:५९:३२
१०	११ र	०२:२३:०९:०८	०७:०३:००:६०	००:०७:३७:५२	०२:२०:०२:२६	११:१५:५८:५३	०१:२७:४०:४०	०९:२६:३७:४१	०६:२७:४३:०५	४७:०३:५९	उ·२३:०१:४६	– ४:४३	१६:०३:१८
११	१२ चं	०२:२४:०६:०१	०७:१७:०६:४७	००:०८:१९:०५	०२:२१:५३:५३	११:१६:०२:३९	०१:२८:५२:५८	०९:२६:३३:५०	०६:२७:३९:५४	४७:०३:१३	उ·२२:५४:४२	– ४:५२	१७:०६:४४
१२	१४ मं	०२:२५:०२:५४	०८:०१:२०:४०	००:०९:००:०९	०२:२३:४५:३६	११:१६:०६:१३	०२:००:०५:१८	०९:२६:२९:५५	०६:२७:३६:४३	४७:०२:२५	उ·२२:४७:१३	– ५:००	१८:०९:४९
१३	१५ बु	०२:२५:५९:४८	०८:१५:३९:२९	००:०९:४१:०६	०२:२५:३७:३१	११:१६:०९:३४	०२:०१:१७:३८	०९:२६:२५:५६	०६:२७:३३:३२	४७:०१:३५	उ·२२:३९:२२	– ५:०८	१९:०५:३७

३ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः४

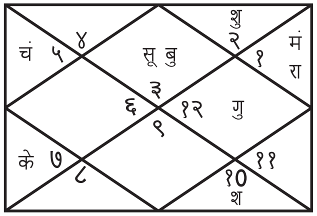

१० जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः११

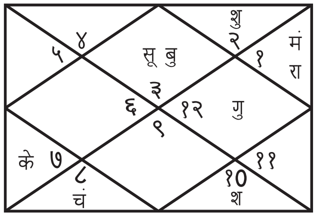

आषाढ़ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ३० जून से १३ जुलाई, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः—कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं ।
सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:५५

दिनाङ्क / जून	तिथि / वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३०	१ गु	;
जुलाई	२ शु	;
२	३ श	**भद्रारंभः २५:०९घं·, गण्डान्तारम्भः २१:५३**, आर्द्रायांबुधः घं·२२:००;
३	४ र	**भद्रांतः १३:४५घं·, गण्डान्तः १०:५०;**
४	५ चं	साईं टेऊँराम जयन्ती;
५	६ मं	**श्रीमहावीर स्वामी गर्भ कल्याणक**, व्यतीपात पुण्यम्;
६	७ बु	**भद्रा १४:४५–२६:२९घं·**, पुनर्वसौरविः घं·२१:५१; ①
७	८ गु	महिषघ्नी व्रत, बुधःपूर्वास्तः घं·१९:५९;
८	९ शु	कन्दर्प नवमी, ऐन्द्री पूजा; ① मृगशिरायांशुक्रः घं·१५:०५;
९	१० श	**भद्रारंभः २२:३५घं·**, आशादशमी, पुनर्वसौबुधः घं·२७:११;
१०	११ र	**भद्रांतः ९:३७घं·**, श्रीविष्णुशयनोत्सव;
११	१२ चं	**गण्डान्तारम्भः २१:५०**, वासुदेव द्वादशी, मिथुनेशुक्रः घं·२७:५८;
१२	१४ मं	**भद्रारंभः २६:४४घं·, गण्डान्तः ९:०३;**
१३	१५ बु	**भद्रांतः १३:३०घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, श्रीवेदव्यास जयन्ती, वायु धारिणी पूर्णिमा, मन्वादि,** कोकिला व्रत, वायु परीक्षण;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०२–१३:५२
१५	१२:०४–१३:५३

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

❀ आषाढ़ी गुप्तनवरात्रि– आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त गुप्त नवरात्रि होती है। इसमें भगवती का आराधन करना चाहिए। वासन्तिक (चैत्र) एवं शारदीय (आश्विन) नवरात्रि प्रकट होती हैं, व आषाढ़ी एवं माघी नवरात्रि गुप्त होती हैं।

– **चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः नवरात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः।।** – श्रीमद्देवीभागवत, ३/२४/२१।।

गुप्त नवरात्रि में अपने इष्टदेव की आराधना, पाठ, जपादि कर्म परम सिद्धिदायक हो जाता है।

❀ रथयात्रादर्शन– आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा उत्सव करें। तिथि का अभाव हो, अर्थात् द्वितीया तिथि न हो, तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सव को नहीं करना चाहिये। क्योंकि, ''तिथि न होने पर जो मनुष्य (रथयात्रा आदि) कर्म करते हैं, उनका किया हुआ सब कर्म वृथा हो जाता है, और वे अपने को नरक में ले जाते हैं।''–ऐसा गर्गाचार्य का कथन है। विद्धाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में यह उत्सव करें।

❀ श्रीहरि(विष्णु) शयन– आषाढ़ शुक्ल एकादशी श्रीहरिशयनी अथवा पद्मा कहलाती है। इस दिन से भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेषशैय्या पर चार मास के लिए शयन करते हैं। फलतः इन चार मासों में सभी प्रकार के शुभकर्म वर्जित हैं। श्रीविष्णु शयनोत्सव की रात्रि में श्रीभगवान् की पूजा करे। वस्त्र–चन्दनादि, छत्र, चामर, ध्वजा, पताकादि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। श्रीभगवान् को पालकी में जलाशय के निकट ले जाकर पूजा करके जूही के फूल से प्रार्थनापूर्वक पुष्पाञ्जलि दे –

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम् ।

(हे भगवान् विष्णु! आपके सोने से संसार सो जाता है। आपके जागने से यह चराचर जगत् जाग उठता है।)

❀ श्री गुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।। दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू।।

श्री गुरुदेव भगवान् के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३०	०१:०७	०२:४३	०४:३८	०६:५२	०९:१२	११:२९	१३:४४	१६:०३	१८:२२	२०:२७	२२:१२	२३:४१
जुलाई	०१:०३	०२:३९	०४:३४	०६:४८	०९:०९	११:२५	१३:४०	१५:५९	१८:१८	२०:२३	२२:०८	२३:३७
२	००:५९	०२:३५	०४:३०	०६:४४	०९:०५	११:२१	१३:३६	१५:५५	१८:१४	२०:१९	२२:०४	२३:३३
३	००:५५	०२:३१	०४:२७	०६:४१	०९:०१	११:१७	१३:३२	१५:५१	१८:१०	२०:१५	२२:००	२३:२९
४	००:५१	०२:२७	०४:२३	०६:३७	०८:५७	११:१३	१३:२८	१५:४७	१८:०६	२०:१२	२१:५६	२३:२५
५	००:४७	०२:२३	०४:१९	०६:३३	०८:५३	११:०९	१३:२४	१५:४३	१८:०२	२०:०८	२१:५२	२३:२१
६	००:४३	०२:१९	०४:१५	०६:२९	०८:४९	११:०५	१३:२०	१५:३९	१७:५८	२०:०४	२१:४८	२३:१७
७	००:३९	०२:१५	०४:११	०६:२५	०८:४५	११:०२	१३:१७	१५:३५	१७:५४	२०:००	२१:४४	२३:१३
८	००:३५	०२:११	०४:०७	०६:२१	०८:४१	१०:५८	१३:१३	१५:३१	१७:५०	१९:५६	२१:४०	२३:१०
९	००:३२	०२:०७	०४:०३	०६:१७	०८:३७	१०:५४	१३:०९	१५:२८	१७:४६	१९:५२	२१:३६	२३:०६
१०	००:२८	०२:०४	०३:५९	०६:१३	०८:३३	१०:५०	१३:०५	१५:२४	१७:४३	१९:४८	२१:३३	२३:०२
११	००:२४	०२:००	०३:५५	०६:०९	०८:२९	१०:४६	१३:०१	१५:२०	१७:३९	१९:४४	२१:२९	२२:५८
१२	००:२०	०१:५६	०३:५१	०६:०५	०८:२६	१०:४२	१२:५७	१५:१६	१७:३५	१९:४०	२१:२५	२२:५४
१३	००:१६	०१:५२	०३:४७	०६:०१	०८:२२	१०:३८	१२:५३	१५:१२	१७:३१	१९:३६	२१:२१	२२:५०

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
३०	**सर्वार्थ**·पुन–पु अहोरात्र;
जुलाई	**मृत्यु**·२ १०:४७ तक; **रवियोग**ःआश्ले २६:१७ से;
२	**रवियोग**ःआश्ले २८:२२ तक; **सिद्ध**·४ १२:२७ से;
३	**अमृत**·५ १३:४५ से;
४	**अमृत**·५ १४:३५ तक; **रवियोग**ःपूफा ०६:०३ से; **सिद्ध**·६ १४:३५ से;
५	**मृत्यु**·६ १४:५६ से; **रवियोग**ःपूफा ०७:१५ तक; **अमृत**·७ १४:५६ से; **त्रिपुष्कर**ः७+उफा १४:५६ से;
६	**सिद्ध**·७ १४:४५तक; **सर्वार्थ**·ह ७:५७से; **मृत्यु**·८ १४:४५से, **द·ति**·८
७	**अमृत**·८ १४:०६ तक; **मृत्यु**·९ १४:०६ से, द·ति·८;
८	**अमृत**·९ १२:५९ तक; **रवियोग**ःस्वा ७:५५ से;
९	**सर्वार्थ**·स्वा– **रवियोग**ःस्वा ०७:१५ तक; **मृत्यु**·१० ११:२८ तक; **रवियोग**ःवि ०७:१५ से; **अमृत**·११ ११:२८ से;
१०	**मृत्यु**·११ ०९:३७ तक; **रवियोग**ःवि ०६:१५ तक;
११	**रवियोग**ःमू २७:२७ से; **मृत्यु**·१२ ०७:३० तक;
१२	**रवियोग**ःमू २५:५० तक;
१३	**अमृत**·१ २४:१५ से;

卐 **देवशयनी एकादशी** को श्रीहरि क्षीरसागर में शयन करते हैं। इस मन्त्र से पूजा करें–

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे च विबुध्येत प्रसन्नो मे भवाव्यय॥

अभीष्ट फलप्राप्ति हेतु चातुर्मास में ४ माह के लिए लिये पदार्थों का त्याग और ग्रहण करे। स्वर्गप्राप्तिके लिये पुष्पादि भोगों का त्याग करे। देह–शुद्धि के लिये पंचगव्य पान करे, वंश–वृद्धिके लिये नियमित दूध का, सर्वपापक्षयपूर्वक सकल पुण्यफल प्राप्त करने के लिये एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास का व्रत ग्रहण करे।

卐 आषाढ़ी **गुरु पूर्णिमा** पर समस्त आचार्य परम्परा सहित निजगुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। परंतु दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो परदिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये।

श्रावण कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १४ जुलाई से २८ जुलाई, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– **१४:७:२०२२** मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१४ जुलाई से २८ जुलाई
१४	१ गु	४०:१३	२१:४९	उ·षा·	४१:५९	२२:३१	वैधृ·	१२:०२	१०:३४	बाल	१३:१५	कौल	४०:१३	३४:०१	५:४४	१९:२०	म·००:०२	०५:४४	सौम्य	२९	१४	हिण्डोला प्रारम्भ, अशून्य शयन व्रतम्,
१५	२ शु	३४:२५	१९:३०	श्रवण	३८:१२	२१:०१	विष्कु· प्रीति	०४:३४ ५२:५२	०७:३४ २९:०७	तैति	०७:१६	गर	३४:२५	३४:००	५:४४	१९:२०	मकर	अहोरात्र	धूम्र	३०	१५	
१६	३ श	२९:०६	१७:२३	धनि·	३४:५६	१९:४३	आयु·	५०:४५	२६:०३	वणि	०१:४०	विष	२९:०६	३३:५८	५:४५	१९:२०	कुं·०६:२९	०८:२०	प्रवर्द्ध	३१	१६	संकष्टी गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:३०
१७	४ र	२४:२७	१५:३२	शत·	३२:२२	१८:४२	सौभा·	४४:४१	२३:३८	बाल	२४:२७	कौल	५२:२७	३३:५६	५:४५	१९:२०	कुंभ	अहोरात्र	राक्षस	३२	१७	जयापार्वती व्रतारम्भ (गुजरात),
१८	५ चं	२०:४०	१४:०२	पू·भा·	३०:३८	१८:०१	शोभ·	३९:२०	२१:३०	तैति	२०:४०	गर	४९:०८	३३:५४	५:४६	१९:१९	मी·१५:५८	१२:०९	मुसल	१	१८	नाग पञ्चमी (जयपुर परम्परागत),
१९	६ मं	१७:५२	१२:५५	उ·भा·	२९:५७	१७:४५	अतिग·	३४:५१	१९:४३	वणि	१७:५२	विष	४६:५४	३३:५२	५:४६	१९:१९	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	२	१९	
२०	७ बु	१६:१३	१२:१६	रेवती	३०:२४	१७:५६	सुकर्मा	३१:१८	१८:१८	बव	१६:१३	बाल	४५:५१	३३:५०	५:४७	१९:१९	मे·३०:२४	१७:५६	उत्पात	३	२०	श्रीकालाष्टमी, भानुसप्तमी,
२१	८ गु	१५:४७	१२:०६	अश्वि·	३२:०५	१८:३७	धृति	२८:४५	१७:१७	कौल	१५:४७	तैति	४६:०४	३३:४७	५:४७	१९:१८	मेष	अहोरात्र	मानस	४	२१	मंगलागौरी पूजा, मन्वादि,
२२	९ शु	१६:३८	१२:२७	भरणी	३५:०१	१९:४८	शूल	२७:१३	१६:४१	गर	१६:३८	वणि	४७:३३	३३:४५	५:४८	१९:१८	वृ·५०:५६	२६:१०	मुद्गर	५	२२	गुरु हरकिशन जयन्ती,
२३	१० श	१८:४४	१३:१८	कृत्ति·	३९:०७	२१:२७	गण्ड	२६:३८	१६:२७	विष	१८:४४	बव	५०:१३	३३:४३	५:४८	१९:१७	वृष	अहोरात्र	ध्वज	६	२३	
२४	११ र	२१:५८	१४:३६	रोहि·	४४:१७	२३:३२	वृद्धि	२६:५६	१६:३५	बाल	२१:५८	कौल	५३:५७	३३:४०	५:४९	१९:१७	वृष	अहोरात्र	धाता	७	२४	श्रीकामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),
२५	१२ चं	२६:०७	१६:१६	मृग·	५०:१६	२५:५५	ध्रुव	२७:५५	१६:५९	तैति	२६:०७	गर	५८:२८	३३:३८	५:४९	१९:१६	मि·१७:११	१२:४२	आनन्द	८	२५	प्रदोष व्रतम्, श्रावण सोमवार व्रतम्,
२६	१३ मं	३०:५४	१८:१२	आर्द्रा	५६:४२	२८:३१	व्याघ·	२९:२३	१७:३५	वणि	३०:५४	विष	६०:००	३३:३५	५:५०	१९:१६	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	९	२६	मास शिवरात्रि व्रतम्,
२७	१४ बु	३५:५६	२०:१३	पुन·	६०:००	अहोरात्र	हर्षण	३१:०२	१८:१५	विष	०३:२४	बव	३५:५६	३३:३३	५:५०	१९:१५	क·४६:३६	२४:२९	गद	१०	२७	
२८	३० गु	४०:४५	२२:०९	पुन·	०३:११	०७:०७	वज्र	३२:३३	१८:५२	चतु	०८:२३	नाग	४०:४५	३३:३०	५:५०	१९:१५	कर्क	अहोरात्र	सिद्धि	११	२८	हरियाली अमावस्या (देव–पितृकार्य),

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः (मा/व) रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१४	१ गु	०२:२६:५६:४२	०८:२९:५९:३६	००:१०:२१:५५	०२:२७:२९:३६	११:१६:१२:४४	०२:०२:३०:००	०९:२६:२१:५३	०६:२७:३०:२२	४७:००:४३	उ·२२:३१:०७	– ५:१५	२०:००:२३
१५	२ शु	०२:२७:५३:३७	०९:१४:१७:०४	००:११:०२:३७	०२:२९:२१:४८	११:१६:१५:४१	०२:०३:४२:२४	०९:२६:१७:४७	०६:२७:२७:११	४६:५९:४९	उ·२२:२२:२९	– ५:२२	२०:४५:१९
१६	३ श	०२:२८:५०:३२	०९:२८:२८:२७	००:११:४३:१०	०३:०१:१४:०३	११:१६:१८:२६	०२:०४:५४:४९	०९:२६:१३:३७	०६:२७:२४:००	४६:५८:५२	उ·२२:१३:२९	– ५:२८	२१:२९:३२
१७	४ र	०२:२९:४७:२८	१०:१२:३०:४१	००:१२:२३:३४	०३:०३:०६:२०	११:१६:२०:५८	०२:०६:०७:१५	०९:२६:०९:२४	०६:२७:२०:४९	४६:५७:५४	उ·२२:०४:०५	– ५:३४	२२:०७:०१
१८	५ चं	०३:००:४४:२५	१०:२६:२१:१२	००:१३:०३:५१	०३:०४:५८:३४	११:१६:२३:१९	०२:०७:१९:४२	०९:२६:०५:०८	०६:२७:१७:३८	४६:५६:५३	उ·२१:५४:२०	– ५:४०	२२:४३:५०
१९	६ मं	०३:०१:४१:२३	११:०९:५८:०१	००:१३:४३:५९	०३:०६:५०:४१	११:१६:२५:२६	०२:०८:३२:१०	०९:२६:००:४८	०६:२७:१४:२८	४६:५५:५०	उ·२१:४४:१२	– ५:४५	२३:१९:५३
२०	७ बु	०३:०२:३८:२१	११:२३:१९:५०	००:१४:२३:५९	०३:०८:४२:३७	११:१६:२७:२१	०२:०९:४४:४१	०९:२५:५६:२६	०६:२७:११:१७	४६:५४:४५	उ·२१:३३:४२	– ५:४९	२३:५५:०७
२१	८ गु	०३:०३:३५:२०	००:०६:२६:०७	००:१५:०३:५०	०३:१०:३४:१९	११:१६:२९:०४	०२:१०:५७:१३	०९:२५:५२:०१	०६:२७:०८:०६	४६:५३:३९	उ·२१:२२:५१	– ५:५३	००:३३:४२
२२	९ शु	०३:०४:३२:२०	००:१९:१७:०४	००:१५:४३:३३	०३:१२:२५:४४	११:१६:३०:३४	०२:१२:०९:४७	०९:२५:४७:३३	०६:२७:०४:५५	४६:५२:३०	उ·२१:११:३७	– ५:५६	०१:१३:०५
२३	१० श	०३:०५:२९:२१	०१:०१:५३:४२	००:१६:२३:०६	०३:१४:१६:४९	११:१६:३१:५१	०२:१३:२२:२२	०९:२५:४३:०२	०६:२७:०१:४४	४६:५१:१९	उ·२१:००:०३	– ५:५८	०१:५५:१९
२४	११ र	०३:०६:२६:२३	०१:१४:१७:४१	००:१७:०२:३१	०३:१६:०७:३१	११:१६:३२:५५	०२:१४:३४:६०	०९:२५:३८:२९	०६:२६:५८:३४	४६:५०:०७	उ·२०:४८:०८	– ६:०१	०२:४२:१०
२५	१२ चं	०३:०७:२३:२६	०१:२६:३१:२४	००:१७:४१:४६	०३:१७:५७:४६	११:१६:३३:४७	०२:१५:४७:३९	०९:२५:३३:५४	०६:२६:५५:२३	४६:४८:५३	उ·२०:३५:५१	– ६:०२	०३:२८:३३
२६	१३ मं	०३:०८:२०:३०	०२:०८:३७:४३	००:१८:२०:५३	०३:१९:४७:३३	वक्री १६:३४:२६	०२:१७:००:२०	०९:२५:२९:१७	०६:२६:५२:१२	४६:४७:३७	उ·२०:२३:१४	– ६:०३	०४:२१:२७
२७	१४ बु	०३:०९:१७:३४	०२:२०:३९:५३	००:१८:५९:५०	०३:२१:३६:४७	११:१६:३४:५२	०२:१८:१३:०२	०९:२५:२४:३८	०६:२६:४९:०१	४६:४६:१९	उ·२०:१०:१७	– ६:०३	०५:१४:१८
२८	३० गु	०३:१०:१४:४०	०३:०२:४१:४०	००:१९:३८:३७	०३:२३:२५:२५	११:१६:३५:०५	०२:१९:२५:४७	०९:२५:१९:५७	०६:२६:४५:५०	४६:४५:००	उ·१९:५७:००	– ६:०३	०६:०८:१०

१७ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः४

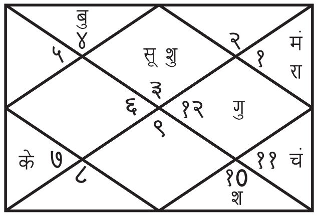

२४ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः११

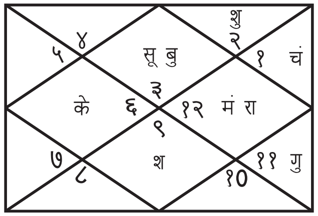

श्रावण कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १४ जुलाई से २८ जुलाई, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म उत्तरायणं । सौम्यगोलः ।
कर्कार्कतः ऋतुःवर्षा दक्षिणायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:५७

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१४	१ गु	**अभिजितः २७:५९–४५:४४**, वैधृति पुण्यम्, मैथिल नववर्ष आरम्भ;
१५	२ शु	कर्केबुधः घं·१३:५५;
१६	३ श	**पंचकारंभः ०८:२०, भद्रा ६:२५–१७:२३घं·**, मासान्तः;
१७	४ र	**पंचक, कर्क संक्रान्ति पुण्यकालं**,५:४५–१२:३२घं·, कर्केरविः घं·११:०२, ①
१८	५ चं	**पंचक, श्रावण सोमवार व्रत**, हरदेवजी पूजा (जयपुरे), मासादिः, ②
१९	६ मं	**पंचक, भद्रा १२:५५–२४:३२घं·**;
२०	७ बु	**पंचकान्तः१७:५६, गण्डान्तः ११:५१–२४:०४**, पुष्येरविः घं·२३:२०;
२१	८ गु	; ① पुष्येबुधः घं·०८:४१, आर्द्रायांशुक्रः घं·१६:३७;
२२	९ शु	**भद्रारम्भः २४:४९घं·**; ② भरण्यामङ्गलः घं·१५:२५;
२३	१० श	**भद्रान्तः १३:१८घं·**;
२४	११ र	आश्लेषयांबुधः घं·१२:५३;
२५	१२ चं	;
२६	१३ मं	**भद्रारम्भः १८:१२ घं·**, वक्रःगुरूः घं·२७:४४;
२७	१४ बु	**भद्रान्तः ०७:१२ घं·**, बुधःपश्चिमोदितः घं·२८:२८;
२८	३० गु	श्रीसरसमाधुरी जयन्ती शुकपीठ (जयपुर),मन्वादि, पुनर्वसौशुक्रः घं·१७:०९;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०४–१३:५३
१५	१२:०६–१३:५३

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **नागपंचमी**– जयपुर में श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को नागपंचमी मनाई जाती है, अन्य क्षेत्रों में परम्पराभेद से श्रावण शुक्लपक्ष अथवा भाद्र कृष्ण की पञ्चमी को मनाई जाती है। यह षष्ठीयुक्ता शुभ होती है, ***"पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।*** आज के दिन सर्पों की पूजा करे। घर के मुख्य दरवाजे के दोनों पार्श्वों में नागों के चित्र सटाकर अथवा गोबर से नागों की आकृति बनाकर अनन्त आदि प्रख्यात नागों की पूजा दूध, घी, नैवेद्य, दधि, अक्षत, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प आदि से करके प्रार्थना करे कि हमारे जीवन में सर्पो का भय न हो। भविष्यपुराण में कहा है कि प्रत्येक पञ्चमी तिथि में नागपूजा करे। सर्पस्तोत्र के पाठ से कालसर्पदोष एवं सर्पशाप की शान्ति होती है। **सर्पस्तोत्र –**

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥१॥
विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥२॥
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥३॥
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥४॥
सर्पसत्रे च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥५॥
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥६॥
धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥७॥
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥८॥
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि । नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥९॥
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥१०॥
रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ॥११॥

❀ **सर्प गायत्री --** भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात् ।

शकुन के आधार पर वर्षा विचारः–

१. गौरैया धूल में स्नान करे या चातक बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। २. शतभिषा नक्षत्र के दिन दक्षिण हवा जोर से बहे तो शीघ्र वर्षा होती है। ३. गाय या गिरगिट सूर्य की ओर देखे, कुत्ता घर से बाहर जाने को अधिक उद्यत हो तो वर्षा होती है। ४. पशु, कुत्ता खुरों से मिट्टी खोदे, आधी रात को मुर्गा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। ५. लाल चीटी अंडों के साथ ऊपर की ओर चढ़े अथवा शमी वृक्ष पर चढ़े तो वर्षा होती हैं। ६. गोबर में अधिक कीड़ा हो जाए, धूप में तेजी रहे, पपीहा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। ७. जहाँ तहाँ बगुला पंख फैलाकर पंक्ति में दिखे तो २–३ प्रहरों के बीच वर्षा होती है। ८. मक्खी, भ्रमर-पंक्ति में उड़े, गोबर की ओर जाय तो वर्षा होती है। ९. मछली जमीन की ओर आने को उद्यत हो और मेढ़क जोर से शब्द करे तो शीघ्र वर्षा होती है। १०. गुड़, नमक, मक्खन (घी), अनायास पिघले तो वर्षा होती है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१४	००:१२	०१:४८	०३:४३	०५:५७	०८:१८	१०:३४	१२:४९	१५:०८	१७:२७	१९:३२	२१:१७	२२:४६
१५	००:०८	०१:४४	०३:३९	०५:५४	०८:१४	१०:३०	१२:४५	१५:०४	१७:२३	१९:२८	२१:१३	२२:४२
१६	००:०४	०१:४०	०३:३६	०५:५०	०८:१०	१०:२६	१२:४१	१५:००	१७:१९	१९:२४	२१:०९	२२:३८
१७	००:००	०१:३६	०३:३२	०५:४६	०८:०६	१०:२२	१२:३७	१४:५६	१७:१५	१९:२१	२१:०५	२२:३४
१८	२३:५६	०१:३२	०३:२८	०५:४२	०८:०२	१०:१८	१२:३३	१४:५२	१७:११	१९:१७	२१:०१	२२:३०
१९	२३:५२	०१:२८	०३:२४	०५:३८	०७:५८	१०:१४	१२:२९	१४:४८	१७:०७	१९:१३	२०:५७	२२:२६
२०	२३:४८	०१:२४	०३:२०	०५:३४	०७:५४	१०:११	१२:२६	१४:४४	१७:०३	१९:०९	२०:५३	२२:२२
२१	२३:४४	०१:२०	०३:१६	०५:३०	०७:५०	१०:०७	१२:२२	१४:४०	१६:५९	१९:०५	२०:४९	२२:१८
२२	२३:४०	०१:१६	०३:१२	०५:२६	०७:४६	१०:०३	१२:१८	१४:३७	१६:५५	१९:०१	२०:४५	२२:१५
२३	२३:३६	०१:१२	०३:०८	०५:२२	०७:४२	०९:५९	१२:१४	१४:३३	१६:५१	१८:५७	२०:४१	२२:११
२४	२३:३३	०१:०८	०३:०४	०५:१८	०७:३८	०९:५५	१२:१०	१४:२९	१६:४८	१८:५३	२०:३८	२२:०७
२५	२३:२९	०१:०५	०३:००	०५:१४	०७:३४	०९:५१	१२:०६	१४:२५	१६:४४	१८:४९	२०:३४	२२:०३
२६	२३:२५	०१:०१	०२:५६	०५:१०	०७:३०	०९:४७	१२:०२	१४:२१	१६:४०	१८:४५	२०:३०	२१:५९
२७	२३:२१	००:५७	०२:५२	०५:०६	०७:२७	०९:४३	११:५८	१४:१७	१६:३६	१८:४१	२०:२६	२१:५५
२८	२३:१७	००:५३	०२:४८	०५:०२	०७:२३	०९:३९	११:५४	१४:१३	१६:३२	१८:३७	२०:२२	२१:५१

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
१५	**सर्वार्थ**·श्र २१:०१ तक; **मृत्यु**·२ १९:३० तक;
१६	**सिद्ध**·४ १७:२३ से;
१७	**अमृत**·५ १५:३२ से;
१८	**अमृत**·५ १४:०२ तक; **सिद्ध**·६ १४:०२ से; **रवियोग**ःउभा १८:०१ से, **द·ति**·६;
१९	**सर्वार्थ**·उभा–**रवियोग**ःउभा १७:४५ तक; **मृत्यु**·६ १२:५५ तक; **अमृत**·७ १२:५५ से, **द·ति**·६;
२०	**सिद्ध**·७ १२:१६ तक; **मृत्यु**·८ १२:१६ से;
२१	**सर्वार्थ**·अ १८:३७ तक; **अमृत**·८ १२:०६ तक; **मृत्यु**·९ १२:०६ से;
२२	**अमृत**·९ १२:२७ तक;
२३	**मृत्यु**·१० १३:१८ तक; **अमृत**·११ १३:१८ से; **सर्वार्थ**·रो २१:२७ से;
२४	**मृत्यु**·११ १४:३६ तक; **द्विपुष्कर**ः१२+मृ २३:३२ से;
२५	**सर्वार्थ**·मृ २५:५५ तक; **मृत्यु**·१२ १६:१६ तक;
२६	**सिद्ध**·१३ १६:१२ तक;
२८	**सर्वार्थ**ःअहोरात्र; **सिद्ध**·३० २२:०९ तक; **गुरुपुष्य** ०७:०७ से

卐 **अशून्यशयन व्रत** का आरम्भ श्रावण मास में होता है। इसके प्रभावसे विवाहविच्छेद की संभावना नष्ट हो जाती है। श्रावण में जो श्री शिव–पार्वती की युग्मपूजा करेगा उसका शुभ विवाह होगा और उपवासपूर्वक श्रावण कृष्ण द्वितीया की रात्रि में जो श्री विष्णुलक्ष्मी की पूजा बिस्तर पर करेंगी उनका विवाह–विच्छेद नहीं होगा–

यथा त्वशून्यं तव देव तल्पं समं हि लक्ष्म्या वरदाच्युतेश।
सत्येन तेनामितवीर्य विष्णो गार्हस्थ्यनाशो मम नास्तु देव।

हे विष्णु! आप और लक्ष्मीजी का गृहस्थ जीवन कभी नष्ट नहीं होता, आपकी पूजासे मेरा भी नष्ट न हो।

卐 **नागपंचमी** को नागों और सर्पो की पूजा कर कालसर्प दोष से मुक्ति की प्रार्थना की जायेगी। सर्पदोष निवारक वैदिक मन्त्र –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

श्रावण शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २९ जुल से १२ अगस्त, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २९:७:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		☐ व्रत–पर्व–उत्सव ☐
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२९ जुलाई से १२ अगस्त
२९	१ शु	४४:५८	२३:५१	पुष्य	०९:१९	०९:३५	सिद्धि	३३:३९	१९:१९	बव	१२:५७	बाल	४४:५८	३३:२७	५:५१	१९:१४	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	१२	२९	
३०	२ श	४८:१७	२५:११	आश्ले·	१४:४४	११:४५	व्यति·	३४:०४	१९:२९	बाल	१६:४५	कौल	४८:१७	३३:२५	५:५२	१९:१४	सिं·१४:४४	११:४५	मानस	१३	३०	**सिंजारा**, धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्री जयन्ती,
३१	३ र	५०:२८	२६:०४	मघा	१९:०८	१३:३२	वरी·	३३:३८	१९:१९	तैति	१९:३०	गर	५०:२८	३३:२२	५:५२	१९:१३	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	१४	३१	**हरियाली तीज, झूलनोत्सव**, मधुश्रवा तीज,
अगस्त	४ चं	५१:२५	२६:२७	पू·फा·	२२:२४	१४:५०	परिघ	३२:१५	१८:४७	वणि	२१:०५	विष	५१:२५	३३:१९	५:५३	१९:१३	क·३८:०१	२१:०५	ध्वज	१५	१	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, श्रावण सोमवार व्रतम्,**
२	५ मं	५१:०५	२६:२०	उ·फा·	२४:२४	१५:३९	शिव	२९:५२	१७:५०	बव	२१:२४	बाल	५१:०५	३३:१६	५:५३	१९:१२	कन्या	अहोरात्र	धाता	१६	२	**नागपञ्चमी (शास्त्रीय,अन्यक्षेत्रे)**, तक्षक पूजा,
३	६ बु	४९:३२	२५:४३	हस्त	२५:११	१५:५८	सिद्ध	२६:२८	१६:२९	कौल	२०:२७	तैति	४९:३२	३३:१३	५:५४	१९:११	तु·५५:०८	२७:५७	आनन्द	१७	३	**श्रीस्कन्दषष्ठी, श्रीकल्कि जयन्ती**, श्रीनेमीनाथ जयन्ती
४	७ गु	४६:४९	२४:३८	चित्रा	२४:४७	१५:४९	साध्य	२२:०७	१४:४५	गर	१८:१८	वणि	४६:४९	३३:१०	५:५५	१९:११	तुला	अहोरात्र	सुस्थिर	१८	४	**श्री तुलसीदास जयन्ती,**
५	८ शु	४३:०६	२३:०९	स्वाती	२३:१८	१५:१४	शुभ	१६:५४	१२:४१	विष	१५:०४	बव	४३:०६	३३:०७	५:५५	१९:१०	तुला	अहोरात्र	गद	१९	५	**श्रीदुर्गाष्टमी,**
६	९ श	३८:३२	२१:२०	विशा·	२०:५७	१४:१८	शुक्ल	१०:५६	१०:१८	बाल	१०:५४	कौल	३८:३२	३३:०४	५:५६	१९:०९	वृ·०६:३६	०८:३४	शुभ	२०	६	**कौमारी नवमी,**
७	१० र	३३:१६	१९:१४	अनु·	१७:५०	१३:०४	ब्रह्म ऐन्द्र	०४:१९ ५२:५५	०७:४० २८:५०	तैति	०५:५७	गर	३३:१६	३३:०१	५:५६	१९:०८	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	२१	७	**कलश दशमी,**
८	११ चं	२७:३०	१६:५६	ज्ये·	१४:०९	११:३६	वैधृ·	४९:४६	२५:५१	वणि	००:२५	विष	२७:३०	३२:५८	५:५७	१९:०८	ध·१४:०९	११:३६	पद्म	२२	८	**पवित्रा एकादशी (स्मार्त्त,वैष्णव),श्रावण सोमवार व्रत**
९	१२ मं	२१:२५	१४:३१	मूल	१०:०७	१०:००	विष्कु·	४२:०७	२२:४८	बाल	२१:२५	कौल	४८:१९	३२:५४	५:५७	१९:०७	धनु	अहोरात्र	छत्र	२३	९	**प्रदोष व्रतम्**, दामोदर द्वादशी, बुद्ध द्वादशी,
१०	१३ बु	१५:१२	१२:०२	पू·षा·	०५:५४	०८:१९	प्रीति	३४:२५	१९:४३	तैति	१५:१२	गर	४२:०८	३२:५१	५:५८	१९:०६	म·१९:५२	१३:५४	श्रीवत्स	२४	१०	आखेट त्रयोदशी (उड़ीसा),
११	१४ गु	०९:०५	०९:३६	उ·षा· श्रवण	०१:४५ ५६:०९	०६:४० २९:०८	आयु·	२६:५१	१६:४३	वणि	०९:०५	विष	३६:०९	३२:४८	५:५८	१९:०५	मकर	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२५	११	**पूर्णिमा व्रत, रक्षाबन्धन,श्रावणी उपाकर्म**, चरण जयन्ती
१२	१५ शु १ शु	०३:१६ ५४:४१	०७:१७ २९:०९	धनि·	५४:२९	२७:४६	सौभा·	१९:३५	१३:४९	बव	०३:१६	बाल	३०:३३	३२:४५	५:५९	१९:०४	कुं·२६:०६	१६:२५	धाता	२६	१२	**श्रावण पूर्णिमा (स्नान,दान), श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जुलाई	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२९	१ शु	०३:११:११:४७	०३:१४:४६:५७	००:२०:१७:१५	०३:२५:१३:२५	११:१६:३५:०५	०२:२०:३८:३३	०९:२५:१५:१५	०६:२६:४२:४०	४६:४३:३९	उ·१९:४३:२३	– ६:०२	०६:०८:४३
३०	२ श	०३:१२:०८:५५	०३:२६:५९:०४	००:२०:५५:४४	०३:२७:००:४२	११:१६:३४:५३	०२:२१:५१:२१	०९:२५:१०:३१	०६:२६:३९:२९	४६:४२:१७	उ·१९:२९:२७	– ६:०१	०७:०३:३८
३१	३ र	०३:१३:०६:०४	०४:०९:२०:५८	००:२१:३४:०२	०३:२८:४७:१३	११:१६:३४:२७	०२:२३:०४:११	०९:२५:०५:४५	०६:२६:३६:१८	४६:४०:५३	उ·१९:१५:११	– ५:५९	०७:५८:५६
अगस्त	४ चं	०३:१४:०३:१४	०४:२१:५५:०६	००:२२:१२:११	०४:००:३२:५३	११:१६:३३:४९	०२:२४:१७:०२	०९:२५:००:५९	०६:२६:३३:०७	४६:३९:२७	उ·१९:००:३७	– ५:५६	०८:५३:५५
२	५ मं	०३:१५:००:२५	०५:०४:४३:१९	००:२२:५०:०९	०४:०२:१७:४०	११:१६:३२:५८	०२:२५:२९:५५	०९:२४:५६:११	०६:२६:२९:५६	४६:३८:००	उ·१८:४५:४३	– ५:५३	०९:५०:०५
३	६ बु	०३:१५:५७:३८	०५:१७:४६:४५	००:२३:२७:५८	०४:०४:०१:२९	११:१६:३१:५४	०२:२६:४२:५०	०९:२४:५१:२३	०६:२६:२६:४५	४६:३६:३२	उ·१८:३०:३२	– ५:४९	१०:४७:३३
४	७ गु	०३:१६:५४:५२	०६:०१:०५:४५	००:२४:०५:३५	०४:०५:४४:१६	११:१६:३०:३७	०२:२७:५५:४७	०९:२४:४६:३४	०६:२६:२३:३५	४६:३५:०२	उ·१८:१५:०२	– ५:४४	११:४६:२१
५	८ शु	०३:१७:५२:०७	०६:१४:३९:५५	००:२४:४३:०३	०४:०७:२५:५५	११:१६:२९:०७	०२:२९:०८:४५	०९:२४:४१:४४	०६:२६:२०:२४	४६:३३:३१	उ·१७:५९:१५	– ५:३९	१२:४८:०३
६	९ श	०३:१८:४९:२३	०६:२८:२८:०७	००:२५:२०:१९	०४:०९:०६:२२	११:१६:२७:२५	०३:००:२१:४५	०९:२४:३६:५४	०६:२६:१७:१३	४६:३१:५८	उ·१७:४३:१०	– ५:३३	१३:५१:२०
७	१० र	०३:१९:४६:४०	०७:१२:२८:२८	००:२५:५७:२५	०४:१०:४५:३२	११:१६:२५:३०	०३:०१:३४:४७	०९:२४:३२:०४	०६:२६:१४:०२	४६:३०:२५	उ·१७:२६:४७	– ५:२७	१४:५४:३७
८	११ चं	०३:२०:४३:५९	०७:२६:३८:३०	००:२६:३४:२०	०४:१२:२३:२०	११:१६:२३:२२	०३:०२:४७:५०	०९:२४:२७:१३	०६:२६:१०:५१	४६:२८:५०	उ·१७:१०:०८	– ५:२०	१५:५८:१५
९	१२ मं	०३:२१:४१:१९	०८:१०:५५:१४	००:२७:११:०४	०४:१३:५९:३९	११:१६:२१:०२	०३:०४:००:५६	०९:२४:२२:२३	०६:२६:०७:४०	४६:२७:१४	उ·१६:५३:१३	– ५:१२	१६:५६:२८
१०	१३ बु	०३:२२:३८:४१	०८:२५:१५:२०	००:२७:४७:३७	०४:१५:३४:२३	११:१६:१८:२९	०३:०५:१४:०३	०९:२४:१७:३३	०६:२६:०४:३०	४६:२५:३६	उ·१६:३६:०१	– ५:०४	१७:५२:१२
११	१४ गु	०३:२३:३६:०४	०९:०९:३४:५२	००:२८:२३:५८	०४:१७:०७:२७	११:१६:१५:४४	०३:०६:२७:१२	०९:२४:१२:४३	०६:२६:०१:१९	४६:२३:५८	उ·१६:१८:३३	– ४:५६	१८:४०:३९
१२	१५ शु	०३:२४:३३:२९	०९:२३:५०:०८	००:२९:००:०७	०४:१८:३८:४१	११:१६:१२:४७	०३:०७:४०:२२	०९:२४:०७:५३	०६:२५:५८:०८	४६:२२:१८	उ·१६:००:४९	– ४:४६	१९:२५:२०

१ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

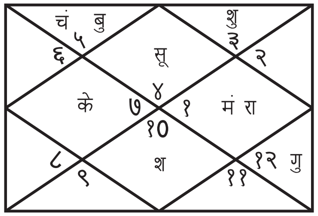

८ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

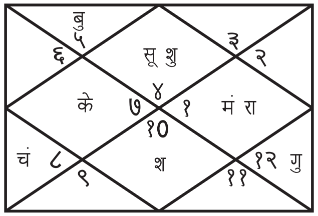

श्रावण शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २९ जुल से १२ अगस्त, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:६०

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
२९	१ शु	**गण्डान्तारम्भः २९:१५;**
३०	२ श	**गण्डान्तः १८:१४**, रोटक व्रत, व्यतीपात पुण्यम्;
३१	३ र	तीज मेला जयपुर, मघायांसिंहेबुधः घं·२२:२४;
अगस्त	४ चं	**भद्रा १४:१९–२६:२७घं·**, मेला बूढ़ीतीज जयपुर;
२	५ मं	;
३	६ बु	पंचदिवसीय श्रीडिग्गी कल्याणजी यात्रारम्भ (जयपुर), आश्लेषयांरविः घं·२३:४१;
४	७ गु	**भद्रारम्भः २४:३८घं·**, कुमारी पूजा, मोक्ष सप्तमी (जैन),
५	८ शु	**भद्रान्तः ११:५७घं·**, कर्केशुक्रः घं·२२:४७;
६	९ श	;
७	१० र	;
८	११ चं	**पवित्रारोपण, भद्रा ६:०७–१६:५७घं·, गण्डान्तः ५:५९–१७:१३**, वैधृति पुण्यम्, ①
९	१२ मं	; ① पूर्वफल्गुन्यांबुधः घं·२०:०२, पुष्येशुक्रः घं·१६:३१, कृत्तिकायांमङ्गलः घं·०९:३९;
१०	१३ बु	**अभिजित नक्षत्रारम्भः४७:४८;**
११	१४ गु	**भद्रा ९:३६–२०:२६घं·, अभिजित नक्षत्रान्तः ५:२९;**
१२	१५ शु	**पंचकारम्भः १६:२५, संस्कृत दिवस**, अमरनाथ यात्रा, गोगामेड़ी मेला आरम्भ;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०६–१३:५३
१५	१२:०५–१३:५०

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **उपाकर्म (श्रावणी)**– श्रावण पूर्णिमा के दिन अथवा हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन श्रावणीकर्म किया जाता है। यदि पूर्णिमा भद्रा या ग्रहण से दूषित हो, तभी हस्त एवं पञ्चमी के योग में श्रावणी कर्म किया जाता है – ***भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।*** (पूर्णिमा में भद्रा होने पर श्रावणी और होलिकादाह नहीं करते हैं।) शुक्ल यजुर्वेदी उपनीत द्विज श्रावण पूर्णिमा को ही श्रावणी करते हैं। विधिपूर्वक वेदारम्भ कर्म का नाम उपाकर्म या श्रावणी–कर्म है। द्विजों को इस दिन अधिकाधिक गायत्री जप करना चाहिए। इस दिन ऋषि–तर्पण भी करने से ऋषितेज की प्राप्ति होती है।

❀ **रक्षाबन्धन**– श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। **रक्षाबंधन मुहूर्त्त** – रात्रि २०:२६ पश्चात् रक्षा बन्धन का मंत्र इस प्रकार से है– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।** रक्षाबन्धन पर्व भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। पूर्णिमा न्यूनतम त्रिमुहूर्तव्यापिनी होनी चाहिए। इससे कम होने पर पूर्व दिन प्रदोष काल में रक्षा बन्धन करने का विधान है (धर्मसिन्धु)। विस्तृत निर्णय हेतु देखें पृष्ठ २०।

❀ सदन्त शिशु जन्मफल एवं शान्ति विधि ❀

यदि शिशु का दाँत सहित जन्म होता है तो वह माता, पिता, अपना, मामा एवं स्वकुल का विनाशक होता है। अतः यत्न करके कल्याणार्थ इसकी शान्ति करानी चाहिए। सर्व प्रथम बालक को सर्वौषधि से स्नान तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराकर माता–पिता एवं बालक सहित धाता, अग्नि, सोम, वायु, पर्वत और केशव भगवान विष्णु की प्रतिमाओं की पूजा कलश पर स्थापित कर करें। तदनन्तर नवग्रह तथा कुल देवताओं की पूजा करनी चाहिये। संकल्प में *'सदन्त जनन सूचित सर्वारिष्टेत्यादि शान्त्यर्थ''* जोड़ना चाहिये। पूजन के बाद प्रत्येक स्थापित देव मन्त्रों से यथाशक्ति १००० या १०० या २८ आहूति देकर हवन करना चाहिये। अन्त में ब्राह्मण भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा देनी चाहिए। यथा --

मातरं पितरं खादेदात्मानं वापि मातुलान्। सदन्तं बालकं विद्याद्राक्षसं तत्कुलान्तकृत् ।।
देवदेवं केशवं च वृद्धि सोमं समीरणम्। धातरं च विधातारं कुलदेवं नवग्रहान् ।।
यजेत्तल्लिंगजैर्मन्त्रैः नाममन्त्रैरथापि वा। यथा शक्ति सहस्रं वा शतं वाथाष्ट विंशतिः ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२९	२३:१३	००:४९	०२:४४	०४:५८	०७:१९	०९:३५	११:५०	१४:०९	१६:२८	१८:३३	२०:१८	२१:४७
३०	२३:०९	००:४५	०२:४०	०४:५५	०७:१५	०९:३१	११:४६	१४:०५	१६:२४	१८:२९	२०:१४	२१:४३
३१	२३:०५	००:४१	०२:३६	०४:५१	०७:११	०९:२७	११:४२	१४:०१	१६:२०	१८:२५	२०:१०	२१:३९
१	२३:०१	००:३७	०२:३२	०४:४७	०७:०७	०९:२३	११:३८	१३:५७	१६:१६	१८:२१	२०:०६	२१:३५
२	२२:५७	००:३३	०२:२८	०४:४३	०७:०३	०९:१९	११:३४	१३:५३	१६:१२	१८:१७	२०:०२	२१:३१
३	२२:५३	००:२९	०२:२५	०४:३९	०६:५९	०९:१५	११:३०	१३:४९	१६:०८	१८:१३	१९:५८	२१:२७
४	२२:४९	००:२५	०२:२१	०४:३५	०६:५५	०९:११	११:२६	१३:४५	१६:०४	१८:१०	१९:५४	२१:२३
५	२२:४५	००:२१	०२:१७	०४:३१	०६:५१	०९:०८	११:२२	१३:४१	१६:००	१८:०६	१९:५०	२१:१९
६	२२:४१	००:१७	०२:१३	०४:२७	०६:४७	०९:०४	११:१९	१३:३७	१५:५६	१८:०२	१९:४६	२१:१५
७	२२:३७	००:१३	०२:०९	०४:२३	०६:४३	०९:००	११:१५	१३:३३	१५:५२	१७:५८	१९:४२	२१:११
८	२२:३३	००:०९	०२:०५	०४:१९	०६:३९	०८:५६	११:११	१३:२९	१५:४८	१७:५४	१९:३८	२१:०७
९	२२:२९	००:०५	०२:०१	०४:१५	०६:३५	०८:५२	११:०७	१३:२५	१५:४४	१७:५०	१९:३४	२१:०३
१०	२२:२५	००:०१	०१:५७	०४:११	०६:३१	०८:४८	११:०३	१३:२२	१५:४०	१७:४६	१९:३०	२०:५९
११	२२:२१	२३:५७	०१:५३	०४:०७	०६:२७	०८:४४	१०:५९	१३:१८	१५:३६	१७:४२	१९:२६	२०:५६
१२	२२:१७	२३:५३	०१:४९	०४:०३	०६:२३	०८:४०	१०:५५	१३:१४	१५:३३	१७:३८	१९:२२	२०:५२

जुलाई	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग
२९	**सिद्ध**·१ २३:५१ तक; **मृत्यु**·२ २३:५१ से;
३१	**सिद्ध**·३ २६:०४ तक; **रवियोग**:पूफा १३:३२ से;
अगस्त	**रवियोग**:पूफा १४:५० तक; **अमृत**·५ २६:२७ से;
२	**रवियोग**:ह १५:३९ से; **मृत्यु**·६ २६:२० से;
३	**सर्वार्थ**·ह– **रवियोग**:ह १५:५८ तक; **अमृत**·६ २५:४३ तक; **सिद्ध**·७ २५:४३ से; **रवियोग**:चि १५:५८ से; **द·ति**·६;
४	**रवियोग**:चि १५:४९ तक; **अमृत**·८ २४:३८ से;
५	**अमृत**·९ २३:०९ से;
६	**सिद्ध**·९ २१:२० तक; **रवियोग**:अनु १४:१८ से; **मृत्यु**·१० २१:२० से;
७	**अमृत**·१० १९:१४ तक; **रवियोग**:अनु–ज्ये अहोरात्र; **मृत्यु**·११ १९:१४ से;
८	**सिद्ध**·११ १६:५६ तक; **रवियोग**:ज्ये ११:३६ तक; **मृत्यु**·१२ १६:५६ से;
९	**अमृत**·१२ १४:३१ तक; **सिद्ध**·१३ १४:३१ से;
१०	**मृत्यु**·१३ १२:०२ तक; **रवियोग**:उषा ०८:१९ से;
११	**मृत्यु**·१४ ०९:३६ तक; **रवियोग**:उषा ०६:४० तक; **सिद्ध**·१५ ०९:३६ से;
१२	**सिद्ध**·१ ०७:१७–२९:०९; **मृत्यु**·२ २९:०९ से;

पारणा की अनिवार्यता– वारव्रत और श्रीगणेश (संकष्टी) चतुर्थीव्रत में रात्रि में भोजन करना आवश्यक है। पारणा व्रत का अंग है। पारणा दूसरे के अन्न से नकरे–*व्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। (धर्मसिन्धु)*

उदयातिथि का महत्व– स्नान, जप, दान, नवरात्र पाठ का हवन उदयातिथि में ही होता है। यह सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है–

यां तिथिम् समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः।
सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।

प्रदोष व्रत– सूर्यास्त बाद त्रयोदशी यदि प्रदोषकाल में हो तो उसी दिन प्रदोष व्रत होता है। यह कभी द्वादशी तिथि में प्रदोषकाल में मिलती है तो कभी त्रयोदशी के दिन सायंकाल में मिलती है। जब दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी हो तो परा (बाद वाली) ग्राह्य है। प्रदोष व्रत से संतानप्राप्ति, ऋणमुक्ति, समृद्धि, कष्टनिवारण तथा शिवसान्निध्य की प्राप्ति होती है।

भाद्रपद कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १३ अगस्त से २७ अगस्त, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २०२२:८:१३ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	तिथ्यन्तः घ·प·	तिथ्यन्तः घं:मि	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः घ·प·	नक्षत्रान्तः घं:मि	योग	योगान्तः घ·प·	योगान्तः घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	दिनमानं घ·प·	सूर्योदयः घं:मि	सूर्यास्तः घं:मि	चन्द्र राशिप्रवेश राशि घ·प·	चन्द्र राशिप्रवेश घं:मि	आनंदादि योग	दिनाङ्कः सौर	दिनाङ्कः अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव (१३ अगस्त से २७ अगस्त)
१३	२ श	५३:१८	२७:१८	शत·	५१:४३	२६:४०	शोभ·	१२:४६	११:०५	तैति	२५:३१	गर	५३:१८	३२:४१	५:५९	१९:०४	कुंभ	अहोरात्र	आनन्द	२७	१३	अशून्यशयन व्रत,
१४	३ र	४९:२८	२५:४७	पू·भा·	४९:४७	२५:५४	अतिग·	०६:३१	०८:३६	वणि	२१:१५	विष	४९:२८	३२:३८	६:००	१९:०३	मी·३५:१०	२०:०४	सुस्थिर	२८	१४	**कज्जली तीज, सातूड़ी तीज,**
१५	४ चं	४६:३८	२४:३९	उ·भा·	४८:४९	२५:३२	सुकर्मा धृति	००:५९ ५५:१९	०६:२४ २८:२४	बव	१७:५४	बाल	४६:३८	३२:३४	६:००	१९:०२	मीन	अहोरात्र	गद	२९	१५	**संकष्टी गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:१९,**
१६	५ मं	४४:५५	२३:५९	रेवती	४८:६०	२५:३६	शूल	५२:३१	२७:०१	कौल	१५:३७	तैति	४४:५५	३२:३१	६:०१	१९:०१	मे·४८:६०	२५:३६	शुभ	३०	१६	नाग पंचमी (गुजरात), कोकिला पंचमी (जैन),
१७	६ बु	४४:२७	२३:४८	अश्वि·	५०:२२	२६:१०	गण्ड	४९:४३	२५:५४	गर	१४:३१	वणि	४४:२७	३२:२८	६:०१	१९:००	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	३१	१७	**श्रीहल षष्ठी, संक्रान्ति पुण्यकालं,१३:००–१९:००घं·;**
१८	७ गु	४५:१५	२४:०८	भरणी	५३:००	२७:१४	वृद्धि	४७:५५	२५:१२	विष	१४:४१	बव	४५:१५	३२:२४	६:०२	१८:५९	मेष	अहोरात्र	पद्म	१	१८	
१९	८ शु	४७:१९	२४:५८	कृत्ति·	५६:५१	२८:४७	ध्रुव	४७:०६	२४:५२	बाल	१६:०७	कौल	४७:१९	३२:२०	६:०२	१८:५८	वृ·०८:५१	०९:३४	छत्र	२	१९	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव, स्मार्त्त), गोकुलाष्टमी,**
२०	९ श	५०:३१	२६:१५	रोहि·	६०:००	अहोरात्र	व्याघ·	४७:१०	२४:५५	तैति	१८:४६	गर	५०:३१	३२:१७	६:०३	१८:५७	वृष	अहोरात्र	श्रीवत्स	३	२०	**नन्दोत्सव, श्रीगोगानवमी,**
२१	१० र	५४:४१	२७:५५	रोहि·	०१:४५	०६:४५	हर्षण	४७:५९	२५:१५	वणि	२२:२९	विष	५४:४१	३२:१३	६:०३	१८:५४	मि·३४:३५	१९:५३	धाता	४	२१	
२२	११ चं	५९:२९	२९:५१	मृग·	०७:३३	०९:०५	वज्र	४९:१८	२५:४७	बव	२७:०१	बाल	५९:२९	३२:१०	६:०४	१८:५५	मिथुन	अहोरात्र	आनन्द	५	२२	**अजा एकादशी (स्मार्त्त, वैष्णव),**
२३	१२ मं	६०:००	अहोरात्र	आर्द्रा	१३:५५	११:३८	सिद्धि	५०:५३	२६:२५	कौल	३२:००	तैति	६०:००	३२:०६	६:०४	१८:५४	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	६	२३	**अजा एकादशी (निम्बार्क), वञ्जुलिनी महाद्वादशी,**
२४	१२ बु	०४:३२	०७:५३	पुन·	२०:२६	१४:१५	व्यति·	५२:२४	२७:०२	तैति	०४:३२	गर	३७:०३	३२:०२	६:०५	१८:५३	क·०३:४८	०७:३६	गद	७	२४	**प्रदोष व्रतम्, पर्यूषण पर्व आरम्भ (श्वेताम्बर),**
२५	१३ गु	०९:२६	०९:५१	पुष्य	२६:४१	१६:४५	वरी·	५३:३२	२७:३०	वणि	०९:२६	विष	४१:४२	३१:५९	६:०५	१८:५२	कर्क	अहोरात्र	शुभ	८	२५	**मासशिवरात्रि व्रतम्,** अघोर चतुर्दशी, द्वापरयुगादि,
२६	१४ शु	१३:४५	११:३६	आश्ले·	३२:१६	१९:००	परिघ	५४:०३	२७:४३	शकु	१३:४५	चतु	४५:३७	३१:५५	६:०५	१८:५१	सिं·३२:१६	१९:००	मृत्यु	९	२६	**अमावस्या (पितृकार्य),**
२७	३० श	१७:११	१२:५८	मघा	३६:५६	२०:५२	शिव	५३:४५	२७:३६	नाग	१७:११	किं	४८:३०	३१:५१	६:०६	१८:५०	सिंह	अहोरात्र	पद्म	१०	२७	**शनैश्चरी कुशोत्पाटिनी अमावस्या (देवकार्य),**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१३	२ श	०३:२५:३०:५५	१०:०७:५७:५२	००:२९:३६:०५	०४:२०:०८:००	११:१६:०९:३७	०३:०८:५३:३४	०९:२४:०३:०२	०६:२५:५४:५७	४६:२०:३८	उ·१५:४२:५०	– ४:३६	२०:०५:२७
१४	३ र	०३:२६:२८:२२	१०:२१:५५:१३	०१:००:११:५०	०४:२१:३५:१५	११:१६:०६:१५	०३:१०:०६:४८	०९:२३:५८:१२	०६:२५:५१:४६	४६:१८:५६	उ·१५:२४:३६	– ४:२६	२०:४२:३५
१५	४ चं	०३:२७:२५:५१	११:०५:३९:५१	०१:००:४७:२४	०४:२३:००:१७	११:१६:०२:४२	०३:११:२०:०४	०९:२३:५३:२२	०६:२५:४८:३५	४६:१७:१३	उ·१५:०६:०७	– ४:१५	२१:१८:६०
१६	५ मं	०३:२८:२३:२२	११:१९:१०:०५	०१:०१:२२:४५	०४:२४:२२:५८	११:१५:५८:५६	०३:१२:३३:२१	०९:२३:४८:३३	०६:२५:४५:२५	४६:१५:३०	उ·१४:४७:२४	– ४:०३	२१:५४:३७
१७	६ बु	०३:२९:२०:५४	००:०२:२४:५८	०१:०१:५७:५४	०४:२५:४३:०७	११:१५:५४:५९	०३:१३:४६:४०	०९:२३:४३:४३	०६:२५:४२:१४	४६:१३:४५	उ·१४:२८:२६	– ३:५१	२२:३१:१६
१८	७ गु	०४:००:१८:२८	००:१५:२४:१९	०१:०२:३२:५०	०४:२७:००:३४	११:१५:५०:५०	०३:१५:००:०१	०९:२३:३८:५५	०६:२५:३९:०३	४६:१२:००	उ·१४:०९:१५	– ३:३९	२३:११:०३
१९	८ शु	०४:०१:१६:०३	००:२८:०८:४१	०१:०३:०७:३३	०४:२८:१५:०८	११:१५:४६:३०	०३:१६:१३:२४	०९:२३:३४:०७	०६:२५:३५:५२	४६:१०:१४	उ·१३:४९:५०	– ३:२६	२३:५०:११
२०	९ श	०४:०२:१३:४०	०१:१०:३९:२४	०१:०३:४२:०४	०४:२९:२६:३७	११:१५:४१:५८	०३:१७:२६:४८	०९:२३:२९:२१	०६:२५:३२:४१	४६:०८:२७	उ·१३:३०:१२	– ३:१२	००:३७:१६
२१	१० र	०४:०३:११:१९	०१:२२:५८:२९	०१:०४:१६:२०	०५:००:३४:४९	११:१५:३७:१५	०३:१८:४०:१४	०९:२३:२४:३५	०६:२५:२९:३०	४६:०६:३९	उ·१३:१०:२१	– २:५८	०१:२३:४४
२२	११ चं	०४:०४:०८:५९	०२:०५:०८:३३	०१:०४:५०:२४	०५:०१:३९:२९	११:१५:३२:२२	०३:१९:५३:४२	०९:२३:१९:५१	०६:२५:२६:२०	४६:०४:५०	उ·१२:५०:१८	– २:४३	०२:१४:१७
२३	१२ मं	०४:०५:०६:४२	०२:१७:१२:३९	०१:०५:२४:१३	०५:०२:४०:२४	११:१५:२७:१७	०३:२१:०७:११	०९:२३:१५:०९	०६:२५:२३:०९	४६:०३:०१	उ·१२:३०:०२	– २:२८	०३:०७:०२
२४	१२ बु	०४:०६:०४:२६	०२:२९:१४:१४	०१:०५:५७:४९	०५:०३:३७:२०	११:१५:२२:०२	०३:२२:२०:४२	०९:२३:१०:२८	०६:२५:१९:५८	४६:०१:११	उ·१२:०९:३४	– २:१३	०४:००:०९
२५	१३ गु	०४:०७:०२:११	०३:११:१७:१८	०१:०६:३१:११	०५:०४:३०:०१	११:१५:१६:३७	०३:२३:३४:१५	०९:२३:०५:४८	०६:२५:१६:४७	४५:५९:२०	उ·११:४८:५५	– १:५७	०४:५४:४१
२६	१४ शु	०४:०७:५९:५९	०३:२३:२५:२५	०१:०७:०४:१८	०५:०५:१८:११	११:१५:११:०२	०३:२४:४७:४९	०९:२३:०१:११	०६:२५:१३:३६	४५:५७:२९	उ·११:२८:०५	– १:४०	०५:४९:५७
२७	३० श	०४:०८:५७:४८	०४:०५:४१:४६	०१:०७:३७:१०	०५:०६:०१:३३	११:१५:०५:१७	०३:२६:०१:२५	०९:२२:५६:३६	०६:२५:१०:२५	४५:५५:३७	उ·११:०७:०३	– १:२३	०६:४४:३१

१५ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

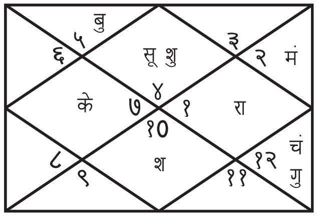

२२ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

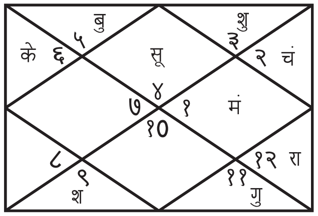

भाद्रपद कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १३ अगस्त से २७ अगस्त, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं ।
सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१: २

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१३	२ श	**पंचक**, वृषेमङ्गलः घं·२२:०२;
१४	३ र	**पंचक**, **भद्रा १४:३०–२५:४७घं·**;
१५	४ चं	**पंचक**, **श्रीबहुला चतुर्थी**, स्वतन्त्रता दिवस;
१६	५ मं	**पंचकान्तः २५:३६**, **गण्डान्तारम्भः १९:३३**, **मासान्तः**;
१७	६ बु	**भद्रारम्भः २३:४८घं·**, **गण्डान्तः७:४२**, मघायांसिंहेरविः घं·२२:२०, ①
१८	७ गु	**भद्रान्तः ११:५४घं·**, मासादिः;
१९	८ शु	**श्रीकालाष्टमी**, **मन्वादि**, आश्लेषयांशुक्रः घं·१४:४५;
२०	९ श	कन्यायांबुधः घं·१७:३९;
२१	१० र	**भद्रा १५:०३–२७:५५घं·**, श्रवणायांशनिः घं·२७:२०;
२२	११ चं	; ① उत्तरफल्गुन्यांबुधः घं·२३:३४;
२३	१२ मं	**बछ बारस**, गौवत्स द्वादशी, अघोर द्वादशी;
२४	१२ बु	व्यतीपात पुण्यम्;
२५	१३ गु	**भद्रा ९:५१–२२:४६घं·**;
२६	१४ शु	**गण्डान्तः १२:२८–२५:३०**;
२७	३० श	लोहार्गल यात्रा, सतीपूजन (अग्रवंश), राणीसती दादी माँ मेला (झुंझुनू), पिठैरी अमावस (जैन), सप्तपुरी अमावस्या (उड़ीसा), आलोक अमावस्या;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०५–१३:५०
१५	१२:०२–१३:४४

❀ सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव जन्माष्टमी का संक्षिप्त कृत्य ❀

जन्माष्टमी को पूरा दिन यथाशक्ति कठोर व्रत रखे। प्रात:काल उठकर स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर व्रत का निम्न संकल्प करे – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य राक्षसनामसंवत्सरे सूर्य दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे श्रीकृष्णजन्माष्टम्यां तिथौ सोमवासरे_ नामाहं मम चतुर्वर्गसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णदेवप्रीतये जन्माष्टमीव्रताङ्गत्वेन श्रीकृष्णदेवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

केले के खम्भे, आम–अशोक के पल्लव, बहुविध पुष्पादि से श्रीठाकुरजी की दिव्य झाँकी सजाए, सारा दिन संकीर्तन आदि से श्रीकृष्णचन्द्र परमानंदकंद की भक्ति करे। रात्रि में पञ्चामृत एवं दुग्धाभिषेक के साथ माता देवकीसहित श्रीबालकृष्ण का षोडशोपचार से पूजन करे। विविध शृङ्गारादिक वस्तुओं से विशेषरूप से अलंकृत करे। **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'**–इस मन्त्र से पूजन करता हुआ सुसज्जित करके भगवान् को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करे। अन्नरहित नैवेद्य तथा सुस्वादु मिष्टान्न, नमकीन पदार्थों, फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, पंजीरी, नारियल के मिष्टान्न तथा नाना प्रकार के मेवे का प्रसाद सजाकर श्रीभगवान् को अर्पण करे। पूजन में देवकी, वसुदेव, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी–इन सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिये। अन्त में **'प्रणमे देवजननीं त्वया जातस्तु वामनः।'** वसुदेव को तथा **'कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नमः।। सपुत्रार्घ्यं प्रदत्तं मे गृहाणेमं नमोऽस्तु ते।'** से देवकी को अर्घ्य दे और **'धर्माय धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः।'** से श्रीकृष्ण को 'पुष्पांजलि' अर्पण करे। विशेषार्घ्य प्रदानपूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य नीराजनपर्यन्त सेवा सम्पादन करके पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्जवलित कर समवेत स्वर से भगवान् की आरती–स्तुति करे, पश्चात् प्रसाद वितरण करे। तत्पश्चात् **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसम्भवाय सोमाय नमो नमः।'** से चन्द्रमा का पूजन करे और फिर शंख में जल, फल, कुश, कुसुम और गन्ध डालकर दोनों घुटने जमीन में लगावे और **'क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशांकेमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्'** से चन्द्रमा को अर्घ्य दे।

इसके द्वितीय दिन अर्थात् नवमी को दधिकांदो या (नन्दमहोत्सव) किया जाता है। इस समय भगवान् पर कपूर, हल्दी, दही, घी, जल, तेल तथा केसर आदि चढ़ाकर लोग परस्पर विलेपन तथा सेचन करते हैं। वाद्य यन्त्रों से कीर्तन करते हैं तथा मिठाइयाँ बाँटते हैं।

इस प्रकार नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्योत्सव प्रीतिपूर्वक सम्पन्न करे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१३	२२:१४	२३:४९	०१:४५	०३:५९	०६:१९	०८:३६	१०:५१	१३:१०	१५:२९	१७:३४	१९:१९	२०:४८
१४	२२:१०	२३:४५	०१:४१	०३:५५	०६:१६	०८:३२	१०:४७	१३:०६	१५:२५	१७:३०	१९:१५	२०:४४
१५	२२:०६	२३:४२	०१:३७	०३:५१	०६:१२	०८:२८	१०:४३	१३:०२	१५:२१	१७:२६	१९:११	२०:४०
१६	२२:०२	२३:३८	०१:३३	०३:४७	०६:०८	०८:२४	१०:३९	१२:५८	१५:१७	१७:२२	१९:०७	२०:३६
१७	२१:५८	२३:३४	०१:२९	०३:४३	०६:०४	०८:२०	१०:३५	१२:५४	१५:१३	१७:१८	१९:०३	२०:३२
१८	२१:५४	२३:३०	०१:२५	०३:३९	०६:००	०८:१६	१०:३१	१२:५०	१५:०९	१७:१४	१८:५९	२०:२८
१९	२१:५०	२३:२६	०१:२१	०३:३५	०५:५६	०८:१२	१०:२७	१२:४६	१५:०५	१७:१०	१८:५५	२०:२४
२०	२१:४६	२३:२२	०१:१७	०३:३१	०५:५२	०८:०८	१०:२३	१२:४२	१५:०१	१७:०६	१८:५१	२०:२०
२१	२१:४२	२३:१८	०१:१३	०३:२७	०५:४८	०८:०४	१०:१९	१२:३८	१४:५७	१७:०२	१८:४७	२०:१६
२२	२१:३८	२३:१४	०१:०९	०३:२४	०५:४४	०८:००	१०:१५	१२:३४	१४:५३	१६:५८	१८:४३	२०:१२
२३	२१:३४	२३:१०	०१:०५	०३:२०	०५:४०	०७:५६	१०:११	१२:३०	१४:४९	१६:५४	१८:३९	२०:०८
२४	२१:३०	२३:०६	०१:०१	०३:१६	०५:३६	०७:५२	१०:०७	१२:२६	१४:४५	१६:५०	१८:३५	२०:०४
२५	२१:२६	२३:०२	००:५७	०३:१२	०५:३२	०७:४९	१०:०३	१२:२२	१४:४१	१६:४७	१८:३१	२०:००
२६	२१:२२	२२:५८	००:५४	०३:०८	०५:२८	०७:४५	१०:००	१२:१८	१४:३७	१६:४३	१८:२७	१९:५६
२७	२१:१८	२२:५४	००:५०	०३:०४	०५:२४	०७:४१	०९:५६	१२:१४	१४:३३	१६:३९	१८:२३	१९:५२

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
१३	**त्रिपुष्कर**:२+पूभा २६:४०–२७:१८;
१४	**सिद्ध**·३ २५:४७ तक; **सर्वार्थ**·उभा २५:५४ से;
१५	**अमृत**·५ २४:३९ से;
१६	**मृत्यु**·६ २३:५९ से; **सर्वार्थ**·अ–**रवियोग**:अ २५:३६ से
१७	**रवियोग**:अ–भ अहोरात्र, **द·ति**·६; **अमृत**·६ २३:४८ से; **सिद्ध**·७ २३:४८ से;
१८	**रवियोग**:भ २७:१४ तक; **अमृत**·८ २४:०८ से;
१९	**अमृत**·९ २४:५८ से;
२०	**सर्वार्थ**·रो अहोरात्र; **सिद्ध**·९ २६:१५ तक; **मृत्यु**·१० २६:१५ से;
२१	**द·ति·१०**; **अमृत**·१० २७:५५ तक; **मृत्यु**·११ २७:५५ से
२२	**सर्वार्थ**·मृ ०९:०५ तक; **सिद्ध**·११ २९:५१ तक;
२३	**अमृत**·१२ अहोरात्र; **त्रिपुष्कर**:१२+पुन ११:३८ से;
२४	**सिद्ध**·१२ ०७:५३ तक; **मृत्यु**·१३ ०७:५३ से;
२५	**सर्वार्थ**·पु १६:४५ तक; **अमृत**·१३ ०९:५१ तक; **मृत्यु**·१४ ०९:५१ से; **गुरुपुष्य योग** १६:४५ तक;
२६	**अमृत**·१४ ११:३६ तक;
२७	**मृत्यु**·३० १२:५८ तक; **अमृत**·१ १२:५८ से;

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन नराकृति परब्रह्म स्वराटपुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव है। "इस दिन चारों वर्णों को यथाशक्ति उपवास करना चाहिये। जो जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वनमें सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम्! जो मनुष्य **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** के दिन भोजन कर लेता है, उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पाप को भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" **–स्कन्द पुराण** "सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करें।" **–ब्रह्मवैवर्त** "पूर्व सप्तमी से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है। नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है, परंतु सप्तमी सहित अष्टमी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।" **–पद्मपुराण**

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।

भाद्रपद शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २८ अगस्त से १० सितम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २८:८:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२८ अगस्त से १० सितम्बर
२८	१ र	१९:२९	१३:५४	पू·फा·	४०:२७	२२:१७	सिद्ध	५२:३१	२७:०७	बव	१९:२९	बाल	५०:१२	३१:४७	६:०६	१८:४९	क·५६:०९	२८:३४	छत्र	११	२८	
२९	२ चं	२०:३३	१४:२०	उ·फा·	४२:४५	२३:१३	साध्य	५०:१७	२६:१४	कौल	२०:३३	तैति	५०:३८	३१:४४	६:०७	१८:४८	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	१२	२९	मेला रुणीचा रामदेवरा आरम्भ जैसलमेर,
३०	३ मं	२०:२१	१४:१६	हस्त	४३:४७	२३:३८	शुभ	४७:०३	२४:५६	गर	२०:२१	वणि	४९:४८	३१:४०	६:०७	१८:४७	कन्या	अहोरात्र	सौम्य	१३	३०	**हरितालिका तीज, रोट तीज, वाराह जयन्ती**, मन्वादि,
३१	४ बु	१८:५४	१३:४२	चित्रा	४३:३८	२३:३५	शुक्ल	४२:५०	२३:१६	विष	१८:५४	बव	४७:४५	३१:३६	६:०८	१८:४६	तु·१३:५१	११:४०	कालदंड	१४	३१	**श्री महागणपति चतुर्थी**, मोतीडूंगरी गणेशजी मेला जयपुर,
सित	५ गु	१६:१८	१२:४०	स्वाती	४२:२४	२३:०६	ब्रह्म	३७:४५	२१:१४	बाल	१६:१८	कौल	४४:३८	३१:३२	६:०८	१८:४५	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१५	१	**श्रीऋषि पञ्चमी, पर्यूषण पर्वारम्भ (दिगम्बर जैन)**,
२	६ शु	१२:४१	११:१३	विशा·	४०:१३	२२:१४	ऐन्द्र	३१:५२	१८:५४	तैति	१२:४१	गर	४०:३३	३१:२८	६:०९	१८:४४	वृ·२५:५१	१६:२९	मातङ्ग	१६	२	**श्रीबलराम जयन्ती, श्रीलोलार्क सूर्यषष्ठी (पञ्चगव्य प्राशन)**,
३	७ श	०८:१२	०९:२६	अनु·	३७:१६	२१:०३	वैधृ·	२५:२०	१६:१७	वणि	०८:१२	विष	३५:४२	३१:२५	६:०९	१८:४३	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	१७	३	**श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी**, अपराजिता पूजा,
४	८ र ९ र	०३:०१ ५४:२०	०७:२२ २९:०६	ज्ये·	३३:४१	१९:३८	विष्कु·	१८:१६	१३:२८	बव	०३:०१	बाल	३०:१४	३१:२१	६:१०	१८:४२	ध·३३:४१	१९:३८	काण	१८	४	**श्रीराधाष्टमी**, स्वामी श्रीहरिदास जयन्ती, दधीचि जयन्ती,
५	१० चं	५१:१९	२६:४२	मूल	२९:४३	१८:०३	प्रीति	१०:४९	१०:३०	तैति	२४:२१	गर	५१:१९	३१:१७	६:१०	१८:४१	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	१९	५	**बाबा रामदेव जयन्ती, श्री तेजा दशमी**, सुगंध दशमी,
६	११ मं	४५:१०	२४:१४	पू·षा·	२५:३१	१६:२३	आयु· सौभाग्य	०३:०८ ५२:१७	०७:२६ २८:३१	वणि	१८:१४	विष	४५:१०	३१:१३	६:१०	१८:४०	म·३९:२८	२१:५८	मित्र	२०	६	**श्री पद्मा/जलझूलनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**,
७	१२ बु	३९:०५	२१:४९	उ·षा·	२१:२०	१४:४३	शोभ·	४७:४५	२५:१७	बव	१२:०५	बाल	३९:०५	३१:०९	६:११	१८:३९	मकर	अहोरात्र	वज्र	२१	७	**पद्मा/जलझूलनी एकादशी (निम्बार्क), श्रीवामन महाद्वादशी**,
८	१३ गु	३३:१८	१९:३१	श्रवण	१७:२२	१३:०८	अतिग·	४०:२२	२२:२०	कौल	०६:०८	तैति	३३:१८	३१:०५	६:११	१८:३७	कुं·४५:३२	२४:२४	ध्वज	२२	८	**प्रदोष व्रतम्, मन्वादि**, विश्व साक्षरता दिवस; **हरिवासराभावः**,
९	१४ शु	२७:६०	१७:२४	धनि·	१३:४९	११:४३	सुकर्मा	३३:२२	१९:३३	गर	००:३४	वणि	२७:६०	३१:०१	६:१२	१८:३६	कुंभ	अहोरात्र	धाता	२३	९	**श्री अनन्त चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत**, पाली व्रत (वरुण),
१०	१५ श	२३:२१	१५:३३	शत·	१०:५३	१०:३३	धृति	२६:५६	१६:५९	बव	२३:२१	बाल	५१:२१	३०:५७	६:१२	१८:३५	मी·५४:१३	२७:५३	आनन्द	२४	१०	**पूर्णिमा (स्नान–दान), पितृपक्ष आरम्भ–पूर्णिमा श्राद्ध**,

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	वक्री गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२८	१ र	०४:०९:५५:४०	०४:१८:०९:०६	०१:०८:०९:४८	०५:०६:३९:५२	११:१४:५९:२२	०३:२७:१५:०३	०९:२२:५२:०३	०६:२५:०७:१५	४५:५३:४४	उ·१०:४५:५१	– १:०६	०६:४५:०१
२९	२ चं	०४:१०:५३:३३	०५:००:४९:३६	०१:०८:४२:१०	०५:०७:१२:५१	११:१४:५३:१८	०३:२८:२८:४३	०९:२२:४७:३२	०६:२५:०४:०४	४५:५१:५१	उ·१०:२४:२९	– ०:४९	०७:४०:२८
३०	३ मं	०४:११:५१:२८	०५:१३:४४:४७	०१:०९:१४:१८	०५:०७:४०:१५	११:१४:४७:०४	०३:२९:४२:२४	०९:२२:४३:०४	०६:२५:००:५३	४५:४९:५७	उ·१०:०२:५७	– ०:३१	०८:३७:१०
३१	४ बु	०४:१२:४९:२५	०५:२६:५५:२७	०१:०९:४६:०९	०५:०८:०१:४८	११:१४:४०:४२	०४:००:५६:०७	०९:२२:३८:३८	०६:२४:५७:४२	४५:४८:०२	उ·०९:४१:१५	– ०:१२	०९:३५:१०
सित	५ गु	०४:१३:४७:२४	०६:१०:२१:३६	०१:१०:१७:४५	०५:०८:१७:१६	११:१४:३४:११	०४:०२:०९:५१	०९:२२:३४:१६	०६:२४:५४:३१	४५:४६:०८	उ·०९:१९:२४	+ ०:०६	१०:३५:१७
२	६ शु	०४:१४:४५:२५	०६:२४:०२:२९	०१:१०:४९:०४	वक्री ०८:२६:२९	११:१४:२७:३२	०४:०३:२३:३७	०९:२२:२९:५६	०६:२४:५१:२०	४५:४४:१२	उ·०८:५७:२३	+ ०:२५	११:३७:५३
३	७ श	०४:१५:४३:२८	०७:०७:५६:३७	०१:११:२०:०७	०५:०८:२९:१८	११:१४:२०:४५	०४:०४:३७:२५	०९:२२:२५:३९	०६:२४:४८:०९	४५:४२:१६	उ·०८:३५:१४	+ ०:४५	१२:४१:१०
४	८ र	०४:१६:४१:३३	०७:२२:०१:५०	०१:११:५०:५४	०५:०८:२५:३८	११:१४:१३:५०	०४:०५:५१:१५	०९:२२:२१:२६	०६:२४:४४:५९	४५:४०:२०	उ·०८:१२:५७	+ १:०४	१३:४४:२४
५	१० चं	०४:१७:३९:४०	०८:०६:१५:२६	०१:१२:२१:२३	०५:०८:१५:२९	११:१४:०६:४७	०४:०७:०५:०६	०९:२२:१७:१६	०६:२४:४१:४८	४५:३८:२३	उ·०७:५०:३२	+ १:२४	१४:४५:५२
६	११ मं	०४:१८:३७:४९	०८:२०:३४:१३	०१:१२:५१:३५	०५:०७:५८:५६	११:१३:५९:३८	०४:०८:१८:५९	०९:२२:१३:०९	०६:२४:३८:३७	४५:३६:२६	उ·०७:२७:५८	+ १:४४	१५:४१:३५
७	१२ बु	०४:१९:३६:००	०९:०४:५४:३९	०१:१३:२१:२९	०५:०७:३६:११	११:१३:५२:२२	०४:०९:३२:५३	०९:२२:०९:०६	०६:२४:३५:२६	४५:३४:२९	उ·०७:०५:१८	+ २:०५	१६:३४:२९
८	१३ गु	०४:२०:३४:१३	०९:१९:१२:४४	०१:१३:५१:०६	०५:०७:०७:३३	११:१३:४४:५९	०४:१०:४६:४९	०९:२२:०५:०७	०६:२४:३२:१५	४५:३२:३१	उ·०६:४२:३१	+ २:२५	१७:१९:२५
९	१४ शु	०४:२१:३२:२९	१०:०३:२४:६०	०१:१४:२०:२४	०५:०६:३३:२९	११:१३:३७:३०	०४:१२:००:४७	०९:२२:०१:११	०६:२४:२९:०४	४५:३०:३३	उ·०६:१९:३६	+ २:४६	१८:०२:३०
१०	१५ श	०४:२२:३०:४६	१०:१७:२८:२१	०१:१४:४९:२३	०५:०५:५४:३४	११:१३:२९:५५	०४:१३:१४:४६	०९:२१:५७:२०	०६:२४:२५:५४	४५:२८:३४	उ·०५:५६:३६	+ ३:०७	१८:४०:०३

३१ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:४

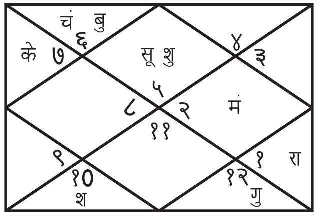

६ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

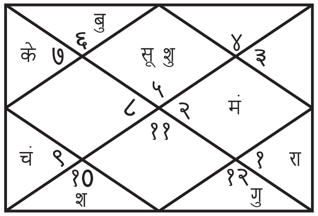

भाद्रपद शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २८ अगस्त से १० सितम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशा:२२:५१:४

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२८	१ र	;
२९	२ चं	श्रीशंकरदेव तिथि (आसाम) ;
३०	३ मं	**भद्रारम्भः २६:०२घं·**, **सामवेदीय उपाकर्म**, श्री श्यामाचरण जयन्ती शुकपीठ (जयपुर), ①
३१	४ बु	**भद्रान्तः १३:४२घं·**, **चन्द्रदर्शन निषेध**, पूर्वफल्गुन्यांरविः घं·१८:४८, रोहिण्यांमङ्गलः घं·१६:३८;
सित	५ गु	सप्तर्षि पूजा, संवत्सरी पंचमी (जैन), गर्ग जयन्ती, अंगिरा जयन्ती, रक्षा पंचमी (बंगाल) ;
२	६ शु	चन्दन षष्ठी (जैन), ललिता षष्ठी (गुजरात), वक्रःबुधः घं·२६:०८;
३	७ श	**भद्रा ९:२६–२०:२६घं·**, देवनारायणजी का मेला, सन्तानसप्तमी, सूर्यसप्तमी, वैधृति पुण्यम्;
४	८ र	**गण्डान्तः १४:००–२५:१५**, श्रीमद्भागवत सप्ताहारम्भ, लवणरहित भोजन;
५	१० चं	दशावतार व्रत; ① मघायांसिंहेशुक्रः घं·११:५२;
६	११ मं	**भद्रा १३:२८–२४:१४घं·**, डोल ग्यारस ;
७	१२ बु	**अभिजितनक्षत्रः ७:२१–२५:०४**, भुवनेश्वरी जयन्ती;
८	१३ गु	**पंचकारंभः २४:२४**;
९	१४ शु	**पंचक**, **भद्रा १७:२४–२८:१७घं·**, कदली व्रत, इन्द्रगोविन्द पूजा (उड़ीसा) ;
१०	१५ श	**पंचक**, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, **कुमारीणां साँझी–सन्ध्या पूजनारम्भः**, पूर्वफल्गुन्यांशुक्रः घं·०७:५४;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०२–१३:४४
१५	११:५८–१३:३७

❀ भाद्रपद मास कृत्य ❀

❀ **हरितालिका तीज व्रत**– भाद्रपद शुक्ल तृतीया यदि उदयकाल में मुहूर्त्तमात्र हो, तो भी परा ग्राह्य है। यदि क्षय के कारण द्वितीया में हो तो द्वितीयायुता ग्राह्य होती है। दो दिन होने पर परातिथि ग्राह्य है।

तत्र मुहूर्त्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या। यदा क्षयवशात्परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या।।

❀ **श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत**– भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अनन्तव्रत में मध्याह्न में भगवान् अनन्त की पूजा करे। इस व्रत में चौदह गाँठ की डोर में अनन्त भगवान् की स्थापना करके भुजा में धारण किया जाता है।

❀ **श्रीवामन द्वादशी** – भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है – भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही हैं। अतः एकादशी व्रत का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते हैं। श्रीवामन भगवान् को पञ्चामृत से महास्नान कराकर महाभोग समर्पण करें। गायन–वादन द्वारा श्रीवामन जयन्ती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

❀ **पाली व्रत भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी**– तालाब, जलाशय(पाली) के समीप वरुण दम्पत्ति को अर्घ्य दे, समुद्र की भी प्रार्थना करे। इस भविष्यपुरणोक्त व्रत से व्रती समस्त पातकों से मुक्त हो जाता है और वरुण वारुणी का पूजन करने वाले को अचल भूमि की प्राप्ति होती है। शतभिषा नक्षत्र के जातक नक्षत्रस्वामी वरुणदेव की प्रसन्नता हेतु कर सकते हैं। **अर्घ्य में** – पुष्प, फल, वस्त्र, दीपक, महावर, चन्दन, अनाग्नि, पाक तिल चावल मिश्रित सिद्धान्न, खजूर, नारियल, बिजौरा, नींबू, किशमिश, अनार, सुपारी, ककड़ी आदि यथोपलब्ध सामग्री रखे।

अर्घ्य मन्त्र – वरुणाय नमस्तुभ्यं नमस्ते यादसां पते। अपाम्पते नमस्तुभ्यं रसानां पतये नमः।।

प्रार्थना मन्त्र – मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यं वैरस्यं मा मुखेऽस्तु मे। वरुणो वारुणीभर्ता वरदोऽस्तु सदा मम।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२८	२१:१४	२२:५०	००:४६	०३:००	०५:२०	०७:३७	०९:५२	१२:१०	१४:२९	१६:३५	१८:१९	१९:४८
२९	२१:१०	२२:४६	००:४२	०२:५६	०५:१६	०७:३३	०९:४८	१२:०६	१४:२५	१६:३१	१८:१५	१९:४४
३०	२१:०६	२२:४२	००:३८	०२:५२	०५:१२	०७:२९	०९:४४	१२:०३	१४:२१	१६:२७	१८:११	१९:४०
३१	२१:०२	२२:३८	००:३४	०२:४८	०५:०८	०७:२५	०९:४०	११:५९	१४:१७	१६:२३	१८:०७	१९:३६
सित	२०:५८	२२:३४	००:३०	०२:४४	०५:०४	०७:२१	०९:३६	११:५५	१४:१४	१६:१९	१८:०३	१९:३३
२	२०:५४	२२:३०	००:२६	०२:४०	०५:००	०७:१७	०९:३२	११:५१	१४:१०	१६:१५	१७:५९	१९:२९
३	२०:५१	२२:२६	००:२२	०२:३६	०४:५६	०७:१३	०९:२८	११:४७	१४:०६	१६:११	१७:५६	१९:२५
४	२०:४७	२२:२३	००:१८	०२:३२	०४:५२	०७:०९	०९:२४	११:४३	१४:०२	१६:०७	१७:५२	१९:२१
५	२०:४३	२२:१९	००:१४	०२:२८	०४:४८	०७:०५	०९:२०	११:३९	१३:५८	१६:०३	१७:४८	१९:१७
६	२०:३९	२२:१५	००:१०	०२:२४	०४:४४	०७:०१	०९:१६	११:३५	१३:५४	१५:५९	१७:४४	१९:१३
७	२०:३५	२२:११	००:०६	०२:२०	०४:४०	०६:५७	०९:१२	११:३१	१३:५०	१५:५५	१७:४०	१९:०९
८	२०:३१	२२:०७	००:०२	०२:१६	०४:३७	०६:५३	०९:०८	११:२७	१३:४६	१५:५१	१७:३६	१९:०५
९	२०:२७	२२:०३	२३:५८	०२:१२	०४:३३	०६:४९	०९:०४	११:२३	१३:४२	१५:४७	१७:३२	१९:०१
१०	२०:२३	२१:५९	२३:५४	०२:०८	०४:२९	०६:४५	०९:००	११:१९	१३:३८	१५:४३	१७:२८	१८:५७

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२८	**मृत्यु**·१ १३:५४ तक; **सर्वार्थ**·उफा २२:१७ से; **त्रिपुष्कर**:२+उफा २२:१७ से;
२९	**मृत्यु**·२ १४:२० तक; **रवियोग**:ह २३:१३ से;
३०	**सिद्ध**·३ १४:१६ तक; **रवियोग**:ह २३:३८ तक;
सित	**सिद्ध**·५ १२:४० तक; **रवियोग**:वि २३:०६ से;
२	**सिद्ध**·६ ११:१३ तक; **रवियोग**:वि २२:१४ तक; **मृत्यु**·७ ११:१६ से; **सर्वार्थ**·अनु २२:१४ से;
४	**सिद्ध**·८ ०७:२२ तक; **सर्वार्थ**·मू–**रवियोग**:मू १९:३८ से; **अमृत**·१० २९:०६ से;
५	**अमृत**·१० २६:४२ तक; **द·ति**·१०; **रवियोग** अहोरात्र; **सिद्ध**·११ २६:४२ से;
६	**मृत्यु**·११ २४:१४ तक; **रवियोग**:पूषा १६:२६ तक; द·न·उषा; **अमृत**·१२ २४:१४ से; **त्रिपुष्कर**:१२+उषा २४:१४ से;
७	**सिद्ध**·१२ २१:४९ तक; **मृत्यु**·१३ २१:४९ से;
८	**अमृत**·१३ १९:३१ तक; **रवियोग**:ध १३:०८ से; **मृत्यु**·१४ १९:३१ से;
९	**अमृत**·१४ १७:२४ तक; **रवियोग**:ध ११:४३ तक;
१०	**मृत्यु**·१५ १५:३३ तक; **अमृत**·१ १५:३३ से;

❀ **भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी** को श्रीगणेशजी प्रकटे, *नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिः नामभिः पूजां तर्पणं विधिवत् चरेत्।।* श्रीगणेशजी को दूर्वा व शमी और मंदार के पुष्प बहुत प्रिय है। दूर्वा नरक नाशक, वंशवर्धक, आयुवर्धक, तेजवर्धक होती है– *हरिता श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्र संयुताः। दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिः सम्मिताः।*

❀ **श्रीगणेश चतुर्थी** पर चन्द्र दर्शन निषिद्ध है। दूसरों से कड़वे और अपशब्द सुनकर व्यक्ति कलंक मुक्त हो पाता है।

गणेशजी का मन्त्र– "ॐ गं गणपतये नमः" है। श्रीगणेशजी की आराधना निम्न क्रम में करे १· षोडशोपचार पूजन, २· श्रीगणेश स्तवराज पाठ, ३· श्रीगणेश कवच का पाठ, ४· श्रीगणपति अथर्वशीर्ष पाठ, ५· श्रीगणेश शतनाम पाठ और ६· श्रीगणेश सहस्रनाम का पाठ करें।

आश्विन कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ११ सितम्बर से २५ सितम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ११:९:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	११ सितम्बर से २५ सितम्बर
११	१ र	१९:३३	१४:०२	पू·भा·	०८:४४	०९:४२	शूल	२१:१०	१४:४१	कौल	१९:३३	तैति	४८:०१	३०:५३	६:१३	१८:३४	मीन	अहोरात्र	सुस्थिर	२५	११	प्रतिपदा श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत,
१२	२ चं	१६:४३	१२:५४	उ·भा·	०७:३२	०९:१४	गण्ड	१६:१२	१२:४२	गर	१६:४३	वणि	४५:४५	३०:४९	६:१३	१८:३३	मीन	अहोरात्र	गद	२६	१२	द्वितीया श्राद्ध, तृतीया श्राद्ध,
१३	३ मं	१५:०२	१२:१४	रेवती	०७:२६	०९:१२	वृद्धि	१२:०९	११:०५	विष	१५:०२	बव	४४:४०	३०:४५	६:१४	१८:३२	मे·०७:२६	०९:१२	शुभ	२७	१३	चतुर्थी श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:२८,
१४	४ बु	१४:३५	१२:०४	अश्वि·	०८:३१	०९:३८	ध्रुव	०९:०३	०९:५१	बाल	१४:३५	कौल	४४:५१	३०:४१	६:१४	१८:३०	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	२८	१४	पञ्चमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
१५	५ गु	१५:२५	१२:२४	भरणी	१०:५२	१०:३५	व्याघ·	०६:५८	०९:०२	तैति	१५:२५	गर	४६:२०	३०:३७	६:१४	१८:२९	वृ·२६:३९	१६:५४	पद्म	२९	१५	चन्द्र षष्ठी व्रत चन्द्रोदये घं·२१:४८,
१६	६ शु	१७:३०	१३:१५	कृत्ति·	१४:२६	१२:०१	हर्षण	०५:५१	०८:३५	वणि	१७:३०	विष	४९:०१	३०:३३	६:१५	१८:२८	वृष	अहोरात्र	छत्र	३०	१६	षष्ठी श्राद्ध,
१७	७ श	२०:४५	१४:३३	रोहि·	१९:०७	१३:५४	वज्र	०५:४०	०८:३१	बव	२०:४५	बाल	५२:४७	३०:२९	६:१५	१८:२७	मि·५१:५१	२७:००	श्रीवत्स	३१	१७	सप्तमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मीव्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रतसमापन,
१८	८ र	२४:५९	१६:१५	मृग·	२४:४५	१६:१०	सिद्धि	०६:१५	०८:४६	कौल	२४:५९	तैति	५७:२२	३०:२५	६:१६	१८:२६	मिथुन	अहोरात्र	सौम्य	१	१८	अष्टमी श्राद्ध, जीमूतवाहन पूजा,
१९	९ चं	२९:५१	१६:१३	आर्द्रा	३१:००	१८:४०	व्यति·	०७:२४	०९:१४	गर	२९:५१	वणि	६०:००	३०:२१	६:१६	१८:२५	मिथुन	अहोरात्र	कालदंड	२	१९	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध,
२०	१० मं	३५:०१	२०:१७	पुन·	३७:३२	२१:१७	वरी·	०८:५२	०९:५०	वणि	०२:२५	विष	३५:०१	३०:१७	६:१७	१८:२३	क·२०:५३	१४:३८	प्रवर्द्ध	३	२०	दशमी श्राद्ध,
२१	११ बु	४०:०१	२२:१८	पुष्य	४३:५२	२३:५०	परिघ	१०:२१	१०:३६	बव	०७:३३	बाल	४०:०१	३०:१३	६:१७	१८:२२	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	४	२१	एकादशी श्राद्ध, श्री इन्दिरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),
२२	१२ गु	४४:२७	२४:०४	आश्ले·	४९:३८	२६:०९	शिव	११:३२	१०:५४	कौल	१२:१८	तैति	४४:२७	३०:०९	६:१८	१८:२१	सिं·४९:३८	२६:०९	अमृत	५	२२	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी–यति श्राद्ध, वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध,
२३	१३ शु	४७:५९	२५:३०	मघा	५४:३१	२८:०७	सिद्ध	१२:०८	११:०९	गर	१६:२०	वणि	४७:५९	३०:०५	६:१८	१८:२०	सिंह	अहोरात्र	काण	६	२३	त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोषव्रतम्, कलियुगादि,
२४	१४ श	५०:२५	२६:२८	पू·फा·	५८:१९	२९:३८	साध्य	११:५८	११:०६	विष	१९:२०	बव	५०:२५	३०:०१	६:१८	१८:१९	सिंह	अहोरात्र	लुम्ब	७	२४	चतुर्दशी श्राद्ध (केवल शस्त्रहत पितरों के लिए),
२५	३० र	५१:३५	२६:५७	उ·फा·	६०:००	अहोरात्र	शुभ	१०:५३	१०:४०	चतु	२१:०९	नाग	५१:३५	२९:५७	६:१९	१८:१८	क·१४:०३	११:५६	मित्र	८	२५	सर्वपितृ अमावस्या (देव–पितृकार्य), महालय समाप्ति,

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क सित·	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
११	१ र	०४:२३:२९:०६	११:०१:२०:१०	०१:१५:१८:०४	०५:०५:११:३२	११:१३:२२:१५	०४:१४:२८:४७	०९:२१:५३:३३	०६:२४:२२:४३	४५:२६:३५	उ·०५:३३:२९	+ ३:२८	१९:१६:५५
१२	२ चं	०४:२४:२७:२७	११:१४:५८:२४	०१:१५:४६:२५	०५:०४:२५:१२	११:१३:१४:३०	०४:१५:४२:५०	०९:२१:४९:५०	०६:२४:१९:३२	४५:२४:३६	उ·०५:१०:१७	+ ३:५०	१९:५३:०३
१३	३ मं	०४:२५:२५:५१	११:२८:२१:४३	०१:१६:१४:२७	०५:०३:३६:३१	११:१३:०६:४०	०४:१६:५६:५४	०९:२१:४६:११	०६:२४:१६:२१	४५:२२:३७	उ·०४:४६:५९	+ ४:११	२०:२८:२२
१४	४ बु	०४:२६:२४:१७	००:११:२९:२९	०१:१६:४२:०८	०५:०२:४६:३२	११:१२:५८:४५	०४:१८:१०:६०	०९:२१:४२:३७	०६:२४:१३:१०	४५:२०:३७	उ·०४:२३:३६	+ ४:३३	२१:०८:१८
१५	५ गु	०४:२७:२२:४५	००:२४:२१:५२	०१:१७:०९:२९	०५:०१:५६:२५	११:१२:५०:४७	०४:१९:२५:०७	०९:२१:३९:०७	०६:२४:०९:५९	४५:१८:३७	उ·०४:००:०८	+ ४:५४	२१:४७:४६
१६	६ शु	०४:२८:२१:१६	०१:०६:५९:४८	०१:१७:३६:३०	०५:०१:०७:२४	११:१२:४२:४५	०४:२०:३९:१६	०९:२१:३५:४२	०६:२४:०६:४८	४५:१६:३७	उ·०३:३६:३७	+ ५:१६	२२:३२:१६
१७	७ श	०४:२९:१९:४८	०१:१९:२४:५५	०१:१८:०३:०९	०५:००:२०:३२	११:१२:३४:४०	०४:२१:५३:२६	०९:२१:३२:२२	०६:२४:०३:३८	४५:१४:३७	उ·०३:१३:००	+ ५:३८	२३:१९:०९
१८	८ र	०५:००:१८:२३	०२:०१:३९:३३	०१:१८:२९:२७	०४:२९:३६:४८	११:१२:२६:३१	०४:२३:०७:३८	०९:२१:२९:०७	०६:२४:००:२७	४५:१२:३६	उ·०२:४९:२१	+ ५:००	२४:०७:२५
१९	९ चं	०५:०१:१७:००	०२:१३:४६:३०	०१:१८:५५:२२	०४:२८:५७:०२	११:१२:१८:२१	०४:२४:२१:५२	०९:२१:२५:५७	०६:२३:५७:१६	४५:१०:३५	उ·०२:२५:३८	+ ६:२१	०१:००:११
२०	१० मं	०५:०२:१५:४०	०२:२५:४९:०१	०१:१९:२०:५५	०४:२८:२१:५९	११:१२:१०:०८	०४:२५:३६:०७	०९:२१:२२:५१	०६:२३:५४:०५	४५:०८:३४	उ·०२:०१:५२	+ ६:४३	०१:५२:५८
२१	११ बु	०५:०३:१४:२१	०३:०७:५०:४९	०१:१९:४६:०६	०४:२७:५२:१६	११:१२:०१:५३	०४:२६:५०:२४	०९:२१:१९:५१	०६:२३:५०:५४	४५:०६:३३	उ·०१:३८:०३	+ ७:०५	०२:४६:५९
२२	१२ गु	०५:०४:१३:०५	०३:१९:५५:५०	०१:२०:१०:५३	०४:२७:२८:२१	११:११:५३:३७	०४:२८:०४:४३	०९:२१:१६:५७	०६:२३:४७:४३	४५:०४:३२	उ·०१:१४:१२	+ ७:२७	०३:४१:४१
२३	१३ शु	०५:०५:११:५१	०४:०२:०७:२४	०१:२०:३५:१६	०४:२७:१०:३४	११:११:४५:२०	०४:२९:१९:०२	०९:२१:१४:०७	०६:२३:४४:३२	४५:०२:३१	उ·००:५०:१८	+ ७:४८	०४:३६:१६
२४	१४ श	०५:०६:१०:४०	०४:१४:२८:३१	०१:२०:५९:१५	०४:२६:५९:०८	११:११:३७:०२	०५:००:३३:२४	०९:२१:११:२३	०६:२३:४१:२२	४५:००:२९	उ·००:२६:२४	+ ८:१०	०५:३०:५६
२५	३० र	०५:०७:०९:३०	०४:२७:०१:४३	०१:२१:२२:५०	मार्गी २६:५४:०९	११:११:२८:४४	०५:०१:४७:४७	०९:२१:०८:४५	०६:२३:३८:११	४४:५८:२८	उ·००:०२:२७	+ ८:३२	०६:२६:४६

१४ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

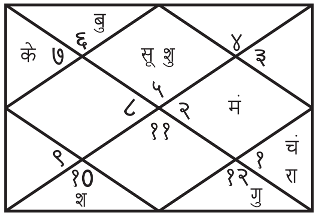

२१ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

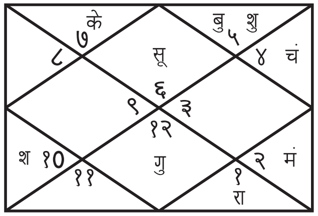

आश्विन कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ११ सितम्बर से २५ सितम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ॠतुः वर्षा कन्यार्कतः ॠतुः शरद ।
दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१: ६

दिनाङ्क सितम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
११	१ र	**पंचक**, बुधःपश्चिमास्तः घं·०९:५६;
१२	२ चं	**पंचक, भद्रारम्भः २४:३१घं·, गण्डान्तारम्भः २७:१०;**
१३	३ मं	**पंचकान्तः ९:१२, भद्रान्तः १२:१४घं·, गण्डान्तः१५:१६;**
१४	४ बु	उत्तरफल्गुन्यांरविः घं·१२:४२;
१५	५ गु	;
१६	६ शु	**भद्रा १३:१५–२५:५१घं·, मासान्तः;**
१७	७ श	**संक्रान्ति पुण्यकालं,१२:०३–१८:२७घं·, श्रीकालाष्टमी;** (१)
१८	८ र	मासादिः;
१९	९ चं	व्यतीपात पुण्यम्;
२०	१० मं	**भद्रा ७:१५–२०:१७घं·**, उत्तरफल्गुन्यांशुक्रः घं·२६:५६;
२१	११ बु	; (१) कन्यायांरविः घं·२२:४४, मघायांसिंहेबुधः घं·१७:१७;
२२	१२ गु	**गण्डान्तारम्भः १९:३६;** (२) कन्यायांशुक्रः घं·१९:३२;
२३	१३ शु	**मघा श्राद्ध, भद्रारम्भः २५:३०घं·, गण्डान्तः ८:४०,** (२)
२४	१४ श	**मास शिवरात्रि व्रतम्, भद्रान्तः १४:०२घं·;**
२५	३० र	**पितृ विसर्जन**, मार्गी बुधः घं·१३:३६;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५८–१३:३७
१५	११:५४–१३:३०

❀ सर्वश्रेष्ठ कर्म है श्राद्ध ❀

ब्रह्म पुराण–जो अपनी संपत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी भी व्यर्थ नहीं जाता--*न किंचिद् व्यर्थतां व्रजेत्।।* जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजा करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं-- *विष्णुमेव यजन्ति ते।*– यमस्मृति। **इच्छा शक्ति होने पर श्राद्ध कराना पहाड़ तोड़ना नहीं बल्कि फूल तोड़ने जैसा कार्य है।**

देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण है श्राद्ध कार्य – देवता से पूर्व पितरों का पूजन करना चाहिए। पितृपूजा देवपूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है--*देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते। देवताभ्यः पितृनां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्।* (ब्रह्मवैवर्त पुराण)। ब्रह्मपुराण और अधिक महत्त्व को बतलाते हुए कहता है यदि कोई शाक से भी श्राद्ध करता है तो उसके कुल में कोई कष्ट नहीं भोगता-- *शाकैरपि यथाविधिः।* **अशक्ति में श्राद्ध कैसे करायें** नौकरी में छुट्टी न मिलने की स्थिति में, कारागार में रहने पर, रोग से ग्रस्त रहने पर या अन्य किसी भी अवरोध के होने पर सुयोग्य ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक धन दे कर श्राद्ध कराना चाहिए– *राजकार्येनियुक्तस्य बन्धनिग्रहवर्तिनः । व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विप्रेणकारयेत्।।* –धर्मसिन्धु, परि. ३ **श्राद्ध त्याग का दुष्परिणाम** आदित्य पुराण में है कि जो लोग मन में यह सोचते हैं कि पितर नहीं होते हैं श्राद्ध क्या करना? ऐसे लोगों के परिवार का रक्त पितृगण पीते हैं– *न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धन् न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते।।* वंश हीनता और निर्धनता से बचने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। सुमन्तु मुनि ने भी कहा है कि– **"श्राद्ध से पुण्यशाली अन्य कोई कर्म नहीं है"** – श्राद्धात्परतरं नान्यत् श्रेयस्करमुदाहृतम्।

❀ वार्षिक श्राद्धतिथि पर अन्नदानात्मक सांकल्पिक श्राद्ध ❀

यदि श्रद्धतिथि पर ब्राह्मण भोजन कराना सम्भव न हो तो निम्न विधि से संकल्प करके सूखे अन्न, घृत, चीनी, नमक आदि षड् रस वस्तुओं को दक्षिणा सहित श्राद्ध भोजन के निमित्त ब्राह्मण को दे देना चाहिये–

❀ **प्रतिज्ञासंकल्प**– हाथ में तिल, जल लेकर संकल्प करे –

ॐ अद्य ... देशकालसंकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अस्मत् पिता/ पितामहानां/ माता/... क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्ति सम्पादनार्थं सोपस्करम् आमान्नदानात्मकं सांकल्पिक श्राद्धं करिष्ये।

हाथ से संकल्प–जल जमीन पर छोड़े।

❀ **आमान्नदानका संकल्प–** अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर आमान्नदान का निम्न संकल्प करे–

ॐ अद्य अमुक गोत्राय पित्रे (पितृ का नाम) शर्माय/वर्माय/गुप्ताय सांकल्पिक श्राद्धे एक/त्रि/पंच ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्याप्तं इदमन्नं ते नमः

कहकर संकल्पजल आमान्न सामग्री पर छोड़ दे और आमान्न ब्राह्मण को प्रदान करे तथा दक्षिणा भी दे।

❀ **पितरों की तृप्ति हेतु वस्त्र आदि दान का संकल्प –**

ॐ ...देशकाल संकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अमुकगोत्राणां अस्मत् पिता/पितामहः/ (पितृ का नाम) शर्मा/वर्मा/गुप्तानां श्राद्धे क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थम् असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं वस्त्रं दक्षिणाद्रव्यं च अमुकगोत्राय–नामाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
११	२०:१९	२१:५५	२३:५०	०२:०५	०४:२५	०६:४१	०८:५६	११:१५	१३:३४	१५:३९	१७:२४	१८:५३
१२	२०:१५	२१:५१	२३:४६	०२:०१	०४:२१	०६:३८	०८:५२	११:११	१३:३०	१५:३६	१७:२०	१८:४९
१३	२०:११	२१:४७	२३:४३	०१:५७	०४:१७	०६:३४	०८:४९	११:०७	१३:२६	१५:३२	१७:१६	१८:४५
१४	२०:०७	२१:४३	२३:३९	०१:५३	०४:१३	०६:३०	०८:४५	११:०३	१३:२२	१५:२८	१७:१२	१८:४१
१५	२०:०३	२१:३९	२३:३५	०१:४९	०४:०९	०६:२६	०८:४१	१०:५९	१३:१८	१५:२४	१७:०८	१८:३७
१६	१९:५९	२१:३५	२३:३१	०१:४५	०४:०५	०६:२२	०८:३७	१०:५६	१३:१४	१५:२०	१७:०४	१८:३३
१७	१९:५५	२१:३१	२३:२७	०१:४१	०४:०१	०६:१८	०८:३३	१०:५२	१३:१०	१५:१६	१७:००	१८:२९
१८	१९:५१	२१:२७	२३:२३	०१:३७	०३:५७	०६:१४	०८:२९	१०:४८	१३:०६	१५:१२	१६:५६	१८:२६
१९	१९:४७	२१:२३	२३:१९	०१:३३	०३:५३	०६:१०	०८:२५	१०:४४	१३:०३	१५:०८	१६:५२	१८:२२
२०	१९:४४	२१:१९	२३:१५	०१:२९	०३:४९	०६:०६	०८:२१	१०:४०	१२:५९	१५:०४	१६:४९	१८:१८
२१	१९:४०	२१:१५	२३:११	०१:२५	०३:४५	०६:०२	०८:१७	१०:३६	१२:५५	१५:००	१६:४५	१८:१४
२२	१९:३६	२१:१२	२३:०७	०१:२१	०३:४१	०५:५८	०८:१३	१०:३२	१२:५१	१४:५६	१६:४१	१८:१०
२३	१९:३२	२१:०८	२३:०३	०१:१७	०३:३७	०५:५४	०८:०९	१०:२८	१२:४७	१४:५२	१६:३७	१८:०६
२४	१९:२८	२१:०४	२२:५९	०१:१३	०३:३३	०५:५०	०८:०५	१०:२४	१२:४३	१४:४८	१६:३३	१८:०२
२५	१९:२४	२१:००	२२:५५	०१:०९	०३:३०	०५:४६	०८:०१	१०:२०	१२:३९	१४:४४	१६:२९	१७:५८

सितम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
११	**मृत्यु**·१ १४:०२ तक; **सर्वार्थ**·उभा ०९:४२ से;
१२	**मृत्यु**·२ १२:५४ तक;
१३	**सिद्ध**·३ १२:१४ तक; **सर्वार्थ**·अ ०९:१२ से;
१५	**सिद्ध**·५ १२:२४ तक;
१६	**सिद्ध**·६ १३:१५ तक; **रवियोग**ःरो १२:०१ से; **मृत्यु**·७ १३:१५ से;
१७	**सर्वार्थ**·रो–**रवियोग**ःरो १३:५४ तक; **द्विपुष्कर**ः७+मृ १३:५४–१४:३३;
१८	**सिद्ध**·८ १६:१५ तक; **द·ति**·८,
१९	**अमृत**·१० १६:१३ से;
२०	**मृत्यु**·११ २०:१७ से;
२१	**अमृत**·११ २२:१८ से; **सिद्ध**·१२ २२:१८ से;
२२	**अमृत**·१३ २४:०४ से;
२३	**अमृत**·१४ २५:३० से;
२४	**सिद्ध**·१४ २६:२८ तक; **मृत्यु**·३० २६:२८ से;
२५	**सर्वार्थ**·उफा अहोरात्र; **अमृत**·३० २६:५७ तक; **मृत्यु**·१ २६:५७ से;

कन्याराशिस्थ सूर्य और **आश्विन कृष्णपक्ष** का जब सम्मिलन होता है तब एक त्रिकोण में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी की स्थिति बनती है और पितृगण सीधे धरती पर उतर आते हैं। यह खगोलीय स्थिति **पितृपक्ष** के लिए अनिवार्य होती है। अदृष्ट भाग दिखने वाले से करोड़ों करोड़ गुणा महत्वपूर्ण है। अतः **वेद–शास्त्र को प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।** संतुष्ट पितृगण राज्य, वंश और आयु प्रदान करते हैं। जिस वंश में पितृगण मुक्त नहीं होते, उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो बड़ी बात है उनका पुनर्जन्म तक नहीं होता, अंततः श्रीमद्भागवत का सप्ताहयज्ञ कराना पड़ता है। "जिनके घर श्राद्ध नहीं होता उनके कुल में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता, दीर्घायु नहीं होती और किसी तरह का कल्याण नहीं होता।" –मार्कण्डेयपुराण

न तत्र वीराः जायन्ते निरोगी न शतायुषः।
न तत्र श्रेयः कांक्षन्ते यत्र श्राद्धः विवर्जितः।।

आशिवन शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २६ सितम्बर से ९ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २६:९:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःःपूर्वोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्ब	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२६ सितम्बर से ९ अक्टूबर
२६	१ चं	५१:२९	२६:५५	उ·फा·	००:५२	०६:४०	शुक्ल	०८:५०	०९:५१	किं	२१:४१	बव	५१:२९	२९:५३	६:१९	१८:१६	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	९	२६	**शारदीय नवरात्रारम्भः, कलशस्थापना,** ध्वजा रोपण,
२७	२ मं	५०:०९	२६:२३	हस्त	०२:११	०७:१२	ब्रह्म	०५:४६	०८:३८	बाल	२०:५७	कौल	५०:०९	२९:४९	६:२०	१८:१५	तु·३२:२५	१९:१८	सौम्य	१०	२७	**ब्रह्मचारिणीदेवी दर्शन,**
२८	३ बु	४७:३९	२५:२४	चित्रा	०२:१९	०७:१६	ऐन्द्र वैधृति	०१:४३ ५५:०५	०७:०१ २९:०३	तैति	१९:०१	गर	४७:३९	२९:४५	६:२०	१८:१४	तुला	अहोरात्र	कालदंड	११	२८	**चन्द्रघण्टादेवी दर्शन,** वैधृति पुण्यम्,
२९	४ गु	४४:०६	२३:५९	स्वाती विशाखा	०१:१८ ५८:०६	०६:५२ ३०:०६	विष्कु·	५१:०२	२६:४६	वणि	१५:५९	विष	४४:०६	२९:४१	६:२१	१८:१३	वृ·४४:५६	२४:१९	प्रवर्द्ध	१२	२९	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, कूष्माण्डादेवी दर्शन,**
३०	५ शु	३९:४३	२२:१४	अनु·	५६:३४	२८:५९	प्रीति	४४:३५	२४:११	बव	११:५९	बाल	३९:४३	२९:३७	६:२१	१८:१२	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	१३	३०	**स्कन्दमातादेवी दर्शन, उपांग ललिता व्रत,**
अक्टू	६ श	३४:३६	२०:१२	ज्ये·	५३:०७	२७:३६	आयु·	३७:३५	२१:२४	कौल	०७:१३	तैति	३४:३६	२९:३३	६:२२	१८:११	ध·५३:०७	२७:३६	मुसल	१४	१	**कात्यायनीदेवी दर्शन,** आमेर मेला,
२	७ र	२८:५९	१७:५८	मूल	४९:१३	२६:०३	सौभा·	३०:०९	१८:२६	गर	०१:४९	वणि	२८:५९	२९:२९	६:२२	१८:१०	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	१५	२	**श्रीसरस्वती आवाहन (मूलेषु), कालरात्रिदेवी दर्शन,**
३	८ चं	२३:०१	१५:३५	पू·षा·	४५:०३	२४:२४	शोभ·	२२:२७	१५:२१	बव	२३:०१	बाल	४९:६०	२९:२५	६:२३	१८:०८	म·५८:६०	२९:५९	उत्पात	१६	३	**महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, श्रीसरस्वती पूजन (पू·षाढ़ासु),**
४	९ मं	१६:५६	१३:०९	उ·षा·	४०:५०	२२:४३	अतिग·	१४:३८	१२:१४	कौल	१६:५६	तैति	४३:५५	२९:२०	६:२३	१८:०७	मकर	अहोरात्र	मानस	१७	४	**महानवमी, श्रीसरस्वतीबलिदान (उ·षाढ़ासु),** मन्वादि,
५	१० बु	१०:५५	१०:४६	श्रवण	३६:४८	२१:०७	सुकर्मा धृति	०६:५३ ५२:३०	०९:०९ ३०:०८	गर	१०:५५	वणि	३८:०२	२९:१६	६:२४	१८:०६	मकर	अहोरात्र	छत्र	१८	५	**विजयादशमी, सरस्वतीविसर्जन (श्रवणेषु),** नवरात्र व्रतपारणा,
६	११ गु १२ गु	०५:१२ ५४:४७	०८:२९ ३०:२४	धनि·	३३:०८	१९:३९	शूल	५२:१३	२७:१७	विष	०५:१२	बव	३२:३२	२९:१२	६:२४	१८:०५	कुं·०४:५३	०८:२१	श्रीवत्स	१९	६	**श्रीपापाङ्कुशा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त),**
७	१३ शु	५५:२५	२८:३५	शत·	३०:०२	१८:२५	गण्ड	४५:३४	२४:३८	कौल	२७:३६	तैति	५५:२५	२९:०८	६:२५	१८:०४	कुंभ	अहोरात्र	सौम्य	२०	७	**प्रदोषव्रतम्,** श्री पद्मनाभद्वादशी, दुग्ध दान,
८	१४ श	५१:४१	२७:०५	पू·भा·	२७:४२	१७:३०	वृद्धि	३९:३३	२२:१४	गर	२३:२५	वणि	५१:४१	२९:०४	६:२५	१८:०३	मी·१३:१२	११:४२	कालदंड	२१	८	
९	१५ र	४८:५६	२५:६०	उ·भा·	२६:१६	१६:५६	ध्रुव	३४:१९	२०:०९	विष	२०:०९	बव	४८:५६	२९:००	६:२६	१८:०२	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२२	९	**शरदपूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा,**

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
सितम्ब	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मिःसे	
२६	१ चं	०५:०८:०८:२३	०५:०९:४८:५२	०१:२१:४५:५९	०४:२६:५५:३७	११:११:२०:२७	०५:०३:०२:११	०९:२१:०६:१२	०६:२३:३४:६०	४४:५६:२६	द·००:२१:३०	+ ८:५३	०६:२७:१५
२७	२ मं	०५:०९:०७:१९	०५:२२:५१:१०	०१:२२:०८:४३	०४:२७:०३:२७	११:११:१२:१०	०५:०४:१६:३७	०९:२१:०३:४५	०६:२३:३१:४९	४४:५४:२४	द·००:४५:२८	+ ९:१४	०७:२४:२२
२८	३ बु	०५:१०:०६:१६	०६:०६:०९:०२	०१:२२:३१:००	०४:२७:१७:३१	११:११:०३:५२	०५:०५:३१:०५	०९:२१:०१:२४	०६:२३:२८:३८	४४:५२:२३	द·०१:०९:२६	+ ९:३५	०८:२२:४९
२९	४ गु	०५:११:०५:१६	०६:१९:४२:०८	०१:२२:५२:५१	०४:२७:३७:३७	११:१०:५५:३५	०५:०६:४५:३४	०९:२०:५९:०९	०६:२३:२५:२७	४४:५०:२१	द·०१:३३:२३	+ ९:५६	०९:२४:३४
३०	५ शु	०५:१२:०४:१८	०७:०३:२९:२२	०१:२३:१४:१५	०४:२८:०३:३२	११:१०:४७:१७	०५:०८:००:०५	०९:२०:५६:५९	०६:२३:२२:१६	४४:४८:१९	द·०१:५७:२१	+१०:१७	१०:२७:३४
अक्टू	६ श	०५:१३:०३:२३	०७:१७:२८:५६	०१:२३:३५:११	०४:२८:३४:६०	११:१०:३८:५९	०५:०९:१४:३७	०९:२०:५४:५५	०६:२३:१९:०६	४४:४६:१८	द·०२:२१:१८	+१०:३७	११:३०:२०
२	७ र	०५:१४:०२:३०	०८:०१:३८:२४	०१:२३:५५:३९	०४:२९:११:४५	११:१०:३०:४२	०५:१०:२९:१०	०९:२०:५२:५८	०६:२३:१५:५५	४४:४४:१६	द·०२:४५:१३	+१०:५७	१२:३३:४७
३	८ चं	०५:१५:०१:३९	०८:१५:५४:४९	०१:२४:१५:३८	०४:२९:५३:३०	११:१०:२२:२६	०५:११:४३:४५	०९:२०:५१:०६	०६:२३:१२:४४	४४:४२:१५	द·०३:०९:०७	+११:१७	१३:३०:२१
४	९ मं	०५:१६:००:४९	०९:००:१४:५२	०१:२४:३५:०८	०५:००:३९:५९	११:१०:१४:१२	०५:१२:५८:२२	०९:२०:४९:२१	०६:२३:०९:३३	४४:४०:१३	द·०३:३२:५९	+११:३७	१४:२६:०३
५	१० बु	०५:१७:००:०३	०९:१४:३४:४२	०१:२४:५४:०८	०५:०१:३०:५५	११:१०:०५:५९	०५:१४:१२:६०	०९:२०:४७:४२	०६:२३:०६:२२	४४:३८:१२	द·०३:५६:४९	+११:५६	१५:१२:३७
६	११ गु	०५:१७:५९:१८	०९:२८:५०:३१	०१:२५:१२:३७	०५:०२:२६:०१	११:०९:५७:४८	०५:१५:२७:३९	०९:२०:४६:०९	०६:२३:०३:११	४४:३६:१०	द·०४:२०:३६	+१२:१५	१५:५७:२३
७	१३ शु	०५:१८:५८:३६	१०:१२:५९:०३	०१:२५:३०:३५	०५:०३:२५:०३	११:०९:४९:४०	०५:१६:४२:२०	०९:२०:४४:४२	०६:२३:००:०१	४४:३४:०९	द·०४:४४:२०	+१२:३४	१६:३६:२५
८	१४ श	०५:१९:५७:५६	१०:२६:५७:२३	०१:२५:४८:०२	०५:०४:२७:४४	११:०९:४१:३५	०५:१७:५७:०२	०९:२०:४३:२२	०६:२२:५६:५०	४४:३२:०८	द·०५:०८:००	+१२:५२	१७:१३:४२
९	१५ र	०५:२०:५७:१८	११:१०:४३:१०	०१:२६:०४:५६	०५:०५:३३:५०	११:०९:३३:३३	०५:१९:११:४६	०९:२०:४२:०८	०६:२२:५३:३९	४४:३०:०७	द·०५:३१:३७	+१३:१०	१७:५०:१७

२९ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

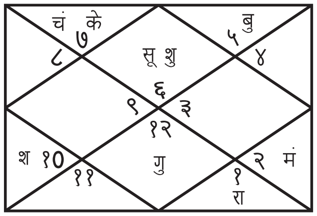

६ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

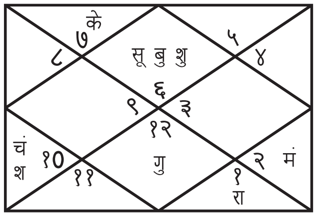

आश्विन शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २६ सितम्बर से ९ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१: ८

दिनाङ्क सितम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२६	१ चं	**शैलपुत्री दर्शन, दुर्गा सप्तशती पाठारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती;**
२७	२ मं	हस्तेरविः घं·२७:४८;
२८	३ बु	;
२९	४ गु	**भद्रा १२:४४–२३:५९घं·**, रथोत्सव चतुर्थी, मान चतुर्थी (उड़ीसा) ; ①
३०	५ शु	मृगशिरायांमङ्गलः घं·१२:५४, द·न·ज्ये; ① बुधःपूर्वोदितः घं·१०:४१;
अक्टू·	६ श	**गण्डान्तारम्भः २१:५८**, हस्तेशुक्रः घं·२०:५९, शुक्रःपूर्वास्तः घं·२१:०५;
२	७ र	**भद्रा १७:५८–२८:३६घं·, गण्डान्तः ९:१४, बिल्वसप्तमी;**
३	८ चं	**महागौरी दर्शन**, कन्यायांबुधः घं·०९:५३;
४	९ मं	**सिद्धिदात्रीदेवी दर्शन, पाठ हवन पूर्णाहुति महाबलिदान, श्रीदुर्गा नवमी,** ②
५	१० बु	**श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा, भद्रारम्भः २१:३६घं·,** ③
६	११ गु	**पंचकारंभः ०८:२१, भद्रान्तः ८:२९घं·; ② अभिजितनक्षत्रः २६:५२–४४:३४;**
७	१२ शु	**पंचक;** ③ श्रीअपराजिता पूजा, जगद्गुरु माधवाचार्य जयन्ती;
८	१४ श	**पंचक, भद्रारम्भः २७:०५घं·;**
९	१५ र	**पंचक, भद्रान्तः १४:२९घं·, महारास पूर्णिमा, कोजागरी लक्ष्मी पूजा, वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान आरम्भ,** मेला सालासर बालाजी;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५४–१३:२९
१५	११:५०–१३:२३

❀ आश्विन मास कृत्य ❀

❀ **शारदीय नवरात्रि–** आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त्। प्रथम दिन वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन करे। ✻ **आश्विन नवरात्र घटस्थापना मुहूर्त्त** – प्रातः ०६:१९–१०:१९ ✻

नवरात्रि में देवी की प्रीति हेतु श्रीसप्तशती पाठ करें व अखण्ड दीप निम्न मन्त्र से प्रज्वलित करें –

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **विजयादशमी २०७९ निर्णय–** उदये दशमीकिञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि श्रवणः यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधः।।

अन्यञ्च– *इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वविद्धा न कारयेत्। श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने।।*

सूर्योदये यदा राजन दृश्यते दशमी तिथिः। आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां ता विदुर्बुधा ।।

विजयादशमी अपराह्नकाल व्यापिनी ग्राह्य है। इस वर्ष ०४ अक्टूबर मंगलवार को १३:०९ पर दशमी लग रही है जो दूसरे दिन बुधवार को १०:४६ तक रहेगी। नवमी तिथि मंगलवार को अपराह्नयुक्त दशमी होने से विजयादशमी का योग बन रहा है, किन्तु शास्त्रानुसार दशमी तिथि उदयकाल में श्रवण नक्षत्र युक्त हो तो उसी दिन विजयादशमी मनानी चाहिए। इस वर्ष ०५ अक्टूबर बुधवार को उदया दशमी श्रवण नक्षत्र युक्त है अतः विजयादशमी ५ अक्टू बुधवार को ही शास्त्रानुसार होगी।

❀ **शमी वृक्ष पूजन–** दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न तथा यात्राकष्ट का निवारण होता है।

❀ **शरद पूर्णिमा** –आज मनुष्यों को आयु देने वाली चन्द्र किरणों का वर्षण होता है। आज की रात में भगवती लक्ष्मी जागने वाले अपने भक्तों को ढूंढती रहती हैं– ***को जागर्ति इति भाषिणी।*** **मेरी आराधना में कौन जाग रहा है, उसे मैं धन समृद्धि दूंगी।** यही कोजागरी है। कोजागरी में ऐरावत हाथी पर सवार लक्ष्मी की पूजा करे। शरदपूर्णिमा को **रासोत्सव** करे। नारद पुराण में कहा है– **'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।'** ''वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। चतुर्दशी विद्धा अमावस्या और पूर्णिमा को कभी ग्रहण न करे।'', यह ब्रह्मवैवर्त में कहा है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२६	१९:२०	२०:५६	२२:५१	०१:०५	०३:२६	०५:४२	०७:५७	१०:१६	१२:३५	१४:४०	१६:२५	१७:५४
२७	१९:१६	२०:५२	२२:४७	०१:०२	०३:२२	०५:३८	०७:५३	१०:१२	१२:३१	१४:३६	१६:२१	१७:५०
२८	१९:१२	२०:४८	२२:४३	००:५८	०३:१८	०५:३४	०७:४९	१०:०८	१२:२७	१४:३२	१६:१७	१७:४६
२९	१९:०८	२०:४४	२२:३९	००:५४	०३:१४	०५:३०	०७:४५	१०:०४	१२:२३	१४:२९	१६:१३	१७:४२
३०	१९:०४	२०:४०	२२:३६	००:५०	०३:१०	०५:२६	०७:४२	१०:००	१२:१९	१४:२५	१६:०९	१७:३८
१	१९:००	२०:३६	२२:३२	००:४६	०३:०६	०५:२२	०७:३८	०९:५६	१२:१५	१४:२१	१६:०५	१७:३४
२	१८:५६	२०:३२	२२:२८	००:४२	०३:०२	०५:१८	०७:३४	०९:५२	१२:११	१४:१७	१६:०१	१७:३०
३	१८:५२	२०:२८	२२:२४	००:३८	०२:५८	०५:१४	०७:३०	०९:४९	१२:०७	१४:१३	१५:५७	१७:२६
४	१८:४८	२०:२४	२२:२०	००:३४	०२:५४	०५:१०	०७:२६	०९:४५	१२:०३	१४:०९	१५:५३	१७:२२
५	१८:४४	२०:२०	२२:१६	००:३०	०२:५०	०५:०७	०७:२२	०९:४१	११:५९	१४:०५	१५:४९	१७:१९
६	१८:४०	२०:१६	२२:१२	००:२६	०२:४६	०५:०३	०७:१८	०९:३७	११:५६	१४:०१	१५:४५	१७:१५
७	१८:३७	२०:१२	२२:०८	००:२२	०२:४२	०४:५९	०७:१४	०९:३३	११:५२	१३:५७	१५:४२	१७:११
८	१८:३३	२०:०८	२२:०४	००:१८	०२:३८	०४:५५	०७:१०	०९:२९	११:४८	१३:५३	१५:३८	१७:०७
९	१८:२९	२०:०५	२२:००	००:१४	०२:३४	०४:५१	०७:०६	०९:२५	११:४४	१३:४९	१५:३४	१७:०३

सितम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२६	**सिद्ध**·१ २६:५५ तक; **मृत्यु**·२ २६:५५ से;
२७	**अमृत**·२ २६:२३ तक; द्विपुष्करः२+चि ०७:१२–२६:२३; **सिद्ध**·३ २६:२३ से;
२८	**मृत्यु**·३ २५:२४ तक;
२९	**मृत्यु**·४ २३:५९ तक; **रवियोग**ःवि ०६:५२–३०:०६; **सिद्ध**·५ २३:५९ से; **सर्वार्थ**·अनु ३०:०६ से;
३०	**सर्वार्थ**·अनु २८:५९ तक; **सिद्ध**·६ २२:१४ से; **रवियोग**ःज्ये २८:५९ से;
अक्टू·	**अमृत**·६ २०:१२ तक; **रवियोग**ःज्ये २७:३६ तक;
२	**सर्वार्थ**·मू २६:०३ तक; **सिद्ध**·८ १७:५८ से;
३	**रवियोग**ःउषा २४:२४ से; **द·ति**·८
४	**रवियोग**ःउषा–श्र अहोरात्र; द·न·उषा;
५	**रवियोग**ःश्र २१:०७ तक; **अमृत**·११ ०८:२९ तक; द·न·ध;
७	**रवियोग**ःपूभा १८:२५ से; **अमृत**·१४ २८:३५ से;
८	**सिद्ध**·१४ २७:०५ तक; **रवियोग**ःपूभा १७:३० तक; **मृत्यु**·१५ २७:०५ से;
९	**सर्वार्थ**·उभा १६:५६ तक; **अमृत**·१५ २६:०० तक; **मृत्यु**·१ १६:५६ से;

नवार्ण मन्त्र की व्यापकता

मूल– "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

यह सांसारिक सुख और मोक्ष दोनों को देने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वाला व्यक्ति कर सकता है। यह गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्तरूप से २४ वर्णाक्षरों को समेटे है। ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए। सावित्री मन्त्र की तरह इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं। यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है। ॐ रहित नवार्ण का जप श्रेयस्कर है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ, हवन किया जाता है। यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है।

कार्तिक कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १० अक्टूबर से २५ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– १०:१०:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	१० अक्टूबर से २५ अक्टूबर
१०	१ चं	४७:१९	२५:२२	रेवती	२५:५४	१६:४८	व्याघ·	२९:५६	१८:२५	बाल	१७:५८	कौल	४७:१९	२८:५६	६:२६	१८:०१	मे·२५:५४	१६:४८	मातङ्ग	२३	१०	**त्याग व्रतारम्भः, आकाश दीपदान आरम्भ,**
११	२ मं	४६:५७	२५:१३	अश्वि·	२६:४२	१७:०८	हर्षण	२६:३१	१७:०३	तैति	१६:५८	गर	४६:५७	२८:५२	६:२७	१८:००	मेष	अहोरात्र	अमृत	२४	११	अशून्यशयन व्रत, गुरु रामदास जयन्ती,
१२	३ बु	४७:५३	२५:३६	भरणी	२८:४६	१७:४७	वज्र	२४:०६	१६:०५	वणि	१७:१४	विष	४७:५३	२८:४८	६:२७	१७:५८	वृ·४४:२९	२४:१५	काण	२५	१२	
१३	४ गु	५०:०४	२६:२९	कृत्ति·	३२:०३	१९:१७	सिद्धि	२२:४०	१५:३२	बव	१८:४८	बाल	५०:०४	२८:४४	६:२८	१७:५७	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	२६	१३	**करवा चौथ, करक संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:२६,**
१४	५ शु	५३:२५	२७:५०	रोहि·	३६:३०	२१:०४	व्यति·	२२:१०	१५:२०	कौल	२१:३५	तैति	५३:२५	२८:४०	६:२८	१७:५६	वृष	अहोरात्र	मित्र	२७	१४	व्यतीपात पुण्यम्,
१५	६ श	५७:४४	२९:३४	मृग·	४१:५६	२३:१५	वरी·	२२:२९	१५:२८	गर	२५:२७	वणि	५७:४४	२८:३६	६:२९	१७:५५	मि·०९:०५	१०:०७	वज्र	२८	१५	**श्री स्कन्द षष्ठी,**
१६	७ र	६०:००	अहोरात्र	आर्द्रा	४८:०५	२५:४३	परिघ	२३:२५	१५:५१	विष	३०:०९	बव	६०:००	२८:३२	६:२९	१७:५४	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२९	१६	
१७	७ चं	०२:४१	०७:३४	पुन·	५४:३५	२८:२०	शिव	२४:४६	१६:२४	बव	०२:४१	बाल	३५:२०	२८:२८	६:३०	१७:५३	क·३७:५६	२१:४०	धूम्र	३०	१७	**श्री अहोई अष्टमी, श्री कालाष्टमी,**
१८	८ मं	०७:५८	०९:४१	पुष्य	६०:००	अहोरात्र	सिद्ध	२६:१२	१६:५९	कौल	०७:५८	तैति	४०:३४	२८:२४	६:३०	१७:५२	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	३१	१८	श्री राधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन), दाम्पत्य अष्टमी,
१९	९ बु	१३:०३	११:४४	पुष्य	००:५८	०६:५४	साध्य	२७:२४	१७:२८	गर	१३:०३	वणि	४५:२५	२८:२०	६:३१	१७:५१	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	१	१९	गुरु हरिराय पुण्यदिवस,
२०	१० गु	१७:३५	१३:३३	आश्ले·	०६:५४	०९:१७	शुभ	२८:०६	१७:४६	विष	१७:३५	बव	४९:३२	२८:१६	६:३२	१७:५०	सिं·०६:५४	०९:१७	अमृत	२	२०	
२१	११ शु	२१:१२	१५:०१	मघा	१२:०१	११:२०	शुक्ल	२८:०५	१७:४६	बाल	२१:१२	कौल	५२:३७	२८:१३	६:३२	१७:४९	सिंह	अहोरात्र	काण	३	२१	**श्री रमा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), श्रीगोवत्सद्वादशी,**
२२	१२ श	२३:४२	१६:०२	पू·फा·	१६:०४	१२:५८	ब्रह्म	२७:११	१७:२५	तैति	२३:४२	गर	५४:३०	२८:०९	६:३३	१७:४८	क·३१:५५	१९:१९	लुम्ब	४	२२	**शनि प्रदोष व्रतम्, धनत्रयोदशी, धनतेरस,**
२३	१३ र	२४:५७	१६:३२	उ·फा·	१८:५६	१४:०८	ऐन्द्र	२५:२०	१६:४१	वणि	२४:५७	विष	५५:०७	२८:०५	६:३३	१७:४७	कन्या	अहोरात्र	मित्र	५	२३	**नरक चतुर्दशी, रूप चौदस, मास शिवरात्रि व्रतम्,**
२४	१४ चं	२४:५५	१६:३२	हस्त	२०:३३	१४:४७	वैधृ·	२२:२८	१५:३३	शकु	२४:५५	चतु	५४:२७	२८:०१	६:३४	१७:४६	तु·५०:५५	२६:५६	वज्र	६	२४	**दीपावली** (प्रदोष–रात्रिव्यापिनी अमावस्या में),
२५	३० मं	२३:३८	१६:०२	चित्रा	२०:५७	१४:५७	विष्कु·	१८:३८	१४:०२	नाग	२३:३८	किं	५२:३४	२७:५७	६:३५	१७:४५	तुला	अहोरात्र	ध्वांक्ष	७	२५	**कार्तिक अमावस्या (देव–पितृकार्य), खण्डग्रास सूर्यग्रहण,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अक्टू	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः (मा/व) रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१०	१ चं	०५:२१:५६:४३	११:२४:१४:३९	०१:२६:२१:१७	०५:०६:४३:०८	११:०९:२५:३५	०५:२०:२६:३१	०९:२०:४१:००	०६:२२:५०:२८	४४:२८:०७	द·०५:५५:१०	+१३:२७	१८:२६:०६
११	२ मं	०५:२२:५६:१०	००:०७:३०:५०	०१:२६:३७:०५	०५:०७:५५:२५	११:०९:१७:४१	०५:२१:४१:१७	०९:२०:३९:५९	०६:२२:४७:१७	४४:२६:०६	द·०६:१८:३८	+१३:४४	१९:०४:१७
१२	३ बु	०५:२३:५५:३९	००:२०:३१:२७	०१:२६:५२:१९	०५:०९:१०:२८	११:०९:०९:५१	०५:२२:५६:०५	०९:२०:३९:०४	०६:२२:४४:०६	४४:२४:०६	द·०६:४२:०२	+१४:०१	१९:४४:१८
१३	४ गु	०५:२४:५५:१०	०१:०३:१७:०१	०१:२७:०६:५८	०५:१०:२८:०६	११:०९:०२:०६	०५:२४:१०:५५	०९:२०:३८:१६	०६:२२:४०:५५	४४:२२:०६	द·०७:०५:२०	+१४:१७	२०:२५:५२
१४	५ शु	०५:२५:५४:४४	०१:१५:४८:४८	०१:२७:२१:०१	०५:११:४८:०९	११:०८:५४:२६	०५:२५:२५:४५	०९:२०:३७:३४	०६:२२:३७:४५	४४:२०:०६	द·०७:२८:३३	+१४:३२	२१:१३:१७
१५	६ श	०५:२६:५४:२०	०१:२८:०८:४५	०१:२७:३४:२९	०५:१३:१०:२६	११:०८:४६:५२	०५:२६:४०:३७	०९:२०:३६:५९	०६:२२:३४:३४	४४:१८:०७	द·०७:५१:३९	+१४:४७	२१:५९:५५
१६	७ र	०५:२७:५३:५८	०२:१०:१९:२७	०१:२७:४७:१९	०५:१४:३४:४८	११:०८:३९:२३	०५:२७:५५:३१	०९:२०:३६:३१	०६:२२:३१:२३	४४:१६:०८	द·०८:१४:३९	+१५:०२	२२:५२:२८
१७	७ चं	०५:२८:५३:३९	०२:२२:२३:५६	०१:२७:५९:३३	०५:१६:०१:०७	११:०८:३२:०१	०५:२९:१०:२६	मार्गी २०:३६:०९	०६:२२:२८:१२	४४:१४:०९	द·०८:३७:३३	+१५:१६	२३:४५:१९
१८	८ मं	०५:२९:५३:२२	०३:०४:२५:३६	०१:२८:११:०८	०५:१७:२९:१३	११:०८:२४:४५	०६:००:२५:२२	०९:२०:३५:५३	०६:२२:२५:०१	४४:१२:११	द·०९:००:१९	+१५:२९	००:३८:४१
१९	९ बु	०६:००:५३:०७	०३:१६:२८:२६	०१:२८:२२:०५	०५:१८:५८:५९	११:०८:१७:३६	०६:०१:४०:१९	०९:२०:३५:४४	०६:२२:२१:५०	४४:१०:१३	द·०९:२२:५७	+१५:४२	०१:३३:०४
२०	१० गु	०६:०१:५२:५४	०३:२८:३६:०३	०१:२८:३२:२३	०५:२०:३०:१८	११:०८:१०:३४	०६:०२:५५:१८	०९:२०:३५:४२	०६:२२:१८:३९	४४:०८:१६	द·०९:४५:२८	+१५:५४	०२:२७:५२
२१	११ शु	०६:०२:५२:४३	०४:१०:५१:४०	०१:२८:४२:००	०५:२२:०३:०३	११:०८:०३:३९	०६:०४:१०:१७	०९:२०:३५:४६	०६:२२:१५:२९	४४:०६:१८	द·१०:०७:५०	+१६:०५	०३:२१:५७
२२	१२ श	०६:०३:५२:३५	०४:२३:१८:०४	०१:२८:५०:५७	०५:२३:३७:०७	११:०७:५६:५३	०६:०५:२५:१८	०९:२०:३५:५७	०६:२२:१२:१८	४४:०४:२२	द·१०:३०:०३	+१६:१६	०४:१७:०६
२३	१३ र	०६:०४:५२:२९	०५:०५:५७:२८	०१:२८:५९:१३	०५:२५:१२:२६	११:०७:५०:१४	०६:०६:४०:२०	०९:२०:३६:१५	०६:२२:०९:०७	४४:०२:२६	द·१०:५२:०७	+१६:२६	०५:१३:२९
२४	१४ चं	०६:०५:५२:२४	०५:१८:५१:२९	०१:२९:०६:४७	०५:२६:४८:५२	११:०७:४३:४४	०६:०७:५५:२३	०९:२०:३६:३९	०६:२२:०५:५६	४४:००:३०	द·११:१४:०२	+१६:३६	०६:११:१०
२५	३० मं	०६:०६:५२:२३	०६:०२:००:५५	०१:२९:१३:३९	०५:२८:२६:२१	११:०७:३७:२२	०६:०९:१०:२७	०९:२०:३७:१०	०६:२२:०२:४५	४३:५८:३५	द·११:३५:४६	+१६:४४	०७:११:१८

१३ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

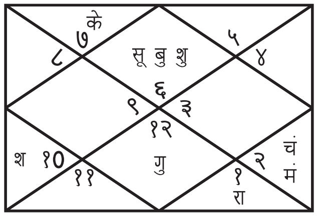

२१ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

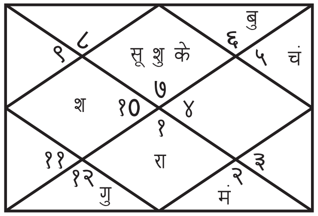

कार्तिक कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, १० अक्टूबर से २५ अक्टूबर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं ।
सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:१०

दिनाङ्क अक्टू·	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१०	१ चं	**पंचकान्तः १६:४८, गण्डान्तः १०:४७–२२:५०;**
११	२ मं	चित्रायांरविः घं·१६:०४;
१२	३ बु	**भद्रा १३:२१–२५:३६घं·**, हस्तेबुधः घं·२१:५२, चित्रायांशुक्रः घं·१४:०८;
१३	४ गु	श्रीललिता चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी (बंगाल) ;
१४	५ शु	;
१५	६ श	**भद्रारम्भः २९:३४घं·;**
१६	७ र	**भद्रान्तः १८:३३घं·;**
१७	७ चं	मासान्तः, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा) ,तुलायांशुक्रःघं·२२:२३, मार्गी शनिःघं·२६:१९,
१८	८ मं	**तुला संक्रान्ति पुण्यकालं, ६:३०–१३:११घं·**, तुलायांरविः घं·०९:११;
१९	९ बु	**भद्रारम्भः २४:४१घं·, गण्डान्तारम्भः २६:४३,** मासादिः;
२०	१० गु	**भद्रान्तः १३:३३घं·, गण्डान्तः १५:५०;**
२१	११ शु	चित्रायांबुधः घं·२६:१३;
२२	१२ श	धन्वन्तरि जयन्ती, कामेश्वरी जयन्ती, स्वात्यांशुक्रः घं·३०:२८;
२३	१३ र	**भद्रा १६:३२–२८:३६घं·, श्री हनुमान जयन्ती** (१४ सायंकाले मेषलग्ने), **यमनिमित्त चौमुखा दीपदान;**
२४	१४ चं	**सायं दीपदान, लक्ष्मी– गणेश–सरस्वती–इन्द्र–कुबेर पूजा,** भगवान् महावीर निर्वाण दिवस, ⓘ
२५	३० मं	तुलायांबुधः घं·२९:२६; ⓘ वैधृति पुण्यम्, स्वात्यांरविः घं·२५:३८, बुधःपूर्वास्तः घं·१८:५३;

*** खण्डग्रास सूर्यग्रहण ***
२५ अक्टूबर २०२२
सम्पूर्ण जानकारी पृष्ठ १६

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५०–१३:२२
१५	११:४७–१३:१७

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भगवान को अत्यधिक प्रिय है। जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है, उसके इष्ट–पूर्तादि सब कर्म नाश हो जाते हैं। संन्यासी हो, विधवा हो, अथवा बालक ही क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक में स्नान दान ध्यान आदि नियमपूर्वक अवश्य करें। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त घृत दीपक प्रज्वलित करें। **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी** को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।

❀ कार्तिक अमावस्या दीपावली– उबटन प्रयोग– चतुर्दशी, अमावस्या या प्रतिपदा में से किसी भी दिन प्रातःकाल में स्वाति नक्षत्र हो तो उबटन अवश्य लगावें, इससे शीतकाल तक स्वास्थ्य बना रहता है(ब्रह्मपुराण)। **सफेद रंग की प्रधानता**– पूजनकर्त्ता को श्वेत वस्त्र व सफेदमाला पहननी चाहिए– *सित वस्त्रोपशोभिना//* सफेद चूने(सुधा) से दीवाल को लीपना चाहिए– *सुधाधवलिताकार्या पुष्पमालोपशोभिता* । दीपावली को प्रदोषकाल में भगवती लक्ष्मी, इन्द्र एवं कुबेर की पूजा व दीपोत्सव करें। लक्ष्मीपूजन में प्रदोषकाल मुख्य है और अर्धरात्रिकाल गौण है। **लक्ष्मी प्रार्थना मंत्र– नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।** निर्णय सिन्धु के अनुसार पहले लक्ष्मी पूजन करे, बाद में दीप दान करे। *प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीप वृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च//* चौराहे, नदी, पर्वत, वृक्ष, गृह, गोशाला तथा चबूतरा आदि सभी जगहों पर दीप जलाना चाहिए। कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। लाजा, गुड़, मिष्ठान्न, मेवा, देवी को चढ़ाएं और प्रसाद खाएं। कार्तिक मास में आकाश दीपदान करने वाले को समस्त दानों का फल मधुसूदन देते हैं।

❀❀ ॐ ❀❀ ॐ ❀❀ दीपावली लक्ष्मीपूजन मुहूर्त्त ❀❀ ॐ ❀❀ ॐ ❀❀

❀ **प्रदोषकाल** – १७:४६ – १८:५८
❀ **सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न** – १९:०५ – २१:०१
वृष लग्न में सिंह नवांश– १९:१५ – १९:२७ **वृष लग्न में वृष नवांश** – १९:५३ – २०:०५
❀ **रात्रिकालीन सिंह लग्न** – ०१:३५ – ०३:५२

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टू·	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१०	१८:२५	२०:०१	२१:५६	००:१०	०२:३०	०४:४७	०७:०२	०९:२१	११:४०	१३:४५	१५:३०	१६:५९
११	१८:२१	१९:५७	२१:५२	००:०६	०२:२६	०४:४३	०६:५८	०९:१७	११:३६	१३:४१	१५:२६	१६:५५
१२	१८:१७	१९:५३	२१:४८	००:०२	०२:२३	०४:३९	०६:५४	०९:१३	११:३२	१३:३७	१५:२२	१६:५१
१३	१८:१३	१९:४९	२१:४४	२३:५८	०२:१९	०४:३५	०६:५०	०९:०९	११:२८	१३:३३	१५:१८	१६:४७
१४	१८:०९	१९:४५	२१:४०	२३:५४	०२:१५	०४:३१	०६:४६	०९:०५	११:२४	१३:२९	१५:१४	१६:४३
१५	१८:०५	१९:४१	२१:३६	२३:५१	०२:११	०४:२७	०६:४२	०९:०१	११:२०	१३:२५	१५:१०	१६:३९
१६	१८:०१	१९:३७	२१:३२	२३:४७	०२:०७	०४:२३	०६:३८	०८:५७	११:१६	१३:२१	१५:०६	१६:३५
१७	१७:५७	१९:३३	२१:२८	२३:४३	०२:०३	०४:१९	०६:३४	०८:५३	११:१२	१३:१७	१५:०२	१६:३१
१८	१७:५३	१९:२९	२१:२५	२३:३९	०१:५९	०४:१५	०६:३०	०८:४९	११:०८	१३:१४	१४:५८	१६:२७
१९	१७:४९	१९:२५	२१:२१	२३:३५	०१:५५	०४:११	०६:२६	०८:४५	११:०४	१३:१०	१४:५४	१६:२३
२०	१७:४५	१९:२१	२१:१७	२३:३१	०१:५१	०४:०७	०६:२३	०८:४१	११:००	१३:०६	१४:५०	१६:१९
२१	१७:४१	१९:१७	२१:१३	२३:२७	०१:४७	०४:०३	०६:१९	०८:३७	१०:५६	१३:०२	१४:४६	१६:१५
२२	१७:३७	१९:१३	२१:०९	२३:२३	०१:४३	०४:००	०६:१५	०८:३३	१०:५२	१२:५८	१४:४२	१६:११
२३	१७:३३	१९:०९	२१:०५	२३:१९	०१:३९	०३:५६	०६:११	०८:२९	१०:४८	१२:५४	१४:३८	१६:०७
२४	१७:२९	१९:०५	२१:०१	२३:१५	०१:३५	०३:५२	०६:०७	०८:२६	१०:४४	१२:५०	१४:३४	१६:०३
२५	१७:२५	१९:०१	२०:५७	२३:११	०१:३१	०३:४८	०६:०३	०८:२२	१०:४०	१२:४६	१४:३०	१६:००

अक्टू·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
१०	**सिद्ध**·१ २५:२२ तक; **मृत्यु**·२ २५:२२ से;
११	**सर्वार्थ**·अ १७:०८ तक; **अमृत**·२ २५:१३ तक; **सिद्ध**·३ २५:१३ से;
१२	**मृत्यु**·३ २५:३६ तक; **सर्वार्थ**·कृ १७:४७ से;
१३	**मृत्यु**·४ २६:२९ तक; **सिद्ध**·५ २६:२९ से;
१४	**सिद्ध**·६ २७:५० से;
१५	**अमृत**·६ २९:३४ तक; **रवियोग**ःआ २३:१५ से;
१६	**रवियोग**ःआ २५:४३ तक; **त्रिपुष्कर**ः७+पुन २५:४३ से;
१७	**मृत्यु**·७ ०७:३४ तक; **सर्वार्थ**·पु २८:२० से; **द·ति**·८;
१८	**सिद्ध**·८ ०९:४१ तक; **द·ति**·८;
२०	**सिद्ध**·१० १३:३३ तक;
२१	**सिद्ध**·११ १५:०१ तक; **मृत्यु**·१२ १५:०१ से; **द·ति**·१२;
२२	**त्रिपुष्कर**ः१२+उफा १२:५८–१६:०२; **द·ति**·१२;
२३	**सर्वार्थ**·उफा १४:०८ तक; **सिद्ध**·१३ १६:३२ तक; **सर्वार्थ**·ह १४:०८ से;
२४	**अमृत**·३० १६:३२ से, **द·न**·चि ;
२५	**मृत्यु**·१ १६:०२ से;

❀ **दीपावली का समय–** दीपावली में दीपप्रदीपन और लक्ष्मीपूजा के तीन काल महत्वपूर्ण हैं – प्रदोषकाल, वृष और सिंह लग्न। सूर्यास्त के एक घण्टा बारह मिनट बाद तक प्रदोषकाल श्रेष्ठ होता है। इसके तत्काल बाद वृषलग्न होता है और सिंहलग्न प्रायः ढलती रात में आता है।

❀ **पूजन सामग्री–** धूप, गोघृतदीप, नैवेद्य,ऋतुफल, वस्त्र, रोली, मिष्ठान्न, लाजा, पंचामृत, बिल्व पत्र, कमल, कनेर, जाती, चम्पा, जूही, मालती, पारिजात पुष्प, तुलसी आदि।

❀ **हवन–** दीपावली की रात्रि में आम, बेल, अनार की लकड़ी पर खीर, बेलफल, लाजा,कमलगट्टा, लोंग, इलायची, कमलपुष्प से हवन करने का अमोघ फल होता है। **श्रीसूक्त के मन्त्रों का पाठ–हवन चमत्कारी होता है।** बिल्ववृक्ष के **मूल** में बैठकर जो श्रीसूक्त का जप करता है एक वर्ष के भीतर सुखी, धनाढ्य, प्रभावशाली हो जाता है। **"श्रीम्"** एकाक्षर मन्त्र का जप हवनकर्ता समृद्ध, दानदाता हो जाता है।

कार्तिक शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २६ अक्टूबर से ८ नवम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २६:१०:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वास्त; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अक्टू·	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२६ अक्टूबर से ८ नवम्बर
२६	१ बु	२१:११	१५:०४	स्वाती	२०:१२	१४:४०	प्रीति	१३:५१	१२:०८	बव	२१:११	बाल	४९:३५	२७:५३	६:३५	१७:४५	तुला	अहोरात्र	धूम्र	८	२६	**श्री गोवर्धन पूजा, अन्नकूटमहोत्सव (निर्णय पृष्ठ २०),**
२७	२ गु	१७:४३	१३:४१	विशा·	१८:२५	१३:५८	आयु·	०८:१५	०९:५४	कौल	१७:४३	तैति	४५:३९	२७:५०	६:३६	१७:४४	वृ·०३:५६	०८:१०	प्रवर्द्ध	९	२७	**भ्रातृ द्वितीया, भैया दूज, यम द्वितीया,** चित्रगुप्त पूजा,
२८	३ शु	१३:२२	११:५७	अनु·	१५:४८	१२:५६	सौभा· शोभन	०१:५५ ५३:०६	०७:२३ २८:३७	गर	१३:२२	वणि	४०:५६	२७:४६	६:३७	१७:४३	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	१०	२८	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,** छठ व्रतारम्भ नहाय खाय (बिहार)
२९	४ श	०८:१९	०९:५७	ज्ये·	१२:२९	११:३७	अतिग·	४७:३९	२५:४१	विष	०८:१९	बव	३५:३६	२७:४२	६:३७	१७:४२	ध·१२:२९	११:३७	मुसल	११	२९	श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रत द्वितीयदिन (खरना),
३०	५ र ६ र	०२:४५ ५४:०८	०७:४४ २९:२४	मूल	०८:४१	१०:०६	सुकर्मा	३९:५७	२२:३७	बाल	०२:४५	कौल	२९:५१	२७:३८	६:३८	१७:४१	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	१२	३०	**लाभ पंचमी,** श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतम् (सायंकालीन अर्घ्यदान)
३१	७ चं	५०:५३	२७:००	पू·षा·	०४:३४	०८:२८	धृति	३२:०६	१९:२९	गर	२३:५२	वणि	५०:५३	२७:३५	६:३९	१७:४०	म·१८:३१	१४:०३	उत्पात	१३	३१	अरुणोदये द्वितीयअर्घ्यदान, श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतपारणा,
नव·	८ मं	४४:५७	२४:३८	उ·षा· श्रवण	००:२० ५५:५६	०६:४७ २९:१०	शूल	२४:१६	१६:२१	विष	१७:५२	बव	४४:५७	२७:३१	६:३९	१७:४०	मकर	अहोरात्र	पद्म	१४	१	**श्री गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी,**
२	९ बु	३९:१९	२२:२३	धनि·	५२:३१	२७:४०	गण्ड	१६:३६	१३:१८	बाल	१२:०४	कौल	३९:१९	२७:२७	६:४०	१७:३९	कुं·२४:२०	१६:२४	मित्र	१५	२	**अक्षय नवमी, श्री आँवला नवमी,** कूष्माण्ड नवमी,
३	१० गु	३४:१०	२०:२०	शत·	४९:१७	२६:२३	वृद्धि	०९:१५	१०:२३	तैति	०६:३९	गर	३४:१०	२७:२४	६:४१	१७:३८	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	१६	३	
४	११ शु	२९:४१	१८:३४	पू·भा·	४६:४५	२५:२३	ध्रुव व्याघ·	०२:२३ ५३:४६	०७:३८ २९:०९	वणि	०१:४९	विष	२९:४१	२७:२०	६:४१	१७:३७	मी·३२:१८	१९:३६	ध्वांक्ष	१७	४	**श्री देवप्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त),**
५	१२ श	२६:०३	१७:०७	उ·भा·	४५:०६	२४:४४	हर्षण	५०:३६	२६:५६	बाल	२६:०३	कौल	५४:३७	२७:१७	६:४२	१७:३७	मीन	अहोरात्र	धूम्र	१८	५	**शनि प्रदोष व्रतम्,** चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः, **मन्वादि,**
६	१३ र	२३:२६	१६:०५	रेवती	४४:२९	२४:३०	वज्र	४५:५५	२५:०५	तैति	२३:२६	गर	५२:३३	२७:१३	६:४३	१७:३६	मे·४४:२९	२४:३०	प्रवर्द्ध	१९	६	श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस, श्रीराधावल्लभजी पाटोत्सव,
७	१४ चं	२१:५७	१५:३०	अश्वि·	४५:०१	२४:४७	सिद्धि	४२:०९	२३:३५	वणि	२१:५७	विष	५१:४१	२७:१०	६:४३	१७:३५	मेष	अहोरात्र	राक्षस	२०	७	**श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम्, पूर्णिमा व्रतम्,** चौमासी चौदस जैन
८	१५ मं	२१:४३	१५:२५	भरणी	४६:४७	२५:२७	व्यति·	३९:२२	२२:२९	बव	२१:४३	बाल	५२:०६	२७:०६	६:४४	१७:३५	मेष	अहोरात्र	मुसल	२१	८	**कार्तिक पूर्णिमा (स्नान–दान), देवदीपावली, खग्रास चन्द्रग्रहण,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

अक्टू नवम्ब	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
२६	१ बु	०६:०७:५२:२३	०६:१५:२५:५१	०१:२९:१९:४७	०६:००:०४:४८	११:०७:३१:०९	०६:१०:२५:३२	०९:२०:३७:४७	०६:२१:५९:३४	४३:५६:४१	द·११:५७:२०	+१६:५२	०७:११:५८
२७	२ गु	०६:०८:५२:२५	०६:२९:०५:३७	०१:२९:२५:१२	०६:०१:४४:०८	११:०७:२५:०५	०६:११:४०:३८	०९:२०:३८:३१	०६:२१:५६:२४	४३:५४:४७	द·१२:१८:४३	+१६:५९	०८:१४:०८
२८	३ शु	०६:०९:५२:३०	०७:१२:५८:४६	०१:२९:२९:५३	०६:०३:२४:१७	११:०७:१९:११	०६:१२:५५:४५	०९:२०:३९:२२	०६:२१:५३:१३	४३:५२:५४	द·१२:३९:५५	+१७:०६	०९:१६:४७
२९	४ श	०६:१०:५२:३६	०७:२७:०३:११	०१:२९:३३:५०	०६:०५:०५:०९	११:०७:१३:२६	०६:१४:१०:५४	०९:२०:४०:१९	०६:२१:५०:०२	४३:५१:०२	द·१३:००:५६	+१७:१२	१०:१९:४३
३०	५ र	०६:११:५२:४५	०८:११:१६:१३	०१:२९:३७:०१	०६:०६:४६:४२	११:०७:०७:५१	०६:१५:२६:०३	०९:२०:४१:२३	०६:२१:४६:५१	४३:४९:११	द·१३:२१:४४	+१७:१६	११:१९:२४
३१	७ चं	०६:१२:५२:५५	०८:२५:३४:४१	०१:२९:३९:२६	०६:०८:२८:५१	११:०७:०२:२७	०६:१६:४१:१४	०९:२०:४२:३३	०६:२१:४३:४०	४३:४७:२०	द·१३:४२:१९	+१७:२१	१२:१४:५९
नव·	८ मं	०६:१३:५३:०८	०९:०९:५५:०६	०१:२९:४१:०५	०६:१०:११:३२	११:०६:५७:१२	०६:१७:५६:२५	०९:२०:४३:५०	०६:२१:४०:२९	४३:४५:३०	द·१४:०२:४२	+१७:२४	१३:०५:५५
२	९ बु	०६:१४:५३:२३	०९:२४:१३:२८	०१:२९:४१:५८	०६:११:५४:४२	११:०६:५२:०९	०६:१९:११:३७	०९:२०:४५:१३	०६:२१:३७:१८	४३:४३:४१	द·१४:२२:५१	+१७:२६	१३:५०:५२
३	१० गु	०६:१५:५३:३९	१०:०८:२६:१६	०१:२९:४२:०४	०६:१३:३८:१८	११:०६:४७:१६	०६:२०:२६:५१	०९:२०:४६:४२	०६:२१:३४:०८	४३:४१:५३	द·१४:४२:४७	+१७:२८	१४:३२:४८
४	११ शु	०६:१६:५३:५८	१०:२२:३०:२३	०१:२९:४१:२२	०६:१५:२२:१५	११:०६:४२:३३	०६:२१:४२:०५	०९:२०:४८:१९	०६:२१:३०:५७	४३:४०:०६	द·१५:०२:२८	+१७:२९	१५:१०:२६
५	१२ श	०६:१७:५४:१९	११:०६:२३:०९	०१:२९:३९:५४	०६:१७:०६:३१	११:०६:३८:०२	०६:२२:५७:२१	०९:२०:५०:०१	०६:२१:२७:४६	४३:३८:२०	द·१५:२१:५४	+१७:२९	१५:४७:२६
६	१३ र	०६:१८:५४:४१	११:२०:०२:२८	०१:२९:३७:३७	०६:१८:५१:०२	११:०६:३३:४३	०६:२४:१२:३७	०९:२०:५१:५०	०६:२१:२४:३५	४३:३६:३५	द·१५:४१:०६	+१७:२८	१६:२३:४२
७	१४ चं	०६:१९:५५:०६	००:०३:२६:५६	०१:२९:३४:३२	०६:२०:३५:४५	११:०६:२९:३४	०६:२५:२७:५४	०९:२०:५३:४५	०६:२१:२१:२४	४३:३४:५१	द·१६:००:०२	+१७:२६	१७:००:०३
८	१५ मं	०६:२०:५५:३२	००:१६:३५:५२	०१:२९:३०:४०	०६:२२:२०:३७	११:०६:२५:३८	०६:२६:४३:१२	०९:२०:५५:४७	०६:२१:१८:१३	४३:३३:०८	द·१६:१८:४२	+१७:२३	१७:४०:३७

२९ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

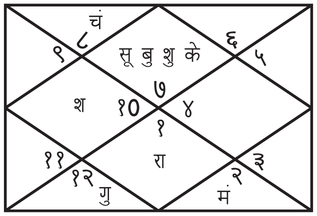

४ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

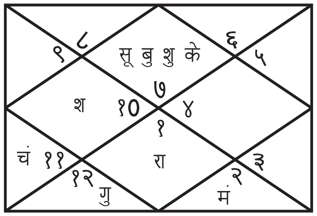

कार्तिक शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २६ अक्टूबर से ८ नवम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । यामयगोलः । ति·१५ अयनांशा:२२:५१:१३

दिनाङ्क अक्टू·	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
२६	१ बु	**जैन नवसंवत् २०५९ आरम्भः**, मार्गपाली;
२७	२ गु	**कलमदान पूजा**, विश्वकर्मा पूजा, यमुना स्नान;
२८	३ शु	**भद्रारम्भः२२: ५९घं·, गण्डान्तारम्भः २९:५८**, द·न·ज्ये;
२९	४ श	**भद्रान्तः ९:५७घं·, गण्डान्तः १७:१५**, स्वात्यांबुधः घं·२९:०३;
३०	५ र	सौभाग्यपञ्चमी, पाण्डव पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन);
३१	७ चं	**भद्रारम्भः २६:६०घं·, अभिजित नक्षत्रारम्भः ४६:२५**, कल्पादि, श्रीकार्तवीर्यसहस्रार्जुन जयन्ती;
नव·	८ मं	**भद्रान्तः १३:४८घं·, अभिजित नक्षत्रान्तः ४:०४;**
२	९ बु	**पंचकारम्भः १६:२४**, कृतयुगादि, जगधात्री पूजा (बंगाल), रंगनाथ जयन्ती, (१)
३	१० गु	**पंचक;** (१) विशाखायांशुक्रःघं·२२:०७;
४	११ शु	**पंचक, श्रीतुलसी विवाह, भीष्मपंचक आरम्भ, भद्रा ७:२५–१८:३४घं·;**
५	१२ श	**पंचक, गोवत्सद्वादशी**, हरिवासराभावः, गरुड़ द्वादशी;
६	१३ र	**पंचकान्तः २४:३०, गण्डान्तः १८:३१–३०:३१**, विशाखायांबुधः घं·२२:३२;
७	१४ चं	**भद्रा १५:३०–२७:२४घं·**, त्रिपुरोत्सव, विशाखायांरविः घं·०८:४१;
८	१५ मं	**आद्य श्रीमद्निम्बार्काचार्य जयन्ती, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, भीष्मपंचक समाप्त, श्री कार्तिकेय जयन्ती**, मन्वादि, व्यतीपात पुण्यं, कार्तिक स्नान समाप्तिः, श्री गुरुनानक जयन्ती;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:४७–१३:१६
१५	११:४७–१३:१४

*** खग्रास चन्द्रग्रहण ***
८ नवम्बर २०२२
सम्पूर्ण जानकारी पृष्ठ १७

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

❀ **यमद्वितीया**– कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमद्वितीया होती है। आज के दिन यमुना जी में स्नान कर यम का पूजन करने से यमलोक का दर्शन नहीं होता है। आज बहन का सत्कार करना चाहिए।

❀ **सूर्यषष्ठी (छठ व्रत)**– षष्ठी तिथि में सायं सूर्यार्घ्य दान तथा सप्तमी तिथि में उदित सूर्य को अर्घ्य दान देकर पारणा की जाती है। यह व्रत त्रिदिनात्मक होता है। बिहार में यह प्रमुख पर्व है।

❀ **कार्तिक शुक्ल नवमी** – धात्री नवमी को आंवला वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन करे, आंवला वृक्षारोपण करे। ''पीपल और आंवले को अगल बगल लगावे, बड़े हो जाने पर पीपल से धात्री का विवाह करे। इससे वही पुण्य होता है जो श्री तुलसी शालग्राम विवाह कराने का होता है।''–व्रतराज

❀ **कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी**– रात्रि में स्नानादि करके शयन करते हुए भगवान् श्रीहरि का अभिषेक कर, नृत्य–गीत–वाद्य और पुरुषसूक्त व विष्णुस्तोत्रों से भगवान् को जगावे। **उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज। उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।** आज श्रीविष्णु एवं तुलसीजी का विवाह सम्पन्न करे।

❀ **भीष्मपंचक (पचभीकम)** – यह व्रत प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक होता है। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यादि से लक्ष्मीनारायण का पूजन करके पाँच दिन तक निराहार, फलाहार, एकभुक्त, या नक्त व्रत करे। पूजन में सामान्य पूजा के सिवा– पहले दिन भगवान् के हृदय का कमल पुष्पों से, दूसरे दिन कटिप्रदेश का बिल्वपत्रों से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी (केवड़े) पुष्पों से, चौथे दिन चरणों का चमेली पुष्पों से और पाँचवें दिन सम्पूर्ण अंग का तुलसी की मंजरियों से पूजन करे। नित्यप्रति *'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'* के सौ, हजार या यथाशक्ति जप करे और व्रतान्त में पारणा के समय ब्राह्मणदम्पति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टू·	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२६	१७:२१	१८:५७	२०:५३	२३:०७	०१:२७	०३:४४	०५:५९	०८:१८	१०:३६	१२:४२	१४:२६	१५:५६
२७	१७:१८	१८:५३	२०:४९	२३:०३	०१:२३	०३:४०	०५:५५	०८:१४	१०:३३	१२:३८	१४:२२	१५:५२
२८	१७:१४	१८:४९	२०:४५	२२:५९	०१:१९	०३:३६	०५:५१	०८:१०	१०:२९	१२:३४	१४:१९	१५:४८
२९	१७:१०	१८:४६	२०:४१	२२:५५	०१:१५	०३:३२	०५:४७	०८:०६	१०:२५	१२:३०	१४:१५	१५:४४
३०	१७:०६	१८:४२	२०:३७	२२:५१	०१:११	०३:२८	०५:४३	०८:०२	१०:२१	१२:२६	१४:११	१५:४०
३१	१७:०२	१८:३८	२०:३३	२२:४७	०१:०८	०३:२४	०५:३९	०७:५८	१०:१७	१२:२२	१४:०७	१५:३६
नव·	१६:५८	१८:३४	२०:२९	२२:४३	०१:०४	०३:२०	०५:३५	०७:५४	१०:१३	१२:१८	१४:०३	१५:३२
२	१६:५४	१८:३०	२०:२५	२२:३९	०१:००	०३:१६	०५:३१	०७:५०	१०:०९	१२:१४	१३:५९	१५:२८
३	१६:५०	१८:२६	२०:२१	२२:३५	००:५६	०३:१२	०५:२७	०७:४६	१०:०५	१२:१०	१३:५५	१५:२४
४	१६:४६	१८:२२	२०:१७	२२:३२	००:५२	०३:०८	०५:२३	०७:४२	१०:०१	१२:०६	१३:५१	१५:२०
५	१६:४२	१८:१८	२०:१३	२२:२८	००:४८	०३:०४	०५:१९	०७:३८	०९:५७	१२:०२	१३:४७	१५:१६
६	१६:३८	१८:१४	२०:०९	२२:२४	००:४४	०३:००	०५:१५	०७:३४	०९:५३	११:५८	१३:४३	१५:१२
७	१६:३४	१८:१०	२०:०५	२२:२०	००:४०	०२:५६	०५:११	०७:३०	०९:४९	११:५४	१३:३९	१५:०८
८	१६:३०	१८:०६	२०:०२	२२:१६	००:३६	०२:५२	०५:०७	०७:२६	०९:४५	११:५०	१३:३५	१५:०४

अक्टू·	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग
२६	**अमृत**·१ १५:०४ तक; **सिद्ध**·२ १५:०४ से;
२७	**अमृत**·३ १३:४१ से; **सर्वार्थ**·अनु १३:५८ से;
२८	**सर्वार्थ**·अनु १२:५६ तक; **अमृत**·४ ११:५७ से; **रवियोग**:ज्ये १२:५६ से;
२९	**सिद्ध**·४ ०९:५७ तक; **रवियोग**:ज्ये ११:३७ तक; **मृत्यु**·५ ०९:५७ से;
३०	**सर्वार्थ**·मू १०:०६ तक; **अमृत**·५ ०७:४४ तक; **मृत्यु**·६ ०७:४४–२९:२४; **रवियोग**:पूषा १०:०६ से;
३१	**मृत्यु**·७ २७:०० तक; **रवियोग**:पूषा ०८:२८ तक;
नव·	**सिद्ध**·८ २४:३८ तक; द·न·उषा; **रवियोग**:ध २९:१० से;
२	**रवियोग**:ध २७:४० तक; द·न·ध; **रवियोग**:श २७:४० से;
३	**सिद्ध**·१० २०:२० तक; **रवियोग**:श २६:२३ तक;
४	**सिद्ध**·११ १८:३४ तक; **मृत्यु**·१२ १८:३४ से;
५	**रवियोग**:रे २४:४४ से, **द·ति**·१२, **द·न**·रे;
६	**सिद्ध**·१३ १६:०५ तक; **रवियोग**:रे २४:३० तक; **सर्वार्थ**·अ २४:३० से
७	**अमृत**·१५ १५:३० से; **रवियोग**:अ २४:४७ तक;
८	**मृत्यु**·१ १५:२५ से; **सर्वार्थ**·कृ २५:२७ से;

जो पाप आदि अपकर्म से तार दे उसे तीर्थ कहते हैं– तारयति पापादिकेभ्यः। जहाँ जाने, दर्शन करने से लौकिक–पारलौकिक दुःखोंसे मुक्ति मिलती हो उसे तीर्थ कहते हैं। गुरु, ऋषि की तप–स्थली, जल–प्रवाह और पवित्र क्षेत्र का सम्मिलन तीर्थ कहलाता है। भक्त, गुरु, माता–पिता, पति–पत्नी यह छह भी तीर्थ हैं। गुरु ज्ञान मूर्ति होने से तीर्थ होते हैं।

तीर्थ भेद– तपस्वी ब्राह्मण चलता फिरता जंगम तीर्थ है। पवित्र भाव मानस तीर्थ हैं। पृथ्वी पर विद्यमान पूज्यस्थल भौम तीर्थ हैं।

तीर्थ यात्रा का फल– भगवान परशुराम जी ने अपने तेज हरण के बाद तीर्थ यात्रा कर पुनः सभी लोकों को प्राप्त कर लिया।

तीर्थ यात्रा तप है पिकनिक नहीं– बिना जूता चप्पल पहने पैदल, उपवास पूर्वक, स्नान करके तीर्थदर्शन से अपूर्व फल की प्राप्ति होती है। तीर्थ में किया पाप वज्रलेप हो जाता है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ९ नवम्बर से २३ नवम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ९:११:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वास्त; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः;

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	तिथ्यन्तः घ·प·	तिथ्यन्तः घं:मि	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः घ·प·	नक्षत्रान्तः घं:मि	योग	योगान्तः घ·प·	योगान्तः घं:मि	क१	करणान्तः घ·प·	क२	करणान्तः घ·प·	दिनमानं घ·प·	सूर्योदयः घं:मि	सूर्यास्तः घं:मि	चन्द्र राशिप्रवेश राशि घ·प·	चन्द्र राशिप्रवेश घं:मि	आनंदादि योग	दिनाङ्कः सौर	दिनाङ्कः अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐 ९ नवम्बर से २३ नवम्बर
९	१ बु	२२:४७	१५:५२	कृत्ति·	४९:४८	२६:४०	वरी·	३७:३५	२१:४७	कौल	२२:४७	तैति	५३:४८	२७:०३	६:४५	१७:३५	वृ·०२:२४	०७:४२	सिद्धि	२२	९	**श्री कार्तिकमास व्रत पारणा,**
१०	२ गु	२५:०६	१६:४८	रोहि·	५३:६०	२८:२२	परिघ	३६:४५	२१:२७	गर	२५:०६	वणि	५६:४४	२७:००	६:४६	१७:३३	वृष	अहोरात्र	उत्पात	२३	१०	
११	३ शु	२८:३६	१८:१३	मृग·	५९:१४	३०:२८	शिव	३६:४६	२१:२९	विष	२८:३६	बव	६०:००	२६:५६	६:४६	१७:३३	मि·२६:२९	१७:२२	मानस	२४	११	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी,चन्द्रोदय घं·१९:५४**
१२	४ श	३३:०३	२०:००	आर्द्रा	६०:००	अहोरात्र	सिद्ध	३७:२९	२१:४७	बव	००:४३	बाल	३३:०३	२६:५३	६:४७	१७:३२	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	२५	१२	
१३	५ र	३८:०९	२२:०४	आर्द्रा	०५:१३	०८:५३	साध्य	३८:४०	२२:१६	कौल	०५:३२	तैति	३८:०९	२६:५०	६:४८	१७:३२	क·५५:०४	२८:४९	ध्वांक्ष	२६	१३	सुविधानाथ जयन्ती, दीक्षा दिवस (जैन)
१४	६ चं	४३:३२	२४:१३	पुन·	११:४१	११:२९	शुभ	४०:०२	२२:४९	गर	१०:४९	वणि	४३:३२	२६:४७	६:४९	१७:३१	कर्क	अहोरात्र	धूम्र	२७	१४	
१५	७ मं	४८:४२	२६:१८	पुष्य	१८:१०	१४:०५	शुक्ल	४१:१६	२३:२०	विष	१६:०९	बव	४८:४२	२६:४३	६:४९	१७:३१	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२८	१५	
१६	८ बु	५३:१७	२८:०९	आश्ले·	२४:१५	१६:३२	ब्रह्म	४२:०५	२३:४०	बाल	२१:०४	कौल	५३:१७	२६:४०	६:५०	१७:३०	सिं·२४:१५	१६:३२	राक्षस	२९	१६	**श्री कालभैरवाष्टमी, श्री कालाष्टमी,**
१७	९ गु	५६:५७	२९:३८	मघा	२९:३५	१८:४१	ऐन्द्र	४२:१५	२३:४५	तैति	२५:१४	गर	५६:५७	२६:३७	६:५१	१७:३०	सिंह	अहोरात्र	मुसल	३०	१७	वृश्चिक संक्रान्ति, अनलानवमी (उड़ीसा)
१८	१० शु	५९:२८	३०:३९	पू·फा·	३३:५४	२०:२५	वैधृ·	४१:३५	२३:३०	वणि	२८:२०	विष	५९:२८	२६:३४	६:५२	१७:३०	क·४९:४९	२६:४७	सिद्धि	१	१८	श्री जम्भेश्वर पुण्य दिवस (विश्नोई),
१९	११ श	६०:००	अहोरात्र	उ·फा·	३७:०४	२१:४२	विष्कु·	३९:५९	२२:५२	बव	३०:१५	बाल	६०:००	२६:३१	६:५३	१७:२९	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	२	१९	**श्री उत्पन्ना एकादशी (स्मार्त्त),**
२०	११ र	००:४३	०७:१०	हस्त	३८:५९	२२:२९	प्रीति	३७:२२	२१:५०	बाल	००:४३	कौल	३०:५३	२६:२९	६:५३	१७:२९	कन्या	अहोरात्र	मानस	३	२०	**श्री उत्पन्ना एकादशी (वैष्णव),**
२१	१२ चं १३ चं	००:४१ ५८:४५	०७:११ ३०:४१	चित्रा	३९:३९	२२:४६	आयु·	३३:४७	२०:२५	तैति	००:४१	गर	३०:१३	२६:२६	६:५४	१७:२९	तु·०९:२७	१०:४१	मुद्गर	४	२१	**सोम प्रदोष व्रतम्,**
२२	१४ मं	५७:००	२९:४३	स्वाती	३९:१०	२२:३५	सौभा·	२९:१५	१८:३७	विष	२८:२१	बव	५७:००	२६:२३	६:५५	१७:२८	तुला	अहोरात्र	ध्वज	५	२२	**मासशिवरात्रि व्रतम्,** बाला जयन्ती,
२३	३० बु	५३:३२	२८:२१	विशा·	३७:३७	२१:५९	शोभ·	२३:५१	१६:२८	चतु	२५:२३	नाग	५३:३२	२६:२१	६:५६	१७:२८	वृ·२३:०६	१६:१०	धाता	६	२३	**अमावस्या (देव–पितृकार्य),**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क नव·	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः (मा/व) रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
९	१ बु	०६:२१:५६:००	००:२९:२९:२३	०१:२९:२५:६०	०६:२४:०५:३५	११:०६:२१:५३	०६:२७:५८:३२	०९:२०:५७:५४	०६:२१:१५:०३	४३:३१:२६	द·१६:३७:०६	+१७:१९	१८:२०:१६
१०	२ गु	०६:२२:५६:३०	०१:१२:०८:२१	०१:२९:२०:३१	०६:२५:५०:३६	११:०६:१८:२०	०६:२९:१३:५२	०९:२१:००:०८	०६:२१:११:५२	४३:२९:४६	द·१६:५५:१३	+१७:१५	१९:०७:०७
११	३ शु	०६:२३:५७:०२	०१:२४:३४:२१	०१:२९:१४:१५	०६:२७:३५:३५	११:०६:१४:५९	०७:००:२९:१२	०९:२१:०२:२९	०६:२१:०८:४१	४३:२८:०७	द·१७:१३:०३	+१७:१०	१९:५४:११
१२	४ श	०६:२४:५७:३६	०२:०६:४९:३७	०१:२९:०७:११	०६:२९:२०:२७	११:०६:११:५०	०७:०१:४४:३४	०९:२१:०४:५५	०६:२१:०५:३०	४३:२६:२९	द·१७:३०:३५	+१७:०३	२०:४४:२२
१३	५ र	०६:२५:५८:११	०२:१८:५६:५९	०१:२८:५९:२०	०७:०१:०५:०८	११:०६:०८:५३	०७:०२:५९:५७	०९:२१:०७:२८	०६:२१:०२:१९	४३:२४:५२	द·१७:४७:४९	+१६:५६	२१:३७:२२
१४	६ चं	०६:२६:५८:४८	०३:००:५९:३९	०१:२८:५०:४१	०७:०२:४९:३६	११:०६:०६:०९	०७:०४:१५:२०	०९:२१:१०:०६	०६:२०:५९:०८	४३:२३:१७	द·१८:०४:४५	+१६:४८	२२:३०:१८
१५	७ मं	०६:२७:५९:२७	०३:१३:०१:१६	वक्री २८:४१:१७	०७:०४:३३:४८	११:०६:०३:३७	०७:०५:३०:४४	०९:२१:१२:५१	०६:२०:५५:५८	४३:२१:४४	द·१८:२१:२१	+१६:३९	२३:२४:२३
१६	८ बु	०६:२९:००:०८	०३:२५:०५:४८	०१:२८:३१:०६	०७:०६:१७:४०	११:०६:०१:१७	०७:०६:४६:०९	०९:२१:१५:४१	०६:२०:५२:४७	४३:२०:१२	द·१८:३७:३९	+१६:२९	००:१९:०१
१७	९ गु	०७:००:००:५०	०४:०७:१६:३७	०१:२८:२०:१०	०७:०८:०१:०८	११:०५:५९:१०	०७:०८:०१:३५	०९:२१:१८:३८	०६:२०:४९:३६	४३:१८:४१	द·१८:५३:३७	+१६:१८	०१:१२:५७
१८	१० शु	०७:०१:०१:३४	०४:१९:३६:४६	०१:२८:०८:३०	०७:०९:४४:११	११:०५:५७:१६	०७:०९:१७:०२	०९:२१:२१:४०	०६:२०:४६:२५	४३:१७:१३	द·१९:०९:१४	+१६:०६	०२:०७:२२
१९	११ श	०७:०२:०२:१९	०५:०२:०८:४७	०१:२७:५६:०६	०७:११:२६:४४	११:०५:५५:३४	०७:१०:३२:२९	०९:२१:२४:४९	०६:२०:४३:१४	४३:१५:४६	द·१९:२४:३२	+१५:५४	०३:०२:५६
२०	११ र	०७:०३:०३:०६	०५:१४:५४:३८	०१:२७:४२:६०	०७:१३:०८:४४	११:०५:५४:०५	०७:११:४७:५७	०९:२१:२८:०३	०६:२०:४०:०४	४३:१४:२०	द·१९:३९:२८	+१५:४०	०३:५९:४५
२१	१२ चं	०७:०४:०३:५५	०५:२७:५५:३२	०१:२७:२९:१२	०७:१४:५०:०७	११:०५:५२:४९	०७:१३:०३:२६	०९:२१:३१:२२	०६:२०:३६:५३	४३:१२:५७	द·१९:५४:०३	+१५:२६	०४:५८:१९
२२	१४ मं	०७:०५:०४:४५	०६:११:११:५९	०१:२७:१४:४४	०७:१६:३०:५०	११:०५:५१:४६	०७:१४:१८:५५	०९:२१:३४:४८	०६:२०:३३:४२	४३:११:३५	द·२०:०८:१६	+१५:११	०५:५९:४६
२३	३० बु	०७:०६:०५:३६	०६:२४:४३:४४	०१:२६:५९:३८	०७:१८:१०:५०	११:०५:५०:५५	०७:१५:३४:२५	०९:२१:३८:१९	०६:२०:३०:३१	४३:१०:१५	द·२०:२२:०७	+१४:५५	०७:०२:२१

१२ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

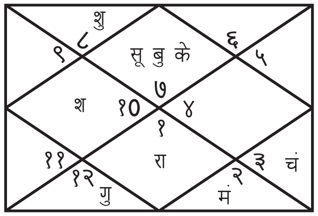

१९ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

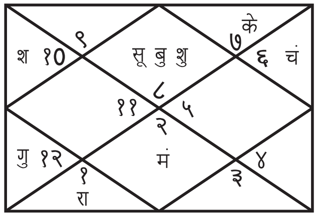

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ९ नवम्बर से २३ नवम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुः शरद वृश्चिकार्कतः ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:१५

दिनाङ्क नवम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
९	१ बु	अशून्य शयन व्रत;
१०	२ गु	वृश्चिकेशुक्रः घं·२१:२८, **भद्रारम्भः २९:२७घं·**;
११	३ शु	**भद्रान्तः १८:१३घं·**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत;
१२	४ श	वृश्चिकेबुधः घं·१५:५१;
१३	५ र	अनुराधायांशुक्रः घं·१३:११;
१४	६ चं	अनुराधायांबुधः घं·१३:४९, **भद्रारम्भः २४:१३घं·**;
१५	७ मं	**भद्रान्तः १३:१७घं·**, वक्रःकुजः घं·०७:५५;
१६	८ बु	**गण्डान्तः ९:५७–२३:०६, संक्रान्ति, मासान्तः**,वृश्चिकेरविः घं·३०:३१;
१७	९ गु	**वृश्चिक संक्रान्ति पुण्यकालं,६:५१–१३:१५घं·**;
१८	१० शु	**भद्रा १८:१२–३०:३९घं·**, मासादिः, वैधृति पुण्यम्;
१९	११ श	महावीर स्वामी दीक्षा दिवस (जैन);
२०	११ र	**श्री उन्मीलिनी महाद्वादशी**, अनुराधायांरविः घं·१३:३४;
२१	१२ चं	**भद्रारम्भः ३०:४१घं·**;
२२	१४ मं	ज्येष्ठायांबुधः घं·०९:०७, **भद्रान्तः १८:१५घं·**;
२३	३० बु	ज्येष्ठायांशुक्रः घं·२७:४७;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:४७–१३:१४
१५	११:५०–१३:१५

✻ मार्गशीर्ष मास कृत्य ✻

इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि यह मासों में शीर्ष पर स्थित होने के कारण अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण है। ***तत्रादौ मार्गशीर्षे तु प्रभातस्नानपूर्वकम्। पूजयेद्राधिकाकृष्णौ भक्त्या परमया सुधीः।। (वाराहपुराण)*** मार्गशीर्ष मास में प्रभातकाल में स्नानादिपूर्वक परम अनन्य भक्ति के साथ श्रीराधाकृष्ण की समर्चना करें।

✻ आठ–महाद्वादशी ✻

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। *उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी। जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी।। द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज।। (ब्रह्मवैवर्त)* इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं –

१.जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी **'उन्मीलिनी'** कहलाती है।

२.एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो **'वञ्जुलिनी'** महाद्वादशी होती है।

३.प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी **'त्रिस्पर्शा** होती है।

४.अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी **'पक्षवर्द्धिनी'** नाम से कही जाती है।

५.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'जया'** नाम महाद्वादशी होती है।

६.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'विजया'** नाम की महाद्वादशी होती है।

७.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह **'जयन्ती'** नाम की महाद्वादशी कहलाती है।

८.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'पापनाशिनी'** महाद्वादशी कहलाती है।

अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
९	१६:२६	१८:०२	१९:५८	२२:१२	००:३२	०२:४८	०५:०३	०७:२२	०९:४१	११:४६	१३:३१	१५:००
१०	१६:२२	१७:५८	१९:५४	२२:०८	००:२८	०२:४४	०४:५९	०७:१८	०९:३७	११:४३	१३:२७	१४:५६
११	१६:१८	१७:५४	१९:५०	२२:०४	००:२४	०२:४१	०४:५५	०७:१४	०९:३३	११:३९	१३:२३	१४:५२
१२	१६:१४	१७:५०	१९:४६	२२:००	००:२०	०२:३७	०४:५२	०७:१०	०९:२९	११:३५	१३:१९	१४:४८
१३	१६:१०	१७:४६	१९:४२	२१:५६	००:१६	०२:३३	०४:४८	०७:०६	०९:२५	११:३१	१३:१५	१४:४४
१४	१६:०६	१७:४२	१९:३८	२१:५२	००:१२	०२:२९	०४:४४	०७:०२	०९:२१	११:२७	१३:११	१४:४०
१५	१६:०२	१७:३८	१९:३४	२१:४८	००:०८	०२:२५	०४:४०	०६:५८	०९:१७	११:२३	१३:०७	१४:३६
१६	१५:५८	१७:३४	१९:३०	२१:४४	००:०४	०२:२१	०४:३६	०६:५४	०९:१३	११:१९	१३:०३	१४:३२
१७	१५:५४	१७:३०	१९:२६	२१:४०	००:००	०२:१७	०४:३२	०६:५०	०९:०९	११:१५	१२:५९	१४:२९
१८	१५:५०	१७:२६	१९:२२	२१:३६	२३:५६	०२:१३	०४:२८	०६:४७	०९:०५	११:११	१२:५५	१४:२५
१९	१५:४७	१७:२२	१९:१८	२१:३२	२३:५२	०२:०९	०४:२४	०६:४३	०९:०१	११:०७	१२:५१	१४:२१
२०	१५:४३	१७:१९	१९:१४	२१:२८	२३:४८	०२:०५	०४:२०	०६:३९	०८:५८	११:०३	१२:४८	१४:१७
२१	१५:३९	१७:१५	१९:१०	२१:२४	२३:४५	०२:०१	०४:१६	०६:३५	०८:५४	१०:५९	१२:४४	१४:१३
२२	१५:३५	१७:११	१९:०६	२१:२०	२३:४१	०१:५७	०४:१२	०६:३१	०८:५०	१०:५५	१२:४०	१४:०९
२३	१५:३१	१७:०७	१९:०२	२१:१६	२३:३७	०१:५३	०४:०८	०६:२७	०८:४६	१०:५१	१२:३६	१४:०५

नवम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
९	**सर्वार्थ**·कृ २६:४० तक; **अमृत**·१ १५:५२ तक; **सिद्ध**·२ १५:५२ से; **सर्वार्थ**·रो २६:४० से;
१०	**अमृत**·३ १६:३८ से;
११	**अमृत**·४ १८:१३ से;
१२	**सिद्ध**·४ २०:०० तक; **मृत्यु**·५ २०:०० से;
१३	**अमृत**·५ २२:०४ तक; **मृत्यु**·६ २२:०४ से;
१४	**सर्वार्थ**·पु– **रवियोग**:पु ११:२९ से; **सिद्ध**·६ २४:१३ तक; **मृत्यु**·७ २४:१३ से;
१५	**अमृत**·७ २६:१८ तक; **रवियोग**:पु १४:०५ तक; **सर्वार्थ**·आश्ले १४:०५ से; **सिद्ध**·८ २६:१८ से;
१६	**मृत्यु**·८ २८:०९ तक;
१७	**मृत्यु**·९ २९:३८ तक; **सिद्ध**·१० २९:३८ से;
१८	**सिद्ध**·११ ३०:३९ से, **द·ति**·१०;
१९	**अमृत**·११ अहोरात्र;
२०	**सर्वार्थ**·ह २२:२९ तक; **मृत्यु**·११ ०७:१० तक; **द्विपुष्कर**:१२+चि २२:२९ से;
२१	**मृत्यु**·१२ ०७:११ तक, **द·न**·चि;
२३	**सर्वार्थ**·अनु २१:५९ से; **अमृत**·१ २८:२१ तक;

❀ **व्रत के भेद–** व्रत के तीन भेद होते हैं, १· एकभुक्त व्रत, २·नक्तव्रत और ३·अयाचितव्रत।

❀ **एकभुक्त व्रत–** में रात्रि में उपवास कर दूसरे दिन दोपहर बाद पारणा करते हैं– *मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभुक्ते सदा तिथिः।*

❀ **नक्तव्रत–** दिन में उपवास रहकर रात्रि में पारणा करते हैं। इसमें प्रदोष में पारणा की जाती है– *प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तिथिः नक्तव्रते सदा।*

❀ **अयाचित व्रत–** बिना मांगे जो कुछ मिल जाये उसे खाकर रहना, न मिले तो नहीं खाना अयाचित व्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें केवल उपवास होता है पूजन गौण होता है।

❀ **व्रत निषेध–** अधिक मास, क्षय मास, गुरु, शुक्र के अस्त होने पर नया व्रत आरम्भ नहीं करते हैं न ही उद्यापन करते हैं।

❀ **व्रत में ग्राह्य–** सावा, नीवार, सिंघाड़ा, तिल, कंद, आलू, केला, नारियल, हरड़, पिपली, आवंला, गन्ना रस हमेशा व्रत में ग्राह्य होता है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २४ नवम्बर से ८ दिसम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २४:११:२०२२ वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वास्त; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; वक्री कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
नवम्ब	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२४ नवम्बर से ८ दिसम्बर
२४	१ गु	४९:१४	२६:३८	अनु·	३५:१२	२१:०१	अतिग·	१७:४१	१४:०१	किं	२१:२८	बव	४९:१४	२६:१८	६:५७	१७:२८	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	७	२४	भैरव षट्रात्र उत्सव आरम्भ (महाराष्ट्र),
२५	२ शु	४४:१२	२४:३८	ज्ये·	३२:०२	१९:४६	सुकर्मा	१०:५४	११:१९	बाल	१६:४७	कौल	४४:१२	२६:१५	६:५७	१७:२८	ध·३२:०२	१९:४६	सुस्थिर	८	२५	
२६	३ श	३८:४१	२२:२७	मूल	२८:२०	१८:१८	धृति शूल	०३:३७ ५२:२३	०८:२५ २९:२२	तैति	११:२९	गर	३८:४१	२६:१३	६:५८	१७:२७	धनु	अहोरात्र	गद	९	२६	**रम्भा तृतीया,**
२७	४ र	३२:५०	२०:०७	पू·षा·	२४:१७	१६:४२	गण्ड	४८:०८	२६:१४	वणि	०५:४७	विष्ट	३२:५०	२६:११	६:५९	१७:२७	म·३८:१४	२२:१७	शुभ	१०	२७	**अंगारकी वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,**
२८	५ चं	२६:५३	१७:४५	उ·षा·	२०:०५	१५:०२	वृद्धि	४०:१४	२३:०५	बाल	२६:५३	कौल	५३:५७	२६:०८	७:००	१७:२७	मकर	अहोरात्र	मृत्यु	११	२८	**श्रीविवाहपञ्चमी, श्रीसीताराम विवाहोत्सव,**
२९	६ मं	२१:०२	१५:२५	श्रवण	१५:५७	१३:२३	ध्रुव	३२:२८	२०:००	तैति	२१:०२	गर	४८:१३	२६:०६	७:०१	१७:२७	कुं·४३:५९	२४:३६	लुम्ब	१२	२९	**श्रीस्कन्दषष्ठी**, चम्पा षष्ठी, अन्नपूर्णा व्रतारम्भ,
३०	७ बु	१५:३०	१३:१३	धनि·	१२:०६	११:५२	व्याघ·	२४:५८	१७:०१	वणि	१५:३०	विष्ट	४२:५४	२६:०४	७:०१	१७:२७	कुंभ	अहोरात्र	मित्र	१३	३०	त्रितयसप्तमी, मित्रसप्तमी, विष्णुसप्तमी, नन्दासप्तमी,
दिस·	८ गु	१०:२६	११:१३	शत·	०८:४४	१०:३२	हर्षण	१७:५४	१४:१२	बव	१०:२६	बाल	३८:११	२६:०२	७:०२	१७:२७	मी·५१:४०	२७:४२	वज्र	१४	१	
२	९ शु	०६:०५	०९:२९	पू·भा·	०६:०३	०९:२८	वज्र	११:२४	११:३६	कौल	०६:०५	तैति	३४:१४	२६:००	७:०३	१७:२७	मीन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१५	२	महानन्दा नवमी,
३	१० श	०२:३५	०८:०६	उ·भा·	०४:१२	०८:४४	सिद्धि	०५:३५	०९:१८	गर	०२:३५	वणि	३१:१३	२५:५८	७:०४	१७:२७	मीन	अहोरात्र	धूम्र	१६	३	
४	११ र १२ र	००:०६ ५८:४२	०७:०७ ३०:३६	रेवती	०३:२०	०८:२५	व्यति· वरी·	००:३४ ५५:५५	०७:१८ २९:४०	विष्ट	००:०६	बव	२९:१८	२५:५६	७:०४	१७:२७	मे·०३:२०	०८:२५	प्रवर्द्ध	१७	४	**मोक्षदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), गीता जयन्ती,**
५	१३ चं	५८:४३	३०:३५	अश्वि·	०३:३७	०८:३२	परिघ	५३:२०	२८:२५	कौल	२८:३५	तैति	५८:४३	२५:५४	७:०५	१७:२७	मेष	अहोरात्र	राक्षस	१८	५	**सोम प्रदोष व्रतम्, श्री नारद जयन्ती (सम्प्रदायभेद)**
६	१४ मं	५९:५७	३१:०५	भरणी	०५:०७	०९:०९	शिव	५१:१२	२७:३५	गर	२९:१०	वणि	५९:५७	२५:५३	७:०६	१७:२७	वृ·२०:४१	१५:२२	मुसल	१९	६	
७	१५ बु	६०:००	अहोरात्र	कृत्ति·	०७:५१	१०:१५	सिद्ध	५०:०२	२७:०७	विष्ट	३१:०३	बव	६०:००	२५:५१	७:०७	१७:२७	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	२०	७	**पूर्णिमा व्रतम्**, श्री दत्तात्रेय जयन्ती,
८	१५ गु	०२:२६	०८:०६	रोहि·	११:४८	११:५१	साध्य	४९:४५	२७:०२	बव	०२:२६	बाल	३४:०८	२५:५०	७:०८	१७:२७	वृ·४४:१२	२४:४८	उत्पात	२१	८	**पूर्णिमा (स्नान–दान), श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा,**

✲ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✲

दिनाङ्क नवम्ब	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	वक्री मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः (मा/व) रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२४	१ गु	०७:०७:०६:२९	०७:०८:२९:४२	०१:२६:४३:५४	०७:१९:५०:०२	११:०५:५०:१८	०७:१६:४९:५५	०९:२१:४१:५५	०६:२०:२७:२०	४३:०८:५८	द·२०:३५:३६	+१४:३८	०७:०३:१०
२५	२ शु	०७:०८:०७:२४	०७:२२:२८:१०	०१:२६:२७:३४	०७:२१:२८:२३	११:०५:४९:५३	०७:१८:०५:२७	०९:२१:४५:३८	०६:२०:२४:०९	४३:०७:४२	द·२०:४८:४२	+१४:२०	०८:०५:४१
२६	३ श	०७:०९:०८:१९	०८:०६:३६:४५	०१:२६:१०:४१	०७:२३:०५:४८	११:०५:४९:४१	०७:१९:२०:५८	०९:२१:४९:२५	०६:२०:२०:५९	४३:०६:२८	द·२१:०१:२४	+१४:०१	०९:०८:३८
२७	४ र	०७:१०:०९:१७	०८:२०:५२:३१	०१:२५:५३:१५	०७:२४:४२:१३	मार्गी ०५:४९:४२	०७:२०:३६:३१	०९:२१:५३:१८	०६:२०:१७:४८	४३:०५:१७	द·२१:१३:४३	+१३:४२	१०:०४:१०
२८	५ चं	०७:११:१०:१५	०९:०५:१२:११	०१:२५:३५:१९	०७:२६:१७:३१	११:०५:४९:५६	०७:२१:५२:०३	०९:२१:५७:१६	०६:२०:१४:३७	४३:०४:०८	द·२१:२५:३८	+१३:२२	१०:५९:३८
२९	६ मं	०७:१२:११:१५	०९:१९:३१:५९	०१:२५:१६:५४	०७:२७:५१:३८	११:०५:५०:२३	०७:२३:०७:३७	०९:२२:०१:२०	०६:२०:११:२६	४३:०३:०१	द·२१:३७:०९	+१३:०१	११:४४:५१
३०	७ बु	०७:१३:१२:१६	१०:०३:४८:०२	०१:२४:५८:०४	०७:२९:२४:२८	११:०५:५१:०३	०७:२४:२३:११	०९:२२:०५:२९	०६:२०:०८:१५	४३:०१:५६	द·२१:४८:१५	+१२:३९	१२:२९:४८
दिस·	८ गु	०७:१४:१३:१८	१०:१७:५७:०३	०१:२४:३८:५०	०८:००:५५:५५	११:०५:५१:५५	०७:२५:३८:४५	०९:२२:०९:४३	०६:२०:०५:०५	४३:००:५३	द·२१:५८:५६	+१२:१७	१३:०७:५६
२	९ शु	०७:१५:१४:२२	११:०१:५६:०६	०१:२४:१९:१४	०८:०२:२५:५३	११:०५:५३:००	०७:२६:५४:२०	०९:२२:१४:०२	०६:२०:०१:५४	४२:५९:५३	द·२२:०९:१२	+११:५४	१३:४५:२७
३	१० श	०७:१६:१५:२७	११:१५:४२:४६	०१:२३:५९:१९	०८:०३:५४:१४	११:०५:५४:१८	०७:२८:०९:५५	०९:२२:१८:२६	०६:१९:५८:४३	४२:५८:५६	द·२२:१९:०३	+११:३०	१४:५७:३४
४	११ र	०७:१७:१६:३३	११:२९:१५:१६	०१:२३:३९:०७	०८:०५:२०:५१	११:०५:५५:४९	०७:२९:२५:३०	०९:२२:२२:५५	०६:१९:५५:३२	४२:५८:०१	द·२२:२८:२७	+११:०५	१४:५८:२१
५	१३ चं	०७:१८:१७:४०	००:१२:३२:३०	०१:२३:१८:४१	०८:०६:४५:३७	११:०५:५७:३२	०८:००:४१:०६	०९:२२:२७:२९	०६:१९:५२:२१	४२:५७:०८	द·२२:३७:२५	+१०:४०	१५:३८:०१
६	१४ मं	०७:१९:१८:४८	००:२५:३४:१०	०१:२२:५८:०३	०८:०८:०८:२३	११:०५:५९:२८	०८:०१:५६:४२	०९:२२:३२:०७	०६:१९:४९:११	४२:५६:१८	द·२२:४५:५७	+१०:१५	१६:१८:१८
७	१५ बु	०७:२०:१९:५७	०१:०८:२०:४३	०१:२२:३७:१७	०८:०९:२८:६०	११:०६:०१:३७	०८:०३:१२:१८	०९:२२:३६:५१	०६:१९:४५:६०	४२:५५:३१	द·२२:५४:०२	+ ९:४८	१७:०२:११
८	१५ गु	०७:२१:२१:०८	०१:२०:५३:२१	०१:२२:१६:२४	०८:१०:४७:१८	११:०६:०३:५८	०८:०४:२७:५५	०९:२२:४१:३९	०६:१९:४२:४९	४२:५४:४६	द·२३:०१:४०	+ ९:२१	१७:४९:४८

२७ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:४

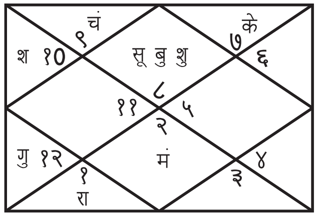

४ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

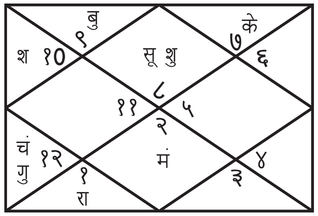

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २४ नवम्बर से ८ दिसम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशा:२२:५१:१७

दिनाङ्क नवम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२४	१ गु	शुक्रःपश्चिमोदितः घं·२३:५०;
२५	२ शु	**गण्डान्तः १४:०६–२५:२५**;
२६	३ श	;
२७	४ र	**भद्रा ९:१८–२०:०७घं·**, मार्गी गुरुःघं· २९:१५;
२८	५ चं	**अभिजित नक्षत्रः ६:०७–२३:४८**, गुरु तेगबहादुर पुण्यदिवस;
२९	६ मं	**पंचकारंभः २४:३६**, श्री मार्तण्ड भैरवोत्थापन (महाराष्ट्र), मित्र सप्तमी;
३०	७ बु	**पंचक**, **भद्रा १३:१३–२४:११घं·**, मूलेधनुषिबुधः घं·१६:१९;
दिस·	८ गु	**पंचक**, बुधःपश्चिमोदितः घं·२१:२५;
२	९ शु	**पंचक**, चित्रायांकेतुः घं·२१:२२; ① ज्येष्ठायांरविः घं·१६:४७, द·ति·१०, द·न·रे;
३	१० श	**पंचक**, **भद्रारम्भः १९:३३घं·**, **गण्डान्तारम्भः २६:२७**, ①
४	११ र	**पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी**, **पंचकान्तः ८:२५**, **भद्रान्तः ७:०७घं·**, **व्यञ्जन द्वादशी**, ②
५	१३ चं	; ② **गण्डान्तः १४:२४**, **मत्स्यद्वादशी**, अखण्डद्वादशी, व्यतीपात पुण्यं,
६	१४ मं	**भद्रारम्भः ३१:०५घं·**, त्रिपुरभैरव जयन्ती;
७	१५ बु	**भद्रान्तः १९:३२घं·**; ② मूलेधनुषिशुक्रःघं·१८:०२, रोहिण्यांमङ्गलः घं·२९:३३;
८	१५ गु	श्री त्रिपुरभैरवी जयन्ती, मार्गशीर्ष पूर्णिमा;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५१–१३:१५
१५	११:५६–१३:१९

❀ वारों में करणीय अनुकूल कार्य ❀

❀ **रविवार** को राज्याभिषेक, उत्सव, वाहन क्रय-विक्रय, सेवा नौकरी, गो, अग्नि, मन्त्र से सम्बन्धित कर्म, औषध, शास्त्र, स्वर्ण, ताँबा, ऊन, चमड़ा, काष्ठ, युद्ध और व्यापारादि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए। चित्रकला, धातुकला, आभूषण निर्माण, बाजार सम्बन्धी कार्य भी रविवार को होता है।

❀ **सोमवार** को शंख, कमल, मोती, चाँदी, ईख, भोजन सम्बन्धी कार्य, स्त्री, वृक्ष, कृषि-कर्म, जल, आभूषण, गीत, यज्ञ, दुग्ध, पुष्प, विद्यारम्भ, वास्तुकर्म, नृत्यारम्भ आदि कार्य करना चाहिए।

❀ **मंगलवार** को भेद नीति, झूठ, चोरी, आरोप, जहर, अग्नि, शस्त्र, बंधन, अभिघात, युद्ध, कपट, दंभ, सैन्यकर्म, खनिज कर्म, स्वर्ण, धातु, मूँगा, रक्त एवं लाल वस्तु से सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ **बुधवार** को विद्या, चातुर्य, पुण्य, कल्प, शिल्पविद्या, नौकरी, लेखन लिपि, धातुकर्म, स्वर्ण, युक्ति, मित्रता, व्यायाम, वाद विवाद, गणितविद्या, वेदाध्ययन, नैपुण्य कर्म आदि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए।

❀ **गुरूवार** को धार्मिक, पौष्टिक, यंत्र, विद्या, मांगल्य सुवर्ण, वस्त्र, घर, यात्रा, रथ, घोड़ा, औषध, आभूषण, उद्यान सम्बन्धित व शुभकार्य करना चाहिए।

❀ **शुक्रवार** को स्त्री, संगीत, शय्या, मणि, रत्न, गंध, वस्त्र, उत्सव, अलंकार, भूमि, व्यापार, गौ, द्रव्य, कोष, कृषि, हीरा, मोती, चाँदी, सुगन्ध, उद्यान, पुष्प, रचनात्मक, अश्वकर्म आदि अनेक शुभ कार्य किये जाते हैं।

❀ **शनिवार** को लोहा, पत्थर, जस्ता, शीशा, पीतल, नौकर, शस्त्र, झूठ, पाप, चोरी, विष, निंद्यकर्म, शराब, निर्माणादि, वाहन क्रय, गृहप्रवेश, दीक्षा, स्थिर कर्म, गदहा, ऊँट, तुलादान, शनि सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ बाल दृष्टि (नजर) दोष निवारण ❀

छोटे, सुकुमार, सुन्दर, सजे, हंसमुख और वाचाल बच्चों पर दृष्टि (नजर) दोष लग जाने से वे बीमार हो जाते हैं, या रुदन करने लगते हैं।

दृष्टिदोष उतारने की भस्मधारणविधि– हवन के भस्म या पवित्राग्नि भस्म को अभिमंत्रित कर बच्चे के शिर, ललाट, हृदय आदि अंगों पर लगाना चाहिए। मंत्र यह है–

वासुदेवो जगन्नाथः पूतना तर्जनो हरिः।
रक्षतु त्वरितो बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।१।
कृष्ण रक्ष शिशुं शंख-मधु-कैटभमर्दन।
प्रातः संगव-मध्याह्न-सायांह्नेषु संध्ययोः ।२।
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदन।
पद्मोरगपिशाचांश्च ग्रहान्मातृग्रहान्नपि ।३।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।
त्राहि-त्राहि हरे! नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।४।

दृष्टिदोष उतारने की यन्त्रधारण विधि– भोजपत्र पर अष्टांध की स्याही या लाल स्याही से निम्न मंत्र को लिखकर उसे धूप-दीप दिखाकर बालक के बाहुमूल में बाँधने से नजर दूर होता है।

रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२४	१५:२७	१७:०३	१८:५८	२१:१३	२३:३३	०१:४९	०४:०४	०६:२३	०८:४२	१०:४७	१२:३२	१४:०१
२५	१५:२३	१६:५९	१८:५४	२१:०९	२३:२९	०१:४५	०४:००	०६:१९	०८:३८	१०:४३	१२:२८	१३:५७
२६	१५:१९	१६:५५	१८:५०	२१:०५	२३:२५	०१:४१	०३:५६	०६:१५	०८:३४	१०:३९	१२:२४	१३:५३
२७	१५:१५	१६:५१	१८:४६	२१:०१	२३:२१	०१:३७	०३:५२	०६:११	०८:३०	१०:३५	१२:२०	१३:४९
२८	१५:११	१६:४७	१८:४२	२०:५७	२३:१७	०१:३३	०३:४८	०६:०७	०८:२६	१०:३१	१२:१६	१३:४५
२९	१५:०७	१६:४३	१८:३९	२०:५३	२३:१३	०१:२९	०३:४४	०६:०३	०८:२२	१०:२७	१२:१२	१३:४१
३०	१५:०३	१६:३९	१८:३५	२०:४९	२३:०९	०१:२६	०३:४१	०५:५९	०८:१८	१०:२३	१२:०८	१३:३७
दिस·	१४:५९	१६:३५	१८:३१	२०:४५	२३:०५	०१:२२	०३:३७	०५:५५	०८:१४	१०:१९	१२:०४	१३:३३
२	१४:५५	१६:३१	१८:२७	२०:४१	२३:०१	०१:१८	०३:३३	०५:५२	०८:१०	१०:१६	१२:००	१३:२९
३	१४:५१	१६:२७	१८:२३	२०:३७	२२:५७	०१:१४	०३:२९	०५:४८	०८:०६	१०:१२	११:५६	१३:२५
४	१४:४७	१६:२३	१८:१९	२०:३३	२२:५३	०१:१०	०३:२५	०५:४४	०८:०२	१०:०८	११:५२	१३:२१
५	१४:४३	१६:१९	१८:१५	२०:२९	२२:४९	०१:०६	०३:२१	०५:४०	०७:५८	१०:०४	११:४८	१३:१७
६	१४:३९	१६:१५	१८:११	२०:२५	२२:४५	०१:०२	०३:१७	०५:३६	०७:५४	१०:००	११:४४	१३:१३
७	१४:३५	१६:११	१८:०७	२०:२१	२२:४१	००:५८	०३:१३	०५:३२	०७:५०	०९:५६	११:४०	१३:१०
८	१४:३१	१६:०७	१८:०३	२०:१७	२२:३७	००:५४	०३:०९	०५:२८	०७:४६	०९:५२	११:३६	१३:०६

नवम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२४	**सर्वार्थ**·अनु २१:०१ तक;
२५	**मृत्यु**·२ २४:३८ तक; **द·न**·ज्ये;
२६	**रवियोग**:पूषा १८:१८ से; **सिद्ध**·४ २२:२७ से;
२७	**रवियोग**:पूषा १६:४२ तक; **सर्वार्थ**·उषा १६:४२ से; **अमृत**·५ २०:०७ से;
२८	**अमृत**·५ १७:४५ तक; **सर्वार्थ**·श्र–**रवियोग**:श्र १५:०२ से; **सिद्ध**·६ १७:४५ से;
२९	**मृत्यु**·६ १५:२५ तक; **रवियोग**:श्र १३:२३ तक; **अमृत**·७ १५:२५ से; **द्विपुष्कर**:७+ध १५:२५ से अगले सूर्योदय तक;
३०	**सिद्ध**·७ १३:१३ तक; **द·न**·ध; **मृत्यु**·८ १३:१३ से;
दिस·	**अमृत**·८ ११:१३ तक; **रवियोग**:पूभा १०:३२ से; **मृत्यु**·९ ११:१३ से;
२	**अमृत**·९ ०९:२९ तक; **रवियोग**:पूभा–उभा अहोरात्र, **द·ति**·१०;
३	**मृत्यु**·१० ०८:०३ तक; **रवियोग**:उभा–रे अहोरात्र; **अमृत**·११ ०८:०३ से
४	**मृत्यु**·११ ०७:०७ तक; **रवियोग**:रे ०८:२५ तक; **सर्वार्थ**·अ ०८:२५ से; **सिद्ध**·१३ ३०:३६ से;
६	**सर्वार्थ**·कृ–**रवियोग**:कृ ०९:०९ से;
७	**सर्वार्थ**·कृ–रो अहोरात्र; **रवियोग**:कृ १०:१५ तक; **सिद्ध**·१५ अहोरात्र;

श्रीकृष्ण ने गीताजी में कहा है कि "मासानां *मार्गशीर्षोऽहं*" अतः यह माह अत्यंत पवित्र है। मार्गशीर्ष में यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वन में जाकर परम भक्ति से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें। **श्रीमोक्षदा एकादशी** व्रत एवं **श्रीगीता जयन्ती** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी **श्रीव्यंजन द्वादशी** कहलाती है, विभिन्न व्यञ्जनों का श्रीठाकुर जी को भोग लगावें। इसी दिन कल्पभेद से **श्रीनारद जयन्ती** होती है, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य आदि समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम–घूमकर प्रचार–प्रसार करने वाले कीर्तनकला विशेषज्ञ देवर्षिवर्य श्रीनारद जी सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते हैं।

पौष कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर, २०२२ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ९:१२:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; वक्री कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
दिसम्ब	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर
९	१ शु	०६:०५	०९:३४	मृग.	१६:५०	१३:५२	शुभ	५०:१४	२७:१४	कौल	०६:०५	तैति	३८:१७	२५:४८	७:०८	१७:२८	मिथुन	अहोरात्र	मानस	२२	९	रसिकमाधुरी जयन्ती,
१०	२ श	१०:४१	११:२५	आर्द्रा	२२:४३	१६:१४	शुक्ल	५१:१५	२७:३९	गर	१०:४१	वणि	४३:१४	२५:४७	७:०९	१७:२८	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	२३	१०	मानवाधिकार दिवस,
११	३ र	१५:५४	१३:३१	पुन.	२९:०७	१८:४९	ब्रह्म	५२:३४	२८:११	विष	१५:५४	बव	४८:३८	२५:४६	७:१०	१७:२८	क.१२:२९	१२:०९	ध्वज	२४	११	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं.२०:२३**
१२	४ चं	२१:२१	१५:४३	पुष्य	३५:४०	२१:२६	ऐन्द्र	५३:५१	२८:४३	बाल	२१:२१	कौल	५४:०१	२५:४४	७:१०	१७:२८	कर्क	अहोरात्र	धाता	२५	१२	
१३	५ मं	२६:३४	२९:४९	आश्ले.	४१:५३	२३:५६	वैधृ.	५४:४८	२९:०६	तैति	२६:३४	गर	५८:५८	२५:४३	७:११	१७:२९	सिं.४१:५३	२३:५६	आनन्द	२६	१३	वैधृति पुण्यम्,
१४	६ बु	३१:०९	१९:४०	मघा	४७:२६	२३:१०	विष्कु.	५५:११	२९:१६	वणि	३१:०९	विष	६०:००	२५:४३	७:१२	१७:२९	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	२७	१४	
१५	७ गु	३४:४८	२१:०८	पू.फा.	५२:०२	२८:०१	प्रीति	५४:४६	२९:०७	विष	०३:०७	बव	३४:४८	२५:४२	७:१२	१७:२९	सिंह	अहोरात्र	गद	२८	१५	
१६	८ शु	३७:१८	२२:०८	उ.फा.	५५:२९	२९:२५	आयु.	५३:२८	२८:३६	बाल	०६:१२	कौल	३७:१८	२५:४१	७:१३	१७:३०	क.०७:६०	१०:२५	शुभ	२९	१६	**श्री कालाष्टमी**, धनु मलमास प्रारम्भ,
१७	९ श	३८:३२	२२:३९	हस्त	५७:४२	३०:१९	सौभा.	५१:११	२७:४२	तैति	०८:०५	गर	३८:३२	२५:४०	७:१४	१७:३०	कन्या	अहोरात्र	मृत्यु	१	१७	अन्वष्टका श्राद्ध,
१८	१० र	३८:२८	२२:३८	चित्रा	५८:४१	३०:४३	शोभ.	४७:५४	२६:२४	वणि	०८:४०	विष	३८:२८	२५:४०	७:१४	१७:३०	तु.२८:२१	१८:३५	पद्म	२	१८	**श्रीपार्श्वनाथ जन्मकल्याणक जयन्ती (जैन)**,
१९	११ चं	३७:०९	२२:०७	स्वाती	५८:२८	३०:३८	अतिग.	४३:३९	२४:४३	बव	०७:५८	बाल	३७:०९	२५:३९	७:१५	१७:३१	तुला	अहोरात्र	छत्र	३	१९	**सफला एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**, मन्वादि,
२०	१२ मं	३४:४१	२१:०८	विशा.	५७:११	३०:०८	सुकर्मा	३८:३१	२२:४०	कौल	०६:०३	तैति	३४:४१	२५:३९	७:१६	१७:३१	वृ.४२:३६	२४:१८	श्रीवत्स	४	२०	सुरूपा द्वादशी (गुजरात),
२१	१३ बु	३१:१२	१९:४५	अनु.	५४:५८	२९:१५	धृति	३२:३६	२०:१८	गर	०३:०३	वणि	३१:१२	२५:३९	७:१६	१७:३२	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	५	२१	**प्रदोष व्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्,**
२२	१४ गु	२६:५३	१८:०२	ज्ये.	५१:५९	२८:०४	शूल	२६:००	१७:४१	शकु	२६:५३	चतु	५४:२६	२५:३९	७:१७	१७:३२	ध.५१:५९	२८:०४	कालदंड	६	२२	
२३	३० शु	२१:५१	१६:०२	मूल	४८:२४	२६:३९	गण्ड	१८:५१	१४:५०	नाग	२१:५१	किं	४९:०९	२५:३९	७:१७	१७:३३	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	७	२३	**अमावस्या (देव–पितृकार्य)**,

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क दिसम्ब	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	वक्री मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
९	१ शु	०७:२२:२२:१९	०२:०३:१३:५७	०१:२१:५५:२९	०८:१२:०३:०८	११:०६:०६:३१	०८:०५:४३:३२	०९:२२:४६:३२	०६:१९:३९:३८	४२:५४:०५	द.२३:०८:५१	+ ८:५४	१८:३७:४२
१०	२ श	०७:२३:२३:३१	०२:१५:२५:०४	०१:२१:३४:३७	०८:१३:१६:१८	११:०६:०९:१७	०८:०६:५९:०९	०९:२२:५१:२९	०६:१९:३६:२७	४२:५३:२५	द.२३:१५:३४	+ ८:२६	१९:३०:५८
११	३ र	०७:२४:२४:४४	०२:२७:२९:४१	०१:२१:१३:५०	०८:१४:२६:३७	११:०६:१२:१५	०८:०८:१४:४६	०९:२२:५६:३१	०६:१९:३३:१७	४२:५२:४९	द.२३:२१:५०	+ ७:५७	२०:२३:४९
१२	४ चं	०७:२५:२५:५९	०३:०९:३१:१०	०१:२०:५३:१२	०८:१५:३३:५३	११:०६:१५:२६	०८:०९:३०:२३	०९:२३:०१:३७	०६:१९:३०:०६	४२:५२:१६	द.२३:२७:३७	+ ७:२८	२१:१७:२८
१३	५ मं	०७:२६:२७:१४	०३:२१:३३:२७	०१:२०:३२:४४	०८:१६:३७:५२	११:०६:१८:४८	०८:१०:४६:००	०९:२३:०६:४८	०६:१९:२६:५५	४२:५१:४५	द.२३:३२:५७	+ ६:५९	२२:११:३९
१४	६ बु	०७:२७:२८:३०	०४:०३:४०:१२	०१:२०:१२:२९	०८:१७:३८:२१	११:०६:२२:२३	०८:१२:०१:३८	०९:२३:१२:०३	०६:१९:२३:४४	४२:५१:१७	द.२३:३७:४८	+ ६:२९	२३:०५:४३
१५	७ गु	०७:२८:२९:४६	०४:१५:५४:४१	०१:१९:५२:२९	०८:१८:३५:०५	११:०६:२६:०९	०८:१३:१७:१५	०९:२३:१७:२२	०६:१९:२०:३४	४२:५०:५२	द.२३:४२:११	+ ५:५९	२३:५९:२६
१६	८ शु	०७:२९:३१:०४	०४:२८:१९:४२	०१:१९:३२:४८	०८:१९:२७:४९	११:०६:३०:०८	०८:१४:३२:५२	०९:२३:२२:४५	०६:१९:१७:२३	४२:५०:३१	द.२३:४६:०६	+ ५:२९	००:५४:२२
१७	९ श	०८:००:३२:२२	०५:१०:५७:३२	०१:१९:१३:२७	०८:२०:१६:१८	११:०६:३४:१८	०८:१५:४८:२९	०९:२३:२८:१२	०६:१९:१४:१२	४२:५०:१२	द.२३:४९:३१	+ ४:५८	०१:५०:१६
१८	१० र	०८:०१:३३:४१	०५:२३:४९:५०	०१:१८:५४:२९	०८:२१:००:१५	११:०६:३८:४०	०८:१७:०४:०६	०९:२३:३३:४४	०६:१९:११:०१	४२:४९:५६	द.२३:५२:२८	+ ४:२७	०२:४७:२६
१९	११ चं	०८:०२:३५:०१	०६:०६:५७:३०	०१:१८:३५:५५	०८:२१:३९:२३	११:०६:४३:१४	०८:१८:१९:४३	०९:२३:३९:१९	०६:१९:०७:५१	४२:४९:४३	द.२३:५४:५६	+ ३:५६	०३:४७:३१
२०	१२ मं	०८:०३:३६:२२	०६:२०:२०:४०	०१:१८:१७:४९	०८:२२:१३:२६	११:०६:४७:५९	०८:१९:३५:२०	०९:२३:४४:५८	०६:१९:०४:४०	४२:४९:३३	द.२३:५६:५४	+ ३:२५	०४:४९:१६
२१	१३ बु	०८:०४:३७:४३	०७:०३:५८:४४	०१:१८:००:११	०८:२२:४२:०९	११:०६:५२:५५	०८:२०:५०:५६	०९:२३:५०:४१	०६:१९:०१:२९	४२:४९:२६	द.२३:५८:२४	+ २:५३	०५:५१:१७
२२	१४ गु	०८:०५:३९:०५	०७:१७:५०:१९	०१:१७:४३:०४	०८:२३:०५:१४	११:०६:५८:०३	०८:२२:०६:३३	०९:२३:५६:२८	०६:१८:५८:१८	४२:४९:२२	द.२३:५९:२४	+ २:२१	०६:५३:५१
२३	३० शु	०८:०६:४०:२७	०८:०१:५३:२३	०१:१७:२६:२९	०८:२३:२२:२९	११:०७:०३:२२	०८:२३:२२:०९	०९:२४:०२:१८	०६:१८:५५:०८	४२:४९:२२	द.२३:५९:५५	+ १:५०	०७:५२:११

१२ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:४

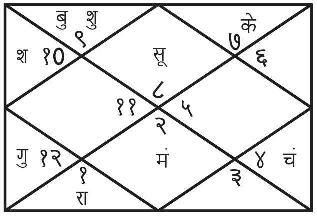

१९ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

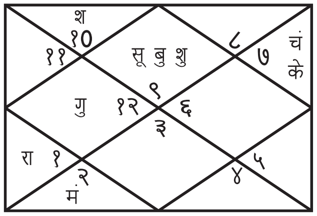

पौष कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:१९

दिनाङ्क दिसम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
९	१ शु	;
१०	२ श	**भद्रारम्भः २४:२७घं·**, पूर्वाषाढ़ेबुधः घं·०८:२४;
११	३ र	**भद्रान्तः १३:३१घं·**;
१२	४ चं	;
१३	५ मं	**गण्डान्तः १७:२०–३०:३१**;
१४	६ बु	**भद्रारम्भः १९:४०घं·**;
१५	७ गु	**भद्रान्तः ८:२७घं·**, **मासान्तः**, पूर्वाषाढ़ेशुक्रः घं·०८:०५, ⓘ
१६	८ शु	**धनु संक्रान्ति पुण्यकालं,११:३०–१७:३०घं·**, मूलेधनुषिरविः घं·१८:३३;
१७	९ श	**मासादिः**;
१८	१० र	**भद्रा १०:४२–२२:३८घं·**; ⓘ धनिष्ठायांशनिः घं·१९:००;
१९	११ चं	**त्रिस्पर्शा महाद्वादशी**;
२०	१२ मं	;
२१	१३ बु	**भद्रा १९:४५–३०:५४घं·**, मुनि चन्द्रप्रभु जयन्ती;
२२	१४ गु	**गण्डान्तारम्भः २२:२३**, श्री जयप्रभु विजय पुण्य त्रिस्तुति (जैन);
२३	३० शु	**गण्डान्तः ९:४४**, स्वामी श्रद्धानन्द पुण्य दिवस;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५७–१३:१९
१५	१२:०४–१३:२६

❀ धनु मलमास ❀

बृहस्पति ग्रह की धनु एवं मीन राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही खरमास दोष लगता है। अतः समस्त शुभकर्म वर्जित हो जाते हैं । १६ दिसम्बर २०२२, दिन १८.३३ बजे से, १४ जनवरी २०२२ रात्रि २६.२८ बजे तक धनुसंक्रान्ति जनित खरमास(मलमास) दोष रहेगा।

❀ मासों में करणीय दान ❀ (विष्णुधर्मोत्तिरे)

चैत्र – चित्र व वस्त्रदान से सौभाग्य प्राप्ति
वैशाख – पूआदान से स्वर्ग प्राप्ति
ज्येष्ठ – छत्रदान से कामनापूर्ति
आषाढ़ – चन्दन व कर्पूर से महाफल प्राप्ति
श्रावण – वस्त्रदान से कीर्ति महाफल प्राप्ति
भाद्रपद – गुड़ दान से कफ/रोगमुक्ति
आश्विन – घृतदान से रूपवान हो
कार्तिक – दीपदान से उज्ज्वलता प्राप्ति
मार्गशीर्ष – लवणदान से सौभाग्य प्राप्ति
पौष – स्वर्णदान से परापुष्टि प्राप्ति
माघ – तिलदान से यमलोक न जाना पड़े
फाल्गुन – प्रियंगुदान से भूतल पर प्रिय हो

❀ प्राणायाम की दुर्लभ एवं पूर्ण विधि ❀

क्रमः--१. पूरक, २. अन्तः-कुम्भक, ३. रेचक, ४. बाह्य कुम्भक

पूरक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास अन्दर लेना ।
अन्तः-कुम्भक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास अन्दर रोकना ।
रेचक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास बाहर त्यागना ।
बाह्य कुम्भक–तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास बाहर त्यागकर रोकना।

गायत्री मन्त्र का ही विस्तारित रूप है सावित्री मन्त्र। प्राणायाम में जप हेतु **सावित्री मन्त्र–**

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गो देवस्य धीमहि । धि यो यो नः प्रचोदयात् ।।
ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वर् ।। ॐ ।।

''स्वर् ।। ॐ'' का उच्चारण है ''स्वरोम्'' ।।

बाह्य कुम्भक कष्टदायक होता है, अतः अधिकाँश जगह लिखा नहीं होता है। बाह्य कुम्भक जितना कष्टदायक होता है उतने ही पिछले और वर्तमान जन्मों के प्रकट (क्रियमाण) और छुपे हुए (सञ्चित) कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सद्-बुद्धि बढती है। प्राणायाम वैदिक सन्ध्यावन्दन का अनिवार्य भाग है। प्रातः (और सम्भव हो तो सन्ध्याकाल में भी) नित्यकर्म के पश्चात न्यूनतम तीन प्राणायाम बाएँ नाक से और तीन दाहिने नाक से करने चाहिए: बारी-बारी से, अर्थात पहले बाएँ, फिर दाँए, फिर बाएँ..। बाह्य कुम्भक अचेतन मन के कुसंस्कारों को ध्वस्त करने और पूर्ण चैतन्य बनने का सर्वोत्तम साधन है। जो जनेऊ नहीं पहनते हैं वे उतने ही काल तक अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप कर सकते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
९	१४:२८	१६:०४	१७:५९	२०:१३	२२:३४	००:५०	०३:०५	०५:२४	०७:४२	०९:४८	११:३२	१३:०२
१०	१४:२४	१६:००	१७:५५	२०:०९	२२:३०	००:४६	०३:०१	०५:२०	०७:३८	०९:४४	११:२९	१२:५८
११	१४:२०	१५:५६	१७:५१	२०:०५	२२:२६	००:४२	०२:५७	०५:१६	०७:३५	०९:४०	११:२५	१२:५४
१२	१४:१६	१५:५२	१७:४७	२०:०२	२२:२२	००:३८	०२:५३	०५:१२	०७:३१	०९:३६	११:२१	१२:५०
१३	१४:१२	१५:४८	१७:४३	१९:५८	२२:१८	००:३४	०२:४९	०५:०८	०७:२७	०९:३२	११:१७	१२:४६
१४	१४:०८	१५:४४	१७:३९	१९:५४	२२:१४	००:३०	०२:४५	०५:०४	०७:२३	०९:२८	११:१३	१२:४२
१५	१४:०४	१५:४०	१७:३५	१९:५०	२२:१०	००:२६	०२:४१	०५:००	०७:१९	०९:२४	११:०९	१२:३८
१६	१४:००	१५:३६	१७:३१	१९:४६	२२:०६	००:२२	०२:३७	०४:५६	०७:१५	०९:२०	११:०५	१२:३४
१७	१३:५६	१५:३२	१७:२८	१९:४२	२२:०२	००:१९	०२:३४	०४:५२	०७:११	०९:१६	११:०१	१२:३०
१८	१३:५२	१५:२८	१७:२४	१९:३८	२१:५८	००:१५	०२:३०	०४:४८	०७:०७	०९:१२	१०:५७	१२:२६
१९	१३:४८	१५:२४	१७:२०	१९:३४	२१:५४	००:११	०२:२६	०४:४५	०७:०३	०९:०८	१०:५३	१२:२२
२०	१३:४४	१५:२०	१७:१६	१९:३०	२१:५०	००:०७	०२:२२	०४:४१	०६:५९	०९:०४	१०:४९	१२:१८
२१	१३:४०	१५:१६	१७:१२	१९:२६	२१:४६	००:०३	०२:१८	०४:३७	०६:५५	०९:०१	१०:४५	१२:१४
२२	१३:३६	१५:१२	१७:०८	१९:२२	२१:४२	२३:५९	०२:१४	०४:३३	०६:५१	०८:५७	१०:४१	१२:१०
२३	१३:३२	१५:०८	१७:०४	१९:१८	२१:३८	२३:५५	०२:१०	०४:२९	०६:४८	०८:५३	१०:३७	१२:०६

दिसम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
९	**सिद्ध**·१ ०९:३४ तक; **मृत्यु**·२ ०९:३४ से;
११	**सिद्ध**·३ १३:३१ तक; **सर्वार्थ**·पु १८:४९ से;
१२	**सर्वार्थ**·पु २१:२६ तक; **अमृत**·५ १५:४३ से;
१३	**सर्वार्थ**·आश्ले २३:५६ तक; **मृत्यु**·६ २९:२९ से; **रवियोग**:म २३:५६ से;
१४	**अमृत**·६ १९:४० तक; **रवियोग**:म २३:१० तक; **सिद्ध**·७ १९:४० से;
१५	**अमृत**·८ २१:०८ से, **द·न**·उफा;
१६	**अमृत**·९ २२:०८ से;
१७	**सिद्ध**·९ २२:३९ तक; **मृत्यु**·१० २२:३९ से;
१८	**अमृत**·१० २२:३८ तक; **मृत्यु**·११ २२:३८ तक;
१९	**सिद्ध**·११ २२:०७ तक; **मृत्यु**·१२ २२:०७ से;
२०	**अमृत**·१२ २१:०८ तक; **त्रिपुष्कर**:१२+वि २१:०८ तक; **सिद्ध**·१३ २१:०८ से;
२१	**सर्वार्थ**·अनु २९:१५ तक ; **मृत्यु**·१३ १९:४५ तक;
२२	**मृत्यु**·१४ १८:०२ तक; **सिद्ध**·३० १८:०२ से;
२३	**सिद्ध**·१ १६:०२ से;

❀ **व्रत परिभाषा–**ऋषि,मुनि व परमाचार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त विषय के संकल्प विशेष को व्रत कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति नया व्रत नहीं बना सकता।
अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।

❀ **व्रत के अंग–** किसी भी व्रत के तीन अंग होते हैं १· उपवास, २· पूजन और ३· पारणा। तत् पूजनोपवासपारणारूपम्। वस्तुतः उपवास ही मुख्य रूप से व्रत होता है पर पूजन और पारणा के बिना यह पूर्ण नहीं होता है। "उपवासएवव्रतम्"

❀ **व्रत फल–** व्रत करने से जीवन में अलभ्य का लाभ तथा असाध्य की प्राप्ति होती है।

❀ **व्रत नाशक तत्व–** बारबार जल पीना, पान खाना, दिन में सोना, मैथुन, मिथ्याभाषण, जुआ खेलना, पाप करना, दो बार अल्पाहार लेना मना है।

❀ **व्रत में अनिवार्य–** प्रत्येक व्रत के देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, संतोष और अचौर्य ये दशतत्व व्रत में अनिवार्य हैं।

पौष शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २४ दिसम्बर से ६ जनवरी, २०२२–२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २४:१२:२०२२ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; वक्री कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः,

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
दिसम्ब	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२४ दिसम्बर से ६ जनवरी २०२३
२४	१ श	१६:२१	१३:५०	पू·षा·	४४:२६	२५:०४	वृद्धि	११:१९	११:४९	बव	१६:२१	बाल	४३:२८	२५:३९	७:१८	१७:३३	म·५८:२४	३०:३९	मातङ्ग	८	२४	
२५	२ र	१०:३३	११:३१	उ·षा·	४०:१६	२३:२५	ध्रुव व्याघ	०३:३१ ५२:०६	०८:४२ २९:३२	कौल	१०:३३	तैति	३७:३५	२५:३९	७:१८	१७:३४	मकर	अहोरात्र	अमृत	९	२५	महामना मालवीय जयन्ती, अटलबिहारी जयन्ती,
२६	३ चं ४ चं	०४:३८ ५४:१३	०९:१० ३०:५१	श्रवण	३६:०७	२१:४५	हर्षण	४७:४६	२६:२५	गर	०४:३८	वणि	३१:४३	२५:३९	७:१९	१७:३४	मकर	अहोरात्र	सिद्धि	१०	२६	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,**
२७	५ मं	५३:२४	२८:४१	धनि·	३२:१३	२०:१२	वज्र	४०:१०	२३:२३	बव	२६:०५	बाल	५३:२४	२५:४०	७:१९	१७:३५	कुं·०४:०८	०८:५८	उत्पात	११	२७	
२८	६ बु	४८:२७	२६:४२	शत·	२८:४५	१८:४९	सिद्धि	३२:५५	२०:३०	कौल	२०:५१	तैति	४८:२७	२५:४०	७:२०	१७:३६	कुंभ	अहोरात्र	मानस	१२	२८	अनरुपा षष्ठी (बंगाल),
२९	७ गु	४४:१३	२५:०१	पू·भा·	२५:५४	१७:४२	व्यति·	२६:१३	१७:४९	गर	१६:१४	वणि	४४:१३	२५:४१	७:२०	१७:३६	मी·११:३३	११:५७	मुद्गर	१३	२९	गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती, श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर स्तुति (जैन)
३०	८ शु	४०:५१	२३:४१	उ·भा·	२३:५२	१६:५३	वरी·	२०:०९	१५:२४	विष	१२:२५	बव	४०:५१	२५:४१	७:२०	१७:३७	मीन	अहोरात्र	ध्वज	१४	३०	**दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी देवी नवरात्र प्रारम्भ,**
३१	९ श	३८:३१	२२:४५	रेवती	२२:४७	१६:२८	परिघ	१४:५१	१३:१७	बाल	०९:३३	कौल	३८:३१	२५:४२	७:२१	१७:३८	मे·२२:४७	१६:२८	धाता	१५	३१	आचार्य जिनानन्द सागर पुण्य खरतरगच्छ (जैन),
जनव	१० र	३७:२१	२२:१७	अश्वि·	२२:४९	१६:२९	शिव	१०:२६	११:३१	तैति	०७:४७	गर	३७:२१	२५:४३	७:२१	१७:३८	मेष	अहोरात्र	आनन्द	१६	१	**ईस्वी २०२३ आरम्भ,** सूर्यपूजा व साम्बदशमी (उड़ीसा),
२	११ चं	३७:२६	२२:२०	भरणी	२४:०२	१६:५८	सिद्ध	०६:५७	१०:०८	वणि	०७:१४	विष	३७:२६	२५:४४	७:२१	१७:३९	वृ·३९:३३	२३:११	सुस्थिर	१७	२	**श्री पुत्रदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), मन्वादि,**
३	१२ मं	३८:५०	२२:५४	कृत्ति·	२६:३२	१७:५८	साध्य	०४:२९	०९:०९	बव	०७:५८	बाल	३८:५०	२५:४५	७:२२	१७:४०	वृष	अहोरात्र	गद	१८	३	**श्री कूर्म द्वादशी,**
४	१३ बु	४१:२९	२३:५८	रोहि·	३०:१४	१९:२८	शुभ	०२:६०	०८:३४	कौल	१०:०१	तैति	४१:२९	२५:४६	७:२२	१७:४०	वृष	अहोरात्र	शुभ	१९	४	**प्रदोष व्रतम्,**
५	१४ गु	४५:१७	२५:२९	मृग·	३५:०३	२१:२३	शुक्ल	०२:२५	०८:२०	गर	१३:१५	वणि	४५:१७	२५:४८	७:२२	१७:४१	मि·०२:३१	०८:२३	मृत्यु	२०	५	
६	१५ शु	४९:५९	२७:२२	आर्द्रा	४०:४७	२३:४१	ब्रह्म	०२:४०	०८:२६	विष	१७:३३	बव	४९:५९	२५:४९	७:२२	१७:४२	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	२१	६	**पौष पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत), माघ स्नानारम्भ,**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिसम्ब जनवरी	तिथि वार	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः (मा/व)	बुधः (मा/व)	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
		रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				
२४	१ श	०८:०७:४१:५०	०८:१६:०५:१७	०१:१७:१०:२९	०८:२३:३३:४०	११:०७:०८:५२	०८:२४:३७:४४	०९:२४:०८:१२	०६:१८:५१:५७	४२:४९:२४	द·२३:५९:५७	+ १:१८	०७:५२:४२
२५	२ र	०८:०८:४३:१३	०९:००:२२:५६	०१:१६:५५:०४	वक्री २३:३८:३७	११:०७:१४:३३	०८:२५:५३:१९	०९:२४:१४:०९	०६:१८:४८:४६	४२:४९:२९	द·२३:५९:३०	+ ०:४६	०८:४८:३६
२६	३ चं	०८:०९:४४:३७	०९:१४:४२:५२	०१:१६:४०:१६	०८:२३:३७:१४	११:०७:२०:२५	०८:२७:०८:५४	०९:२४:२०:१०	०६:१८:४५:३५	४२:४९:३८	द·२३:५८:३३	+ ०:१४	०९:३८:१५
२७	५ मं	०८:१०:४६:०१	०९:२९:०१:०६	०१:१६:२६:०७	०८:२३:२९:२६	११:०७:२६:२८	०८:२८:२४:२८	०९:२४:२६:१४	०६:१८:४२:२५	४२:४९:४९	द·२३:५७:०७	– ०:१७	१०:२३:३६
२८	६ बु	०८:११:४७:२५	१०:१३:१४:०५	०१:१६:१२:३७	०८:२३:१५:१८	११:०७:३२:४१	०८:२९:४०:०१	०९:२४:३२:२१	०६:१८:३९:१४	४२:५०:०४	द·२३:५५:१२	– ०:४९	११:०४:५५
२९	७ गु	०८:१२:४८:५०	१०:२७:१८:३९	०१:१५:५९:४८	०८:२२:५४:५७	११:०७:३९:०५	०९:००:५५:३४	०९:२४:३८:३२	०६:१८:३६:०३	४२:५०:२१	द·२३:५२:४८	– १:२०	११:४२:५८
३०	८ शु	०८:१३:५०:१५	११:११:१२:०७	मार्गी १५:४७:४१	०८:२२:२८:३९	११:०७:४५:३९	०९:०२:११:०५	०९:२४:४४:४६	०६:१८:३२:५२	४२:५०:४१	द·२३:४९:५४	– १:५२	१२:५६:४३
३१	९ श	०८:१४:५१:४०	११:२४:५२:१९	०१:१५:३६:१६	०८:२१:५६:४५	११:०७:५२:२४	०९:०३:२६:३५	०९:२४:५१:०३	०६:१८:२९:४२	४२:५१:०५	द·२३:४६:३२	– २:२३	१३:३४:३९
जनव	१० र	०८:१५:५३:०५	००:०८:१७:४६	०१:१५:२५:३४	०८:२१:१९:४८	११:०७:५९:१९	०९:०४:४२:०३	०९:२४:५७:२२	०६:१८:२६:३१	४२:५१:३१	द·२३:४२:४०	– २:५४	१३:३४:५९
२	११ चं	०८:१६:५४:३१	००:२१:२७:४५	०१:१५:१५:३५	०८:२०:३८:२५	११:०८:०६:२४	०९:०५:५७:३०	०९:२५:०३:४५	०६:१८:२३:२०	४२:५२:०१	द·२३:३८:२०	– ३:२५	१४:१५:५७
३	१२ मं	०८:१७:५५:५६	०१:०४:२२:१६	०१:१५:०६:२२	०८:१९:५३:२१	११:०८:१३:३९	०९:०७:१२:५७	०९:२५:१०:११	०६:१८:२०:१०	४२:५२:३३	द·२३:३३:३१	– ३:५५	१४:५६:५२
४	१३ बु	०८:१८:५७:२१	०१:१७:०२:०८	०१:१४:५७:५३	०८:१९:०५:३१	११:०८:२१:०३	०९:०८:२८:२२	०९:२५:१६:३९	०६:१८:१६:५९	४२:५३:०८	द·२३:२८:१४	– ४:२५	१५:४५:१०
५	१४ गु	०८:१९:५८:४६	०१:२९:२८:५१	०१:१४:५०:०९	०८:१८:१५:५२	११:०८:२८:३८	०९:०९:४३:४६	०९:२५:२३:१०	०६:१८:१३:४८	४२:५३:४६	द·२३:२२:२८	– ४:५५	१६:३२:३१
६	१५ शु	०८:२१:००:११	०२:११:४४:३७	०१:१४:४३:१०	०८:१७:२५:२७	११:०८:३६:२२	०९:१०:५९:०८	०९:२५:२९:४४	०६:१८:१०:३७	४२:५४:२७	द·२३:१६:१४	– ५:२४	१७:२४:३४

२५ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः**२**

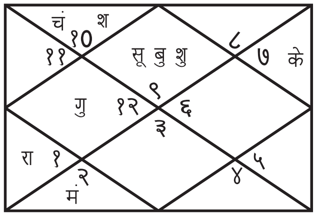

२ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

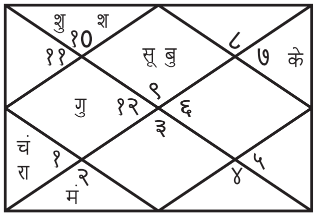

पौष शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २४ दिसम्बर से ६ जनवरी, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशा:२२:५१:२१

दिनाङ्क दिसम्ब	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२४	१ श	;
२५	२ र	**अभिजित नक्षत्रः २६:१९–४३:५९,** उत्तराषाढ़ेशुक्रः घं·२२:०८; ①
२६	३ चं	**भद्रा १९:६०–३०:५१घं·;**
२७	५ मं	**पंचकारंभः ०८:५८;**
२८	६ बु	**पंचक,** मकरेशुक्रः घं·१३:४१;
२९	७ गु	**पंचक, भद्रारम्भः २५:०१घं·,** व्यतीपात पुण्यम्, पूर्वाषाढ़ेरविः घं·१९:३१;
३०	८ शु	**पंचक, भद्रान्तः १२:१८घं·,** मार्गी कुजःघं·२४:५२;
३१	९ श	**पंचकान्तः १६:२८, गण्डान्तः १०:३२–२२:२५;**
जनव	१० र	; ① श्रीयतीन्द्र सूरीश्वर पुण्यत्रिस्तुति (जैन), वक्रःबुधःघं·१८:०८;
२	११ चं	**भद्रा १०:१५–२२:२०घं·,** बुधःपश्चिमास्तः घं·१५:३९;
३	१२ मं	;
४	१३ बु	;
५	१४ गु	**भद्रारम्भः २५:२९घं·,** श्रवणायांशुक्रः घं·१२:२३;
६	१५ शु	**भद्रान्तः १४:२३घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, शाकम्भरी जयन्ती;**

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०४–१३:२७
१५	१२:११–१३:३४

❀ भूमि सम्बन्धी समस्त अवरोध निवारक अचूक प्रयोग ❀ – *'नवग्रह विज्ञान'*

भूमि के क्रय विक्रय व भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त अवरोधों–विघ्नबाधाओं के निवारण हेतु श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के पृथ्वी स्तोत्र/भूमिदेवी महास्तोत्र का १२०० पाठ एक दुर्लभ एवं अविफल प्रयोग है। इसे इच्छित संकल्पपूर्वक स्वयं या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। जन्मकुण्डली के लग्न या चन्द्र से चतुर्थ भाव पर जब मंगल का गोचर होता है या दृष्टि पड़ती है तब भूमि संबंधी कार्य का योग बनता हैं। **प्रारूप संकल्प –** देशकाल संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाहं मम भूमिसम्बन्धी क्रय–विक्रय–भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त विघ्नबाधा–शत्रुकृतअवरोध निवारणार्थं उत्तमोत्तम मूल्ये भूमि विक्रयार्थं / उत्तमोत्तम शुभभूमि प्राप्त्यर्थं / सर्वबाधानिवृत्ति पूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशादुत्पन्नदोषेण च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं श्रीभूमिदेवी प्रीत्यर्थं श्रीभूमिदेवी महास्तोत्रस्य द्वादश शत पाठ कर्माहं करिष्ये/ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

ध्यान–

श्वेतपंकजवर्णाभां शरच्चन्द्रनिभाननाम्।
चन्दनोत्क्षिप्तसर्वांगीं रत्नभूषणभूषिताम्।
रत्नाधारां रत्नगर्भां रत्नाकरसमन्विताम्।
वह्निशुद्धांशुकाधानां सस्मितां वन्दितां भजे।

श्वेतकमल के समान आभा युक्त, शरदपूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुख वाली, जिनके सम्पूर्ण अंग चन्दन से लिप्त हैं, जो रत्नमय अलंकारों से सुशोभित हैं, रत्नों की आधारस्वरूपा हैं, रत्नगर्भा हैं व रत्नों के आकर (खान) से समन्वित हैं। जो अग्नि सदृश शुद्ध वस्त्र धारण किए हैं, मुस्कान से युक्त हैं व सभी के द्वारा वन्दित हैं। मैं ऐसी पृथ्वीदेवी का ध्यान करता हूँ।

पृथ्वीस्तोत्र–

श्रीनारायण उवाच

जये जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे ।।
मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलार्थं मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे ।।
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे ।।
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे ।।
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्यदे।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे।।
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे ।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे ।।
इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः।।
भूमिदानकृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।
भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।।
अम्बुवाची भूकरणपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।
अन्यकूपे कूपखननपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।।
परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।
भूमौ वीर्यत्यागपापाद्भूमौ दीपादिस्थापनात्।।
पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ।।
भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्।।

।। इति भूमिदेवीमहास्तोत्रम् ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्ब	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२४	१३:२८	१५:०४	१७:००	१९:१४	२१:३४	२३:५१	०२:०६	०४:२५	०६:४४	०८:४९	१०:३३	१२:०२
२५	१३:२४	१५:००	१६:५६	१९:१०	२१:३०	२३:४७	०२:०२	०४:२१	०६:४०	०८:४५	१०:२९	११:५९
२६	१३:२१	१४:५६	१६:५२	१९:०६	२१:२७	२३:४३	०१:५८	०४:१७	०६:३६	०८:४१	१०:२५	११:५५
२७	१३:१७	१४:५३	१६:४८	१९:०२	२१:२३	२३:३९	०१:५४	०४:१३	०६:३२	०८:३७	१०:२१	११:५१
२८	१३:१३	१४:४९	१६:४४	१८:५८	२१:१९	२३:३५	०१:५०	०४:०९	०६:२८	०८:३३	१०:१८	११:४७
२९	१३:०९	१४:४५	१६:४०	१८:५४	२१:१५	२३:३१	०१:४६	०४:०५	०६:२४	०८:२९	१०:१४	११:४३
३०	१३:०५	१४:४१	१६:३६	१८:५१	२१:११	२३:२७	०१:४२	०४:०१	०६:२०	०८:२५	१०:१०	११:३९
३१	१३:०१	१४:३७	१६:३२	१८:४७	२१:०७	२३:२३	०१:३८	०३:५७	०६:१६	०८:२१	१०:०६	११:३५
१	१२:५७	१४:३३	१६:२८	१८:४३	२१:०३	२३:१९	०१:३४	०३:५३	०६:१२	०८:१७	१०:०२	११:३१
२	१२:५३	१४:२९	१६:२४	१८:३९	२०:५९	२३:१५	०१:३०	०३:४९	०६:०८	०८:१३	०९:५८	११:२७
३	१२:४९	१४:२५	१६:२०	१८:३५	२०:५५	२३:११	०१:२६	०३:४५	०६:०४	०८:०९	०९:५४	११:२३
४	१२:४५	१४:२१	१६:१७	१८:३१	२०:५१	२३:०८	०१:२३	०३:४१	०६:००	०८:०५	०९:५०	११:१९
५	१२:४१	१४:१७	१६:१३	१८:२७	२०:४७	२३:०४	०१:१९	०३:३७	०५:५६	०८:०१	०९:४६	११:१५
६	१२:३७	१४:१३	१६:०९	१८:२३	२०:४३	२३:००	०१:१५	०३:३४	०५:५२	०७:५७	०९:४२	११:११

दिसम्ब	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२४	**अमृत**·१ १३:५० तक; **त्रिपुष्कर**:२+उषा २५:०४ से; **द·ति**·२;
२५	**सर्वार्थ**·उषा २३:२५ तक; **त्रिपुष्कर**:२+उषा ११:३१ तक; **सिद्ध**·३ ११:३१ से; **रवियोग**:श्र २३:२५ से; **द·ति**·२;
२६	**सर्वार्थ**·श्र–**रवियोग**:श्र २१:४५ तक; **अमृत**·५ ३०:५१ से;
२७	**रवियोग**:श २०:१२ से; **मृत्यु**·६ २८:४१ से;
२८	**अमृत**·६ २६:४२ तक; **रवियोग**:श १८:४९ तक; **सिद्ध**·७ २६:४२ से;
२९	**अमृत**·८ २५:०१ से;
३०	**सर्वार्थ**·रे १६:५३ से; **अमृत**·९ २३:४१ से;
३१	**सिद्ध**·९ २२:४५ तक; **द·न**·रे; **रवियोग**:अ १६:२८ से; **मृत्यु**·१० २२:४५ से;
जनव	**सर्वार्थ**·अ–**रवियोग**:अ १६:२९ तक; **अमृत**·१० २२:१७ तक; **रवियोग**:भ १६:२९ से; **द·न**·भ; **मृत्यु**·११ २२:१७ से;
२	**सिद्ध**·११ २२:२० तक; **रवियोग**:भ १६:५८ तक; **मृत्यु**·१२ २२:२० से;
३	**सर्वार्थ**·कृ १७:५८ तक; **अमृत**·१२ २२:५४ तक; **त्रिपुष्कर**:१२+कृ १७:५८–२२:५४; **सिद्ध**·१३ २२:५४ से;
४	**सर्वार्थ**·रो–मृ अहोरात्र; **मृत्यु**·१३ २३:५८ तक; **रवियोग**:मृ १९:२८ से;
५	**मृत्यु**·१४ २५:२९ तक; **रवियोग**:मृ २१:२३ तक; **सिद्ध**·१५ २५:२९ से;
६	**सर्वार्थ**·पुन २३:४१ से; **सिद्ध**·१ २७:२२ से;

द्विज का दाहिना कान पवित्र होता है। कान में वेदमन्त्र सुनते सुनते प्रभास आदि तीर्थ, गंगा आदि नदियों का पावित्र्य और प्रभाव रहता है– ***प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा। द्विजस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः।।*** इसी कान से दीक्षा ग्रहण की जाती है। इसी के ऊपर हमेशा यज्ञोपवीत चढ़ाकर मल–मूत्र का त्याग किया करते हैं। कर्णवेध के समय इसी में स्वर्णकुण्डल धारण किया जाता है। पराशर स्मृति में लिखा है कि छींक, थूक, दांत खोदने के बाद दाहिना कान स्पर्श करना चाहिए– ***क्षुते निष्ठीविते चैव दंतश्लिष्टे तथाऽनृते। पतितानाम् च संभाषे दक्षिणम् श्रवणं स्पृशेत्।।*** पैर की द्वितीय उंगली में चांदी की अंगूठी पहनने की रीति प्राचीनकाल में थी। इससे मानसिक शान्ति बनी रहती है। मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अतुलनीय होता है।

माघ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ७ जनवरी से २१ जनवरी, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ७:१:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	७ जनवरी से २१ जनवरी २०२३
७	१ श	५५:१७	२९:३०	पुन·	४७:०७	२६:१४	ऐन्द्र	०३:३२	०८:४७	बाल	२२:३६	कौल	५५:१७	२५:५०	७:२३	१७:४३	क·३०:३०	१९:३५	छत्र	२२	७	माघ में मूली भक्षण निषेध,
८	२ र	६०:००	अहोरात्र	पुष्य	५३:४२	२८:५१	वैधृ·	०४:४७	०९:१७	तैति	२८:०३	गर	६०:००	२५:५२	७:२३	१७:४४	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	२३	८	वैधृति पुण्यम्,
९	२ चं	००:४७	०७:४२	आश्ले·	६०:००	अहोरात्र	विष्कु·	०६:०७	०९:५०	गर	००:४७	वणि	३३:२७	२५:५४	७:२३	१७:४४	कर्क	अहोरात्र	सौम्य	२४	९	
१०	३ मं	०५:६०	०९:४७	आश्ले·	००:०४	०७:२४	प्रीति	०७:१४	१०:१७	विष	०५:६०	बव	३८:२२	२५:५५	७:२३	१७:४५	सिं·००:०४	०७:२४	आनन्द	२५	१०	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:५९**
११	४ बु	१०:३३	११:३६	मघा	०५:४९	०९:४३	आयु·	०७:५१	१०:३१	बाल	१०:३३	कौल	४२:२८	२५:५७	७:२३	१७:४६	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	२६	११	
१२	५ गु	१४:०८	१३:०२	पू·फा·	१०:४१	११:३९	सौभा·	०७:४५	१०:२९	तैति	१४:०८	गर	४५:२९	२५:५९	७:२३	१७:४७	क·२६:४३	१८:०४	गद	२७	१२	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती,
१३	६ शु	१६:३२	१४:००	उ·फा·	१४:२६	१३:०९	शोभ·	०६:४७	१०:०६	वणि	१६:३२	विष	४७:१६	२६:०१	७:२३	१७:४८	कन्या	अहोरात्र	शुभ	२८	१३	**लोहड़ी (पंजाब),**
१४	७ श	१७:४१	१४:२८	हस्त	१६:५८	१४:१०	अतिग·	०४:५१	०९:२०	बव	१७:४१	बाल	४७:४५	२६:०३	७:२३	१७:४८	तु·४७:४५	२६:२९	मृत्यु	२९	१४	**श्रीकालाष्टमी,** श्रीमद् रामानन्दाचार्य जयन्ती,
१५	८ र	१७:३१	१४:२४	चित्रा	१८:१४	१४:४१	सुकर्मा धृति	०१:५६ ५६:०५	०८:०९ ३०:३६	कौल	१७:३१	तैति	४६:५८	२६:०५	७:२३	१७:४९	तुला	अहोरात्र	पद्म	१	१५	**मकर संक्रान्ति पुण्यकालं,७:२३–१२:३६घं·,**
१६	९ चं	१६:०७	१३:५०	स्वाती	१८:१९	१४:४३	शूल	५३:१२	२८:४०	गर	१६:०७	वणि	४४:५८	२६:०७	७:२३	१७:५०	तुला	अहोरात्र	छत्र	२	१६	अन्वष्टका श्राद्ध,
१७	१० मं	१३:३४	१४:४९	विशा·	१७:१७	१४:१८	गण्ड	४७:३३	२६:२४	विष	१३:३४	बव	४१:५३	२६:१०	७:२३	१७:५१	वृ·०२:३९	०८:२७	श्रीवत्स	३	१७	
१८	११ बु	१०:०१	११:२३	अनु·	१५:१७	१३:३०	वृद्धि	४१:१२	२३:५२	बाल	१०:०१	कौल	३७:५५	२६:१२	७:२३	१७:५२	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	४	१८	**षट्तिला एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त),**
१९	१२ गु	०५:३८	०९:३८	ज्ये·	१२:२९	१२:२३	ध्रुव	३४:१६	२१:०५	तैति	०५:३८	गर	३३:१०	२६:१४	७:२३	१७:५३	ध·१२:२९	१२:२३	कालदंड	५	१९	**प्रदोष व्रतम्,** तिल द्वादशी,
२०	१३ शु १४ शु	००:३५ ५४:२७	०७:३७ २९:२४	मूल	०९:०३	११:००	व्याघ·	२६:५२	१८:०७	वणि	००:३५	विष	२७:५१	२६:१७	७:२३	१७:५३	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	६	२०	**मास शिवरात्रि व्रतम्,**
२१	३० श	४९:१३	२७:०४	पू·षा·	०५:१०	०९:२७	हर्षण	१९:१०	१५:०२	चतु	२२:०९	नाग	४९:१३	२६:१९	७:२२	१७:५४	म·१९:०९	१५:०२	मातङ्ग	७	२१	**मौनी अमावस्या (देव–पितृकार्य),**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जनव·	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
७	१ श	०८:२२:०१:३५	०२:२३:५२:१०	०१:१४:३६:५७	०८:१६:३५:३१	११:०८:४४:१६	०९:१२:१४:२९	०९:२५:३६:२०	०६:१८:०७:२७	४२:५५:१०	द·२३:०९:३३	– ५:५३	१८:१७:४१
८	२ र	०८:२३:०२:५९	०३:०५:५४:४०	०१:१४:३१:३०	०८:१५:४७:१०	११:०८:५२:१८	०९:१३:२९:४८	०९:२५:४२:५९	०६:१८:०४:१६	४२:५५:५६	द·२३:०२:२३	– ६:२१	१९:१०:५६
९	२ चं	०८:२४:०४:२३	०३:१७:५५:४४	०१:१४:२६:४८	०८:१५:०१:२३	११:०९:००:३१	०९:१४:४५:०६	०९:२५:४९:४०	०६:१८:०१:०५	४२:५६:४५	द·२२:५४:४६	– ६:४९	२०:०४:५६
१०	३ मं	०८:२५:०५:४७	०३:२९:५९:१९	०१:१४:२२:५२	०८:१४:१९:०३	११:०९:०८:५२	०९:१६:००:२१	०९:२५:५६:२४	०६:१७:५७:५५	४२:५७:३७	द·२२:४६:४२	– ७:१६	२०:५९:१७
११	४ बु	०८:२६:०७:०९	०४:१२:०८:५१	०१:१४:१९:४१	०८:१३:४०:५९	११:०९:१७:२२	०९:१७:१५:३५	०९:२६:०३:१०	०६:१७:५४:४४	४२:५८:३१	द·२२:३८:१०	– ७:४३	२१:५२:३०
१२	५ गु	०८:२७:०८:३२	०४:२४:२७:२४	०१:१४:१७:१६	०८:१३:०७:५०	११:०९:२६:०१	०९:१८:३०:४८	०९:२६:०९:५८	०६:१७:५१:३३	४२:५९:२८	द·२२:२९:१२	– ८:१०	२२:४६:३२
१३	६ शु	०८:२८:०९:५४	०५:०६:५७:३४	०१:१४:१५:३६	०८:१२:४०:०८	११:०९:३४:४९	०९:१९:४५:५८	०९:२६:१६:४८	०६:१७:४८:२३	४३:००:२७	द·२२:१९:४७	– ८:३५	२३:४१:३९
१४	७ श	०८:२९:११:१५	०५:१९:४१:२२	०१:१४:१४:४१	०८:१२:१८:१९	११:०९:४३:४६	०९:२१:०१:०७	०९:२६:२३:४०	०६:१७:४५:१२	४३:०१:२९	द·२२:०९:५६	– ९:००	००:३८:०८
१५	८ र	०९:००:१२:३५	०६:०२:४०:०६	०१:१४:१४:३०	०८:१२:०२:४०	११:०९:५२:५१	०९:२२:१६:१४	०९:२६:३०:३४	०६:१७:४२:०१	४३:०२:३३	द·२१:५९:३९	– ९:२५	०१:३६:३२
१६	९ चं	०९:०१:१३:५५	०६:१५:५४:२१	०१:१४:१५:०३	मार्गी ११:५३:२१	११:१०:०२:०४	०९:२३:३१:१८	०९:२६:३७:३१	०६:१७:३८:५०	४३:०३:३९	द·२१:४८:५७	– ९:४९	०२:३७:२६
१७	१० मं	०९:०२:१५:१४	०६:२९:२३:५६	०१:१४:१६:२०	०८:११:५०:२५	११:१०:११:२६	०९:२४:४६:२१	०९:२६:४४:२८	०६:१७:३५:४०	४३:०४:४८	द·२१:३७:४९	–१०:१२	०३:३९:१३
१८	११ बु	०९:०३:१६:३२	०७:१३:०७:५२	०१:१४:१८:१९	०८:११:५३:५३	११:१०:२०:५६	०९:२६:०१:२२	०९:२६:५१:२८	०६:१७:३२:२९	४३:०५:५९	द·२१:२६:१६	–१०:३४	०४:४१:०७
१९	१२ गु	०९:०४:१७:४९	०७:२७:०४:३१	०१:१४:२१:०२	०८:१२:०३:३७	११:१०:३०:३३	०९:२७:१६:२१	०९:२६:५८:३०	०६:१७:२९:१८	४३:०७:१२	द·२१:१४:१९	–१०:५६	०५:४२:१०
२०	१३ शु	०९:०५:१९:०६	०८:११:११:३२	०१:१४:२४:२७	०८:१२:१९:३१	११:१०:४०:१९	०९:२८:३१:१७	०९:२७:०५:३३	०६:१७:२६:०८	४३:०८:२८	द·२१:०१:५७	–११:१७	०६:३७:१०
२१	३० श	०९:०६:२०:२२	०८:२५:२६:०४	०१:१४:२८:३३	०८:१२:४१:२१	११:१०:५०:१३	०९:२९:४६:१२	०९:२७:१२:३७	०६:१७:२२:५७	४३:०९:४५	द·२०:४९:१२	–११:३७	०७:३०:४३

११ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः४

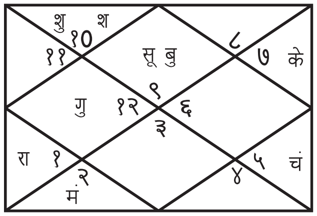

१८ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः११

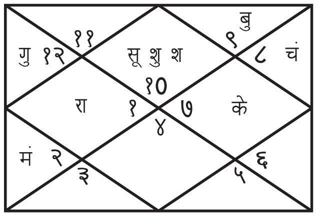

माघ कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ७ जनवरी से २१ जनवरी, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त दक्षिणायनं मकरार्कतः ऋतुःशिशिर उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:२३

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
७	१ श	;
८	२ र	;
९	२ चं	**भद्रारम्भः २०:४६घं·, गण्डान्तारम्भः २४:४७;**
१०	३ मं	**तिलकुट चौथ, भद्रान्तः ९:४७घं·, गण्डान्तः १४:०१,** (१)
११	४ बु	उत्तराषाढ़ेरविः घं·२०:१४, मूलेबुधः घं·२२:०८;
१२	५ गु	राष्ट्रीय युवा दिवस, बुधःपूर्वोदितः घं·१३:४६;
१३	६ शु	**भद्रा १४:००–२६:१८घं·;** (१) हेमू कालानी पुण्यदिवस;
१४	७ श	**मासान्तः**, मकरेरविः घं·२६:०२;
१५	८ र	पतंग उत्सव, गंगासागर स्नान, पोंगल (केरल), मासादिः, (२)
१६	९ चं	**भद्रारम्भः २५:२२घं·**, मार्गी बुधः घं·२८:३८;
१७	१० मं	**भद्रान्तः १२:४९घं·;** (२) धनिष्ठायांशुक्रः घं·२७:४६;
१८	११ बु	**गण्डान्तारम्भः ३०:४१;**
१९	१२ गु	**गण्डान्तः १८:०३**, श्रीशीतलनाथ जयन्ती;
२०	१३ शु	**भद्रा ७:३७–१८:३१घं·**, मेरु त्रयोदशी (जैन);
२१	३० श	**अभिजित नक्षत्रारम्भः ४७:०५**, कलियुगादि, कुम्भेशुक्रः घं·११:४८;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१२–१३:३४
१५	१२:१७–१३:४१

❀ मकर संक्रान्ति कृत्य ❀

❀ **मकर संक्रान्ति–** सूर्यास्त के बाद मकरसंक्रान्ति होने पर पुण्यकाल अगले दिन होता है, *"यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्करः। प्रदोषे वाऽर्धरात्रे वा स्नानं दानं परेऽहनि।"* (धर्मसिन्धु)। **सूर्यसिद्धान्तीय गणना से सूर्य १४ जनवरी को मध्यरात्रि के पश्चात् रात्रि २६ बजके २८ मिनट के बाद मकर में प्रवेश करेगा अतः जयपुर में मकर संक्रान्ति परदिन अर्थात् १५ जनवरी को ही होगी, उसी दिन मध्याह्न तक पुण्यकाल स्नान दान होगा। अतः संशयरहित होकर मकर संक्रान्ति १५ जनवरी २०२२ को ही मनाएं।** मकर संक्रान्ति से ही देवताओं का दिन आरम्भ होता है। यहीं से उत्तरायण का शुभारम्भ होता है। **मकर संक्रान्ति को स्नान न करने वाला व्यक्ति जन्म–जन्मान्तर में रोगी तथा निर्धन होता है–**

रविसंक्रमणे प्राप्ते न स्नायाद्यस्तु मानवः ।
सप्तजन्मनि रोगी स्यान्निर्धनश्चैव जायते। (धर्मसिन्धु)

यह भगवान सूर्य नारायण का विशेष व्रत है। अतः **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान, दान, हवन करने का शुभफल जन्मजन्मान्तर में भगवान् श्री सूर्यनारायण द्वारा प्रदान किया जाता है–** *संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि दातृभिः। तानि नित्यं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि। (धर्मसिन्धु)*

मकर संक्रान्ति के दिन शिवलिंग का घी से अभिषेक करने का विशेषफल होता है। स्वर्ण दान तथा तिल से भरे पात्र का दान करना अक्षय फल देता है। इस दिन श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ करें और भगवान् श्रीसूर्यनारायण को तांबे के कलश में लाल चन्दन, लाल पुष्प, चावल, तिल डालकर अर्घ्य देवें।

❀ माघमास में स्नान दान व्रत नियम का महत्व ❀

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान् श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नानमात्र से होती है। इसलिये स्वर्गलाभ, सभी पापों से मुक्ति और भगवान् वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिये।*(पद्मपुराण)* माघमास में पूर्णिमा को जो व्यक्ति ब्रह्मवैवर्त पुराण दान करता है, उसे ब्रह्मलोक प्राप्ति होती है । *(मत्स्यपुराण ५३/३५)* माघ मास में स्नान, दान, उपवास और भगवान् माधव की पूजा अत्यन्त फलदायी है। महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है– हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावास्या को प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है। *(महा, अनु २५/३६–३८)* जो माघमास में ब्राह्मणों को तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। *(महा०, अनु० ६६/८)* जो माघ मास को नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान् कुल में जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है।*(महा०, अनु० १०६/ २१)*

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	१२:३३	१४:०९	१६:०५	१८:१९	२०:३९	२२:५६	०१:११	०३:३०	०५:४८	०७:५३	०९:३८	११:०७
८	१२:२९	१४:०५	१६:०१	१८:१५	२०:३५	२२:५२	०१:०७	०३:२६	०५:४५	०७:५०	०९:३४	११:०३
९	१२:२५	१४:०१	१५:५७	१८:११	२०:३१	२२:४८	०१:०३	०३:२२	०५:४१	०७:४६	०९:३०	१०:५९
१०	१२:२१	१३:५७	१५:५३	१८:०७	२०:२७	२२:४४	००:५९	०३:१८	०५:३७	०७:४२	०९:२६	१०:५५
११	१२:१७	१३:५३	१५:४९	१८:०३	२०:२३	२२:४०	००:५५	०३:१४	०५:३३	०७:३८	०९:२२	१०:५१
१२	१२:१३	१३:४९	१५:४५	१७:५९	२०:१९	२२:३६	००:५१	०३:१०	०५:२९	०७:३४	०९:१८	१०:४७
१३	१२:०९	१३:४५	१५:४१	१७:५५	२०:१५	२२:३२	००:४७	०३:०६	०५:२५	०७:३०	०९:१४	१०:४४
१४	१२:०६	१३:४१	१५:३७	१७:५१	२०:११	२२:२८	००:४३	०३:०२	०५:२१	०७:२६	०९:१०	१०:४०
१५	१२:०२	१३:३८	१५:३३	१७:४७	२०:०८	२२:२४	००:३९	०२:५८	०५:१७	०७:२२	०९:०६	१०:३६
१६	११:५८	१३:३४	१५:२९	१७:४३	२०:०४	२२:२०	००:३५	०२:५४	०५:१३	०७:१८	०९:०३	१०:३२
१७	११:५४	१३:३०	१५:२५	१७:३९	२०:००	२२:१६	००:३१	०२:५०	०५:०९	०७:१४	०८:५९	१०:२८
१८	११:५०	१३:२६	१५:२१	१७:३५	१९:५६	२२:१२	००:२७	०२:४६	०५:०५	०७:१०	०८:५५	१०:२४
१९	११:४६	१३:२२	१५:१७	१७:३२	१९:५२	२२:०८	००:२३	०२:४२	०५:०१	०७:०६	०८:५१	१०:२०
२०	११:४२	१३:१८	१५:१३	१७:२८	१९:४८	२२:०४	००:१९	०२:३८	०४:५७	०७:०२	०८:४७	१०:१६
२१	११:३८	१३:१४	१५:०९	१७:२४	१९:४४	२२:००	००:१५	०२:३४	०४:५३	०६:५८	०८:४३	१०:१२

जनवरी	卐सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग卐
७	**अमृत**·१ २९:३० तक;
८	**सर्वार्थ**·पु–**रविपुष्य योग** २८:५१ तक;
९	**मृत्यु**·२ ०७:४२ तक; **द·ति**·२;
१०	**सिद्ध**·३ ०९:४७ तक;
१२	**सिद्ध**·५ १३:०२ तक; **द·न**·उफा,
१३	**सिद्ध**·६ १४:०० तक; **रवियोग**:ह १३:०९ से; **मृत्यु**·७ १४:०० से;
१४	**रवियोग**:ह १४:१० तक; **द्विपुष्कर**:७+चि १४:१०–१४:२८;
१५	**सिद्ध**·८ १४:२४ तक;
१६	**अमृत**·१० १३:५० से;
१७	**मृत्यु**·११ १४:४९ से;
१८	**सर्वार्थ**·अनु १३:३० तक; **अमृत**·११ ११:२३ तक; **सिद्ध**·१२ ११:२३ से; **द·ति**·१२;
१९	**द·ति**·१२; **अमृत**·१३ ०९:३८ से;
२०	**अमृत**·१४ ०७:३७–२९:२४;
२१	**मृत्यु**·१५ २७:०४ तक; **अमृत**·१ २७:०४ से;

❀ "**उत्तरायण** और दक्षिणायन में तीस घड़ी कर्क की और बीस घड़ी मकर की पुण्य काल की कही हैं।" –वृद्धवशिष्ठ, "रात्रि में **मकर संक्रान्ति** हो तो पर दिन में सूर्योदय उपरान्त दिन के पूर्वभाग में अर्थात् दोपहर तक पुण्यकाल होता है। प्रदोष वा अर्धरात्रि के समय यदि धनु राशि छोड़कर मकर राशि पर सूर्य आये तो परदिन में स्नान दान करे।" –भविष्योत्तर, इस प्रकार परदिन में पुण्यकाल कहने पर भी दिन के पूर्वभाग में ही पुण्यकाल सिद्ध हुआ। क्योंकि आसन्न संक्रमण का पुण्य दिनार्ध तक स्नान दान का है ऐसा वचन है। मकर राशि में सूर्य के प्रवेश के साथ ही देवमार्ग खुलता है। गीता८/२४–

अग्निज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणः।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।।

अनेक आकाशीय वीथियों का वर्णन वैदिक वाङ्मय में वर्णित है। उत्तरायण शुभ आत्मा का सहचर पथ है। इस पथ पर आरूढ़ आत्मा भटकती नहीं, शुभलोक में जाती है।

❀ स्कन्दपुराण में वर्णित श्रीसूर्यनारायण की स्तुति **श्रीजयादित्य अष्टकम्** के १२०० पाठ करने से सूर्य भगवान् प्रसन्न होते हैं व सूर्यजनित अशुभ फल, विशेषतः त्वचा, नेत्र सम्बन्धी रोग–व्याधि, धन, राजकार्य आदि समस्या में लाभ होता है।

माघ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २२ जनवरी से ५ फरवरी, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २२:१:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
२२	१ र	४३:१९	२४:४२	उ·षा· श्रवण	०१:०३ ५५:५०	०७:४८ ३०:०८	वज्र	११:१८	११:५३	किं	१६:१६	बव	४३:१९	२६:२२	७:२२	१७:५५	मकर	अहोरात्र	मुसल	८	२२
२३	२ चं	३७:३४	२२:२४	धनि·	५२:५५	२८:३२	सिद्धि व्यती·	०३:२७ ५२:१८	०८:४५ २९:३९	बाल	१०:२६	कौल	३७:३४	२६:२५	७:२२	१७:५६	कुं·२४:५३	१७:१९	शुभ	९	२३
२४	३ मं	३२:१०	२०:१४	शत·	४९:२१	२७:०६	वरी·	४८:२४	२६:४३	तैति	०४:४९	गर	३२:१०	२६:२८	७:२२	१७:५७	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	१०	२४
२५	४ बु	२७:१७	१८:१६	पू·भा·	४६:२२	२५:५४	परिघ	४१:३२	२३:५८	विष	२७:१७	बव	५५:०५	२६:३०	७:२२	१७:५८	मी·३२:०३	२०:११	पद्म	११	२५
२६	५ गु	२३:०७	१६:३६	उ·भा·	४४:०९	२५:०१	शिव	३५:१६	२१:२८	बाल	२३:०७	कौल	५१:२१	२६:३३	७:२१	१७:५९	मीन	अहोरात्र	छत्र	१२	२६
२७	६ शु	१९:५०	१५:१७	रेवती	४२:५१	२४:२९	सिद्ध	२९:४३	१९:१४	तैति	१९:५०	गर	४८:३४	२६:३६	७:२१	१७:५९	मे·४२:५१	२४:२९	श्रीवत्स	१३	२७
२८	७ श	१७:३६	१४:२३	अश्वि·	४२:३८	२४:२४	साध्य	२५:०१	१७:२१	वणि	१७:३६	विष	४६:५५	२६:३९	७:२१	१८:००	मेष	अहोरात्र	सौम्य	१४	२८
२९	८ र	१६:३३	१३:५७	भरणी	४३:३६	२४:४७	शुभ	२१:१५	१५:५०	बव	१६:३३	बाल	४६:२८	२६:४२	७:२०	१८:०१	वृ·५९:०२	३०:५७	कालदंड	१५	२९
३०	९ चं	१६:४५	१४:०२	कृत्ति·	४५:४९	२५:३९	शुक्ल	१८:२८	१४:४३	कौल	१६:४५	तैति	४७:१९	२६:४६	७:२०	१८:०२	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१६	३०
३१	१० मं	१८:१५	१४:३७	रोहि·	४९:१६	२७:०२	ब्रह्म	१६:४१	१४:००	गर	१८:१५	वणि	४९:२८	२६:४९	७:१९	१८:०३	वृष	अहोरात्र	मातङ्ग	१७	३१
फरवरी	११ बु	२०:६०	१५:४३	मृग·	५३:५१	२८:५१	ऐन्द्र	१५:५१	१३:३९	विष	२०:६०	बव	५२:४७	२६:५२	७:१९	१८:०४	मि·२१:२६	१५:५३	अमृत	१८	१
२	१२ गु	२४:५२	१७:१५	आर्द्रा	५९:२५	३१:०४	वैधृ·	१५:५३	१३:३९	बाल	२४:५२	कौल	५७:०९	२६:५५	७:१८	१८:०४	मिथुन	अहोरात्र	काण	१९	२
३	१३ शु	२९:३७	१९:०९	पुन·	६०:००	अहोरात्र	विष्कु·	१६:३६	१३:५६	तैति	२९:३७	गर	६०:००	२६:५९	७:१८	१८:०५	क·४९:०४	२६:५५	लुम्ब	२०	३
४	१४ श	३४:५६	२१:१६	पुन·	०५:४२	०९:३४	प्रीति	१७:४८	१४:२४	गर	०२:१५	वणि	३४:५६	२७:०२	७:१७	१८:०६	कर्क	अहोरात्र	छत्र	२१	४
५	१५ र	४०:२४	२३:२६	पुष्य	१२:१६	१२:११	आयु·	१९:११	१४:५७	विष	०७:४१	बव	४०:२४	२७:०५	७:१७	१८:०७	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	२२	५

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

२२ जनवरी से ५ फरवरी २०२३

२२ **गुप्त नवरात्र आरम्भः**, श्रीमद् वल्लभाचार्य जयन्ती,
२३ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती,
२४ **गौरी तृतीया,**
२५ **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, उमा चतुर्थी, तिल चौथ,
२६ **श्रीवसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वती पूजन, गणतन्त्र दिवस,**
२७ मन्दार षष्ठी,
२८ **भानुसप्तमी, रथसप्तमी**, श्री देवनारायण जयन्ती,
२९ **श्रीदुर्गाष्टमी व्रतम्**, भीष्माष्टमी (मध्याह्नव्यापिनी),
३० **गुप्त नवरात्र समाप्तिः**, महानन्दा नवमी,
३१ **गुप्त नवरात्रोत्थापन**, मुनि अजीतनाथ जयन्ती (जैन),
१ **श्री जया एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त), मासान्तः**,
२ **श्री भीष्म द्वादशी**, तिलद्वादशी, वाराह द्वादशी,
३ **प्रदोष व्रतम्**, विश्वकर्मा जयन्ती, मुनि गोरखनाथ जयन्ती,
४ श्री रामचरण स्नेही जयन्ती,
५ **माघी पूर्णिमा (व्रत–स्नान–दान), होलिका रोपण,**

❁ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❁

जनवरी फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२२	१ र	०९:०७:२१:३६	०९:०९:४४:५४	०१:१४:३३:२०	०८:१३:०८:५४	११:११:००:१४	१०:०१:०१:०४	०९:२७:१९:४३	०६:१७:१९:४६	४३:११:०५	द·२०:३६:०२	−११:५७	०७:३०:३०
२३	२ चं	०९:०८:२२:५०	०९:२४:०४:१७	०१:१४:३८:४८	०८:१३:४१:५६	११:११:१०:२२	१०:०२:१५:५४	०९:२७:२६:५१	०६:१७:१६:३६	४३:१२:२६	द·२०:२२:३०	−१२:१५	०८:१६:०१
२४	३ मं	०९:०९:२४:०३	१०:०८:२०:२०	०१:१४:४४:५५	०८:१४:२०:१०	११:११:२०:३८	१०:०३:३०:४२	०९:२७:३३:५९	०६:१७:१३:२५	४३:१३:५०	द·२०:०८:३५	−१२:३३	०९:००:२०
२५	४ बु	०९:१०:२५:१५	१०:२२:२९:४३	०१:१४:५१:४२	०८:१५:०३:२१	११:११:३१:०२	१०:०४:४५:२८	०९:२७:४१:०९	०६:१७:१०:१४	४३:१५:१५	द·१९:५४:१७	−१२:५०	०९:३८:४५
२६	५ गु	०९:११:२६:२६	११:०६:२९:२८	०१:१४:५९:०७	०८:१५:५१:१२	११:११:४१:३२	१०:०६:००:११	०९:२७:४८:२१	०६:१७:०७:०४	४३:१६:४२	द·१९:३९:३७	−१३:०६	१०:१६:३७
२७	६ शु	०९:१२:२७:३६	११:२०:१७:०५	०१:१५:०७:१०	०८:१६:४३:२८	११:११:५२:१०	१०:०७:१४:५२	०९:२७:५५:३३	०६:१७:०३:५३	४३:१८:११	द·१९:२४:३५	−१३:२२	११:३०:३८
२८	७ श	०९:१३:२८:४५	००:०३:५०:४४	०१:१५:१५:५०	०८:१७:३९:५३	११:१२:०२:५४	१०:०८:२९:३०	०९:२८:०२:४६	०६:१७:००:४२	४३:१९:४१	द·१९:०९:१२	−१३:३६	११:३०:१५
२९	८ र	०९:१४:२९:५२	००:१७:०९:१३	०१:१५:२५:०७	०८:१८:४०:११	११:१२:१३:४६	१०:०९:४४:०६	०९:२८:१०:०१	०६:१६:५७:३२	४३:२१:१३	द·१८:५३:२८	−१३:५०	१२:११:२६
३०	९ चं	०९:१५:३०:५९	०१:००:१२:१०	०१:१५:३४:६०	०८:१९:४४:०९	११:१२:२४:४४	१०:१०:५८:४०	०९:२८:१७:१६	०६:१६:५४:२१	४३:२२:४७	द·१८:३७:२४	−१४:०३	१२:५२:०५
३१	१० मं	०९:१६:३२:०४	०१:१२:५९:५६	०१:१५:४५:२८	०८:२०:५१:३२	११:१२:३५:४८	१०:१२:१३:१०	०९:२८:२४:३२	०६:१६:५१:१०	४३:२४:२२	द·१८:२०:६०	−१४:१४	१३:३८:१७
फरवरी	११ बु	०९:१७:३३:०९	०१:२५:३३:३७	०१:१५:५६:३१	०८:२२:०२:०८	११:१२:४६:५९	१०:१३:२७:३९	०९:२८:३१:४९	०६:१६:४७:६०	४३:२५:५९	द·१८:०४:१५	−१४:२६	१४:२६:१५
२	१२ गु	०९:१८:३४:१२	०२:०७:५५:०२	०१:१६:०८:०७	०८:२३:१५:४३	११:१२:५८:१७	१०:१४:४२:०५	०९:२८:३९:०७	०६:१६:४४:४९	४३:२७:३७	द·१७:४७:१२	−१४:३६	१५:१६:०५
३	१३ शु	०९:१९:३५:१४	०२:२०:०६:४०	०१:१६:२०:१७	०८:२४:३२:०७	११:१३:०९:४०	१०:१५:५६:२८	०९:२८:४६:२५	०६:१६:४१:३८	४३:२९:१७	द·१७:२९:५०	−१४:४५	१६:०९:३६
४	१४ श	०९:२०:३६:१४	०३:०२:११:२५	०१:१६:३२:५९	०८:२५:५१:०९	११:१३:२१:१०	१०:१७:१०:४८	०९:२८:५३:४४	०६:१६:३८:२८	४३:३०:५८	द·१७:१२:०९	−१४:५४	१७:०२:३७
५	१५ र	०९:२१:३७:१३	०३:१४:१२:३७	०१:१६:४६:१३	०८:२७:१२:३७	११:१३:३२:४६	१०:१८:२५:०६	०९:२९:०१:०४	०६:१६:३५:१७	४३:३२:४०	द·१६:५४:१०	−१५:०१	१७:५६:३७

२५ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथि:४

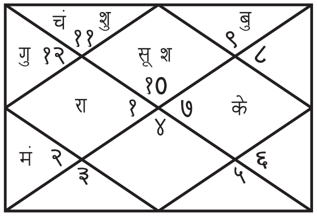

१ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

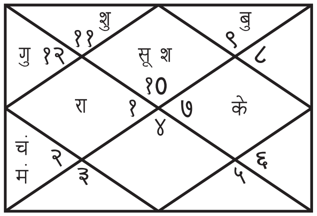

माघ शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २२ जनवरी से ५ फरवरी, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःशिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:२६

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२२	१ र	**अभिजित नक्षत्रान्तः ४:४६,** ब्रज महोत्सव ३ दिन भरतपुर, पूर्वाषाढ़ेबुधः घं·१५:५३;
२३	२ चं	**पंचकारम्भः १७:१९,** व्यतीपात पुण्यम्;
२४	३ मं	**पंचक, भद्रारम्भः ३१:१३घं·,** श्रवणायांरविः घं·२१:२८;
२५	४ बु	**पंचक, भद्रान्तः १८:१६घं·;**
२६	५ गु	**पंचक, श्रीगोविन्ददेवजी पाटोत्सव,जयपुर,** रतिकाममहोत्सव, मदनोत्सव, शतभिषायांशुक्रः घं·२०:०९;
२७	६ शु	**गण्डान्तः १८:३५–३०:२५, पंचकान्तः २४:२९,** दरिद्रहरण षष्ठी (स्कन्द पुराणे) ;
२८	७ श	**भद्रा १४:२३–२६:०६घं·, श्री भीष्माष्टमी, मन्वादि,** मर्यादा महोत्सव (जैन), ①
२९	८ र	भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं; ① मेला तामड़िया भैरूंजी (चाकसू), लाला लाजपत राय जयन्ती;
३०	९ चं	गाँधी पुण्यतिथि (शहीद दिवस) ;
३१	१० मं	**भद्रारम्भः २७:०६घं·;**
फरवरी	११ बु	**भद्रान्तः १५:४३घं·,** मेला बेणेश्वर प्रारम्भ १० दिन (डूंगरपुर) ;
२	१२ गु	भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं दीर्घायुलाभाय , तिल से विष्णुपूजन, सन्तान द्वादशी, वैधृति पुण्यम्;
३	१३ शु	मरू महोत्सव ३ दिन (जैसलमेर), मुनि धर्मनाथ जयन्ती, शनिः पश्चिमास्तः घं·०८:०९;
४	१४ श	**भद्रारम्भः २१:१६घं·,** अग्नि उत्सव उड़ीसा, श्रीजिनेन्द्र रथयात्रा (जैन) ,उत्तराषाढ़ेबुधः घं·२१:४६;
५	१५ र	**भद्रान्तः १०:२१घं·, माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, श्री महात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ललिता जयन्ती,** गुरु रविदास जयन्ती, बेणेश्वर मुख्यमेला डूंगरपुर;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१७–१३:४२
१५	१२:२०–१३:४६

❀ वसन्त पञ्चमी सरस्वती पूजन ❀

विद्यार्थी यदि एक पीत पुष्प चढ़ाकर भगवती सरस्वती का कोई स्तोत्र पाठ करले तब भी वह विद्या के क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। सरस्वती देवी की आराधना से साधारण व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त होती है और विशिष्ट बुद्धि वाला अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

❀ वैदिक मन्त्र ❀

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञम् वष्टु धिया वसुः ।। *ऋग्वेद १/३/१०*
ॐ चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञम् दधे सरस्वती ।। *ऋग्वेद १/३/११*
ॐ अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।। *१/४१/१६*

❀ महर्षि आश्वलायन कृत स्तोत्र ❀

ॐ चतुर्मुख–मुखाम्भोज–वनहंस–वधूर्मम । मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।
ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीर–पुर–वासिनी । त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च्च देहि मे ।।
ॐ अक्षसूत्र–धरा पाश– पुस्तक– धारिणी । मुक्ताहार–समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ।।
ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता । महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे संनिविश्यताम् ।।
ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा। भक्तजिह्वाग्र–सदना शमादि–गुणदायिनी ।।
ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृत–कुन्तलाम् । भवानीं भव– संताप –निर्वापण –सुधानदीम् ।।

❀ सरस्वती – स्तोत्र ❀

या कुन्देन्दु–तुषार–हार–धवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीम् पद्मासनेसंस्थितां। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल–लोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२२	११:३४	१३:१०	१५:०५	१७:२०	१९:४०	२१:५६	००:११	०२:३०	०४:४९	०६:५५	०८:३९	१०:०८
२३	११:३०	१३:०६	१५:०१	१७:१६	१९:३६	२१:५२	००:०७	०२:२६	०४:४५	०६:५१	०८:३५	१०:०४
२४	११:२६	१३:०२	१४:५८	१७:१२	१९:३२	२१:४८	००:०३	०२:२२	०४:४१	०६:४७	०८:३१	१०:००
२५	११:२२	१२:५८	१४:५४	१७:०८	१९:२८	२१:४४	२३:५९	०२:१८	०४:३७	०६:४३	०८:२७	०९:५६
२६	११:१८	१२:५४	१४:५०	१७:०४	१९:२४	२१:४१	२३:५५	०२:१४	०४:३३	०६:३९	०८:२३	०९:५२
२७	११:१४	१२:५०	१४:४६	१७:००	१९:२०	२१:३७	२३:५२	०२:१०	०४:२९	०६:३५	०८:१९	०९:४८
२८	११:१०	१२:४६	१४:४२	१६:५६	१९:१६	२१:३३	२३:४८	०२:०६	०४:२५	०६:३१	०८:१५	०९:४४
२९	११:०६	१२:४२	१४:३८	१६:५२	१९:१२	२१:२९	२३:४४	०२:०२	०४:२१	०६:२७	०८:११	०९:४०
३०	११:०२	१२:३८	१४:३४	१६:४८	१९:०८	२१:२५	२३:४०	०१:५९	०४:१७	०६:२३	०८:०७	०९:३६
३१	१०:५८	१२:३४	१४:३०	१६:४४	१९:०४	२१:२१	२३:३६	०१:५५	०४:१३	०६:१९	०८:०३	०९:३२
फरवरी	१०:५४	१२:३०	१४:२६	१६:४०	१९:००	२१:१७	२३:३२	०१:५१	०४:०९	०६:१५	०७:५९	०९:२८
२	१०:५०	१२:२६	१४:२२	१६:३६	१८:५६	२१:१३	२३:२८	०१:४७	०४:०६	०६:११	०७:५५	०९:२४
३	१०:४६	१२:२२	१४:१८	१६:३२	१८:५२	२१:०९	२३:२४	०१:४३	०४:०२	०६:०७	०७:५१	०९:२१
४	१०:४२	१२:१८	१४:१४	१६:२८	१८:४८	२१:०५	२३:२०	०१:३९	०३:५८	०६:०३	०७:४७	०९:१७
५	१०:३९	१२:१४	१४:१०	१६:२४	१८:४४	२१:०१	२३:१६	०१:३५	०३:५४	०५:५९	०७:४३	०९:१३

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२२	**सर्वार्थ**·उषा ७:४८ तक; **मृत्यु**·१ २४:४२ तक;
२३	**द्विपुष्कर**ः२+ध ०६:०८–२२:२४;**मृत्यु**·२ २२:२४ तक;**रवियोग**ःश २८:३२ से;
२४	**सिद्ध**·३ २०:१४ तक; **रवियोग**ःश २७:०६ तक; **रवियोग**ःपूभा २७:०६ से;
२५	**रवियोग**ःपूभा २५:५४ तक;
२६	**सिद्ध**·५ १६:३६ तक; **सर्वार्थ**·रे–**रवियोग**ःरे २५:०१ से;
२७	**सर्वार्थ**·रे–·अ अहोरात्र; **रवियोग**ःरे २४:२९ तक; **सिद्ध**·६ १५:१७ तक; **मृत्यु**·७ १५:१७ से;
२९	**सिद्ध**·८ १३:५७ तक; **द·न**·भ; **रवियोग**ःकृ २४:४७ से;
३०	**रवियोग**ःकृ–रा अहोरात्र; **अमृत**·१० १४:०२ से; **सर्वार्थ**·रो २५:३९ से;
३१	**रवियोग**ःरो २७:०२ तक; **मृत्यु**·११ १४:३७ से;
फरवरी	**सर्वार्थ**·मृ २८:५१ से; **अमृत**·११ १५:४३तक; **सिद्ध**·१२ १५:४३से;**द·ति**·१२;
२	**द·ति**·१२; **सर्वार्थ**·पुन– **रवियोग**ःपुन ३१:०४ से; **अमृत**·१३ १७:१५ से;
३	**सर्वार्थ**·पुन–**रवियोग**ःपुन अहोरात्र; **अमृत**·१४ १९:०९ से;
४	**सिद्ध**·१४ २१:१६ तक; **रवियोग**ःपुन ९:३४ तक; **मृत्यु**·१५ २१:१६ से;
५	**सर्वार्थ**·पु १२:११ तक; **अमृत**·१५ २३:२६ तक; **मृत्यु**·१ २३:२६ से;

❀ **माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी** तक **गुप्त नवरात्रि** की आराधना चलती है।

❀ कुंदचतुर्थी, **तिलचतुर्थी** में गणेश जी को तिल का लड्डू चढ़ाया जाता है। गौरी माता को कुंद अर्पित किया जाता है।

❀**माघ शुक्ल पञ्चमी** के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें। नैवेद्य भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का भोग लगावें। **वसंत पंचमी** के दिन से संवत् होलिका गाड़कर उसमें ईंधन डालने की प्रक्रिया लोक में शुरू होती है जो होलिकादाह के दिन जलाई जाती है।

❀**माघी पूर्णिमा** को कल्पवास की समाप्ति व भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जयन्ती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा को पितृलोक का द्वार खुला रहता है, इस दिन दान–धर्म, श्राद्ध–तर्पण का अपूर्व महत्व है। माघ स्नान और दान का मास है।

फाल्गुन कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ६ फरवरी से २० फरवरी, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– **६:२:२०२३** मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
६	१ चं	४५:३२	२५:२९	आश्ले·	१८:४३	१४:४५	सौभा·	२०:२८	१५:२७	बाल	१३:०३	कौल	४५:३२	२७:०९	७:१६	१८:०८	सिं·१८:४३	१४:४५	सौम्य	२३	६
७	२ मं	४९:५९	२७:१५	मघा	२४:४०	१७:०७	शोभ·	२१:१९	१५:४७	तैति	१७:५३	गर	४९:५९	२७:१२	७:१६	१८:०८	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	२४	७
८	३ बु	५३:२७	२८:३८	पू·फा·	२९:४६	१९:०९	अतिग·	२१:३२	१५:५२	वणि	२१:५२	विष	५३:२७	२७:१६	७:१५	१८:०९	क·४५:५२	२५:३६	प्रवर्द्ध	२५	८
९	४ गु	५५:४३	२९:३२	उ·फा·	३३:४८	२०:४५	सुकर्मा	२०:५४	१५:३६	बव	२४:४५	बाल	५५:४३	२७:१९	७:१४	१८:१०	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	२६	९
१०	५ शु	५६:४३	२९:५५	हस्त	३६:३७	२१:५३	धृति	१९:२२	१४:५८	कौल	२६:२४	तैति	५६:४३	२७:२३	७:१४	१८:११	कन्या	अहोरात्र	अमृत	२७	१०
११	६ श	५६:२५	२९:४७	चित्रा	३८:१२	२२:३०	शूल	१६:४९	१३:५७	गर	२६:४५	वणि	५६:२५	२७:२७	७:१३	१८:१२	तु·०७:३५	१०:१५	काण	२८	११
१२	७ र	५४:५३	२९:१०	स्वाती	३८:३४	२२:३८	गण्ड	१३:१८	१२:३१	विष	२५:४९	बव	५४:५३	२७:३०	७:१२	१८:१२	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	२९	१२
१३	८ चं	५२:१३	२८:०५	विशा·	३७:४७	२२:१८	वृद्धि	०८:५०	१०:४३	बाल	२३:४२	कौल	५२:१३	२७:३४	७:१२	१८:१३	वृ·२३:०५	१६:२६	मित्र	३०	१३
१४	९ मं	४८:३४	२६:३६	अनु·	३६:०१	२१:३५	ध्रुव व्याघ·	०३:३० ५३:५३	०८:३५ ३०:०९	तैति	२०:३१	गर	४८:३४	२७:३८	७:११	१८:१४	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	१	१४
१५	१० बु	४४:०६	२४:४८	ज्ये·	३३:२४	२०:३१	हर्षण	५०:४०	२७:२६	वणि	१६:२६	विष	४४:०६	२७:४१	७:१०	१८:१५	ध·३३:२४	२०:३१	ध्वांक्ष	२	१५
१६	११ गु	३८:५८	२२:४४	मूल	३०:०५	१९:११	वज्र	४३:२६	२४:३२	बव	११:३७	बाल	३८:५८	२७:४५	७:०९	१८:१५	धनु	अहोरात्र	धूम्र	३	१६
१७	१२ शु	३३:२३	२०:३०	पू·षा·	२६:१९	१७:४०	सिद्धि	३५:५२	२१:२९	कौल	०६:१४	तैति	३३:२३	२७:४९	७:०८	१८:१६	म·४०:१८	२३:१६	प्रवर्द्ध	४	१७
१८	१३ श	२७:३१	१८:०८	उ·षा·	२२:१४	१६:०१	व्यति·	२८:०५	१८:२१	गर	००:२९	वणि	२७:३१	२७:५३	७:०८	१८:१७	मकर	अहोरात्र	राक्षस	५	१८
१९	१४ र	२१:३६	१५:४५	श्रवण	१८:०५	१४:२१	वरी·	२०:१५	१५:१३	शकु	२१:३६	चतु	४८:४०	२७:५७	७:०७	१८:१७	कुं·४६:०२	२५:३२	गद	६	१९
२०	३० चं	१५:५०	१३:२६	धनि·	१४:०५	१२:४४	परिघ	१२:३३	१२:०७	नाग	१५:५०	किं	४३:०४	२८:०१	७:०६	१८:१८	कुंभ	अहोरात्र	शुभ	७	२०

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

६ फरवरी से २० फरवरी २०२३

- ६ — माघी मासम् (दक्षिण भारत),
- ९ — **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:३२**
- १० — श्रीमहाकाल शिवनवरात्र महोत्सव (उज्जैन),
- १३ — **श्रीकालाष्टमी,** श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथद्वारा)
- १४ — समर्थ गुरु रामदास जयन्ती,
- १५ — स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (आर्यसमाज)
- १६ — **श्री विजया एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
- १८ — **शनि प्रदोष व्रतम्, श्री महाशिवरात्रि व्रतम् ❀**
- १९ — **❀ सर्वत्रशिवपूजन–अभिषेक,**
- २० — **सोमवती अमावस्या (देव–पितृकार्य),**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
६	१ चं	०९:२२:३८:११	०३:२६:१४:०९	०१:१६:५९:५९	०८:२८:३६:२३	११:१३:४४:२८	१०:१९:३९:२१	०९:२९:०८:२४	०६:१६:३२:०६	४३:३४:२४	द·१६:३५:५४	–१५:०८	१८:५०:४७
७	२ मं	०९:२३:३९:०८	०४:०८:१९:४५	०१:१७:१४:१५	०९:००:०२:१८	११:१३:५६:१५	१०:२०:५३:३३	०९:२९:१५:४४	०६:१६:२८:५६	४३:३६:०८	द·१६:१७:२१	–१५:१४	१९:४४:२०
८	३ बु	०९:२४:४०:०३	०४:२०:३२:४०	०१:१७:२९:०१	०९:०१:३०:१३	११:१४:०८:०९	१०:२२:०७:४३	०९:२९:२३:०४	०६:१६:२५:४५	४३:३७:५४	द·१५:५८:३०	–१५:१९	२०:३७:५३
९	४ गु	०९:२५:४०:५७	०५:०२:५५:४९	०१:१७:४४:१६	०९:०३:००:००	११:१४:२०:०७	१०:२३:२१:४९	०९:२९:३०:२५	०६:१६:२२:३४	४३:३९:४१	द·१५:३९:२४	–१५:२३	२१:३२:२४
१०	५ शु	०९:२६:४१:५०	०५:१५:३१:३२	०१:१८:००:००	०९:०४:३१:३२	११:१४:३२:१२	१०:२४:३५:५३	०९:२९:३७:४६	०६:१६:१९:२४	४३:४१:२९	द·१५:२०:०२	–१५:२६	२२:२८:०३
११	६ श	०९:२७:४२:४१	०५:२८:२१:३२	०१:१८:१६:१२	०९:०६:०४:४२	११:१४:४४:२१	१०:२५:४९:५३	०९:२९:४५:०७	०६:१६:१६:१३	४३:४३:१८	द·१५:००:२४	–१५:२९	२३:२४:५६
१२	७ र	०९:२८:४३:३०	०६:११:२६:४९	०१:१८:३२:५२	०९:०७:३९:२३	११:१४:५६:३६	१०:२७:०३:५१	०९:२९:५२:२८	०६:१६:१३:०३	४३:४५:०८	द·१४:४०:३१	–१५:३०	२४:२५:०८
१३	८ चं	०९:२९:४४:१८	०६:२४:४७:३७	०१:१८:४९:५९	०९:०९:१५:२९	११:१५:०८:५६	१०:२८:१७:४६	०९:२९:५९:४९	०६:१६:०९:५२	४३:४६:५८	द·१४:२०:२४	–१५:३१	०१:२६:३८
१४	९ मं	१०:००:४५:०५	०७:०८:२३:२५	०१:१९:०७:३२	०९:१०:५२:५५	११:१५:२१:२१	१०:२९:३१:३७	१०:००:०७:१०	०६:१६:०६:४१	४३:४८:५०	द·१४:००:०२	–१५:३१	०२:२८:११
१५	१० बु	१०:०१:४५:४९	०७:२२:१२:५७	०१:१९:२५:३०	०९:१२:३१:३५	११:१५:३३:५१	११:००:४५:२६	१०:००:१४:३१	०६:१६:०३:३१	४३:५०:४३	द·१३:३९:२७	–१५:३०	०३:३०:३५
१६	११ गु	१०:०२:४६:३३	०८:०६:१४:१५	०१:१९:४३:५४	०९:१४:११:२४	११:१५:४६:२६	११:०१:५९:११	१०:००:२१:५१	०६:१६:००:२०	४३:५२:३६	द·१३:१८:३८	–१५:२८	०४:२७:०८
१७	१२ शु	१०:०३:४७:१४	०८:२०:२४:४५	०१:२०:०२:४२	०९:१५:५२:१७	११:१५:५९:०५	११:०३:१२:५३	१०:००:२९:१२	०६:१५:५७:०९	४३:५४:३०	द·१२:५७:३७	–१५:२६	०५:२२:२६
१८	१३ श	१०:०४:४७:५४	०९:०४:४१:२५	०१:२०:२१:५५	०९:१७:३४:१०	११:१६:११:४९	११:०४:२६:३२	१०:००:३६:३४	०६:१५:५३:५९	४३:५६:२५	द·१२:३६:२३	–१५:२३	०६:०९:५३
१९	१४ र	१०:०५:४८:३३	०९:१९:००:५१	०१:२०:४१:३०	०९:१९:१६:५८	११:१६:२४:३८	११:०५:४०:०७	१०:००:४३:५५	०६:१५:५०:४८	४३:५८:२०	द·१२:१४:५७	–१५:१९	०६:५४:४६
२०	३० चं	१०:०६:४९:०९	१०:०३:१९:०६	०१:२१:०१:२९	०९:२१:००:३७	११:१६:३७:३१	११:०६:५३:४०	१०:००:५१:१६	०६:१५:४७:३७	४४:००:१६	द·११:५३:२०	–१५:१४	०७:३४:५७

९ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

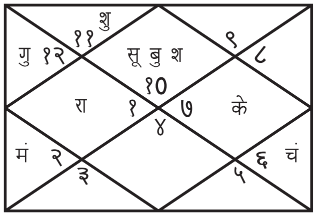

१६ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

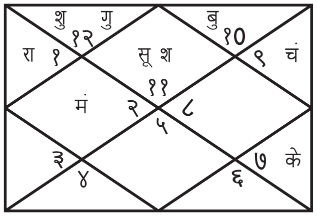

फाल्गुन कृष्णपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, ६ फरवरी से २० फरवरी, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर । उत्तरायणं ।
याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:२८

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
६	१ चं	**गण्डान्तः ८:०८–२१:२२**, धनिष्ठायांरविः घं·२३:४४, ①
७	२ मं	; ① मकरेबुधः घं·३०:३८, पूर्वभाद्रेशुक्रः घं·१३:५७;
८	३ बु	**भद्रा १६:००–२८:३८घं·**;
९	४ गु	;
१०	५ शु	;
११	६ श	**भद्रारम्भः २९:४७घं·**;
१२	७ र	**भद्रान्तः १७:३२घं·, मासान्तः**;
१३	८ चं	**कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकालं,७:१२–१८:१३घं·**, सीताष्टमी, ②
१४	९ मं	**मासादिः**, मीनेशुक्रः घं·१६:२४;
१५	१० बु	**भद्रा १३:४५–२४:४८घं·, गण्डान्तः१४:४९–२६:१३**;
१६	११ गु	;
१७	१२ शु	उत्तरभाद्रेशुक्रः घं·०९:२८;
१८	१३ श	**भद्रा १८:०८–२८:४३घं·, अभिजित नक्षत्रः ८:१७–२५:५८**, व्यतीपात पुण्यं;
१९	१४ र	**पंचकारंभः २५:३२**, बैद्यनाथ जयन्ती, शतभिषायांरविः घं·२७:२९;
२०	३० चं	**पंचक**, रेवत्यांगुरुः घं·११:४६; ② अनवष्टका श्राद्ध, कुम्भेरविः घं·१३:२४, श्रवणायांबुधः घं·१८:१२, कुम्भेशनिः घं·०७:४८;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:२०–१३:४७
१५	१२:१९–१३:४९

❀ श्रीशिवपंचाक्षरी मन्त्रप्रयोगविधिः ❀

❀ **विनियोगः**– ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः शिवो देवता, मं बीजं, यं शक्तिः, वां कीलकं, सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः ।

❀ **ऋष्यादिन्यासः** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेवर्षये नमः– शिरसि। ॐ पंक्तिछन्दसे नमः– मुखे। ॐ शिवाय देवतायै नमः– हृदये। ॐ मं बीजाय नमः– गुह्ये। ॐ यं शक्तये नमः– पादयोः। ॐ वां कीलकाय नमः– नाभौ। ॐ सदाशिव कृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः– सर्वांगे।

❀ **अथ करन्यासः**ॐ ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

❀ **अथ हृदयादिन्यासः** ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ मं नमः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमः कवचाय हुम्। ॐ वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं नमः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

❀ **अथ ध्यानम् :** ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतम् अमरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।

❀ **श्रीशिव पंचाक्षर मन्त्रः– ॐ नमः शिवाय**

❀ फाल्गुन मास कृत्य ❀

❀ **महाशिवरात्रि व्रत**– फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मध्यरात्रि में चतुर्दशी विद्यमान् होने पर महाशिवरात्रि व्रत होता है। यह त्रयोदशी विद्धा श्रेष्ठ होती है– ***पूर्वविद्धैवकर्तव्याशिवरात्रिः*** *(निर्णयसिन्धु)*/ **१.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी न हो तब दूसरे दिन व्रत करे। **२.** यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो तो पूर्व दिन व्रत करे। ऐसा हेमाद्रि और कौस्तुभ का वचन है। **३.** परातिथि अर्थात् चतुर्दशी उदया में ही महाशिवरात्रि करनी चाहिए यह मत माधव, निर्णयसिन्धु और पुरुषार्थचिन्तामणि आदि बहुतों का है। **४.** यदि पूर्व दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो, दूसरे दिन मध्यरात्रि में न हो तो पूर्वदिन ही व्रत करना चाहिए। **५.** पूर्व मध्यरात्रि में न हो और अगले दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो तो पर (अगले) दिन ही व्रत करना चाहिए। **६.** महाशिवरात्रि की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। यह व्रत नित्य और काम्य दोनों है अर्थात् इसे प्रतिवर्ष शिव की आराधना के रूप में किया जा सकता है। साथ ही पुत्र प्राप्ति तथा दीर्घायु प्राप्ति की कामना से भी इसे किया जाता है। काम्य व्रत में १२ वर्ष अथवा २४ वर्ष का संकल्प लिया जाता है– ***एवमेतद् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं व्रती। द्वादशाब्दिकमेव स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा।।***

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फरवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
६	१०:३५	१२:११	१४:०६	१६:२०	१८:४०	२०:५७	२३:१२	०१:३१	०३:५०	०५:५५	०७:४०	०९:०९
७	१०:३१	१२:०७	१४:०२	१६:१६	१८:३७	२०:५३	२३:०८	०१:२७	०३:४६	०५:५१	०७:३६	०९:०५
८	१०:२७	१२:०३	१३:५८	१६:१२	१८:३३	२०:४९	२३:०४	०१:२३	०३:४२	०५:४७	०७:३२	०९:०१
९	१०:२३	११:५९	१३:५४	१६:०८	१८:२९	२०:४५	२३:००	०१:१९	०३:३८	०५:४३	०७:२८	०८:५७
१०	१०:१९	११:५५	१३:५०	१६:०४	१८:२५	२०:४१	२२:५६	०१:१५	०३:३४	०५:३९	०७:२४	०८:५३
११	१०:१५	११:५१	१३:४६	१६:००	१८:२१	२०:३७	२२:५२	०१:११	०३:३०	०५:३५	०७:२०	०८:४९
१२	१०:११	११:४७	१३:४२	१५:५७	१८:१७	२०:३३	२२:४८	०१:०७	०३:२६	०५:३१	०७:१६	०८:४५
१३	१०:०७	११:४३	१३:३८	१५:५३	१८:१३	२०:२९	२२:४४	०१:०३	०३:२२	०५:२७	०७:१२	०८:४१
१४	१०:०३	११:३९	१३:३४	१५:४९	१८:०९	२०:२५	२२:४०	००:५९	०३:१८	०५:२३	०७:०८	०८:३७
१५	०९:५९	११:३५	१३:३०	१५:४५	१८:०५	२०:२१	२२:३६	००:५५	०३:१४	०५:१९	०७:०४	०८:३३
१६	०९:५५	११:३१	१३:२७	१५:४१	१८:०१	२०:१७	२२:३२	००:५१	०३:१०	०५:१५	०७:००	०८:२९
१७	०९:५१	११:२७	१३:२३	१५:३७	१७:५७	२०:१३	२२:२८	००:४७	०३:०६	०५:११	०६:५६	०८:२५
१८	०९:४७	११:२३	१३:१९	१५:३३	१७:५३	२०:०९	२२:२४	००:४३	०३:०२	०५:०७	०६:५२	०८:२१
१९	०९:४३	११:१९	१३:१५	१५:२९	१७:४९	२०:०५	२२:२०	००:३९	०२:५८	०५:०४	०६:४८	०८:१७
२०	०९:३९	११:१५	१३:११	१५:२५	१७:४५	२०:०१	२२:१६	००:३५	०२:५४	०५:००	०६:४४	०८:१३

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि,त्रिपुष्कर,अमृत,रवि आदि योग 卐
६	**सिद्ध**·१ २५:२९ तक; **मृत्यु**·२ २५:२९ से;
७	**अमृत**·२ २७:१५ तक; **सिद्ध**·३ २७:१५ से;
८	**मृत्यु**·३ २८:३८ तक;
९	**मृत्यु**·४ २९:३२ तक; **द·न**·उफा २०:४५ तक; **सिद्ध**·५ २९:३२ से;
१०	**सिद्ध**·६ २९:५५ से;
११	**अमृत**·६ २९:४७ तक; **सर्वार्थ**·स्वा–**रवियोग**ःस्वा २२:३० से;
१२	**त्रिपुष्कर**ः७+वि २२:३८–२९:१० तक; **रवियोग**ःस्वा २२:३८ तक; **सिद्ध**·८ २९:१० से;
१३	**सर्वार्थ**·अनु २२:१८ से;
१५	**अमृत**·११ २४:४८ से;
१७	**मृत्यु**·१२ २०:३० तक;
१८	**सर्वार्थ**·श्र १६:०१ से; **सिद्ध**·१४ १८:०८ से;
१९	**अमृत**·१५ १५:४५ से;
२०	**अमृत**·१५ १३:२६ तक; **सिद्ध**·१ १३:२६ से;

❀ फाल्गुन मास का नाम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर पड़ा है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा प्रायः पूर्वा या उ·फा· नक्षत्र पर होता है। **महाशिवरात्रि** व्रत **१८ फरवरी** को पड़ रहा है। यह मध्यरात्रिव्यापिनी चतुर्दशी में मानी जाती है। शिवरात्रिव्रत की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। मध्यरात्रि में शिवशक्ति की पूजा करके पारण किया जाता है। यदि अगले दिन भी चतुर्दशी हो तो अगले दिन पारण करते हैं।

❀ ***नमः प्रदानेन मनः ददासि*** – हे आशुतोष भगवान् शिव शंकर! आप नमः कहते ही अपना मनः (प्रेम) प्रदान कर देते हैं।

❀ ***र व प्रदानेन वरं ददासि*** – हे भगवान् शिव! आप र व शब्द उच्चारण करने पर वर दे देते हैं। ज्ञात हो गाल फुलाकर बकरे की आवाज में गाल बजाने से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। यह शब्द दक्ष प्रजापति के मुख से निकलने के कारण भूतभावन भगवान् भोलेनाथ को प्रिय है।

फाल्गुन शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २१ फरवरी से ७ मार्च, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– २१:२:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्त; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः		व्रत–पर्व–उत्सव
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी	२१ फरवरी से ७ मार्च २०२३
२१	१ मं	१०:२६	११:१५	शत·	१०:२४	११:१५	शिव सिद्ध	०५:०७ ५२:५८	०९:०८ ३०:२०	बव	१०:२६	बाल	३७:५४	२८:०४	७:०५	१८:१९	मी·५२:५९	२८:१६	मृत्यु	८	२१	मातृभाषा दिवस, पयो व्रतारम्भ,
२२	२ बु	०५:३४	०९:१८	पू·भा·	०७:१७	०९:५९	साध्य	५१:३९	२७:४४	कौल	०५:३४	तैति	३३:२२	२८:०८	७:०४	१८:१९	मीन	अहोरात्र	पद्म	९	२२	**फूलेरा दौज**, श्री खाटूश्यामजी मेला आरम्भ,
२३	३ गु ४ गु	०१:२६ ५६:४३	०७:३८ ३०:१९	उ·भा·	०४:५३	०९:०१	शुभ	४५:५४	२५:२५	गर	०१:२६	वणि	२९:४०	२८:१२	७:०३	१८:२०	मीन	अहोरात्र	छत्र	१०	२३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, मधूक तृतीया,
२४	५ शु	५५:५७	२९:२५	रेवती	०३:२२	०८:२३	शुक्ल	४०:५८	२३:२६	बव	२६:५५	बाल	५५:५७	२८:१६	७:०२	१८:२१	मे·०३:२२	०८:२३	श्रीवत्स	११	२४	
२५	६ श	५४:५६	२९:००	अश्वि·	०२:५४	०८:११	ब्रह्म	३६:५७	२१:४८	कौल	२५:१८	तैति	५४:५६	२८:२०	७:०१	१८:२१	मेष	अहोरात्र	सौम्य	१२	२५	गोरूपिणी छठ बंगाल,
२६	७ र	५५:१०	२९:०५	भरणी	०३:३६	०८:२७	ऐन्द्र	३३:५३	२०:३४	गर	२४:५४	वणि	५५:१०	२८:२४	७:००	१८:२२	वृ·१८:५७	१४:३५	कालदंड	१३	२६	कामदा सप्तमी, कल्याणसप्तमी व्रत,
२७	८ चं	५६:४३	२९:४१	कृत्ति·	०५:३१	०९:१२	वैधृ·	३१:५०	१९:४४	विष	२५:४८	बव	५६:४३	२८:२८	७:००	१८:२३	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१४	२७	**होलाष्टक प्रारम्भ**, **श्रीदुर्गाष्टमी**,
२८	९ मं	५९:२९	३०:४६	रोहि·	०८:४२	१०:२७	विष्कु·	३०:४६	१९:१७	बाल	२७:५८	कौल	५९:२९	२८:३२	६:५९	१८:२३	मि·४०:४३	२३:१६	मातङ्ग	१५	२८	ब्रज–बरसाना में होली आरम्भ,
मार्च	१० बु	६०:००	अहोरात्र	मृग·	१३:०३	१२:११	प्रीति	३०:३५	१९:१२	तैति	३१:१९	गर	६०:००	२८:३६	६:५८	१८:२४	मिथुन	अहोरात्र	अमृत	१६	१	फागु दशमी (उड़ीसा),
२	१० गु	०३:२३	०८:१८	आर्द्रा	१८:२५	१४:१९	आयु·	३१:१०	१९:२५	गर	०३:२३	वणि	३५:४०	२८:४०	६:५७	१८:२५	मिथुन	अहोरात्र	काण	१७	२	
३	११ शु	०८:०८	१०:११	पुन·	२४:३२	१६:४४	सौभा·	३२:१८	१९:५१	विष	०८:०८	बव	४०:४२	२८:४४	६:५६	१८:२५	क·०७:५८	१०:०७	लुम्ब	१८	३	**श्री आमलकी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**,
४	१२ श	१३:२४	१२:१६	पुष्य	३१:०४	१९:२०	शोभ·	३३:४४	२०:२४	बाल	१३:२४	कौल	४६:०५	२८:४८	६:५५	१८:२६	कर्क	अहोरात्र	मित्र	१९	४	**शनि प्रदोष व्रतम्**, खाटूश्यामजी मेला समाप्त
५	१३ र	१८:४७	१४:२४	आश्ले·	३७:३६	२१:५६	अतिग·	३५:०९	२०:५७	तैति	१८:४७	गर	५१:२१	२८:५२	६:५४	१८:२६	सिं·३७:३६	२१:५६	वज्र	२०	५	नन्द त्रयोदशी व्रत,
६	१४ चं	२३:४९	१६:२४	मघा	४३:४२	२४:२१	सुकर्मा	३६:१३	२१:२२	वणि	२३:४९	विष	५६:०४	२८:५६	६:५३	१८:२७	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२१	६	**पूर्णिमा व्रतम्**, **होलिका दहन**, हुताशनी जन्म
७	१५ मं	२८:०८	१८:०७	पू·फा·	४९:०१	२६:२८	धृति	३६:४४	२१:३३	बव	२८:०८	बाल	५९:५५	२९:००	६:५१	१८:२८	सिंह	अहोरात्र	धूम्र	२२	७	**फाल्गुन पूर्णिमा (स्नान–दान)**, **धुलण्डी**,

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२१	१ मं	१०:०७:४९:४४	१०:१७:३२:३२	०१:२१:२१:५०	०९:२२:४५:०३	११:१६:५०:२८	११:०८:०७:०९	१०:००:५८:३७	०६:१५:४४:२७	४४:०२:१३	द·११:३१:३२	–१५:०९	०७:३४:०३
२२	२ बु	१०:०८:५०:१७	११:०१:३७:५८	०१:२१:४२:३४	०९:२४:३०:१३	११:१७:०३:२९	११:०९:२०:३४	१०:०१:०५:५८	०६:१५:४१:१६	४४:०४:१०	द·११:०९:३२	–१५:०२	०८:१२:११
२३	३ गु	१०:०९:५०:४९	११:१५:३२:३८	०१:२२:०३:३८	०९:२६:१६:०३	११:१७:१६:३५	११:१०:३३:५६	१०:०१:१३:१९	०६:१५:३८:०५	४४:०६:०८	द·१०:४७:२३	–१४:५६	०८:४९:४४
२४	५ शु	१०:१०:५१:१९	११:२९:१४:१७	०१:२२:२५:०४	०९:२८:०२:२९	११:१७:२९:४४	११:११:४७:१५	१०:०१:२०:४०	०६:१५:३४:५५	४४:०८:०६	द·१०:२५:०४	–१४:४८	०९:२६:३४
२५	६ श	१०:११:५१:४६	००:१२:४१:२३	०१:२२:४६:५०	०९:२९:४९:२९	११:१७:४२:५८	११:१३:००:३०	१०:०१:२८:००	०६:१५:३१:४४	४४:१०:०५	द·१०:०२:३५	–१४:४०	१०:०५:५०
२६	७ र	१०:१२:५२:१२	००:२५:५३:०५	०१:२३:०८:५६	१०:०१:३६:५८	११:१७:५६:१५	११:१४:१३:४१	१०:०१:३५:२०	०६:१५:२८:३४	४४:१२:०४	द·०९:३९:५७	–१४:३१	१०:४७:०१
२७	८ चं	१०:१३:५२:३६	०१:०८:४९:१८	०१:२३:३१:२१	१०:०३:२४:५३	११:१८:०९:३६	११:१५:२६:४९	१०:०१:४२:३९	०६:१५:२५:२३	४४:१४:०४	द·०९:१७:१०	–१४:२१	११:३०:१०
२८	९ मं	१०:१४:५२:५९	०१:२१:३०:४३	०१:२३:५४:०६	१०:०५:१३:१२	११:१८:२३:००	११:१६:३९:५३	१०:०१:४९:५८	०६:१५:२२:१२	४४:१६:०४	द·०८:५४:१६	–१४:११	१२:१८:४५
मार्च	१० बु	१०:१५:५३:१९	०२:०३:५८:४७	०१:२४:१७:०९	१०:०७:०१:५२	११:१८:३६:२८	११:१७:५२:५३	१०:०१:५७:१७	०६:१५:१९:०२	४४:१८:०५	द·०८:३१:१३	–१४:०१	१३:०६:२१
२	१० गु	१०:१६:५३:३७	०२:१६:१५:३४	०१:२४:४०:३१	१०:०८:५०:४९	११:१८:४९:६०	११:१९:०५:५०	१०:०२:०४:३४	०६:१५:१५:५१	४४:२०:०६	द·०८:०८:०४	–१३:४९	१४:००:२०
३	११ शु	१०:१७:५३:५४	०२:२८:२३:४७	०१:२५:०४:१०	१०:१०:४०:००	११:१९:०३:३५	११:२०:१८:४२	१०:०२:११:५१	०६:१५:१२:४०	४४:२२:०७	द·०७:४४:४७	–१३:३८	१४:५३:३९
४	१२ श	१०:१८:५४:०८	०३:१०:२६:३१	०१:२५:२८:०७	१०:१२:२९:२३	११:१९:१७:१२	११:२१:३१:३१	१०:०२:१९:०७	०६:१५:०९:३०	४४:२४:०८	द·०७:२१:२३	–१३:२५	१५:४७:२०
५	१३ र	१०:१९:५४:२०	०३:२२:२७:१७	०१:२५:५२:२१	१०:१४:१८:५४	११:१९:३०:५३	११:२२:४४:१६	१०:०२:२६:२२	०६:१५:०६:१९	४४:२६:१०	द·०६:५७:५४	–१३:१२	१६:४१:२४
६	१४ चं	१०:२०:५४:३१	०४:०४:३०:०५	०१:२६:१६:५२	१०:१६:०८:२६	११:१९:४४:३७	११:२३:५६:५७	१०:०२:३३:३७	०६:१५:०३:०८	४४:२८:१२	द·०६:३४:१९	–१२:५९	१७:३५:२२
७	१५ मं	१०:२१:५४:३९	०४:१६:३८:२४	०१:२६:४१:३८	१०:१७:५७:५७	११:१९:५८:२४	११:२५:०९:३४	१०:०२:४०:५०	०६:१४:५९:५८	४४:३०:१४	द·०६:१०:३८	–१२:४५	१८:२८:३०

२२ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः**२**

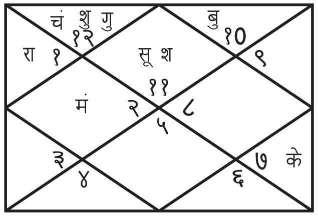

३ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

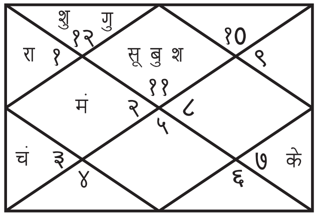

फाल्गुन शुक्लपक्षः संवत् २०७९ शाके १९४४, २१ फरवरी से ७ मार्च, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५१:३०

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२१	१ मं	**पंचक**, धनिष्ठायांबुधः घं·१५:०५;
२२	२ बु	**पंचक**, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, पं· लेखराम जयन्ती;
२३	३ गु	**पंचक, भद्रा १८:५५–३०:१९घं·, गण्डान्तारम्भः २६:३०;**
२४	५ शु	**पंचकान्तः ८:२३, गण्डान्तः १४:१८;**
२५	६ श	कुम्भेबुधः घं·०९:२३, बुधःपूर्वास्तः घं·१८:४३;
२६	७ र	**भद्रारम्भः २९:०५घं·**, अर्कपुटसप्तमी व्रत, वीर सावरकर पुण्यतिथि, ①
२७	८ चं	**भद्रान्तः १७:१९घं·**, वैधृति पुण्यम्; ① मृगशिरायांमङ्गलः घं·१८:५४;
२८	९ मं	शतभिषायांबुधः घं·२६:०९, ②
मार्च	१० बु	; ② रेवत्यांशुक्रः घं·०७:०१;
२	१० गु	**भद्रारम्भः २१:१२घं·**;
३	११ शु	**भद्रान्तः १०:११घं·**; रंगभरी एकादशी, मुख्यमेला श्रीखाटूश्यामजी, ③
४	१२ श	गोविन्द द्वादशी, श्री नृसिंह द्वादशी ③ लट्ठमार होली (नन्दगाँव);
५	१३ र	**गण्डान्तः१५:१८–२८:३४**, पूर्वभाद्रेरविः घं·०९:०९;
६	१४ चं	**भद्रा १६:२४–२९:१८घं·; (रात्रि में २९:१८ पश्चात्)**
७	१५ मं	**होलिका विभूतिधारणम्, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, डोलोत्सव, मन्वादि**, गौरीपूजन आरम्भ, श्री चैतन्यमहाप्रभु जयन्ती, हाथी उत्सव जयपुर, होलाष्टक समाप्त;

ति	श्राद्धकाल घं·मि·
१	१२:१९–१३:४९
१५	१२:१६–१३:४९

❀ फाल्गुन कृत्य ❀

फाल्गुन पूर्णिमा को भद्रा रहित प्रदोष काल में होलिकादहन का मुख्य काल होता है। यथा *'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्य'*। होलिका दहन भद्रा, प्रतिपदा और चतुर्दशी में शास्त्रनिषिद्ध है। प्रदोषकाल में भद्रापुच्छ व्याप्त हो तो उस काल में होलिकादहन का निर्देश है किंतु प्रदोष में भद्रा का पुच्छकाल व्याप्त नहीं है अतः ऐसी स्थिति में शास्त्रवचन है कि चतुर्दशी तिथि को मध्याह्न के बाद पूर्णिमा तिथि हो तो भद्रा के उपरांत सूर्योदय के पूर्व भद्रारहित शुद्ध पूर्णिमा मिले तो उसी में होलिकादहन करना चाहिए, इस वर्ष ६ मार्च को १६:२४ पर पूर्णिमा तिथि लग रही है तथा रात्रिशेष में सूर्योदय से पूर्व भद्रा रहित शुद्ध पूर्णिमा मिल रही है उस रात्रि में ०७ मार्च को सूर्योदय पूर्व ०५:१८ के पश्चात् ही होलिका दहन करना शास्त्रोचित है। **होली निर्णय पृष्ठ- २०**

❀ जयन्ती ❀

कुछ समय से एक अपप्रचार हुआ है कि जयन्ती शब्द केवल मरणशील लोगों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जबकि जयन्ती के अर्थ हैं- पताका, इन्द्र की पुत्री, दुर्गा। जयन्ती - जि जये + शतृ + डीप् अर्थात्- वह जिसकी जय हो। कोई भी अर्थ मर्त्य मानव को सूचित नहीं करता। जयन्ती किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ/घटित होने की वार्षिक तिथि पर होने वाले उत्सव को कहते हैं। जैसे किसी की जन्मतिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव चाहे वह भगवान् हों या मनुष्य। जन्माष्टमी भी जयन्ती-व्रत है।

जयन्त्याम् उपवासश्च महापातकनाशनः। सर्वैः कार्यो महाभक्त्या पूजनीयश्च केशवः।। (भविष्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर०) - *''श्रीकृष्ण जयन्ती का व्रत महापातक का विनाश कर देता है। अतः भक्तिपूर्वक यह व्रत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करें।''* ; *''रोहिणी नक्षत्र संयुक्ता जन्माष्टमी जयन्ती कहलाती है।''* - विष्णुधर्मोत्तर पुराण०। श्रीजीव गोस्वामीजी के मत में तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही एकमात्र जयन्ती है।

कलियुग में सात चिरंजीवी शास्त्रों में बताये गये हैं। *'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।'* इनमें व्यासजी, हनुमानजी व परशुरामजी के जन्मोत्सव शास्त्र में जयन्ती नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पराशर सहिंता में ''हनुमान जयन्ती'' का विधान दिया है। अतः श्रीहनुमान जयन्ती आदि अवसरों पर जयन्ती शब्द पर विवाद करना शास्त्रविमुखता का परिचायक है। चिरंजीवी परशुरामजी, हनुमानजी, वेदव्यास जी का जन्मदिवस भी जयंती ही कहलाता हैं। इसलिए जयंती का अर्थ हुआ जन्मोत्सव दिवस। अतः हनुमान जयंती, परशुराम जयंती कहने में कोई दोष नही हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२१	०९:३५	११:११	१३:०७	१५:२१	१७:४१	१९:५८	२२:१२	००:३१	०२:५०	०४:५६	०६:४०	०८:०९
२२	०९:३१	११:०७	१३:०३	१५:१७	१७:३७	१९:५४	२२:०९	००:२७	०२:४६	०४:५२	०६:३६	०८:०५
२३	०९:२७	११:०३	१२:५९	१५:१३	१७:३३	१९:५०	२२:०५	००:२३	०२:४२	०४:४८	०६:३२	०८:०१
२४	०९:२३	१०:५९	१२:५५	१५:०९	१७:२९	१९:४६	२२:०१	००:१९	०२:३८	०४:४४	०६:२८	०७:५८
२५	०९:१९	१०:५५	१२:५१	१५:०५	१७:२५	१९:४२	२१:५७	००:१५	०२:३४	०४:४०	०६:२४	०७:५४
२६	०९:१६	१०:५१	१२:४७	१५:०१	१७:२१	१९:३८	२१:५३	००:१२	०२:३०	०४:३६	०६:२०	०७:५०
२७	०९:१२	१०:४८	१२:४३	१४:५७	१७:१७	१९:३४	२१:४९	००:०८	०२:२६	०४:३२	०६:१६	०७:४६
२८	०९:०८	१०:४४	१२:३९	१४:५३	१७:१३	१९:३०	२१:४५	००:०४	०२:२२	०४:२८	०६:१२	०७:४२
१	०९:०४	१०:४०	१२:३५	१४:४९	१७:०९	१९:२६	२१:४१	००:००	०२:१९	०४:२४	०६:०८	०७:३८
२	०९:००	१०:३६	१२:३१	१४:४५	१७:०६	१९:२२	२१:३७	२३:५६	०२:१५	०४:२०	०६:०५	०७:३४
३	०८:५६	१०:३२	१२:२७	१४:४१	१७:०२	१९:१८	२१:३३	२३:५२	०२:११	०४:१६	०६:०१	०७:३०
४	०८:५२	१०:२८	१२:२३	१४:३७	१६:५८	१९:१४	२१:२९	२३:४८	०२:०७	०४:१२	०५:५७	०७:२६
५	०८:४८	१०:२४	१२:१९	१४:३४	१६:५४	१९:१०	२१:२५	२३:४४	०२:०३	०४:०८	०५:५३	०७:२२
६	०८:४४	१०:२०	१२:१५	१४:३०	१६:५०	१९:०६	२१:२१	२३:४०	०१:५९	०४:०४	०५:४९	०७:१८
७	०८:४०	१०:१६	१२:११	१४:२६	१६:४६	१९:०२	२१:१७	२३:३६	०१:५५	०४:००	०५:४५	०७:१४

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२१	**मृत्यु**·१ ११:१५ तक; **अमृत**·२ ११:१५ से; **त्रिपुष्कर**:२+पूभा ११:१५ से;
२२	**सिद्ध**·२ ९:१८ तक; **मृत्यु**·३ ०९:१८ से;
२३	**अमृत**·३ ७:३८तक; **मृत्यु**·४ ७:३८–३०:१९; **द·ति**·४; **सर्वार्थ**·रे–**रवियोग**:रे ९:०१ से; **सिद्ध**·५ ३०:१९ से;
२४	**सर्वार्थ**·रे–अ अहोरात्र; **रवियोग**:रे ०८:२३ तक; **सिद्ध**·६ २९:२५ से;
२५	**अमृत**·६ २९:०० तक; **रवियोग**:भ ०८:११ से;
२६	**रवियोग**:भ ०८:२७ तक; **द·न**·भ ८:२७ तक; **त्रिपुष्कर**:७+कृ ०८:२७–२९:०५; **सिद्ध**·८ २९:०५ से;
२७	**सर्वार्थ**·रो ०९:१२ से;
२८	**रवियोग**:मृ १०:२७ से;
मार्च	**सर्वार्थ**·मृ १२:११ तक; **रवियोग**:मृ–आ अहोरात्र;
२	**सिद्ध**·१० ०८:१८ तक; **रवियोग**:आ १४:१९ तक; **सर्वार्थ**·पुन १४:१९ से;
३	**सर्वार्थ**·पुन १६:४४ तक; **सिद्ध**·११ १०:११ तक; **मृत्यु**·१२ १०:११ से;
४	**रवियोग**:आश्ले १९:२० से;
५	**सिद्ध**·१३ १४:२४ तक; **रवियोग**:आश्ले–म अहोरात्र;
६	**रवियोग**:म २४:२१ तक; **अमृत**·१५ १६:२४ से;
७	**मृत्यु**·१ १८:०७ से;

होलिका पूजन– ढूँढा राक्षसी की तृप्ति के लिए और बाल रक्षा के लिए होलिका की पूजा करे। इसमें संकल्प लें– 'मैं सपरिवार ढूंढा नामक राक्षसी के प्रीत्यर्थ, उसकी पीड़ा मुक्ति के लिए होलिका पूजन कर रहा हूँ।" उपला,कण्डा,लकड़ी एकत्रित कर पुष्पादि से पूजाकर अग्निदीपन करे। ***"होलिकायै नमः"***

अस्माभिर्भय संत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूति प्रदा भव।

बोलते हुए उसे प्रणाम कर तीन परिक्रमा करे। इसके बाद मन में जो भी आ रहा हो वह गाओ, हँसो, गप्प लड़ाओ, स्वेच्छा से निःशंक होकर अपना मत प्रकट करो। होलिका दहन के बाद होलिका की भस्म धारण करे। आम्र मञ्जरी का भक्षण करे। कच्चा अन्न भूनकर खाए। सायं काल नवीन वस्त्र धारण कर बड़ों, छोटों को अबीर गुलाल लगाकर प्रणाम, आशीर्वाद लिया दिया जाता है। चाण्डाल आदि को गले लगा ले। दूसरे दिन रंग खेले, फाग गाए, गीत नृत्य करे।

चैत्र कृष्णपक्षः; संवत् २०७९; शाके १९४४; ८ मार्च से २१ मार्च, २०२३ ईस्वी

ग्रहस्थितिः– ८:३:२०२३ मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्त; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त;

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्कः	
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सौर	अंग्रेजी
८	१ बु	३१:२७	१९:२५	उ·फा·	५३:१९	२८:१०	शूल	३६:२७	२१:२५	कौल	३१:२७	तैति	६0:00	२९:0५	६:५0	१८:२८	क·0५:१३	0८:५६	प्रवर्द्ध	२३	८
९	२ गु	३३:३५	२0:१५	हस्त	५६:२६	२९:२४	गण्ड	३५:१६	२0:५६	तैति	0२:४१	गर	३३:३५	२९:0९	६:४९	१८:२९	कन्या	अहोरात्र	राक्षस	२४	९
१0	३ शु	३४:२७	२0:३५	चित्रा	५८:१८	३0:0८	वृद्धि	३३:0६	२0:0३	वणि	0४:१२	विष	३४:२७	२९:१३	६:४८	१८:२९	तु·२७:३३	१७:४९	मुसल	२५	१0
११	४ श	३४:00	२0:२३	स्वाती	५८:५७	३0:२२	ध्रुव	२९:५७	१८:४६	बव	0४:२४	बाल	३४:00	२९:१७	६:४७	१८:३0	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	२६	११
१२	५ र	३२:२0	१९:४२	विशा·	५८:२५	३0:0८	व्याघ·	२५:४९	१७:0६	कौल	0३:२0	तैति	३२:२0	२९:२१	६:४६	१८:३0	वृ·४३:४0	२४:१४	उत्पात	२७	१२
१३	६ चं	२९:३३	१८:३४	अनु·	५६:५२	२९:३0	हर्षण	२0:४८	१५:0४	गर	0१:0६	वणि	२९:३३	२९:२५	६:४५	१८:३१	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	२८	१३
१४	७ मं	२५:४८	१७:0३	ज्ये·	५४:२६	२८:३0	वज्र	१४:६0	१२:४४	बव	२५:४८	बाल	५३:३५	२९:२९	६:४४	१८:३२	ध·५४:२६	२८:३0	मुद्गर	२९	१४
१५	८ बु	२१:१३	१५:१२	मूल	५१:१६	२७:१३	सिद्धि	0८:३१	१0:0७	कौल	२१:१३	तैति	४८:४0	२९:३३	६:४३	१८:३२	धनु	अहोरात्र	ध्वज	३0	१५
१६	९ गु	१६:00	१३:0६	पू·षा·	४७:३५	२५:४४	व्यति· वरी·	0१:२९ ५२:३२	0७:१७ २८:१८	गर	१६:00	वणि	४३:१२	२९:३७	६:४२	१८:३३	धनु	अहोरात्र	धाता	१	१६
१७	१0 शु	१0:२0	१0:४९	उ·षा·	४३:३४	२४:0६	परिघ	४६:२0	२५:१३	विष	१0:२0	बव	३७:२३	२९:४१	६:४१	१८:३३	म·0१:३८	0७:२0	आनन्द	२	१७
१८	११ श १२ श	0४:२५ ५३:५९	0८:२५ ३0:0२	श्रवण	३९:२५	२२:२५	शिव	३८:३४	२२:0५	बाल	0४:२५	कौल	३१:२४	२९:४६	६:३९	१८:३४	मकर	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	३	१८
१९	१३ र	५२:३६	२७:४१	धनि·	३५:२१	२0:४७	सिद्ध	३0:५१	१८:५९	गर	२५:२९	वणि	५२:३६	२९:५0	६:३८	१८:३४	कुं·0७:२३	0९:३५	मातङ्ग	४	१९
२0	१४ चं	४७:0८	२५:२९	शत·	३१:३६	१९:१६	साध्य	२३:२३	१५:५८	विष	१९:५0	बव	४७:0८	२९:५४	६:३७	१८:३५	कुंभ	अहोरात्र	अमृत	५	२0
२१	३0 मं	४२:१४	२३:३0	पू·भा·	२८:२0	१७:५६	शुभ	१६:१७	१३:0७	चतु	१४:३८	नाग	४२:१४	२९:५८	६:३६	१८:३५	मी·१४:0६	१२:१४	काण	६	२१

व्रत–पर्व–उत्सव

८ मार्च से २१ मार्च, २०२३

- ८ — **वसन्तोत्सव**, मेला बादशाह व फूलडोल ब्यावर,
- ९ — **भैया दूज, श्रीचित्रगुप्त पूजा**, संत तुकाराम जयन्ती,
- १0 — **संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:१४,**
- ११ —
- १२ — **रंगपञ्चमी, श्रीपञ्चमी,**
- १३ — श्रीस्कन्द षष्ठी, श्रीवनचन्द्र जयन्ती,
- १४ — **श्री कालाष्टमी,**
- १५ — **शीतलाष्टमी, बास्योड़ा**, वर्षीतप प्रारम्भ (जैन),
- १६ — **भगवान आदिनाथ जयन्ती व तपकल्याणक दिवस,**
- १७ — **दशामाता व्रत,**
- १८ — **श्रीपापविमोचनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त),**
- १९ — **प्रदोष व्रतम्**, मेला कैलादेवी प्रारम्भ (करौली),
- २0 — **मासशिवरात्रि व्रतम्**, काम महोत्सव,
- २१ — **अमावस्या (देव–पितृकार्य),**

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
मार्च	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
८	१ बु	१0:२२:५४:४६	0४:२८:५५:२१	0१:२७:0६:४१	१0:१९:४७:२५	११:२0:१२:१४	११:२६:२२:0६	१0:0२:४८:0२	0६:१४:५६:४७	४४:३२:१६	द·0५:४६:५२	–१२:३१	१९:२२:२९
९	२ गु	१0:२३:५४:५0	0५:११:२३:३६	0१:२७:३१:५९	१0:२१:३६:४६	११:२0:२६:0७	११:२७:३४:३५	१0:0२:५५:१३	0६:१४:५३:३६	४४:३४:१९	द·0५:२३:0२	–१२:१६	२0:१७:३१
१0	३ शु	१0:२४:५४:५२	0५:२४:0५:१४	0१:२७:५७:३२	१0:२३:२५:५७	११:२0:४0:0२	११:२८:४६:५९	१0:0३:0२:२२	0६:१४:५0:२६	४४:३६:२२	द·0४:५९:0८	–१२:0१	२१:१३:४४
११	४ श	१0:२५:५४:५२	0६:0७:0१:४१	0१:२८:२३:२१	१0:२५:१४:५६	११:२0:५३:६0	११:२९:५९:१९	१0:0३:0९:३१	0६:१४:४७:१५	४४:३८:२५	द·0४:३५:१0	–११:४६	२२:१२:२७
१२	५ र	१0:२६:५४:५0	0६:२0:१३:३७	0१:२८:४९:२३	१0:२७:0३:३९	११:२१:0७:६0	00:0१:११:३५	१0:0३:१६:३८	0६:१४:४४:0५	४४:४0:२८	द·0४:११:0८	–११:३0	२३:१३:१८
१३	६ चं	१0:२७:५४:४६	0७:0३:४0:५६	0१:२९:१५:४0	१0:२८:५२:0३	११:२१:२२:0३	00:0२:२३:४६	१0:0३:२३:४३	0६:१४:४0:५४	४४:४२:३१	द·0३:४७:0४	–११:१३	२४:१४:४९
१४	७ मं	१0:२८:५४:४0	0७:१७:२२:४८	0१:२९:४२:११	११:00:४0:0४	११:२१:३६:0८	00:0३:३५:५३	१0:0३:३0:४७	0६:१४:३७:४३	४४:४४:३४	द·0३:२२:५७	–१0:५७	0१:१६:४0
१५	८ बु	१0:२९:५४:३१	0८:0१:१७:३८	0२:00:0८:५५	११:0२:२७:४0	११:२१:५0:१५	00:0४:४७:५५	१0:0३:३७:५0	0६:१४:३४:३३	४४:४६:३७	द·0२:५८:४७	–१0:४0	0२:१६:२३
१६	९ गु	११:00:५४:२१	0८:१५:२३:१२	0२:00:३५:५२	११:0४:१४:४७	११:२२:0४:२४	00:0५:५९:५२	१0:0३:४४:५१	0६:१४:३१:२२	४४:४८:४0	द·0२:३४:३६	–१0:२३	0३:११:३७
१७	१0 शु	११:0१:५४:0८	0८:२९:३६:४२	0२:0१:0३:0३	११:0६:0१:२२	११:२२:१८:३५	00:0७:११:४५	१0:0३:५१:५0	0६:१४:२८:११	४४:५0:४३	द·0२:१0:२४	–१0:0५	0४:0३:३१
१८	११ श	११:0२:५३:५३	0९:१३:५४:५८	0२:0१:३0:२५	११:0७:४७:१९	११:२२:३२:४८	00:0८:२३:३३	१0:0३:५८:४७	0६:१४:२५:0१	४४:५२:४७	द·0१:४६:१0	– ९:४८	0४:४८:४२
१९	१३ र	११:0३:५३:३६	0९:२८:१४:२२	0२:0१:५८:0१	११:0९:३२:३७	११:२२:४७:0३	00:0९:३५:१७	१0:0४:0५:४२	0६:१४:२१:५0	४४:५४:५0	द·0१:२१:५६	– ९:३0	0५:३१:३९
२0	१४ चं	११:0४:५३:१६	१0:१२:३0:५५	0२:0२:२५:४८	११:११:१७:१0	११:२३:0१:२0	00:१0:४६:५५	१0:0४:१२:३६	0६:१४:१८:३९	४४:५६:५३	द·00:५७:४१	– ९:१२	0६:0९:५२
२१	३0 मं	११:0५:५२:५४	१0:२६:४१:१६	0२:0२:५३:४८	११:१३:00:५५	११:२३:१५:३९	00:११:५८:२८	१0:0४:१९:२७	0६:१४:१५:२९	४४:५८:५६	द·00:३३:२६	– ८:५४	0६:४७:३६

११ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

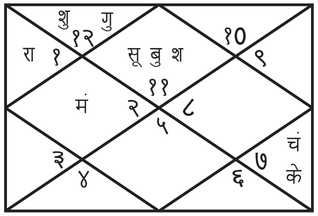

१८ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः**११**

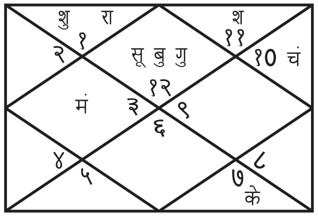

चैत्र कृष्णपक्षः; संवत् २०७९; शाके १९४४; ८ मार्च से २१ मार्च, २०२३ ईस्वी

पक्षान्तः – कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त ।
उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५१:३२

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
८	१ बु	विश्व महिला दिवस, आम्र पुष्प भक्षण, पूर्वभाद्रेबुधः घं·०९:३६;
९	२ गु	कलमदान पूजा, शनिःपूर्वोदितः घं·११:५१;
१०	३ शु	**भद्रा ०८:२९–२०:३५घं·**, छत्रपति शिवाजी महाराज जयन्ती (तिथि प्रमाण)
११	४ श	आश्वन्यांशुक्रः घं·०७:०१;
१२	५ र	;
१३	६ चं	**भद्रा १८:३४–२९:४९घं·**, श्रीएकनाथ षष्ठी, मीनेबुधः घं·२१:५०;
१४	७ मं	**गण्डान्तारम्भः २२:४७, मासान्तः**, मिथुनेमङ्गलः घं·२२:४५;
१५	८ बु	**मीन संक्रान्ति पुण्यकालं, ०८:५५–१५:१९घं·, मलमास आरम्भ, ①**
१६	९ गु	**भद्रारम्भः २३:५९घं·**, मासादिः, व्यतीपात पुण्यम्;
१७	१० शु	**भद्रान्तः १०:४९घं·, अभिजित नक्षत्रः २९:३६–४७:१७;**
१८	११ श	**त्रिस्पृशा महाद्वादशी**, उत्तरभाद्रेरविः घं·१७:०९;
१९	१३ र	**पंचकारंभः ०९:३५, भद्रारम्भः २७:४१घं·, वारुणी योग २०:४७–२७:४१ तक;**
२०	१४ चं	**पंचक, भद्रान्तः १४:३३घं·**, प्रेतत्व मुक्ति हेतु शिवसन्निधि में स्नान;
२१	३० मं	**पंचक; ① गण्डान्तः १०:१२**, मेला शील की डूंगरी चाकसू, केसरियाजी मेला मेवाड़, ऋषभदेव जयन्ती, मीनेरविः घं·०८:५५, उत्तरभाद्रेबुधः घं·१८:२५;

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१६–१३:४९
१५	१२:११–१३:४७

❀ तुलसी वृक्ष स्थापना विधि ❀ (भविष्यपुराणोक्त)

तुलसी के स्थापन पूजन आदि से अखण्ड सौभाग्य, चारों पुरुषार्थ, स्वर्ग एवं विष्णुकृपा प्राप्त होती है। तुलसी स्थापना ज्येष्ठ या आषाढ़ मास में विशेष रूप से करनी चाहिए–

तुलसीजी के पौधे का स्थापन कर निम्न मंत्र से गन्ध चढ़ाए–

ॐकया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ या वृता।।

निम्न मंत्र से इत्र चढ़ाए –

अ ँशुना ते अ ँशुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस् ते सोमम् अवतु मदाय रसोऽअच्युतः।।

इससे पुष्प चढ़ाए –

त्वां गन्धर्वा ऽअखन ँस् त्वाम् इन्द्रस् त्वां बृहस्पतिः।
त्वाम् ओषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्माद् अमुच्यत ।।
मा नस् तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीं हविष्मन्तः सदम् इत् त्वा हवामहे।।

चन्दन चढ़ाए –

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्याव् अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपम् अश्विनौ व्यात्ताम्।
इष्णन्न् इषाणामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण।।
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद् यस्याम् इमा बह्व्यस् तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु वय ँस्याम पतयो रयीणाम् ।।

दूर्वा चढ़ाए –

काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

दर्पण दिखाए –

रूपेण वो रूपम् अभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा वि भजतु।
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणाः। वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षम्।
यतस्व सदस्यैः।।

फल चढ़ाए –

याः फलिनीं या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश् च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व् अ ँहसः।।

अञ्जन (काजल) लगाए –

समिद्धो ऽ अञ्जन् कृदरं मतीनां घृतम् अग्ने मधुमत् पिन्वमानः।
वाजी वहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियम् आ सधस्थम्।।

तदुपरान्त तुलसी पौधे को पीले सूत्र से आवेष्टित करे और चारों ओर जल व दूध की धारा दे।

तुलसी वृक्ष को ३, ५, ७, सुहागिनों द्वारा स्नान कराएं

तद् विष्णोः परमं पद् सदा पश्यन्ति सूरयो दिवीव चक्षुर् आततम्।।
इसके पश्चात् कलश का स्थापन पूजन कर नारायण के उद्देश्य से १०८ हवन करे और दान दक्षिणा प्रदान करें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	०८:३६	१०:१२	१२:०७	१४:२२	१६:४२	१८:५८	२१:१३	२३:३२	०१:५१	०३:५६	०५:४१	०७:१०
९	०८:३२	१०:०८	१२:०४	१४:१८	१६:३८	१८:५४	२१:०९	२३:२८	०१:४७	०३:५२	०५:३७	०७:०६
१०	०८:२८	१०:०४	१२:००	१४:१४	१६:३४	१८:५०	२१:०५	२३:२४	०१:४३	०३:४८	०५:३३	०७:०२
११	०८:२४	१०:००	११:५६	१४:१०	१६:३०	१८:४६	२१:०१	२३:२०	०१:३९	०३:४४	०५:२९	०६:५८
१२	०८:२०	०९:५६	११:५२	१४:०६	१६:२६	१८:४२	२०:५७	२३:१६	०१:३५	०३:४०	०५:२५	०६:५४
१३	०८:१६	०९:५२	११:४८	१४:०२	१६:२२	१८:३९	२०:५३	२३:१२	०१:३१	०३:३७	०५:२१	०६:५०
१४	०८:१२	०९:४८	११:४४	१३:५८	१६:१८	१८:३५	२०:५०	२३:०८	०१:२७	०३:३३	०५:१७	०६:४७
१५	०८:०८	०९:४४	११:४०	१३:५४	१६:१४	१८:३१	२०:४६	२३:०४	०१:२३	०३:२९	०५:१३	०६:४३
१६	०८:०५	०९:४०	११:३६	१३:५०	१६:१०	१८:२७	२०:४२	२३:००	०१:१९	०३:२५	०५:०९	०६:३९
१७	०८:०१	०९:३७	११:३२	१३:४६	१६:०६	१८:२३	२०:३८	२२:५७	०१:१५	०३:२१	०५:०५	०६:३५
१८	०७:५७	०९:३३	११:२८	१३:४२	१६:०२	१८:१९	२०:३४	२२:५३	०१:११	०३:१७	०५:०१	०६:३१
१९	०७:५३	०९:२९	११:२४	१३:३८	१५:५८	१८:१५	२०:३०	२२:४९	०१:०८	०३:१३	०४:५७	०६:२७
२०	०७:४९	०९:२५	११:२०	१३:३४	१५:५५	१८:११	२०:२६	२२:४५	०१:०४	०३:०९	०४:५३	०६:२३
२१	०७:४५	०९:२१	११:१६	१३:३०	१५:५१	१८:०७	२०:२२	२२:४१	०१:००	०३:०५	०४:५०	०६:१९

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
८	**अमृत**·१ १९:२५ तक; **सिद्ध**·२ १९:२५ से; **सर्वार्थ**·ह २८:१० से;
९	**अमृत**·३ २०:१५ से;
१०	**अमृत**·४ २०:३५ से;
११	**सर्वार्थ**·स्वा ३०:२२ तक; **सिद्ध**·४ २०:२३ तक; **मृत्यु**·५ २०:२३ से; **द·ति**·४,
१२	**अमृतयोग**·५ १९:४२ तक; **मृत्यु**·६ १९:४२ से; **रवियोग**:अनु ३०:०८ से; **द·ति**·४;
१३	**सर्वार्थसिद्धि**·अनु २९:३० तक; **सिद्ध**·६ १८:३४ तक; **रवियोग**:अनु २९:३० तक; **मृत्यु**·७ १८:३४ से;
१४	**अमृत**·७ १७:०३ तक; **सिद्ध**·८ १७:०३ से;
१५	**मृत्यु**·८ १५:१२ तक;
१६	**मृत्यु**·९ १३:०६ तक; **सिद्ध**·१० १३:०६ से;
१७	**सिद्ध**·११ १०:४९ से; **सर्वार्थ**·श्र २४:०६ से;
१८	**सर्वार्थसिद्धि**·श्र २२:२५ तक; **अमृत**·११ ०८:२५ तक; **द्विपुष्कर**:१२+ध २२:२५ से;
१९	**सिद्धयोग**·१३ २७:४१ तक;
२१	**सर्वार्थसिद्धि**·उभा १७:५६ से;

❀ गणगौर पूजन ❀

स्त्रियाँ फाल्गुन पूर्णिमा से चैत्र कृष्णपक्षभर व्रती रहकर चैत्र शुक्ल तृतीया को ईसरजी और ईसरीजी की प्रतिमा में शिव–पार्वती का प्रतिदिन पूजन करती हैं। **स्त्रियाँ गणगौर पूजन के समय यह गीत गाती हैं–**

गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती
पार्वती का आला–गीला , गौर का सोना का टीका
टीका दे, टमका दे, बालारानी बरत करयो, करता करता आस
आयो, वास आयो, खेरे खांडे लाडू आयो, लाडू ले बीरा ने दियो,
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो,
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा, दोन्यू जोड़ा,
जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा, रानी पूजे राज ने, मैं पूजा सुहाग ने,
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय,
कीड़ी– कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है,
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी, ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में
भिजोड़ा, म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो, लाडू
ल्यो, पेड़ा ल्यो, सेव ल्यो, सिघाड़ा ल्यो,
झरझरती जलेबी ल्यो, हरीहरी दूब ल्यो, गणगौर पूजल्यो
एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह,
बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह....

✲ कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त ✲

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग में अधिकांश आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय दिया गया है। मुहूर्त्त शास्त्रों में अनेकविध कृत्यों के मुहूर्त्त दिए गए हैं, जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

✲ गर्भाधान मुहूर्त्त✲

✲ **तिथि-** क्षीणचन्द्रमा रहित १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ **तिथि**। ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✲ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी। ✲ **विशेष-** रजोदर्शन की चतुर्थ रात्रि से १२ रात्रियों तक। ✲ **त्याज्य-** ४, ६, ८, ९, १४, ३० **तिथि**, प्रातः, सायं, सन्ध्या, ग्रहण, संक्रान्ति, श्राद्ध।✲ **लग्नशुद्धि-** शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणस्थ व पापग्रह त्रिषडाय में।

✲ सीमन्तोन्नयन पुंसवन मुहूर्त्त ✲

पुंसवन गर्भाधान से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में करना चाहिए। ✲ **तिथि-** शुक्लपक्ष- १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, कृष्णपक्ष-१, २, ३, ५। ✲ **वार-** सोम, मंगल, गुरुवार में। अन्यमतेन सोम, शुक्रवार को पूर्वाह्न में। ✲ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र त्याज्य)। ✲ **लग्नशुद्धि-** १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में शुभग्रह, २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र तथा ४, ८, १० में पापग्रह वर्जित ।

✲ जातकर्म मुहूर्त्त ✲

शिशु के ग्रहदोष निवारण व आयुवृद्धि हेतु जन्म-समय में या एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ✲ **नक्षत्र-** चित्रा, अनुराधा, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✲ **तिथि-** १, २,३,५,७,१०,११,१२,१३ ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✲ **लग्न-** २, ३, ४, ६, ७, ९ १२, लग्न व नवांश की शुद्धि अनिवार्य।

✲ नामकरण मुहूर्त्त ✲

✲ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। वार-सोम,बुध,गुरु,शुक्र। पूर्वाह्न में शुभ, मध्याह्न में मध्यम। ✲ **नक्षत्र-** स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा। ✲ **लग्न-** २,३,५,६,८,९,११,१२। ✲ **लग्नशुद्धि-** १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में शुभग्रह, २, ३, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र, त्रिषडाय में पापग्रह हो। शुभग्रहदृष्ट्लग्न।

✲ अन्नप्राशन मुहूर्त्त ✲

✲ **तिथि-** २,३,५,७,१०,१३,१५। क्षीणचन्द्र वर्जित। ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✲ **नक्षत्र-** जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✲ **लग्न-** २,३,५,६,७,९,११,१२। ✲ **लग्नशुद्धि-** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित है। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। १,६, ८ भाव में चन्द्रवर्जित। ✲ **बालकों का अन्नप्राशन-** ६,८,१०,१२ मासों में, **बालिकाओं** का ५, ७, ९, ११ मासों में। पूर्वाह्न शुभ।

✲ कर्णविध मुहूर्त्त ✲

१,२,६ मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है। ✲ **कालशुद्धि-** सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। पूर्वाह्न एवं मध्याह्न में। ✲ **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ✲ **लग्नशुद्धि-** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

✲ चूड़ाकर्म मुण्डन मुहूर्त्त ✲

✲ **कालशुद्धि-** उत्तरायण। गुरुशुक्रास्त वर्ज्य। पूर्वाह्न व मध्याह्न शुभ। १,२,६ मास में व विषमवर्ष में, समवर्ष त्याज्य है। सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। ✲ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व। ✲ **वर्जितमास-** चैत्र। ✲ **पक्ष-**कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में। ✲ **तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,११,१३ (कुल ७)। ✲ **वर्जित तिथियाँ-** १, ४,६, ८, ९,१२, १४, १५, ३०। ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (१२ नक्षत्र)। ✲ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (५ नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं । ✲ **लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२। ✲ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११। ✲ **लग्नशुद्धि-**जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित। अष्टम स्थानशुद्धि। केन्द्र में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

✲ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ✲

उत्तरायण, गुरु शुक्र के अस्तादि विचारणीय। ✲ **तिथि-** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२। ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, रेवती। ✲ **लग्न-** २,३,६,९,१२ शुभ, ५,८,११ मध्यम।

✲ उपनयन मुहूर्त्त ✲

✲ **मास-** माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ। ✲ **तिथि-** शुक्लपक्ष- २,३,५,१०,११,१२। कृष्णपक्ष- २,३,५ । ✲ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, श्रवण, धनि., शत, तीनों उत्तरा, रेवती। ✲ **समयशुद्धि-** उत्तरायण में। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। पूर्वाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ✲ **लग्नशुद्धि-** षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित। द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित। ✲ **त्याज्य-** आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन। सूर्य के ८, १७, २६ अंश पर रोगबाण में वर्जित।

✲ प्रथम रजोदर्शन विचार ✲

✲ **मास-** वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ✲ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ । ✲ **वार-** सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✲ **लग्न-** २,३,४,६,७,९,१२ शुभयुक्त एवं दृष्ट लग्न राशि। ✲ **विशेष-** प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ, व्यतिपात, वैधृति आदि) भद्रा, सूर्यचन्द्र ग्रहण, मासान्त, सन्ध्या, निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है। यदि इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति हो तो गायत्री मन्त्र से तिल, घृत, दूर्वा सहित १०८ आहुति देने से कुयोगों की शान्ति होती है।

✲ विद्यारम्भ मुहूर्त्त ✲

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। ✲ **तिथि-** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२। ✲ **वार-** सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✲ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। अन्यमतेन रोहिणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती भी ग्राह्य हैं। ✲ **लग्न-** २,३,५,६,८,९,११,१२

✻ कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त ✻

✻ विवाह मुहूर्त्त ✻

गुरु शुक्र अस्तादि शद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। ✻ **मास-** मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। दोनों पक्षों की ✻ **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व शुक्लपक्ष की १५। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। रवि, शनि-मध्यम। मंगल त्याज्य (मु.चि. ६/५५)। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। ✻ **कात्यायन गृह्यसूत्रोक्त-** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा। ✻ **लग्न-** लग्नस्थ चन्द्र, पापग्रह, तृतीयस्थ शुक्र, षष्ठस्थ चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टमस्थ चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशमस्थ मंगल व द्वादशस्थ शनि वर्जित।

✻ वधूप्रवेश मुहूर्त्त ✻

✻ **कालशुद्धि-** 'वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः' के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है, शेष विवाह मुहूर्त्त के समान। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रो, मृग, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, व रेवती। ✻ **लग्नशुद्धि-** वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ✻ **त्याज्य-** भद्रा, व्यति, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति।

✻ द्विरागमन मुहूर्त्त ✻

कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा रेवती। ✻ **वर्जित लग्न-** १,४,७,१०

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त ✻

✻ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती। ✻ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण। ✻ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, ५/१२। ✻ **स्नान की तिथियाँ-**१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, ३०। ✻ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि ४, ९, १४ तथा ६, ८, १२ तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त ✻

गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। पर देवशयन विचार आवश्यक नहीं। ✻ **चान्द्रमास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन। ✻ **सौरमास-** मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिस्थ। ✻ **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती(मु. चि. १२/१५) पराशरमतानुसार- अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठा भी ग्राह्य। **योग व करण-** वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित। ✻ **लग्न-** २,३,५,६,८,९,११,१२। अष्टम, द्वादश भाव की शुद्धि।

✻ नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक मध्यम। ✻ **तिथि-** दोनों पक्षों की- १,२,३, ५,६,७,८,१०। एवं शु.प. ११,१२,१३,१५ ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (मुहूर्त्तपारिजात)। ✻ **लग्न-** २,३, ५,६,८,९,११,१२। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक। ✻ **समय-शुद्धि-** भद्रा, व्यतीपात, वैधृति योग त्याज्य, परिघ का आधा मान, शूल योग की आदि ५ घटी, गण्ड व अतिगण्ड योग की आदि ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, विष्कुम्भ व वज्र की ३-३ घटी मुहूर्त्त में त्याज्य।

✻ जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त ✻

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त के समान ही। पर श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं। ✻ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा।

✻ सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर। ✻ **देव प्रतिष्ठा नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६ नक्षत्र)। ✻ **देव प्रतिष्ठा मास-** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। मंगलवार को निषेध है। ✻ **लग्न-** २, ३, ५, ६, ८, ११, १२। ✻ **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

✻ ऋण देने का मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि नक्षत्र स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **लग्न-** १, ४, ७, १० लग्न में। ✻ **तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५। ✻ **कर्ज देने में निषिद्ध समय-** बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। ✻ **कर्ज लेने में निषिद्ध समय-** रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति, हस्त नक्षत्र में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिए।

✻ औषधि/दवाई ग्रहण करने का मुहूर्त्त ✻

✻ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजितब, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ। ✻ **लग्न-** ३, ६, ९, १२। शुभग्रह ३, ६, ९, १२ राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से ७, ८, १२ स्थान ग्रहरहित हों, इसमें औषधि ग्रहण शुभ।

✻ ऑपरेशन का मुहूर्त ✻

✻ **वार-** सूर्य, मंगल, गुरुवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा। ✻ **तिथि-** ४, ९, १४, १५, ३० वर्जित।

✻ मन्त्रग्रहण मुहूर्त्त ✻

✻ **मास-** वैशाख, श्रावण, आश्वि., कार्ति., मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन **अबूझ-** संक्रान्ति, पूर्णिमा, नवरात्रि, ग्रहण, सिद्धिक्षेत्र में। ✻ **वार-** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजत्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✻ **लग्न-** २,३,५,७,९,१२

✻ व्यवहार पत्रारम्भ मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि-** १,२,३,५,७,१०,११,१३ ✻ **वार-** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

✲ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१ अप्रैल	१०:४५ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१६:५४ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२३:०४ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
२ अप्रैल	०५:१३ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	११:२३ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१७:४० से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	२३:५७ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
३ अप्रैल	०६:१४ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१२:३२ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१८:५६ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
४ अप्रैल	०१:२० से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	०७:४४ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१४:०८ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२०:३८ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
५ अप्रैल	०३:०९ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०९:३९ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१६:१० से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	२२:४६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
६ अप्रैल	०५:२२ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	११:५८ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१८:३३ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
७ अप्रैल	०१:११ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	०७:४९ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१४:२७ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२१:०७ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
८ अप्रैल	०३:४६ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१०:२५ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१७:०४ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२३:४४ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
९ अप्रैल	०६:२१ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१२:५८ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१९:३५ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
१० अप्रै.	०२:१२ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	०८:४५ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१५:१८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१० अप्रै.	२१:५१ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
११ अप्रै.	०४:२४ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१०:५१ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१७:१८ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	२३:४५ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
१२ अप्रै.	०६:१२ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१२:३२ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१८:५२ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
१३ अप्रै.	०१:१२ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	०७:३२ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१३:४४ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१९:५७ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
१४ अप्रै.	०२:१० से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	०८:२३ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१४:२८ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	२०:३४ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
१५ अप्रै.	०२:३९ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	०८:४५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१४:४३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	२०:४१ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
१६ अप्रै.	०२:३९ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०८:३७ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१४:२८ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	२०:२० से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
१७ अप्रै.	०२:१२ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	०८:०४ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१३:५० से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१९:३७ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
१८ अप्रै.	०१:२३ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०७:१० से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१२:५१ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१८:३३ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
१९ अप्रै.	००:१५ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	०५:५७ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	११:३५ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१९ अप्रै.	१७:१३ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:५१ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
२० अप्रै.	०४:३० से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:०६ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:४२ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:१८ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
२१ अप्रै.	०२:५४ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०८:२८ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१४:०३ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१९:३८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
२२ अप्रै.	०१:१३ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०६:४५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१२:१८ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१७:५१ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	२३:२४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
२३ अप्रै.	०५:०३ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१०:४२ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१६:२१ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	२२:०१ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
२४ अप्रै.	०३:४० से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	०९:१९ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१४:५८ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२०:३८ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
२५ अप्रै.	०२:२१ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	०८:०४ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१३:४७ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१९:३० से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
२६ अप्रै.	०१:१८ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०७:०६ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१२:५४ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१८:४३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
२७ अप्रै.	००:३६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०६:३० से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:२४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१८:१८ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२८ अप्रै.	००:१८ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	०६:१९ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१२:२० से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१८:२१ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
२९ अप्रै.	००:२८ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	०६:३६ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१२:४४ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१८:५२ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
३० अप्रै.	०१:०४ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	०७:१७ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१३:३० से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१९:४३ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
१ मई	०२:०८ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	०८:३३ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१४:५८ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	२१:२४ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
२ मई	०३:५३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१०:२२ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१६:५१ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२३:२१ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
३ मई	०५:५५ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१२:३० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१९:०४ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
४ मई	०१:३९ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	०८:१७ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१४:५५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	२१:३३ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
५ मई	०४:१२ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१०:५१ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१७:३० से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
६ मई	००:०९ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	०६:४९ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१३:२६ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	२०:०४ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
७ मई	०२:४२ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
७ मई	०२:४२ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	०९:२० से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१५:५४ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२२:२८ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
८ मई	०५:०२ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	११:३७ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१८:०५ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
९ मई	००:३४ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	०७:०२ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१३:३१ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१९:५३ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
१० मई	०२:१५ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	०८:३७ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१४:५९ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	२१:१३ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
११ मई	०३:२८ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	०९:४२ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१५:५७ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	२२:०४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
१२ मई	०४:११ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१०:१८ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१६:२५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	२२:२४ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
१३ मई	०४:२४ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१०:२४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१६:२४ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२२:१७ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
१४ मई	०४:१० से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१०:०३ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१५:५७ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२१:४४ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
१५ मई	०३:३२ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०९:१९ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१५:०७ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
१६ मई	०२:३२ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१६ मई	०८:१५ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:५८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:३७ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
१७ मई	०१:१६ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:५५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:३४ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:१० से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:४७ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
१८ मई	०५:२३ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	११:०० से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१६:३५ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२२:१० से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
१९ मई	०३:४५ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	०९:२१ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१४:५६ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२०:३१ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
२० मई	०२:०६ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	०७:४१ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१३:१७ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१८:५३ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
२१ मई	००:२९ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०६:०६ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	११:४४ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१७:२३ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	२३:०१ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
२२ मई	०४:४० से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१०:२२ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१६:०४ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२१:४६ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
२३ मई	०३:२९ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	०९:१६ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१५:०३ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२०:५० से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
२४ मई	०२:३७ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०८:२९ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२४ मई	१४:२२ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२०:१४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
२५ मई	०२:०७ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०८:०६ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१४:०५ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	२०:०४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
२६ मई	०२:०३ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०८:०९ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१४:१५ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	२०:२१ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
२७ मई	०२:२८ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	०८:४१ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१४:५५ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	२१:०९ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
२८ मई	०३:२३ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	०९:४४ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१६:०५ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	२२:२६ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
२९ मई	०४:४७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	११:१५ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१७:४३ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
३० मई	००:११ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	०६:३९ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१३:१२ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१९:४६ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
३१ मई	०२:१९ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	०८:५३ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१५:३० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	२२:०८ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
०१ जून	०४:४५ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	११:२३ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१८:०२ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
२ जून	००:४२ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	०७:२१ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१४:०१ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२ जून	२०:३९ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
३ जून	०३:१७ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	०९:५५ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१६:३४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२३:०९ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
४ जून	०५:४४ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१२:१९ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१८:५५ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
५ जून	०१:२५ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	०७:५५ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१४:२५ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	२०:५५ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
६ जून	०३:१८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	०९:४२ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१६:०६ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२२:३० से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
७ जून	०४:४६ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	११:०२ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१७:१८ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	२३:३५ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
८ जून	०५:४४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	११:५३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१८:०२ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
९ जून	००:१० से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	०६:११ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१२:१३ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१८:१४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
१० जून	००:१६ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१२:१० से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	००:०५ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१२:०० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२३:५५ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
११ जून	०५:४३ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	११:३२ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१७:२१ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
११ जून	२३:१० से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
१२ जून	०४:५४ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१०:३८ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१६:२२ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:०६ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
१३ जून	०३:४५ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:२५ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:०५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:४५ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
१४ जून	०२:२२ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:५९ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:३६ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:१३ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
१५ जून	००:४८ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०६:२३ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	११:५८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१७:३४ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	२३:०९ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
१६ जून	०४:४४ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१०:१९ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१५:५४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२१:३० से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
१७ जून	०३:०६ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	०८:४२ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१४:१८ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१९:५६ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
१८ जून	०१:३४ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०७:१२ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१२:५० से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
	१८:३१ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
१९ जून	००:१२ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०५:५३ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	११:३५ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१७:२१ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	२३:०७ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२०जून	०४:५३ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१०:३९ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१६:३० से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२२:२१ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
२१ जून	०४:१२ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१०:०३ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१६:०० से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:५८ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
२२ जून	०३:५५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०९:५३ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१५:५७ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२२:०२ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
२३ जून	०४:०७ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१०:१२ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१६:२३ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	२२:३५ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
२४ जून	०४:४७ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१०:५९ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१७:१८ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	२३:३८ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
२५ जून	०५:५७ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१२:१७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१८:४३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
२६ जून	०१:१० से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	०७:३६ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१४:०३ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	२०:३५ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
२७ जून	०३:०८ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०९:४० से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१६:१३ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	२२:४९ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
२८ जून	०५:२६ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१२:०३ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१८:४० से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
२९ जून	०१:१९ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२९ जून	०७:५८ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१४:३७ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२१:१७ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
३० जून	०३:५५ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१०:३४ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१७:१३ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	२३:५२ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
१ जुलाई	०६:२८ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१३:०४ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१९:४० से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
२ जुलाई	०२:१७ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	०८:४८ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१५:१९ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	२१:५० से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
३ जुलाई	०४:२२ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१०:४७ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१७:१२ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	२३:३७ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
४ जुलाई	०६:०३ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१२:२१ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१८:३९ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
५ जुलाई	००:५७ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	०७:१५ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१३:२५ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१९:३६ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
६ जुलाई	०१:४६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	०७:५७ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१४:०० से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	२०:०३ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
७ जुलाई	०२:०६ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०८:१० से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१४:०६ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	२०:०२ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०१:५८ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
८ जुलाई	०७:५५ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
८ जुलाई	१३:४५ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१९:३५ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
९ जुलाई	०१:२५ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०७:१५ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१३:०० से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१८:४५ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
१० जुलाई	००:३० से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:१५ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	११:५५ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:३६ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:१६ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
११ जुलाई	०४:५७ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:३४ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:१२ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:४९ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
१२ जुलाई	०३:२७ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०९:०२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१४:३८ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२०:१४ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
१३ जुलाई	०१:५० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०७:२५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१३:०० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१८:३४ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
१४ जुलाई	००:०९ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०५:४५ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	११:२० से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१६:५६ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	२२:३१ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
१५ जुलाई	०४:०८ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	०९:४६ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१५:२३ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२१:०१ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
१६ जुलाई	०२:४१ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	०८:२२ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१४:०२ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१६जुलाई	१९:४३ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
१७ जुलाई	०१:२७ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०७:१२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१२:५७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१८:४२ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
१८ जुलाई	००:३१ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०६:२१ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:११ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१८:०१ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	२३:५७ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
१९ जुलाई	०५:५३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:४९ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१७:४५ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२३:४७ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
२० जुलाई	०५:५० से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	११:५३ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१७:५६ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
२१ जुलाई	००:०६ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	०६:१६ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१२:२६ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१८:३७ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
२२ जुलाई	००:५४ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	०७:१२ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१३:३० से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१९:४८ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
२३ जुलाई	०२:१२ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	०८:३७ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१५:०२ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	२१:२७ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
२४ जुलाई	०३:५८ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१०:२९ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१७:०० से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२३:३२ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
२५ जुलाई	०६:०७ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१२:४३ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२५जुलाई	१९:१९ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
२६ जुलाई	०१:५५ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	०८:३४ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१५:१३ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	२१:५२ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
२७ जुलाई	०४:३१ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	११:१० से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१७:४९ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
२८ जुलाई	००:२८ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	०७:०७ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१३:४४ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२०:२१ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
२९ जुलाई	०२:५८ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	०९:३५ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१६:०७ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	२२:४० से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
३० जुलाई	०५:१२ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	११:४५ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१८:११ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
३१ जुलाई	००:३८ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	०७:०५ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१३:३२ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१९:५१ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
१ अगस्त	०२:११ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	०८:३० से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१४:५० से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	२१:०२ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
२ अगस्त	०३:१४ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	०९:२६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१५:३९ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	२१:४३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
३ अगस्त	०३:४८ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०९:५३ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१५:५८ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२१:५५ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
४ अगस्त	०३:५३ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०९:५१ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१५:४९ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२१:४० से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
५ अगस्त	०३:३१ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०९:२२ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१५:१४ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	२१:०० से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
६ अगस्त	०२:४६ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०८:३२ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:१८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:५९ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
७ अगस्त	०१:४१ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:२२ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:०४ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:४२ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
८ अगस्त	००:२० से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	०५:५८ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	११:३६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१७:१२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२२:४८ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
९ अगस्त	०४:२४ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१०:०० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१५:३४ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२१:०९ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
१० अगस्त	०२:४४ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	०८:१९ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१३:५४ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१९:२९ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
११ अगस्त	०१:०४ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०६:४० से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१२:१७ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१७:५४ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	२३:३१ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
१२अगस्त	०५:०८ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१२ अगस्त	१०:४७ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	१६:२७ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२२:०६ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
१३ अगस्त	०३:४६ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	०९:२९ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१५:१३ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२०:५६ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
१४ अगस्त	०२:४० से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०८:२८ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१४:१७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२०:०५ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
१५ अगस्त	०१:५४ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०७:४८ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:४३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:३७ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
१६ अगस्त	०१:३२ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०७:३३ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१३:३४ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१९:३५ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
१७ अगस्त	०१:३६ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	०७:४४ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१३:५३ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	२०:०१ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
१८ अगस्त	०२:१० से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	०८:२६ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१४:४२ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	२०:५८ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
१९ अगस्त	०३:१४ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	०९:३७ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१६:०० से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	२२:२३ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
२० अगस्त	०४:४७ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	११:१६ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१७:४६ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
२१अगस्त	००:१५ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना

※ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ※

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२१ अगस्त	०६:४५ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१३:२० से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१९:५५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
२२ अगस्त	०२:३० से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	०९:०५ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१५:४३ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	२२:२१ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
२३ अगस्त	०४:५९ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	११:३८ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१८:१७ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
२४ अगस्त	००:५६ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	०७:३५ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१४:१५ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२०:५२ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
२५ अगस्त	०३:३० से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१०:०७ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१६:४५ से	आश्लेे	१	डी	कर्क	चाँदी
	२३:१८ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
२६ अगस्त	०५:५२ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१२:२६ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१९:०० से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
२७ अगस्त	०१:२८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	०७:५६ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१४:२४ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२०:५२ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
२८ अगस्त	०३:१३ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	०९:३४ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१५:५५ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	२२:१७ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
२९ अगस्त	०४:३१ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१०:४५ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१६:५९ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	२३:१३ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
३० अगस्त	०५:१९ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	११:२५ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३० अगस्त	१७:३१ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२३:३८ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
३१ अगस्त	०५:३७ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	११:३६ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१७:३५ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२३:३५ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
१ सितंबर	०५:२७ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	११:२० से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१७:१३ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	२३:०६ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
२ सितंबर	०४:५३ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१०:४० से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१६:२७ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:१४ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
३ सितंबर	०३:५६ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:३८ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:२० से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:०३ से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
४ सितंबर	०२:४१ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:२० से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:५९ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:३८ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
५ सितंबर	०१:१४ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०६:५० से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१२:२६ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१८:०३ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	२३:३८ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
६ सितंबर	०५:१३ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१०:४८ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१६:२३ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२१:५८ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
७ सितंबर	०३:३३ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	०९:०८ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१४:४३ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२०:१९ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
८ सितंबर	०१:५५ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०७:३१ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१३:०८ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	१८:४६ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
९ सितंबर	००:२५ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०६:०४ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	११:४३ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१७:२५ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	२३:०८ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
१० सितंबर	०४:५० से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१०:३३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१६:२० से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२२:०७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
११ सितंबर	०३:५४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	०९:४२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:३५ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:२८ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
१२ सितंबर	०३:२१ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०९:१४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१५:१३ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२१:१३ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
१३ सितंबर	०३:१२ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०९:१२ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१५:१८ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	२१:२५ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
१४ सितंबर	०३:३१ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०९:३८ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१५:५२ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	२२:०६ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
१५ सितंबर	०४:२० से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१०:३५ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१६:५६ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	२३:१८ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
१६ सितंबर	०५:३९ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१२:०१ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१६ सितंबर	१८:२९ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
१७ सितंबर	००:५७ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	०७:२५ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१३:५४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	२०:२८ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
१८ सितंबर	०३:०२ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	०९:३६ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१६:१० से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	२२:४७ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
१९ सितंबर	०५:२५ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१२:०२ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१८:४० से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
२० सितंबर	०१:१९ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	०७:५८ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१४:३७ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	२१:१७ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
२१ सितंबर	०३:५५ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१०:३३ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१७:११ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	२३:५० से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
२२ सितंबर	०६:२४ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१२:५९ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१९:३४ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
२३ सितंबर	०२:०९ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	०८:३८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	१५:०८ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	२१:३७ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
२४ सितंबर	०४:०७ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१०:२९ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१६:५२ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	२३:१५ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
२५ सितंबर	०५:३८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	११:५३ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१८:०९ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
२६सितंबर	००:२४ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२६ सितंबर	०६:४० से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१२:४८ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१८:५६ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
२७ सितंबर	०१:०४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०७:१२ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१३:१३ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१९:१४ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
२८ सितंबर	०१:१५ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	०७:१६ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१३:१० से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१९:०४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
२९ सितंबर	००:५८ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०६:५२ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१२:४० से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१८:२९ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
३० सितंबर	००:१७ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:०६ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	११:४९ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:३२ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:१५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
१ अक्टूबर	०४:५९ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:३८ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:१७ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:५६ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
२ अक्टूबर	०३:३६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०९:१२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१४:४९ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२०:२६ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
३ अक्टूबर	०२:०३ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०७:३८ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१३:१४ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१८:४९ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
४ अक्टूबर	००:२४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०५:५९ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	११:३४ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
४ अक्टूबर	१७:०८ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	२२:४३ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
५ अक्टूबर	०४:१९ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	०९:५५ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१५:३१ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२१:०७ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
६ अक्टूबर	०२:४५ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	०८:२३ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१४:०१ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१९:३९ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
७ अक्टूबर	०१:२० से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०७:०२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१२:४३ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१८:२५ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
८ अक्टूबर	००:११ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०५:५७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	११:४३ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१७:३० से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	२३:२१ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
९ अक्टूबर	०५:१३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:०४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१६:५६ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:५४ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
१० अक्टूबर	०४:५२ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:५० से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१६:४८ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	२२:५३ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
११ अक्टूबर	०४:५८ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	११:०३ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१७:०८ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२३:१७ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
१२ अक्टूबर	०५:२७ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	११:३७ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१७:४७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
१३ अक्टूबर	००:०९ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१३ अक्टूबर	०६:३२ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१२:५४ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१९:१७ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
१४ अक्टूबर	०१:४३ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	०८:१० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१४:३७ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	२१:०४ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
१५ अक्टूबर	०३:३६ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१०:०९ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१६:४२ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२३:१५ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
१६ अक्टूबर	०५:५२ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१२:२९ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१९:०६ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
१७ अक्टूबर	०१:४३ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	०८:२२ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१५:०१ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	२१:४० से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
१८ अक्टूबर	०४:२० से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१०:५८ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१७:३७ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
१९ अक्टूबर	००:१५ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	०६:५४ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	१३:२९ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	२०:०५ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
२० अक्टूबर	०२:४१ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	०९:१७ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१५:४७ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	२२:१८ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
२१ अक्टूबर	०४:४९ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	११:२० से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१७:४४ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
२२ अक्टूबर	००:०९ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	०६:३३ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१२:५८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२२ अक्टूबर	१९:१५ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
२३ अक्टूबर	०१:३३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	०७:५० से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१४:०८ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	२०:१७ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
२४ अक्टूबर	०२:२७ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०८:३७ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१४:४७ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२०:४९ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
२५ अक्टूबर	०२:५२ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०८:५४ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१४:५७ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२०:५२ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
२६ अक्टूबर	०२:४८ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०८:४४ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१४:४० से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	२०:२९ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
२७ अक्टूबर	०२:१९ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०८:०८ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:५८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:४२ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
२८ अक्टूबर	०१:२७ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:११ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:५६ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१८:३६ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
२९ अक्टूबर	००:१६ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	०५:५६ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	११:३७ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१७:१४ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२२:५१ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
३० अक्टूबर	०४:२८ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१०:०६ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१५:४१ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२१:१७ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
३१अक्टूबर	०२:५२ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३१ अक्टूबर	०८:२८ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१४:०२ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१९:३७ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
१ नवंबर	०१:१२ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०६:४७ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१२:२२ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१७:५८ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	२३:३४ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
२ नवंबर	०५:१० से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
	१०:४७ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	१६:२५ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२२:०२ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
३ नवंबर	०३:४० से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	०९:२० से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१५:०१ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२०:४२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
४ नवंबर	०२:२३ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०८:०८ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१३:५३ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१९:३८ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
५ नवंबर	०१:२३ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०७:१३ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:०३ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१८:५४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
६ नवंबर	००:४४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:४० से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	१२:३७ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:३३ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
७ नवंबर	००:३० से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	०६:३४ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१२:३८ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१८:४२ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
८ नवंबर	००:४७ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	०६:५७ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१३:०७ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
८ नवंबर	१९:१७ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
९ नवंबर	०१:२७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	०७:४५ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१४:०३ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	२०:२१ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
१० नवंबर	०२:४० से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	०९:०५ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१५:३१ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	२१:५६ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
११ नवंबर	०४:२२ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१०:५३ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१७:२५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	२३:५६ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
१२ नवंबर	०६:२८ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१३:०४ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१९:४० से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
१३ नवंबर	०२:१६ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	०८:५३ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१५:३२ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	२२:११ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
१४ नवंबर	०४:५० से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	११:२९ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१८:०८ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
१५ नवंबर	००:४७ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	०७:२६ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१४:०५ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	२०:४१ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
१६ नवंबर	०३:१८ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	०९:५५ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१६:३२ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	२३:०४ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
१७ नवंबर	०५:३६ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१२:०८ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१८:४१ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
१८ नवंबर	०१:०७ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१८ नवंबर	०७:३३ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१३:५९ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	२०:२५ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
१९ नवंबर	०२:४४ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	०९:०३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१५:२२ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	२१:४२ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
२० नवंबर	०३:५३ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१०:०५ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१६:१७ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२२:२९ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
२१ नवंबर	०४:३३ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१०:३७ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१६:४१ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२२:४६ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
२२ नवंबर	०४:४३ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१०:४० से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१६:३७ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	२२:३५ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
२३ नवंबर	०४:२६ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१०:१७ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१६:०८ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:५९ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
२४ नवंबर	०३:४४ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:३० से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:१५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	२१:०१ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
२५ नवंबर	०२:४२ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०८:२३ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:०४ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:४६ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
२६ नवंबर	०१:२४ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:०२ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१२:४० से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१८:१८ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२६नवंबर	२३:५४ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
२७ नवंबर	०५:३० से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	११:०६ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१६:४२ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२२:१७ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
२८ नवंबर	०३:५२ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	०९:२७ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१५:०२ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२०:३७ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
२९ नवंबर	०२:१२ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०७:४७ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१३:२३ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
	१९:०० से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
३० नवंबर	००:३७ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०६:१४ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	११:५२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१७:३२ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	२३:१२ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
१ दिसंबर	०४:५२ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१०:३२ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१६:१६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२२:०० से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
२ दिसंबर	०३:४४ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	०९:२८ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:१७ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:०६ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
३ दिसंबर	०२:५५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०८:४४ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१४:३९ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२०:३४ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
४ दिसंबर	०२:२९ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०८:२५ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१४:२६ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	२०:२८ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
५ दिसंबर	०२:३० से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना

❊ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
५ दिसंबर	०८:३२ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१४:४१ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	२०:५० से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
६ दिसंबर	०२:५९ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०९:०९ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१५:२५ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	२१:४२ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
७ दिसंबर	०३:५८ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१०:१५ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१६:३९ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	२३:०३ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
८ दिसंबर	०५:२७ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	११:५१ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१८:२१ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
९ दिसंबर	००:५१ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	०७:२१ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१३:५२ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	२०:२७ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
१० दिसंबर	०३:०३ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	०९:३८ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१६:१४ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	२२:५२ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
११ दिसंबर	०५:३१ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१२:१० से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१८:४९ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
१२ दिसंबर	०१:२८ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	०८:०७ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१४:४६ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	२१:२६ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
१३ दिसंबर	०४:०३ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१०:४१ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१७:१८ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	२३:५६ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
१४ दिसंबर	०५:४४ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	११:३३ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१४ दिसंबर	१७:२१ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	२३:१० से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
१५ दिसंबर	०६:२२ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१३:३५ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	२०:४८ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
१६ दिसंबर	०४:०१ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१०:२२ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१६:४३ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	२३:०४ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
१७ दिसंबर	०५:२५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	११:३८ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१७:५२ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
१८ दिसंबर	००:०५ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	०६:१९ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	१२:२५ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१८:३१ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
१९ दिसंबर	००:३७ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	०६:४३ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१२:४१ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१८:४० से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
२० दिसंबर	००:३९ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०६:३८ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१२:३० से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१८:२३ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
२१ दिसंबर	००:१५ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:०८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	११:५४ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:४१ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:२८ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
२२ दिसंबर	०५:१५ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१०:५७ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१६:३९ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:२१ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
२३ दिसंबर	०४:०४ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	०९:४२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२३ दिसंबर	१५:२१ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:०० से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
२४ दिसंबर	०२:३९ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०८:१५ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१३:५१ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१९:२७ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
२५ दिसंबर	०१:०४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०६:३९ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१२:१४ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१७:४९ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	२३:२५ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
२६ दिसंबर	०५:०० से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१०:३५ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१६:१० से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२१:४५ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
२७ दिसंबर	०३:२१ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	०८:५८ से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१४:३५ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२०:१२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
२८ दिसंबर	०१:५१ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०७:३० से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१३:०९ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१८:४९ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
२९ दिसंबर	००:३२ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०६:१५ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	११:५८ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	१७:४२ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	२३:२९ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
३० दिसंबर	०५:१७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	११:०५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	१६:५३ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	२२:४६ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
३१ दिसंबर	०४:४० से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१०:३४ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	१६:२८ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
३१दिसंबर	२२:२८ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
१ जनवरी	०४:२८ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१०:२८ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	१६:२९ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	२२:३६ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
२ जनवरी	०४:४३ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१०:५० से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	१६:५८ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	२३:१३ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
३ जनवरी	०५:२८ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	११:४३ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	१७:५८ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
४ जनवरी	००:२० से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	०६:४३ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	१३:०५ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१९:२८ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
५ जनवरी	०१:५६ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	०८:२५ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	१४:५४ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	२१:२३ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
६ जनवरी	०३:५७ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१०:३२ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	१७:०६ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	२३:४१ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
७ जनवरी	०६:१९ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	१२:५७ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१९:३५ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
८ जनवरी	०२:१४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	०८:५३ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	१५:३२ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	२२:११ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
९ जनवरी	०४:५१ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
	११:२९ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	१८:०७ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
१०जनवरी	००:४५ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी

✲ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१० जनवरी	०७:२४ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	१३:५८ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	२०:३३ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
११ जनवरी	०३:०८ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	०९:४३ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	१६:१२ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	२२:४१ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
१२ जनवरी	०५:१० से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	११:३९ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	१८:०१ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
१३ जनवरी	००:२४ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	०६:४६ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	१३:०९ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१९:२४ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
१४ जनवरी	०१:३९ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	०७:५४ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	१४:१० से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	२०:१७ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
१५ जनवरी	०२:२५ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	०८:३३ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	१४:४१ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	२०:४१ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
१६ जनवरी	०२:४२ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	०८:४२ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	१४:४३ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	२०:३६ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
१७ जनवरी	०२:३० से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	०८:२४ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:१८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:०६ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
१८ जनवरी	०१:५४ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	०७:४२ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	१३:३० से	ज्येष्ठा	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	१९:१३ से	ज्येष्ठा	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
१९ जनवरी	००:५६ से	ज्येष्ठा	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१९ जनवरी	०६:३९ से	ज्येष्ठा	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	१२:२३ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१८:०२ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	२३:४१ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
२० जनवरी	०५:२० से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	११:०० से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	१६:३६ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	२२:१३ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
२१ जनवरी	०३:५० से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	०९:२७ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	१५:०२ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	२०:३७ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
२२ जनवरी	०२:१२ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	०७:४८ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	१३:२३ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	१८:५८ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
२३ जनवरी	००:३३ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	०६:०८ से	धनिष्ठा	१	गा	मकर	ताम्बा
	११:४४ से	धनिष्ठा	२	गी	मकर	ताम्बा
	१७:२० से	धनिष्ठा	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	२२:५६ से	धनिष्ठा	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
२४ जनवरी	०४:३२ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१०:१० से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	१५:४९ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	२१:२७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
२५ जनवरी	०३:०६ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	०८:४८ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	१४:३० से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	२०:१२ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
२६ जनवरी	०१:५४ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	०७:४० से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	१३:२७ से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा
	१९:१४ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
२७ जनवरी	०१:०१ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	०६:५३ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२७ जनवरी	१२:४५ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
	१८:३७ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
२८ जनवरी	००:२९ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	०६:२७ से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	१२:२६ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
	१८:२५ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
२९ जनवरी	००:२४ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	०६:२९ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	१२:३५ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
	१८:४१ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
३० जनवरी	००:४७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	०७:०० से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	१३:१३ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
	१९:२६ से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
३१ जनवरी	०१:३९ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	०७:५९ से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	१४:२० से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
	२०:४१ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
१ फरवरी	०३:०२ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	०९:२९ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	१५:५६ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
	२२:२३ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
२ फरवरी	०४:५१ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	११:२४ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
	१७:५७ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
३ फरवरी	००:३० से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	०७:०४ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	१३:४१ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
	२०:१९ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
४ फरवरी	०२:५६ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	०९:३४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	१६:१३ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी
	२२:५२ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
५ फरवरी	०५:३१ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१२:११ से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
५ फरवरी	१८:४९ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
६ फरवरी	०१:२८ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	०८:०६ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	१४:४५ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
	२१:२० से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
७ फरवरी	०३:५६ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१०:३१ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
	१७:०७ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	२३:३७ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
८ फरवरी	०६:०८ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१२:३८ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
	१९:०९ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
९ फरवरी	०१:३३ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	०७:५७ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	१४:२१ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
	२०:४५ से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
१० फरवरी	०३:०२ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	०९:१९ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	१५:३६ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
	२१:५३ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
११ फरवरी	०४:०२ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१०:११ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	१६:२० से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
	२२:३० से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
१२ फरवरी	०४:३२ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१०:३४ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
	१६:३६ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	२२:३८ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
१३ फरवरी	०४:३३ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१०:२८ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
	१६:२३ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:१८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा
१४ फरवरी	०४:०७ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:५६ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	१५:४५ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा

✲ संवत् २०७९, सन् २०२२-२३ में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✲

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१४फरवरी	२१:३५ से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
१५ फरवरी	०३:१९ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	०९:०३ से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	१४:४७ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	२०:३१ से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
१६ फरवरी	०२:११ से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	०७:५१ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	१३:३१ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
	१९:११ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
१७ फरवरी	००:४८ से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	०६:२५ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	१२:०२ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
	१७:४० से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	२३:१५ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
१८ फरवरी	०४:५० से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१०:२५ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
	१६:०१ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	२१:३६ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
१९ फरवरी	०३:११ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	०८:४६ से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	१४:२१ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
	१९:५६ से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
२० फरवरी	०१:३२ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	०७:०८ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	१२:४४ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
	१८:२१ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	२३:५९ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
२१ फरवरी	०५:३७ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	११:१५ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
	१६:५६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	२२:३७ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
२२ फरवरी	०४:१८ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा
	०९:५९ से	उ.भा.	१	दू	मीन	लोहा
	१५:४४ से	उ.भा.	२	थ	मीन	लोहा
	२१:३० से	उ.भा.	३	झ	मीन	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
२३ फरवरी	०३:१५ से	उ.भा.	४	ञ	मीन	लोहा
	०९:०१ से	रेवती	१	दे	मीन	सोना
	१४:५१ से	रेवती	२	दो	मीन	सोना
	२०:४२ से	रेवती	३	चा	मीन	सोना
२४ फरवरी	०२:३२ से	रेवती	४	ची	मीन	सोना
	०८:२३ से	अश्विनी	१	चू	मेष	सोना
	१४:२० से	अश्विनी	२	चे	मेष	सोना
	२०:१७ से	अश्विनी	३	चो	मेष	सोना
२५ फरवरी	०२:१४ से	अश्विनी	४	ला	मेष	सोना
	०८:११ से	भरणी	१	ली	मेष	सोना
	१४:१५ से	भरणी	२	लू	मेष	सोना
	२०:१९ से	भरणी	३	ले	मेष	सोना
२६ फरवरी	०२:२३ से	भरणी	४	लो	मेष	सोना
	०८:२७ से	कृत्ति.	१	अ	मेष	सोना
	१४:३८ से	कृत्ति.	२	ई	वृष	सोना
	२०:४९ से	कृत्ति.	३	ऊ	वृष	सोना
२७ फरवरी	०३:०० से	कृत्ति.	४	ए	वृष	सोना
	०९:१२ से	रोहिणी	१	ओ	वृष	सोना
	१५:३० से	रोहिणी	२	वा	वृष	सोना
	२१:४९ से	रोहिणी	३	वी	वृष	सोना
२८ फरवरी	०४:०८ से	रोहिणी	४	वू	वृष	सोना
	१०:२७ से	मृगशि.	१	वे	वृष	सोना
	१६:५३ से	मृगशि.	२	वो	वृष	सोना
	२३:१९ से	मृगशि.	३	का	मिथुन	सोना
१ मार्च	०५:४५ से	मृगशि.	४	की	मिथुन	सोना
	१२:११ से	आर्द्रा	१	कू	मिथुन	चाँदी
	१८:४३ से	आर्द्रा	२	घ	मिथुन	चाँदी
२ मार्च	०१:१५ से	आर्द्रा	३	ङ	मिथुन	चाँदी
	०७:४७ से	आर्द्रा	४	छ	मिथुन	चाँदी
	१४:१९ से	पुनर्वसु	१	के	मिथुन	चाँदी
	२०:५५ से	पुनर्वसु	२	को	मिथुन	चाँदी
३ मार्च	०३:३१ से	पुनर्वसु	३	ह	मिथुन	चाँदी
	१०:०७ से	पुनर्वसु	४	ही	कर्क	चाँदी
	१६:४४ से	पुष्य	१	हू	कर्क	चाँदी
	२३:२३ से	पुष्य	२	हे	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
४ मार्च	०६:०२ से	पुष्य	३	हो	कर्क	चाँदी
	१२:४१ से	पुष्य	४	डा	कर्क	चाँदी
	१९:२० से	आश्ले	१	डी	कर्क	चाँदी
५ मार्च	०१:५९ से	आश्ले	२	डू	कर्क	चाँदी
	०८:३८ से	आश्ले	३	डे	कर्क	चाँदी
	१५:१७ से	आश्ले	४	डो	कर्क	चाँदी
	२१:५६ से	मघा	१	मा	सिंह	चाँदी
६ मार्च	०४:३२ से	मघा	२	मी	सिंह	चाँदी
	११:०८ से	मघा	३	मू	सिंह	चाँदी
	१७:४५ से	मघा	४	मे	सिंह	चाँदी
०७ मार्च	००:२१ से	पू.फा.	१	मो	सिंह	चाँदी
	०६:५३ से	पू.फा.	२	टा	सिंह	चाँदी
	१३:२५ से	पू.फा.	३	टी	सिंह	चाँदी
	१९:५६ से	पू.फा.	४	टू	सिंह	चाँदी
०८ मार्च	०२:२८ से	उ.फा.	१	टे	सिंह	चाँदी
	०८:५३ से	उ.फा.	२	टो	कन्या	चाँदी
	१५:१९ से	उ.फा.	३	पा	कन्या	चाँदी
	२१:४४ से	उ.फा.	४	पी	कन्या	चाँदी
०९ मार्च	०४:१० से	हस्त	१	पू	कन्या	चाँदी
	१०:२८ से	हस्त	२	ष	कन्या	चाँदी
	१६:४७ से	हस्त	३	ण	कन्या	चाँदी
	२३:०५ से	हस्त	४	ठ	कन्या	चाँदी
१० मार्च	०५:२४ से	चित्रा	१	पे	कन्या	चाँदी
	११:३५ से	चित्रा	२	पो	कन्या	चाँदी
	१७:४६ से	चित्रा	३	रा	तुला	चाँदी
	२३:५७ से	चित्रा	४	री	तुला	चाँदी
११ मार्च	०६:०८ से	स्वाति	१	रू	तुला	चाँदी
	१२:११ से	स्वाति	२	रे	तुला	चाँदी
	१८:१५ से	स्वाति	३	रो	तुला	चाँदी
१२ मार्च	००:१८ से	स्वाति	४	ता	तुला	चाँदी
	०६:२२ से	विशाखा	१	ती	तुला	ताम्बा
	१२:१८ से	विशाखा	२	तू	तुला	ताम्बा
	१८:१५ से	विशाखा	३	ते	तुला	ताम्बा
१३ मार्च	००:११ से	विशाखा	४	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	०६:०८ से	अनुराधा	१	ना	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
१३ मार्च	११:५८ से	अनुराधा	२	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:४९ से	अनुराधा	३	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	२३:३९ से	अनुराधा	४	ने	वृश्चिक	ताम्बा
१४ मार्च	०५:३० से	ज्येष्ठ	१	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	११:१५ से	ज्येष्ठ	२	या	वृश्चिक	ताम्बा
	१७:०० से	ज्येष्ठ	३	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	२२:४५ से	ज्येष्ठ	४	यू	वृश्चिक	ताम्बा
१५ मार्च	०४:३० से	मूल	१	ये	धनु	ताम्बा
	१०:१० से	मूल	२	यो	धनु	ताम्बा
	१५:५१ से	मूल	३	भा	धनु	ताम्बा
	२१:३२ से	मूल	४	भी	धनु	ताम्बा
१६ मार्च	०३:१३ से	पू.षा.	१	भू	धनु	ताम्बा
	०८:५० से	पू.षा.	२	धा	धनु	ताम्बा
	१४:२८ से	पू.षा.	३	फा	धनु	ताम्बा
	२०:०६ से	पू.षा.	४	ढा	धनु	ताम्बा
१७ मार्च	०१:४४ से	उ.षा.	१	भे	धनु	ताम्बा
	०७:१९ से	उ.षा.	२	भो	मकर	ताम्बा
	१२:५५ से	उ.षा.	३	जा	मकर	ताम्बा
	१८:३१ से	उ.षा.	४	जी	मकर	ताम्बा
१८ मार्च	००:०६ से	श्रवण	१	खी	मकर	ताम्बा
	०५:४१ से	श्रवण	२	खू	मकर	ताम्बा
	११:१६ से	श्रवण	३	खे	मकर	ताम्बा
	१६:५० से	श्रवण	४	खो	मकर	ताम्बा
	२२:२५ से	धनिष्ठ	१	गा	मकर	ताम्बा
१९ मार्च	०४:०० से	धनिष्ठ	२	गी	मकर	ताम्बा
	०९:३६ से	धनिष्ठ	३	गू	कुम्भ	ताम्बा
	१५:११ से	धनिष्ठ	४	गे	कुम्भ	ताम्बा
	२०:४७ से	शतभिषा	१	गो	कुम्भ	ताम्बा
२० मार्च	०२:२४ से	शतभिषा	२	सा	कुम्भ	ताम्बा
	०८:०१ से	शतभिषा	३	सी	कुम्भ	ताम्बा
	१३:३८ से	शतभिषा	४	सू	कुम्भ	ताम्बा
	१९:१६ से	पू.भा.	१	से	कुम्भ	लोहा
२१ मार्च	००:५६ से	पू.भा.	२	सो	कुम्भ	लोहा
	०६:३६ से	पू.भा.	३	दा	कुम्भ	लोहा
	१२:१६ से	पू.भा.	४	दी	मीन	लोहा

❊ नवग्रहों के वैदिक मन्त्र ❊

❊ सूर्य- जपसंख्या - ७०००

विनियोगः- अस्य श्रीआकृष्णेनमंत्रस्य हिरण्यस्तूपऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सवितादेवता श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

❊ चन्द्र- जपसंख्या - १२०००

विनियोगः- अस्य श्रीइमन्देवामंत्रस्य गौतमऋषिः द्विपदाविराट् छन्दः सोमोदेवता, श्रीचन्द्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

इमं देवा ऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा ।।

❊ भौम- जपसंख्या - ११०००

विनियोगः- अस्य श्रीअग्निमूर्धामंत्रस्य विरुपाक्षअङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता गायत्री छन्दः श्रीभौमप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय्यम् ।
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ।।

❊ बुध- जपसंख्या - २१०००

विनियोगः- अस्य श्रीउद्बुद्ध्यस्वाग्नेमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः बुधोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबुधप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च।
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च च सीदत।।

❊ गुरु- जपसंख्या - १९०००

विनियोगः - अस्य श्रीबृहस्पतेमंत्रस्य गृत्समदऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता श्रीबृहस्पतिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

❊ शुक्र- जपसंख्या - २६०००

विनियोगः- अस्य श्रीअन्नात्परिस्रुतो मन्त्रस्य अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः प्रजापतिऋषिः जगतीछन्दः श्रीशुक्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

❊ श्री सर्वेश्वर अष्टकम् ❊

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्कितायाऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय, हैवङ्गीवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

❊ श्री जयादित्य अष्टकम् ❊

(श्रीस्कन्द महापुराणे)

न त्वं कृतः केवलसंश्रुतश्च यजुष्येवं व्याहरत्यादिदेव! ।
चतुर्विधा भारती दूरदूरं धृष्टः स्तौमि स्वार्थकामः क्षमैतत् ।।
मार्तण्डसूर्यांशुरविस्तथेन्द्रो भानुर्भगश्चाऽर्यमा स्वणरिताः ।
दिवाकरो मित्रविष्णुश्च देव! ख्यातस्त्वं वै द्वादशात्मा नमस्ते ।।
लोकत्रयं वै तव गर्भगेहं जलाधारः प्रोच्यसे खं समग्रम् ।
नक्षत्रमाला कुसुमाभिमाला तस्मै नमो व्योमलिङ्गाय तुभ्यम् ।।
त्वं देवदेवस्त्वमनाथनाथस्त्वं प्राप्यपालः कृपणे कृपालुः ।
त्वं नेत्रनेत्रं जनबुद्धिबुद्धिराकाशकाशो जय जीवजीवः ।।
दारिद्र्यदारिद्र्य निधे निधीनाममङ्गलामङ्गल शर्मशर्म ।
रोगप्ररोगः प्रथितः पृथिव्यां चिरं जयाऽऽदित्य! जयाऽऽप्रमेय! ।।
व्याधिग्रस्तं कुष्ठरोगाभिभूतं भग्नप्राणं शीर्णदिहं विसंज्ञम् ।
मातापिताबान्धवाः सन्त्यजन्ति सर्वैस्त्यक्तं पासि कोऽस्तित्वदन्यः।।
त्वं मे पिता त्वं जननी त्वमेव त्वं मे गुरुर्बान्धवाश्च त्वमेव ।
त्वं मे धर्मस्त्वञ्च मे मोक्षमार्गो दासस्तुभ्यं त्यज वा रक्ष देव! ।।
पापोऽस्मि मूढोऽस्मि महोग्रकर्मा रौद्रोऽस्मि नाऽऽचारनिधानमस्मि।
तथापि तुभ्यं प्रणिपत्य पादयोर्जयं भक्तानामर्पयं श्रीजयार्क! ।।
।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे श्रीजयादित्य अष्टकम् ।।

❊ शनि- जपसंख्या - २३०००

विनियोगः- अस्य श्रीशन्नोदेवीमंत्रस्य दध्यङ्ङथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः श्रीशनिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

❊ राहु- जपसंख्या - १८०००

विनियोगः- अस्य श्रीकयानश्चित्रमंत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता श्रीराहुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठ्या वृता।।

❊ केतु- जपसंख्या - १८०००

विनियोगः- अस्य श्रीकेतुंकृण्वन्नमन्त्रस्य मधुच्छन्दाऋषिः गायत्री छन्दः केतुर्देवता श्रीकेतुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।।

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।।
-- वराहपुराणम्, अध्यायः १६९/ श्लोकः २३

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।
-- स्कन्दपुराणम्/खण्डः१/अध्यायः५१/श्लोकः५४

प्रकाशकः- श्रीनिम्बार्क परिषद् , जयपुर

❊ तंत्रसारोक्त (तांत्रिक) नवग्रह मंत्र ❊

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः
मंगल- ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध- ॐ बुं बुधाय नमः **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र- ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि- ॐ शं शनैश्चराय नमः **राहु-** ॐ रां राहवे नमः
केतु- ॐ कें केतवे नमः

✻ अवकहडाचक्रम् -- शतपदचक्रम् ✻

नक्षत्र अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
राशि	मेष	मेष	मेष१, वृष३	वृष	वृष२, मिथु२	मिथुन	मिथु३, कर्क१	कर्क	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
यो.वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीश	भौम	भौम	भौम१,शुक्र३	शुक्र	शुक्र२,बुध२	बुध	बुध३,चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र अक्षर	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रा.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्र	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा
राशि	सिंह	सिंह	सिंह१, कन्या३	कन्या	कन्या२, तुला२	तुला	तुला३, वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	वनचर	वनचर	वन१ मान३	मानव	मानव	मानव	मान३ कीट१	कीट	कीट
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
यो.वै.	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान
राशीश	सूर्य	सूर्य	सूर्य१,बुध३	बुध	बुध२,शुक्र२	शुक्र	शुक्र३,भौम१	भौम	भौम
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र अक्षर	ये.यो. भा.भी.	भू.ध, फ.ढ.	भे,भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
राशि	धनु	धनु	धनु१, मक३	मकर	मक.२, कुंभ२	कुम्भ	कुम्भ३, मीन१	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ वैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मान१ चतु३	चतुष्प	चतु१जल३	जल२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै.	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	गुरु	गुरु	गुरु१,शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३,गुरु१	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य		मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

✻ नवग्रह स्तोत्रम् ✻

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महदद्युतिम् ।
तमोऽरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम् ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

✻ नवग्रहों के बीजमंत्र ✻

ग्रह	बीज मन्त्र	जपसंख्या
सूर्य -	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।	७५००
चन्द्र -	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।	१९०००
मंगल-	ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः।	१०५००
बुध -	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।	२१०००
गुरु -	ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः	२४०००
शुक्र -	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।	२६०००
शनि -	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।	१५०००
राहु -	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।	१५०००
केतु -	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।	१५०००

✻ नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम् ✻

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः ।।
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः ।।
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ।।
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः।।
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ।।
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ।।

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	स्वा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	उ4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा पा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ त्र	दे दो चा ची
मेष	अ4	चू चे चो ला	28 3	33 0	28.5	18.5 4	21.5 -4	22.5 -4	26	17 3	19 3	23.5 3	31.5	28	21 +5	25 +5	15.5 35	11 36	9 236	13 6	22.5	26.5 -2	22.5	18.5 -6	25.5 -6	14 36	13 35	25 +5	23.5 +5	25	26	20	20	15 3	16 3	14.5 34	24.5 +4	26 +4
	भ4	लि लू ले लो	34	28 3	29 01	19 041	22.5 -4	14.5 34	18 3	26	27	31.5	23.5 3	25.5 1	20 -15	18 35	26 +5	21.5 6	20 6	4 136	13.5 13	29.5	21.5 -1	17.5 -16	17.5 36	19.5 -16	20 -15	18 35	26 +5	27.5	26	10 132	10 132	20 -1	24 -2	22.5 ×24	17.5 34	26.5 +4
	कृ1	अ	27.5	29 1	28 3	18 34	10 1340	16.5 4	20	20 1	21	25.5	26.5	23.5 3	16.5 35	20 15	20 15	15.5 16	15.5 6	18 6	27.5	15.5 3	19.5 3	15.5 36	19.5 -6	25.5 -6	24.5 +5	18 125	12 315	13.5 13	11.5 23	25	25	27	19 1	17.5 14	19.5 14	11.5 34
वृष	कृ3	इ उ ए	18.5 4	20 14	19 34	28 3	20 013	26.5	17.5 +4	17.5 14	18.5 +4	22	23	20 3	18.5 3	22 1	22 1	21 15	21 +5	23.5 +5	22.5 -6	10.5 36	14.5 36	20.5 3	24.5	30.5	20 6	13.5 126	7.5 136	12 135	10 352	23.5 +5	29.5	31.5	23.5 1	20 1	22 1	14 3
	रो4	ओ वा वी वू	23.5 -4	23.5 4	11 341	20 31	28 3	36 0	27 04	23.5 +4	22.5 +4	26	27	12 31	10.5 31	24.5	27	26 +5	26 +5	20 -15	19 -16	15.5 36	9.5 316	15.5 31	29.5	23.5 1	14 16	19 6	11.5 326	16 352	17 35	20 -15	26 -1	24.5 -1	30.5	27	27	19 3
	मृ2	वे वो	23.5 -4	14.5 34	18.5 -4	27.5	35	28 3	19 34	24 04	22.5 +4	26	19 3	21	19.5	15.5 3	24.5	23.5 +5	26 +5	13 35	12 36	25 -6	18.5 -6	24.5	21.5 3	24.5	15 6	10 36	17 26	21.5 ×25	25 +5	13 35	19 3	27	29.5	26	18 3	27
मिथुन	मृ2	क की	27	18 3	22	19.5 +4	27 +4	20 34	28 3	33 0	31.5	19 -4	12 34	14 4	23.5	19.5 3	28.5	31.5	34	21 3	14 35	27 +5	20.5 +5	14 6	11 36	14 6	23	18 3	25 +2	20 -26	23.5 -6	11.5 36	13 35	21 +5	23.5 +5	25.5	17.5 3	26.5
	आ4	कू घ ङ छ	19 3	27	21 1	18.5 ×14	24.5 +4	26 +4	34	28 3	25 30	12.5 034	20 -4	13 14	23.5 1	29.5	21.5 3	24.5 3	24.5 3	27 1	20 -15	27 +5	20 ×15	13.5 16	17 26	3 1326	16 13	28	28	23 -6	23 -6	17.5 -16	19 ×15	12 135	17 35	19 3	26.5	26.5
	पु3	के को ह	20 3	27	23	20.5 +4	22.5 +4	23.5 +4	31.5	24 3	28 3	15.5 -34	22.5 40	17 -4	22.5 +2	26.5 +2	21.5 3	24.5 3	25.5 3	27.5	20.5 +5	28 +5	22 +5	15.5 6	21.5 6	7 36	14 3	27	27	22 -6	23 -6	17 -6	18.5 +5	14 35	16 35	18 3	28	27.5
कर्क	पु1	ही	22.5 3	29.5	25.5	22	24	25	18 4	10.5 34	14.5 34	28 3	35 0	29.5	16.5 ×24	20.5 24	15.5 34	18 3	19 3	21	20.5	28	22	20 +5	26 +5	11.5 35	8 36	21 -6	21 -6	26	27	21	12.5 6	8 36	10 36	16 35	26 +5	25.5 +5
	पु4	हु हे हो डा	30.5	21.5 3	26.5	23	25	18 3	11 34	18 4	21.5 4	35	28 3	30 0	19.5 +4	15.5 34	23.5 +4	26	27	12 3	11.5 3	26.5	21	19 +5	18 35	21 -5	17	11 236	21 6	26	25 -2	13 3	4.5 36	14.5 6	18 6	24 +5	18 35	27 +5
	श्ले4	डी डू डे डो	26.5	24.5 1	22.5 3	19 3	11 31	19	12 4	12 14	15 4	28.5	29	28 3	15 0342	15.5 142	18.5 14	21 1	21	26	25.5	12.5 3	17.5 3	15.5 35	20 +5	26 -5	22.5 6	16 16	8 316	13 13	13 3	26	17.5 6	19.5 6	11.5 16	17.5 15	21 15	13 35
सिंह	म4	म मी मू मे	20 +5	20 15	16.5 35	17.5 3	9.5 31	17.5	21.5	22.5 1	20.5 -2	16.5 ×24	19.5 +4	16 342	28 3	30 01	27.5 1	16.5 14	16.5 +4	21.5 4	24.5	11.5 3	16.5 3	22.5 3	25.5	33	25 +5	19 15	8.5 135	3.5 316	4.5 36	18.5 6	24.5	25.5	18.5 1	18.5 -16	19.5 16	13 36
	पू4	मो टा टी टू	26 +5	18 35	20 -15	21 1	23.5	15.5 3	19.5 3	28.5	26.5 -2	22.5 ×24	17.5 34	16.5 124	30 -1	28 3	35 0	24 04	22.5 +4	7.5 134	10.5 13	25.5	18.5 1	24.5 -1	23.5 3	25.5 -1	19 ×15	17 35	24 +5	19 6	18.5 6	4.5 136	10.5 13	19.5 1	24.5	24.5 -6	17.5 36	25.5 -6
	उ1	टे	16.5 35	26 +5	20 -15	21 1	26	24.5	28.5	20.5 3	21.5 3	17.5 34	25.5 +4	19.5 -14	27.5 -1	35	28 3	17 34	16 034	13.5 142	16.5 12	25.5	16.5 12	22.5 -12	31.5	17.5 13	9.5 135	25 +5	25 +5	20 6	20 6	11.5 16	17.5 1	11.5 13	15.5 3	15.5 36	26.5 -6	25.5 -6
कन्या	उ3	टो प पी	13 36	22.5 6	16.5 16	21 ×15	26 +5	24.5 +5	31.5	23.5 3	24.5 3	20 3	28	22 1	17.5 14	25.5 +4	18 34	28 3	27 30	24.5 ×12	16.5 124	25.5 +4	16.5 124	18 12	27	13 13	14 13	29.5	29.5	24.5 +5	24.5 +5	16 +15	16.5 -16	10.5 316	14.5 36	17.5 3	28.5	27.5
	ह4	पू ष ण ठ	10 236	20 6	17.5 6	22 +5	25 +5	26 +5	33	22.5 3	24.5 3	20 3	28	23	18.5 +4	22.5 +4	16 34	26 3	28 3	28 0	20 04	26.5 +4	18.5 +4	20	26	13 3	15 3	27	28.5	23.5 +5	24.5 +5	18.5 +5	19 -6	8.5 362	13.5 36	16.5 3	26.5	27.5
	चि2	पे पो	13 6	5 136	19 6	23.5 +5	20 15	12 35	19 3	26 1	25.5	21	12 3	27	22.5 +4	8.5 134	14.5 124	24.5 12	27	28 3	20 34	19 04	26.5 +4	28	11 3	25	27	14 13	22 1	17 15	18.5 +5	15.5 35	16 36	24 -6	16.5 16	19.5 1	10.5 132	19.5

यहाँ सारिणी में ऊपर, दायें से बाये मेष मे मीन तक वर की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है ऊपर से नीचे कन्या की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है। अष्टकूट मेलापक सारिणी में कुल गुणों का योग व नीचे दोषों के चिह्न दिये हैं। इन दोषों को इकाई के रूप में इस प्रकार समझना चाहिए। **1** – गणदोष, **2** – वैर योनि, **3** – नाड़ी दोष, **4** – द्विर्द्वादश दोष, **5** – नवम पंचम, **6** – षडाष्टक तथा जहाँ **0** लिखा है यह वर के नक्षत्र से पूर्व वधु के नक्षत्र की सूचना देता है। जो कि महादोष माना गया है। **–** का चिह्न दोष की न्यूनता दर्शाता है। **×** एवं **+** का चिह्न दोष का पूरा निर्वाह करता है।

❀ वर–वधु मेलापक सारिणी ❀

वधू राशि	नक्षत्र	अक्षर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो
तुला	चि2	र री	22.5	14.3 13	28.5	23.5 +6	20 16	12 36	13 35	21 15	19.5 +5	20.5	11.5 3	26.5
	खा4	रू रे रो ता	27.5 +2	29.5	17.5 3	12.5 36	15.5 36	26 -6	27 +5	26 +5	28 +5	29	27.5	14.5 3
	वि3	ति तू ते	22.5	22.5 1	20.5 3	15.5 36	10.5 136	18.5 -6	19.5 +5	20 15	21 +5	22	21	18.5 3
वृश्चिक	वि1	तो	16.5 +6	16.5 16	14.5 36	19.5 3	14.5 13	22.5	12 6	12.5 16	13.5 6	19 -5	18 -5	15.5 -5
	अनु4	न नी नू ने	24.5 -6	15.5 36	19.5 -6	24.5	27.5	20.5 3	10 36	15 26	20.5 6	26 -5	18 35	21 -5
	ज्ये4	नो या यी यू	12 36	18.5 16	24.5 -6	29.5	22.5 1	22.5	12 6	2 3126	5 63	10.5 53	20 +5	26 -5
धनु	मु4	ये यो भ भी	12 35	20 15	24.5 +5	19 6	13 16	13 6	21	15 13	12 3	8 36	17 6	23.5 6
	पू4	भू धा फा ढ़ा	26 +5	18 35	18 125	12.5 162	18 6	10 36	18 3	27	27	23 6	12 236	17 16
	उ1	भे	24.5 +5	26 +5	12 135	6.5 136	10.5 236	17 26	25 +2	27	27	23 6	23 6	9 163
मकर	उ3	भो ज जी	27	28.5	14.5 13	12 135	16 235	22.5 ×25	20 ×26	22 -6	22 -6	28	28	14 13
	उ4	खि खू खे खो	27	26	13.5 32	11 352	16 35	25 +5	22.5 -6	21 -6	22 -6	28	26 +2	15 3
	ध2	ग गि	20	11 132	26	23.5 +5	20 15	12 35	9.5 36	16.5 16	16 -6	22	13 3	28
कुम्भ	ध2	गू गे	20	11 132	26	30.5	27 1	19 3	12 35	19 15	18.5 +5	13.5 6	4.5 36	19.5 6
	श4	गो गा सी सू	15 3	21 1	28	32.5	25.5 1	27	20 +5	12 135	13 35	8.5 36	14.5 6	20.5 6
	पू3	से सो द	18 3	25 +2	20 -1	24.5 -1	31.5	31.5	24.5 +5	17 35	18 35	13 36	20 6	13.5 16
मीन	पू1	दी	14.5 346	21.5 +426	16.5 -146	19 1	26	26	25.5	18 3	19 3	18 35	25 5	18.5 15
	उ4	दू थ झ ञ	24.5 +4	16.5 34	18.5 -14	21 1	26	18 3	17.5 3	25.5	28	27 5	19 35	21 15
	र4	दे दो चा ची	25 +40	24.5 +4	11.5 34	14 3	17 3	16	25.5	24.5	26.5	25.5 5	27 5	14 35

वधू राशि	नक्षत्र	अक्षर	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
			म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	खा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4
			म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू
तुला	चि2	र री	25.5	11.5 13	17.5 12	17.5 124	20 +4	21 34	28 3	27 0	34.5	23.5 4	6.5 34	20.5 4
	खा4	रू रे रो ता	13.5 3	25.5	25.5	25.5 +4	27.5 +4	21 +4	28	28 3	20 30	9 340	21.5 4	16.5 4
	वि3	ति तू ते	17.5 3	19.5 1	17.5 12	17.5 142	18.5 +4	27.5 +4	34.5	19 3	28 3	17 34	16 04	20.5 4
वृश्चिक	वि1	तो	21.5 3	23.5 1	21.5 12	17 12	18	27	22.5 4	7 34	16 34	28 3	27 0	31.5
	अनु4	न नी नू ने	24.5	20.5 3	29.5	25	26	11 3	6.5 34	21.5 4	16 4	28	28 3	31 0
	ज्ये4	नो या यी यू	31	23.5 1	16.5 13	12 13	12 3	24	19.5 4	15.5 4	19.5 4	31.5	30	28 3
धनु	मु4	ये यो भ भी	25 +5	19 15	9.5 153	13 31	13 3	26	26	21	26	22.5 +4	15.5 ×24	15 342
	पू4	भू धा फा ढ़ा	19 -15	17 35	25 +5	28.5	27	13 13	13 13	27	21 1	17.5 -14	15.5 34	17.5 -14
	उ1	भे	8.5 153	24 +5	25 +5	28.5	28.5	21 1	21 1	19 3	13 13	9.5 134	23.5 +4	17.5 -14
मकर	उ3	भो ज जी	4.5 136	20 6	21 6	24.5 +5	24.5 15	17 15	24 -1	22 3	16 13	13 31	27	21 1
	उ4	खि खू खे खो	6.5 36	18.5 6	20 6	23.5 +5	24.5 +5	19.5 5	26.5	22 3	17 3	14 3	27	22
	ध2	ग गि	19.5 6	5.5 136	12.5 16	16 15	17.5 +5	15.5 35	22.5 3	24.5	29	26	12 3	26
कुम्भ	ध2	गू गे	25.5	11.5 13	18.5 1	17.5 16	19 +6	17 36	18 35	20 -5	24.5 -5	25	11 3	25
	श4	गो गा सी सू	26.5	20.5 1	12.5 13	11.5 136	8.5 1236	25 6	25 +5	19 +5	26 +5	26.5	21	19 3
	पू3	से सो द	19.5 1	25.5	16.5 3	15.5 36	15.5 ×36	17.5 16	18.5 -15	26 +5	20 -15	20.5 1	26.5	11 13
मीन	पू1	दी	17.5 -16	23.5 +6	14.5 36	16.5 3	16.5 3	18.5 +1	11.5 16	19 6	13 16	19 -15	25 +5	9.5 135
	उ4	दू थ झ ञ	18.5 -16	16.5 36	25.5 +6	27.5	26.5	9.5 132	2.5 3216	19.5 6	12 162	18 152	19 35	21 -15
	र4	दे दो चा ची	13 36	23.5 +6	23.5 +6	25.5	26.5	19.5	12.5 6	11.5 36	4.5 36	10.5 35	27 -5	22 +5

वधू राशि	नक्षत्र	अक्षर	धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			मु4	पू4	उ1	उ3	उ4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			ये यो भ भी	भू धा फा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
तुला	चि2	र री	27	14 13	22 1	25 1	26.5	23.5 3	18 35	26 +5	18.5 15	12.5 16	3.5 6213	12.5 6
	खा4	रू रे रो ता	23	27	19 3	22 3	23 3	26.5	21 +5	20 ×52	25 +5	19 6	19.5 6	12.5 36
	वि3	ति तू ते	27	22 1	14 13	17 13	17 3	30	24.5 +5	26 +5	20 15	14 16	13 162	4.5 36
वृश्चिक	वि1	तो	21.5 +4	16.5 41	8.5 134	12 13	12 3	25	24	25.5	19.5 1	19 15	18 15	9.5 325
	अनु4	न नी नू ने	15.5 ×24	13.5 34	21.5 +4	25	26	12 3	11 3	21	24.5	24 +5	18 35	27 +5
	ज्ये4	नो या यी यू	14 0234	16.5 14	16.5 14	20 1	20	25	24	18 3	10 13	9.5 135	21 15	21 +5
धनु	मु4	ये यो भ भी	28 3	28 01	26.5 1	15 14	15 4	20 4	28.5	21.5 3	14.5 13	16 13	25 1	26.5
	पू4	भू धा फा ढ़ा	28 +1	28 3	34 0	22.5 04	23 4	6 134	14.5 13	23.5 1	28.5	30	23 3	31
	उ1	भे	26.5 -1	34	28 3	16.5 34	14.5 340	15 14	23.5 1	23.5 1	29.5	31	31	23 3
मकर	उ3	भो ज जी	16 14	23.5 4	17.5 34	28 3	26 30	26.5 +1	17 ×14	17 ×14	23 +4	30.5	30.5	22.5 3
	उ4	खि खू खे खो	17 4	23 4	14.5 34	25 3	28 3	28 -0	18.5 04	18 +4	21 +4	28.5	29.5	22.5 3
	ध2	ग गि	21 4	7 341	16 41	26.5 1	27	28 3	18.5 34	23.5 40	19 14	26.5 1	15.5 13	22.5 +2
कुम्भ	ध2	गू गे	29.5	15.5 13	24.5 1	18 14	18.5 +4	19.5 34	28 3	33 0	28.5 1	18 14	7 134	14 42
	श4	गो गा सी सू	22.5 3	24.5 1	24.5 1	18 14	18 +4	24.5 +4	33	28 3	19 013	8.5 1340	17 14	16 4
	पू3	से सो द	15.5 13	29.5	30.5	24 +4	23 +4	20 -14	28.5 -1	19 13	28 3	17.5 34	22.5 04	20 42
मीन	पू1	दी	15 13	29	30	29.5	28.5	25.5 1	17 14	7.5 134	16.5 34	28 3	33 0	30.5 +2
	उ4	दू थ झ ञ	24 -1	22 3	30	29.5	29.5	14.5 13	6 134	16 14	21.5 4	33	28 3	35 0
	र4	दे दो चा ची	26.5	29	21	20.5 3	21.5 3	22.5 -2	14 42	16 4	18 42	29.5 +2	34	28 3

यहाँ दोषों को इकाई के रूप में मानना चाहिए। जैसे वर की राशि धनु में पूर्व 4 चरण तथा कन्या की राशि वृष कृतिका 3 चरण का मेलापक देखने पर कुल गुण योग 13.5 तथा दोष में 126 लिखा है। यहाँ 1 – गण दोष, 2 – वैर योनि, 6 – षडाष्टक दोष प्राप्त होता है।

वर-कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक सारणियाँ इत्यादि

१ – वर्णस्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

वर्णाः	ब्रा·	क्ष·	वै·	शू·
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ – वश्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

वश्याः	च·	मा·	ज·	व·	की·
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४ – योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रमिदम्

वरस्य (कन्यायाः)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	१	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

६ – गणगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ – नाड़ीगुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

३ – तारायाः गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
जन्म १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
संपत् २	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
विपत् ३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
क्षेम ४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
प्रत्यरि ५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
साधक ६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
वध ७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
मैत्र ८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
अतिमैत्र ९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अष्टकूट मेलापक

विवाह–मेलापक विचार में वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ तथा नाड़ी में ८ गुण होते हैं। इन कुल ३६ गुणों में से १८ गुण से ऊपर विवाह अत्यन्त शुभ माना जाता है। तारा देखने के लिये कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर जो आये, उसमें अलग–अलग ९ का भाग देने से जो शेष बचे, उसे तारा जाने।

अथ मेलापके विशेषस्तत्राह।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्।।१।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेत्।।२।।

७ – राशिकूटस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

राशि	मेष	वृष	मि·	कर्क	सिंह	क·	तुला	वृ·	धनु	म·	कुंभ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

५ – ग्रहमैत्रकस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः)

ग्रह	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

निराभिजिद् गणना

स्थानम्	नक्ष·	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	३	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयं
हृदये	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कट्यां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनाप्तिः

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं·मं·गु·	बुधः	शु·श·
चन्द्र	सू· बु·	मं·गु·शु·श·	०
मंगल	चं·सू·गु·	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सू· शु·	मं,गु,श·	चन्द्र
गुरु	सू·चं·मं·	शनि	बु·शु·
शुक्र	बु· श·	मंगल,गुरु	सू·चं·
शनि	बु· शु·	गुरु	सू·चं·मं·

प्रीतिषडष्टक	मृत्युषडष्टक	शुभद्विर्द्वादशक	अशुभद्विर्द्वादशक	शुभनवपंचक	अशुभनवपंचक
सिंह–मीन	मेष–कन्या	मीन–मेष	वृष–मिथनु	मेष–सिंह	धनु–मेष
तुला–वृश्चिक	तुला–मीन	कर्क–सिंह	कुम्भ–मीन	वृष–कन्या	मकर–वृष
कुम्भ–कन्या	मिथुन–वृश्चिक	सिंह–कन्या	मेष–वृष	मिथुन–तुला	कर्क–वृश्चिक
मिथुन–मकर	मकर–सिंह	मकर–कुम्भ	मिथुन–कर्क	सिंह–धनु	कन्या–मकर
मेष–वृश्चिक	कुम्भ–कर्क	तुला–कन्या	तुला–वृश्चिक	तुला–कुम्भ	कुम्भ–मिथु·
धनु–कर्क	धनु–वृष	धनु–वृश्चिक	मकर–धनु	वृश्चिक–मीन	मीन–कर्क

❊ नाड़ीदोष विचार एवं परिहार ❊

जन्मकुण्डली में आदिनाड़ी, मध्यनाड़ी तथा अन्त्यनाड़ी नाम से तीन नाड़ियों का विवेचन प्राप्त होता है।

आदि नाड़ी - अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्र.

मध्य नाड़ी - भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पू.षाढ़ा, धनिष्ठा, उ.भाद्र.

अन्त्यनाड़ी- कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

यदि वर एवं कन्या की नाड़ी अलग-अलग होती है तो आठ गुण प्राप्त होते हैं। यदि वर कन्या की नाड़ी समान हो तो शून्य गुण मिलता है। इसे ही नाड़ी दोष कहते हैं। नाड़ी दोष की तीन स्थिति बनती है- १. वर-कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो। २. वर-कन्या दोनों की मध्य नाड़ी हो तथा ३. वर-कन्या दोनों की अन्त्य नाड़ी हो।

यदि दोनों की आदिनाड़ी हो तो विवाह करने पर वर की मृत्यु होती है। यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो विवाह करने पर कन्या की मृत्यु होती है। यदि दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् दोनों की मृत्यु होती है। अतः नाड़ी दोष त्याज्य होता है।

आदिनाडीवरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाडी द्वयोर्हन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

यह वचन प्राचीन काल से ही समादृत है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और नक्षत्र चरण अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और राशि अलग-अलग हो तो भी नाड़ी दोष नहीं लगता है।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। -मु.चि.

जातिभेद से नाड़ीदोष परिहार

प्राचीन परम्परा से प्राप्त ज्योतिर्विदों के द्वारा 'नाडीदोष' का त्याग केवल विप्रवर्ण के लिए आदिष्ट हैं। क्षत्रिय वर्ण के लिए 'वर्णदोष' का त्याग कहा गया है। वैश्यवर्ण के लिए 'गणदोष' तथा शूद्रवर्ण के लिए 'योनिदोष' का त्याग आदिष्ट किया गया है-

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषस्तु वैश्यानां योनिदोषस्तु पादजे।।

यदि नाड़ीदोष के कारण सभी वर्गों में विवाह को रोक दिया जाये तो फिर सोलह गुण पर विवाह होना ही कठिन हो जायेगा। कभी-कभी तो अट्ठाईस गुण होते हुए भी नाड़ीदोष की प्राप्ति होने से समस्या उत्पन्न हो जाती है। फलतः सोलह गुण पर विवाह सम्पन्न होने का शास्त्रीय आदेश सिद्ध करता है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए ही नाड़ी दोष सर्वथा वर्ज्य है। नाड़ी दोष का ज्योतिष द्वारा प्राप्त परिहार ही एकमात्र उपाय नहीं होता है, धर्मशास्त्र द्वारा बतलाया उपाय ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली होता है।

फलतः नाड़ीदोष परिहार के लिए ज्योतिषशास्त्रीय परिहार के अतिरिक्त धर्मशास्त्रीय परिहार का भी अवलम्बन लेना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रीय परिहारों की मान्यता बनी हुयी है। यह भी देखा गया है कि धर्मशास्त्रीय परिहार के बाद नवदम्पती के जीवन में विवाह के बाद किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है। यह आवश्यक है कि परिहार विद्वान् वैदिक द्वारा सम्पन्न कराया जाय।

❊ नाड़ीदोष परिहार ❊

यदि ज्योतिषशास्त्रोक्त परिहार न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त परिहार द्वारा नाड़ीदोष का निवारण करके विवाह किया जाता है। ऐसा करने पर नाड़ीदोष से उत्पन्न दुष्प्रभाव वर-कन्या को नहीं प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रीय परिहार में बृहस्पति के वचन के अनुसार सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जप कन्या का पिता कराकर तब विवाह करे। साथ ही विवाह मण्डप में नाड़ीदोष परिहार हेतु कन्या का पिता ब्राह्मण को गोदान-स्वर्णदान करे -

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना।। -बृहस्पतिः

नारायणभट्ट द्वारा दी गयी धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। आज भी यही धर्मशास्त्रीय व्यवस्था नाड़ी दोष के लिए प्रभावशाली उपाय है। नारायणभट्ट के अनुसार वर-कन्या की नाड़ी यदि एक हो जाये तो विवाह मण्डप में प्रत्यक्ष गोदान एवं स्वर्णदान करके ही कन्या का पिता विवाह करे -

द्वयर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थांकके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिभे गोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत्।।

इस उपाय को करके हजारों की संख्या में नाड़ी दोष युक्त विवाह का परिहार किया गया है। इस परिहार के पश्चात् दम्पती के जीवन में कोई अनिष्ट नहीं होता है। ध्येय है कि कन्या का पिता मण्डप में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व ही अपने कुल पुरोहित या श्रेष्ठ विद्वान् को संकल्पपूर्वक गोदान तथा स्वर्णदान करे। संकल्प में नाड़ीदोष परिहारार्थ गोदान तथा स्वर्णदान का उल्लेख आवश्यक होता है। इस उल्लेख के बिना किया हुआ संकल्प या दान व्यर्थ होता है। अतः विद्वान् वैदिक द्वारा ही इस कृत्य का संपादन होना चाहिए। निष्कर्षतः नाड़ीदोष होने पर विवाह का त्याग ही एकमात्र मार्ग नहीं होता, बल्कि परिहारपूर्वक विवाह करना श्रेष्ठ मार्ग है।

नाड़ीकूट सर्वश्रेष्ठ है

आठ प्रकार के कूटों में नाड़ी सर्वश्रेष्ठ कूट होने के कारण कूटशिरोमणि नाम से प्रसिद्ध है। अतः नाड़ीदोष को लेकर पारम्परिक विद्वानों में भारी सजगता देखी जाती है। प्रायशः विद्वान् सामान्य ग्रन्थों में कहे गये परिहार को स्वीकार नहीं करते। फलतः मुहूर्त्तचिंतामणि या फिर नारायणभट्ट द्वारा कहा गया परिहार ही आज विद्वानों में स्वीकार्य है।

✻ मंगली कुण्डली विचार ✻

मंगल को लेकर ज्योतिषीगण न भ्रम में रहें, न भ्रमयुक्त निर्णय दें। भ्रमयुक्त निर्णय दाम्पत्य का नाश कर सकता है। अतः सावधानीपूर्वक मंगली कुण्डली का निर्णय दें।

✻ कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें भाव में मंगल बैठा हो तो कुण्डली मंगली होती है। इसी तरह से चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हो या चन्द्रमा से ४, ७, ८, १२वें भाव में बैठा हो तो कुण्डली चन्द्र मंगली होती है। प्रमाणवचन-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भत्ता पत्नी विनाशकृत्।।

✻ यदि लड़की मंगली कुण्डली वाली है तो लड़का भी मंगली कुण्डली वाला होना चाहिए।

✻ मंगल दोष का परिहार शनि करता है। यदि शनि कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से१, ४, ७, ८, १२वें भाव में बैठा हो तो वह मंगल दोष का शमन (नाश) करता है-

जामित्रे च यदा सौरिः लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वाऽपि भौमदोषविनाशकृत्।।

✻ यह व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। सॉफ्टवेयर द्वारा कुण्डली मेलापक में चन्द्रमंगली दोष पर विचार नहीं किया गया है। यह घातक प्रवृत्ति है।

✻ मंगल दोष का परिहार अपनी ही कुण्डली में नहीं देखा जाता है।

✻ यदि कन्या की कुण्डली मंगली है तो परिहार वर की कुण्डली में देखा जाता है ।

✻ यदि वर की कुण्डली मंगली है तो परिहार कन्या की कुण्डली में देखा जाता है।

✻ १, ४, ७ केन्द्रों में बैठा मेष, वृश्चिक, मकर का मंगल राजयोगकारी होने पर भी मंगली-कुण्डली का दोष देता है। यह दाम्पत्य के लिए बाधक होता है।

परिहार (उपाय)

✻ यदि लड़की की कुण्डली मंगली है और लड़के की कुण्डली मंगली नहीं है और कोई ज्योतिषीय परिहार न निकले तो धर्मशास्त्रीय परिहार करना चाहिए। ऐसा करने से विच्छेद या वैधव्यादि दोष नहीं उत्पन्न होता है।

✻ कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह और अश्वत्थविवाह ये तीन धर्मशास्त्रीय परिहार कन्या के लिए बतलाये गये हैं। ये उपाय आज भी व्यवहार में हैं।

✻ अर्कविवाह वर के लिए होता है। इससे कन्या के जीवन की रक्षा होती है।

✻ मंगलदोष परिहार के लिए लड़का या लड़की (जो मंगल दोष से ग्रस्त हो) हेतु ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का जप कराया जाता है। यह भी परम्परा प्राप्त एवं शास्त्रोक्त परिहार है।

✻ धर्मशास्त्रीय परिहार प्रायशः विवाह से पूर्व और तिलकोत्सव के बाद किया जाता है। अभी बहुतायत में यही परम्परा सक्रिय है।

✻ शनि की साढ़ेसाती ✻

शनिग्रह जिस राशि पर रहता है उससे एक राशि आगे और एक राशि पीछे इस प्रकार कुल तीन राशि को प्रभावित करता है। शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। कुल तीन राशि पर इसका काल साढ़ेसात वर्ष का होता है। इसे ही शनि की सार्द्धसप्तवार्षिकी (साढ़ेसाती) कहते हैं।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।

सूर्यसिद्धान्त अनुसार शनि वर्षारम्भ २ अप्रैल २०२२ से १३ फरवरी २०२३ तक मकर में है।

✻ अतः १३ फरवरी २०२३ तक शनि की साढ़ेसाती धनु, मकर और कुम्भ राशियों पर चलेगी।

✻ १३ फरवरी २०२३ से शनि की साढ़ेसाती मकर, कुम्भ व मीन राशियों पर चलेगी।

✻ धनु जातकों की साढ़ेसाती समाप्त होगी व मीन जातकों की साढ़ेसाती आरम्भ होगी।

१३ फरवरी २०२३ तक धनु राशि पर साढ़ेसाती का प्रभाव शुभकारी रहेगा। मकर एवं कुम्भ राशि के ऊपर साढ़ेसाती का प्रभाव अपने चरम पर दिखाई देगा। १३ फरवरी २०२३ से मकर राशि पर साढ़ेसाती का प्रभाव शुभकारी हो जाएगा। कुम्भ एवं मीन पर शनि का प्रभाव अत्यधिक होगा। अतः शनि का जप हवन तथा श्रीहनुमान जी की आराधना करने से साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव शान्त होगा।

✻ शनि की ढैया ✻

जब अपनी जन्मराशि से शनि चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो तो शनि की ढैय्या चलती है। इसकी अवधि ढाई वर्ष की होती है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक को प्रभावित करता है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थान में स्थित होकर योगकारी हो तो शनि की ढैया का प्रभाव कल्याणकारी होता है। कतिपय लोग इसे शनि की कल्याणी भी कहते हैं। **वर्षारम्भ से लेकर १३ फरवरी २०२३ तक शनि की ढैया तुला राशि एवं मिथुन राशि के ऊपर है। १३ फरवरी २०२३ से शनि की ढ़ैय्या कर्क व वृश्चिक पर लगेगी।**

मेष - कर्क, वृश्चिक का शनि ढैया कारक।	**वृष -** सिंह, धनु का शनि ढैया कारक।
मिथुन - कन्या, मकर का शनि ढैया कारक।	**कर्क -** तुला, कुम्भ का शनि ढैया कारक।
सिंह - वृश्चिक, मीन का शनि ढैया कारक।	**कन्या -** धनु, मेष का शनि ढैया कारक।
तुला - मकर, वृष का शनि ढैया कारक।	**वृश्चिक -** कुम्भ, मिथुन का शनि ढैया कारक।
धनु - मीन, कर्क का शनि ढैया कारक।	**मकर -** मेष, सिंह का शनि ढैया कारक।
कुम्भ - वृष, कन्या का शनि ढैया कारक।	**मीन -** मिथुन, तुला का शनि ढैया कारक।

शनिसाढ़ेसाती शांति स्तोत्र

महर्षि पिप्लाद कृत शनि की साढ़ेसाती के शांति स्तोत्र के पाठ से साढ़ेसाती जनित रोग, कष्ट, जीविका तथा कलह आदि बाधाएं दूर होती हैं। शनिवार को १०८ पाठ कल्याणकारी है:--

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बंधु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।

*ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, पृष्ठ संख्या ५९ पर **शनि शान्ति के उपाय** दिए गए हैं*

जयपुर के लग्न प्रवेश से प्रमुख शहरों के लग्न प्रवेश संस्कार

लग्न / नगर	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.
अजमेर	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५	+४	+४	+४	+४	+५
अलवर	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−२	−१	−२	−३	−३
बांसवाड़ा	+८	+११	+१३	+१३	+९	+६	+२	००	−१	−१	+३	+६
बारां	−१	+१	+१	००	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−४	−२
बाड़मेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+१८	+१७	+१६	+१५	+१५	+१५	+१७	+१९
भरतपुर	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−६	−६
भीलवाड़ा	+७	+८	+८	+७	+६	+४	+३	+२	+१	+२	+४	+६
बीकानेर	+९	+८	+८	+७	+९	+१०	+११	+१२	+१२	+१२	+११	+१०
बूंदी	+२	+४	+४	+३	+२	००	−२	−२	−३	−२	००	+१
चित्तौड़	+६	+९	+९	+९	+७	+५	+३	+१	००	+१	+४	+६
चूरू	+३	+२	००	००	+१	+२	+३	+५	+६	+६	+६	+५
दौसा	−२	−२	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−२	−२
धौलपुर	−७	−७	−८	−८	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−७
डूंगरपुर	+११	+१३	+१५	+१४	+१२	+९	+५	+३	+१	+२	+६	+१०
हनुमानगढ़	+४	+२	+१	+१	+२	+४	+७	+१०	+११	+१०	+१०	+८
जैसलमेर	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०
जालौर	+१४	+१६	+१६	+१५	+१४	+१२	+१०	+१०	+९	+९	+१०	+१२
झालावाड़	+१	+३	+४	+३	+१	−१	−४	−५	−७	−६	−३	००
झुंझुनूं	+१	००	−१	−१	००	+१	+२	+३	+३	+४	+४	+३
जोधपुर	+१३	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+१२	+१२	+११	+११	+१२	+१२
करौली	−४	−४	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−५	−४	−४
कोटा	+१	+२	+४	+४	+३	+१	−१	−३	−५	−४	−२	−१
नागौर	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+९	+९	+९	+९	+९
पाली	+१०	+१२	+१२	+१२	+११	+१०	+८	+७	+७	+७	+९	+१०
प्रतापगढ़	+८	+१०	+११	+१०	+८	+५	+२	००	−१	−१	+२	+५
राजसमंद	+१०	+१२	+१२	+११	+९	+८	+५	+४	+३	+४	+६	+८
सवाईमाधोपुर	−१	००	−१	−१	−२	−३	−४	−४	−४	−४	−२	−१
सीकर	+२	+२	+१	+१	+१	+	+३	+३	+३	+४	+५	+४
सिरोही	+९	+११	+१२	+११	+१०	+८	+५	+५	+३	+३	+८	+६
टोंक	+१	+२	+१	+१	००	−१	−२	−२	−२	−२	००	+१
उदयपुर	+१०	+१३	+१४	+१३	+१२	+१०	+७	+५	+३	+३	+५	+८

लग्न / नगर	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.	मेष मि.
अम्बाला	+७	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−२	−४	−३	०	+३
अमृतसर	−१	−४	−८	−६	−३	+२	+६	+१०	+१४	+१३	+१०	+६
अलीगढ़	−१०	−१०	−१०	−१०	−९	−९	−९	−८	−७	−८	−३	−२
अयोध्या	−२६	−२५	−२४	−२४	−२६	−२५	−२५	−२५	−२५	−२६	−२६	−२६
अहमदाबाद	+१६	+२०	+२१	+२१	+१७	+१४	+१०	+६	+५	+५	+८	+१२
आगरा	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−८
अकोला	−१	+५	+८	−११	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−९
इंदोर	+३	+७	+९	+८	+५	००	−४	−७	−१०	−९	−४	००
इलाहाबाद	−२३	−२१	−२१	−२१	−२२	−२४	−२६	−२६	−२८	−२७	−२५	−२४
उज्जैन	+३	+७	+८	+७	+४	+१	−३	−६	−८	−७	−३	००
गुड़गाँव	−६	−७	−८	−८	−७	−५	−४	−२	−२	−२	−२	−३
गौरखपुर	−३१	−३०	−३०	−३०	−३०	−३०	−३१	−३१	−३०	−३१	−३०	−३१
गोहाटी	−५९	−५८	−५८	−५८	−५९	−६०	−६१	−६१	−६१	−६१	−६०	−६०
गोवा	+१६	+२६	+३१	+२९	+२१	+१०	+२	−१०	−१५	−१३	−४	+१
चण्डीगढ़	−८	−११	−१३	−१२	−९	−५	००	+३	+४	+३	+१	−३
जलगाँव	+४	+९	+११	+१०	+७	+४	−३	+७	+९	+९	+४	+१
डिब्रुगढ़	−७३	−७३	−७४	−७४	−७३	−७३	−७३	−७२	−७१	−७२	−७१	−७२
नासिक	+१३	+१९	+२२	+२१	+१६	+९	+२	−३	−७	−५	+१	+८
पटना	−३७	−३५	−३५	−३५	−३६	−३७	−३९	−३९	−४०	−४०	−३८	−३७
बड़ौदा	+१४	+१८	+२०	+२०	+१६	+११	+६	+३	००	+१	+६	+११
भोपाल	−४	०	+१	+१	−२	−६	−९	−११	−१५	−१४	−१०	−७
रतलाम	+६	+९	+१०	+१०	+७	+४	००	−३	−५	−४	००	+३
लखनऊ	−२१	−२०	−२०	−२०	−२०	−२१	−२१	−२०	−२१	−२१	−२०	−२०
वाराणसी	−२८	−२६	−२६	−२६	−२६	−२८	−३०	−३२	−३३	−३३	−३१	−३०
सूरत	+१६	+२२	+२४	+२३	+१९	+१३	+७	+३	००	+१	+६	+१२
दिल्ली	−७	−८	−९	−८	−७	−४	−४	−२	−१	−२	−४	−५
कोलकाता	−४७	−४३	−४०	−४१	−४४	−५०	−५४	−५७	−६०	−५९	−५६	−५०
चेन्नई	−७	+४	+१०	+८	−२	−१६	−२८	−४०	−४६	−४४	−३३	−२०
मुम्बई	+१८	+२५	+२९	+२७	+२१	+१३	+६	−१	−५	−४	+३	+११
बैंगलुरु	+३	+१५	+२०	+१८	+८	−४	−१७	−२९	−३४	−३२	−२२	−१०

❀ राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी ❀

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अजमेर				
अजमेर	२६–२७	७४–४०	३१–२०	–४/३६
किशनगढ़	२६–३४	७४–५२	३०–३२	–३/४८
केकड़ी	२५–५६	७५–१०	२९–२०	–२/३६
टॉडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
नसीराबाद	२६–१८	७४–४४	३१–०४	–४/२०
पीसांगन	२६–२५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुष्कर	२६–३०	७४–२३	३१–४८	–५/०४
ब्यावर	२६–०६	७४–२०	३२–४०	–५/५६
बांदनवाडा	२६–०९	७४–४२	३१–१२	–४/२८
विजयनगर	२५–५५	७४–३८	३१–२८	–४/४४
भिनाय	२६–०४	७४–४७	३०–५२	–४/०८
मसूदा	२६–०५	७४–३०	३२–००	–५/१६
रामसर	२६–१३	७४–५३	३०–२८	–३/४४
रूपनगर	२६–४८	७४–५४	३०–२४	–३/४०
सरवाड़	२६–०२	७४–५५	३०–२०	–३/३६
अलवर				
अलवर	२७–३४	७६–३८	२३–२८	–३/१६
कटूमर	२७–१८	७७–०२	२१–५२	–४/५२
किशनगढ़बास	२७–४५	७६–४९	२२–४४	–४/००
खैरथल	२७–४८	७६–३६	२३–३६	–३/०८
खेड़ली	२७–१२	७६–०६	२१–३६	–५/०८
कोटकासिम	२७–०३	७६–४४	२३–०४	–३/४०
तिजारा	२७–५५	७६–५०	२२–४०	–४/०४
थानागाजी	२७–२५	७६–१९	२४–४४	–२/००
बहरोड	२७–५४	७६–१८	२४–४८	–१/५६
बानसूर	२७–४१	७६–२२	२४–३२	–२/१२
मण्डावर	२७–५३	७६–३६	२३–३६	–३/०८
राजगढ़	२७–१५	७६–३८	२३–२८	–३/१६
रामगढ़	२७–३६	७६–४९	२२–४४	–४/००
लक्ष्मणगढ़	२७–२३	७६–५२	२२–३२	–४/१२
उदयपुर				
उदयपुर	२४–३५	७३–४१	३५–१६	–८/३२
एकलिंगजी	२४–४३	७३–४६	३४–५६	–८/१२
ऋषभदेव	२४–०४	७३–४२	३५–१२	–८/२८
कोटड़ा	२४–२०	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
खेरवाड़ा	२४–००	७३–३५	३५–४०	–८/५६
गोगुंदा	२४–४४	७३–३५	३५–४०	–८/५६
झाड़ोल	२४–२४	७३–२९	३६–०६	–९/२२
धरियाबाद	२४–०७	७४–२७	३२–१२	–५/२८
परसाद	२४–११	७३–४२	३५–१२	–८/२८
फतेहनगर	२४–४८	७४–०६	३३–३६	–६/५२
भिंडर	२४–३०	७४–१२	३३–१२	–६/२८
मावली	२४–४७	७३–५८	३४–०८	–७/२४
मोदरी	२४–२५	७३–२५	३६–२०	–९/३६
वल्लभनगर	२४–४१	७४–०२	३३–५२	–७/०८
सलुम्बर	२४–०६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
सराड़ा	२४–०८	७३–४८	३४–४८	–८/०४
करौली				
करनपुर	२६–१२	७६–५४	२२–२४	+४/२०
करौली	२६–३०	७७–०१	२१–५६	+४/४८
केलादेवी	२६–२१	७६–५४	२२–२४	+४/२०
टोड़ाभीम	२६–५४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
नादौती	२६–४३	७६–४४	२३–०४	+३/४०
लसारड़ा	२६–०९	७७–०२	२१–५२	+४/५२
शहर	२६–३६	७६–४४	२३–०४	+३/४०
श्रीमहावीरजी	२६–४१	७६–५९	२२–०४	+४/४०
सपोटरा	२६–१७	७६–४५	२३–००	+३/४४
हिण्डौनसिटी	२६–४३	७७–०१	२१–५६	+४/४८
कोटा				
इन्द्रगढ़	२५–४४	७६–१२	२५–१२	+१/३२
कोटा	२५–१०	७५–५२	२६–३२	+०/१२
दीगोद	२५–१३	७४–०५	२५–४०	+१/०४
पीपलदाकला	२५–३३	७६–२७	२४–१२	+२/३२
मुकंदरा	२४–४९	७५–५९	२६–०४	+०/४०
रामगंज मंडी	२४–३६	७५–५४	२६–२४	+०/२०
रावतभाटा	२४–४५	७५–३५	२७–४०	–०/५६
सांगोद	२४–५५	७६–२१	२४–३६	+२/०८
गंगानगर				
अनूपगढ़	२९–०७	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
केसरीसिंहपुर	२९–५८	७३–४५	३५–००	–८/१६
गंगानगर	२९–४९	७३–५०	३४–४०	–७/५६
गजसिंहपुर	२९–४२	७३–२४	३६–२४	–९/४०
घड़साना	२८–५९	७३–०१	३७–५६	–११/१२
जेतसर	२९–२२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
पदमपुर	२९–३५	७३–३१	३५–५६	–९/१२
रामसिंहपुर	२९–१०	७३–२४	३६–२४	–९/४०
रायसिंह नगर	२९–३२	७३–२७	३६–१२	–९/२८
श्रीविजयनगर	२९–१३	७३–३०	३६–००	–९/१६
करणपुर	२९–५०	७३–५०	३४–४४	–८/००
सरूपसर	२९–२२	७३–३७	३५–३२	–८/४८
सूरतगढ़	२९–१९	७३–५७	३४–१२	–७/२८
हिन्दूमलकोट	३०–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
चित्तौड़गढ़				
अरनोद	२३–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
कपासन	२४–५४	७४–१८	३२–४८	–६/०४
गंगरार	२५–०३	७४–३८	३१–२८	–४/४४
चित्तौड़गढ़	२४–५४	७४–४०	३१–२०	–४/३६
छोटीसादड़ी	२४–२४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
डूंगरा	२४–२९	७४–२१	३२–३६	–५/५२
देवलिया	२४–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
निम्बाहेड़ा	२४–३७	७४–४५	३१–००	–४/१६
प्रतापगढ़	२४–०२	७४–४७	३०–५२	–४/०८
पिपलोदा	२३–३५	७४–५०	३०–४०	–३/५६
बड़ी सादड़ी	२४–२५	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बेगूं	२४–५७	७५–०६	२९–३६	–२/५२
भदेसर	२४–३९	७४–३१	३१–५६	–५/१२
भैसरोड़गढ़	२४–४८	७५–३३	२७–४८	–१/०४
राशमी	२५–०४	७४–२३	३२–२८	–५/४४
चूरू				
चूरू	२८–१९	७५–०१	२९–५६	–३/१२
छापर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
जोधासर	२८–०७	७३–५०	३४–४०	–७/५६
तारानगर	२८–४२	७५–०६	२९–३६	–२/५२
पुनरासर	२८–१२	७३–४७	३४–५२	–८/०८
बीदासर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
रतनगढ़	२८–०५	७४–३७	३१–३२	–४/४८
रतननगर	२८–१३	७४–५७	३०–१२	–३/२८
राजगढ़	२८–३९	७५–२६	२८–१६	–१/३२
राजावास	२८–३४	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजलदेसर	२८–०२	७४–२८	३२–०८	–५/२४
रेनी	२८–४१	७५–०५	२९–४०	–२/५६
श्रीडूंगरगढ़	२८–०६	७४–०१	३३–५६	–७/२
सरदारशहर	२८–२७	७४–३०	३२–००	–५/१६
सार्दुलपुर	२८–३८	७५–२४	२८–२४	–१/४०
सालासर	२७–४३	७४–४०	३१–२०	–४/३६
साहवा	२८–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
सुजानगढ़	२७–४२	७४–३०	३२–००	–४/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जयपुर				
अचरोल	२७–०२	७५–५४	२६–२४	+०/२०
आमेर	२६–५९	७५–५२	२६–३२	+०/१२
आसलपुर	२६–५५	७५–२६	२८–१६	–१/३२
कालाडेरा	२७–११	७५–३८	२७–२८	–०/४४
कोटपूतली	२७–४२	७६–१२	२५–१२	+१/३२
चाकसू	२६–३६	७५–५९	२६–०४	+०/४०
चौमूँ	२७–०८	७५–४७	२६–५२	–०/०८
जयपुर	२६–५५	७५–४९	२६–४४	०/००
जमवारामगढ़	२७–०१	७६–०१	२५–५६	+०/४८
जोबनेर	२६–५७	७५–२४	२८–२४	–१/४०
दूदू	२६–४१	७५–१६	२८–५६	–२/१२
नरैना	२६–५०	७५–११	२९–१६	–२/३२
पावटा	२७–३७	७६–०६	२५–३६	+१/०८
फागी	२६–३४	७५–३५	२७–४०	–०/५६
फुलेरा	२६–५२	७५–१६	२८–५६	–२/१२
बस्सी	२६–५२	७६–०३	२५–४८	+०/५६
बगरू	२६–४७	७५–३३	२७–४८	–१/०४
बैराठ	२७–२७	७६–११	२५–१६	+१/२८
महलां	२६–५०	७५–३०	२८–००	–१/१६
वनस्थली	२६–२३	७५–५०	२६–४०	+०/०४
शाहपुरा	२७–२३	७५–५८	२६–०८	+०/३६
सामोद	२७–१२	७५–४८	२६–४८	–०/०४
सांगानेर	२६–४९	७५–४६	२६–५६	–०/१२
सांभरलेक	२६–५४	७५–१२	२९–१२	–२/२८
जालोर				
आहोर	२५–२३	७२–५२	३८–३२	–११/४८
जसवंतपुरा	२४–४९	७२–३०	४०–००	–१३/१६
जालोर	२५–२२	७२–३८	३९–२८	–१२/४४
बागरा	२५–१५	७२–२८	४०–०८	–१३/२४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बाकरा	२५–१२	७२–३२	३९–५२	–१३/०८
भीनमाल	२५–००	७२–१९	४०–४४	–१४/००
मोरसीम	२५–०९	७१–५४	४२–२४	–१५/४०
रानीवाड़ा	२४–४४	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
सांचोर	२४–४५	७१–५०	४२–४०	–१५/५६
सीयाणा	२५–०९	७२–४०	३९–२०	–१२/२६
जैसलमेर				
किशनगढ़	२७–५२	७०–३४	४७–४४	–२१/००
खुड़ी	२६–४२	७०–४०	४७–२०	–२०/३६
खुईआला	२७–०६	७०–२५	४८–२०	–२१/३६
घोटारू	२७–१८	७०–०४	४९–४४	–२३/००
चांदन	२६–५९	७१–१९	४४–४४	–१८/००
जैसलमेर	२६–५५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
तनोट	२७–४८	७०–२१	४८–३६	–२१/५२
देओरा	२६–३०	७०–४२	४७–१२	–२०/२८
देधा	२६–५१	७०–४२	४७–१२	–२०/२८
देवीकोट	२६–४२	७१–१२	४५–१२	–१८/२८
नाचना	२७–२९	७१–४५	४३–००	–१६/१६
पोकरण	२६–५७	७१–५६	४२–१६	–१५/३२
मियालजर	२६–१८	७०–२२	४८–३२	–२१/४८
रामगढ़	२७–२२	७०–३०	४८–००	–२१/१६
रामदेवरा	२७–००	७१–५२	४२–३२	–१५/४८
लाठी	२७–०३	७१–३०	४४–००	–१७/१६
शाहगढ़	२७–०८	६९–५३	५०–२८	–२३/४४
श्रीभादरिया	२७–०५	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
श्रीमोहनगढ़	२७–१८	७१–१५	४५–००	–१८/१६
सम	२६–५०	७०–३१	४७–५६	–२१/१२
जोधपुर				
आसोप	२६–४८	७३–३५	३५–४०	–८/५६
ओसियां	२६–४३	७२–५५	३८–२०	–११/३६
जोधपुर	२६–१७	७३–०३	३७–४८	–११/०४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
देचूं	२६–४७	७२–२०	४०–४०	–१३/५६
पीपाड़ रोड़	२६–२७	७३–२७	३६–१२	–९/२८
फलौदी	२७–०९	७२–२२	४०–३२	–१३/४८
बाप	२७–२२	७२–२२	४०–३२	–१३/४८
बालेसर	२६–२२	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
बिलाड़ा	२६–१०	७३–४२	३५–१२	–८/२८
भोपालगढ़	२६–३९	७३–३०	३६–००	–९/१६
भोजासर	२७–००	७२–५०	३८–४०	–११/५६
मथानियां	२६–३१	७२–५९	३८–०४	–११/२०
लूनी	२६–००	७२–५२	३८–३२	–११/४८
लोहावट	२६–५९	७२–३६	३९–३६	–१२/५२
शेरगढ़	२६–२५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
झालावाड़				
अकलेरा	२४–२३	७६–३६	२३–३६	+३/०८
खानपुर	२४–४४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
गंगधार	२३–५७	७५–३८	२७–२८	–०/४४
झालावाड़	२४–३६	७६–०९	२५–२४	+१/२०
झालरापाटन	२४–३३	७६–१०	२५–२०	+१/२४
देवगढ़	२३–५९	७५–४५	२७–००	–०/१६
पचपहाड़	२४–२४	७५–४७	२६–५२	–०/०८
पिड़ावा	३४–१३	७६–०३	२५–४८	+०/५६
भवानीमण्डी	२४–२४	७५–४८	२६–४८	–०/०४
भवानीगंज	२४–२६	७५–४९	२६–४४	+०/००
मण्डावर	२४–३५	७६–१५	२५–००	+१/४४
मनोहरथाना	२४–१४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
झुंझुनू				
अलसीसर	२८–१९	७५–१८	२८–४८	–२/०४
उदयपुरवाटी	२७–४३	७५–२९	२८–०४	–१/२०
खेतड़ी	२८–००	७५–४८	२६–४८	–०/०४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
गुढ़ा	२७–५३	७५–३६	२७–३६	–०/५२
चिड़ावा	२८–१५	७५–३८	२७–२८	–०/४४
झुंझुनू	२८–०५	७५–२५	२८–२०	–१/३६
नवलगढ़	२७–५१	७५–१८	२८–४८	–२/०४
पिलानी	२८–२३	७५–३५	२७–४०	–०/५६
बगड़	२८–१२	७५–३०	२८–००	–१/१६
बबाई	२७–५३	७५–४५	२७–००	–०/१६
बिसाऊ	२८–१३	७५–०५	२९–४०	–२/५६
मण्डावा	२८–०३	७५–१०	२९–२०	–२/३६
मलसीसर	२८–२४	७५–१४	२९–०४	–२/२०
मुकुन्दगढ़	२७–५७	७५–१५	२९–००	–२/१६
सूरजगढ़	२८–१९	७५–४५	२७–००	–०/१६
टोंक				
अलीगढ़	२५–५८	७६–०७	२५–३२	+१/१२
उनियारा	२५–५४	७६–०६	२५–३६	+१/०८
गंगापुर	२६–२९	७६–३६	२३–३६	+३/०८
गनवर	२६–३०	७५–१५	२९–००	–२/१६
चाँदसेन	२६–१९	७५–२९	२८–०४	–१/२०
टोंक	२६–११	७५–५०	२६–४०	+०/०४
टोडारायसिंह	२६–००	७५–२९	२८–०४	–१/२०
डिग्गी	२६–२२	७५–२७	२८–१२	–१/२८
देवली	२५–४६	७५–२५	२८–२०	–१/३६
नगर (देवली)	२५–५५	७५–५०	२६–४०	+०/०४
नगर (मालपुरा)	२६–२७	७५–१४	२९–०४	–२/२०
निवाई	२६–२४	७५–५४	२६–२४	+०/२०
पचेवर	२६–२९	७५–२०	२८–४०	–१/५६
बम्बोर	२६–०९	७५–५२	२६–३२	+०/१२
मण्डावर	२६–१०	७५–५९	२६–०४	+०/४०
मालपुरा	२६–१८	७५–२५	२८–२०	–१/३६
लाम्बाहरिसिंह	२६–१६	७५–१०	२९–२०	–२/३६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
डूंगरपुर				
आसपुर	२३–५८	७४–०३	३३–४८	–७/०४
गलियाकोट	२३–३१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
डूंगरपुर	२३–५०	७३–४३	३५–०८	–८/२४
पीठ	२३–३१	७३–४५	३५–००	–८/१६
बीछीवाड़ा	२३–५१	७३–३२	३५–५२	–९/०८
रामगढ़	२३–५८	७३–५७	३४–१२	–७/२८
सागवाड़ा	२३–४१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
सिमलवाड़ा	२३–३४	७३–४७	३४–५२	–८/०८
दौसा				
गीजगढ़	२६–५६	७६–३८	२३–२८	+३/१६
दौसा	२६–५३	७६–२०	२४–४०	+२/०४
बसवा	२७–०६	७६–३२	२३–५२	+२/५२
बांदीकुई	२७–०३	७६–३४	२३–४४	+३/००
महवा	२७–०३	७६–५६	२२–१६	+४/२८
लालसोट	२६–३४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
सिकराय	२६–५५	७६–४०	२३–०४	+३/४०
धौलपुर				
धौलपुर	२६–४२	७७–५३	१८–२८	+८/१६
बसईनवाब	२६–५५	७७–४८	१८–४८	+७/५६
बसेड़ी	२६–४५	७७–२३	२०–२८	+६/१६
बाड़ी	२६–३९	७७–३६	१९–३६	+७/०८
राजाखेड़ा	२६–५४	७८–१२	१७–१२	+९/३२
वनसराय	२६–४१	७७–२५	२०–२०	+६/२४
सरमथुरा	२६–३१	७७–२२	२०–३२	+६/१२
नागौर				
कुचामनसिटी	२७–०९	७४–५२	३०–३२	–३/४८
कुचेरा	२७–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
खाटू	२७–०७	७४–१७	३२–५२	–६/०८
गोटन	२६–३९	७३–४४	३५–०४	–८/२०
चान्दरूप	२६–५७	७४–२१	३२–३६	–५/५२
जसवन्तगढ़	२७–४९	७४–२७	३२–१२	–५/२८
जायल	२७–१५	७४–१२	३३–१२	–६/२८
डीडवाना	२७–२४	७४–३४	३१–४४	–५/००
डेगाना	२६–५०	७४–१८	३२–४८	–६/०४
नागौर	२७–११	७३–४४	३५–०४	–८/२०
नावां	२७–००	७५–०१	२९–५६	–३/१२
परबतसर	२६–५२	७४–४५	३१–००	–४/१६
पीपासर	२७–३३	७३–४१	३५–१६	–८/३२
बालसमन्द	२७–३६	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बोरावड़	२७–०१	७४–३६	३१–३६	–४/५२
भदवासी	२७–१२	७३–४०	३५–२०	–८/३६
मकराना	२७–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
मेड़ता सिटी	२६–३९	७४–०६	३३–३६	–६/५२
मेड़ता रोड़	२६–४३	७३–५५	३४–२०	–७/३६
लाडनू	२७–३९	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पाली				
अटबड़ा	२६–०५	७३–४५	३५–००	–८/१६
ऐरनपुर	२५–०९	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
खारची	२५–४३	७३–३६	३५–३६	–८/५२
घाणेराव	२५–१५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
चंदावल	२६–००	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जवाईबांध	२५–०४	७३–१५	३७–००	–१०/१६
जैतारन	२६–१३	७३–५६	३४–१६	–७/३२
टाडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
देसुरी	२५–२०	७३–३७	३५–३२	–८/४८
निम्बाज	२६–१०	७४–००	३४–००	–७/१६
पाली	२५–४६	७३–२०	३६–४०	–९/५६
फालना	२५–१२	७३–१२	३७–१२	–१०/२८
बर	२६–०६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
बाली	२५–०५	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
बीजापुर	२५–०७	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
भंवर	२५–४१	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
मुण्डारा	२५–१२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
राणावास	२५–३९	७३–४५	३५–००	–८/१६
रानी	२५–२२	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
रायपुर	२६–०३	७४–०२	३३–५२	–७/०८
रोहट	२५–५७	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
सरदारसमंद	२५–५८	७३–२३	३६–२८	–९/४४
साण्डेराव	२५–१८	७३–१०	३७–२०	–१/३६
सोजत	२६–५६	७२–४२	३५–१२	–८/२८
सेंदडा	२६–०५	७४–११	३३–१६	–६/३२
बाड़मेर				
आसोतरा	२५–४६	७२–१९	४०–४४	–१४/००
गडरा रोड	२५–४०	७०–३७	४७–३२	–२०/४८
गागरिया	२५–४४	७०–४५	४७–००	–२०/१६
गिराव	२६–०२	७०–३५	४७–४०	–२०/५६
गुढ़ामालानी	२५–१२	७१–४८	४२–४८	–१६/००४
गूंगा	२६–१५	७१–१३	४५–०८	–१८/२४
चौहटन	२५–२९	७१–०४	४५–४४	–१९/००
जसोल	३५–५०	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
धोरीमना	२५–१२	७१–२५	४४–२०	–१७/३६
पचपदरा	२५–५५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
पाटोदी	२६–०५	७२–१६	४०–५६	–१४/१२
पुजांसर	२५–०९	७१–०२	४५–५२	–१९/०८
बनियासांडधोरा	२५–५३	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
बंबोरा	२५–१९	७१–१८	४४–४८	–१८/०४
बाड़मेर	२५–४६	७१–२३	४४–२८	–१७/४४
बालोतरा	२५–४९	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
बायतू	२५–५५	७१–४६	४२–५६	–१६/१२
मूनबाव	२५–४३	७०–१५	४९–००	–२२/१६
रामसर	२५–४५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
रावतसर	२५–३२	७०–५६	४६–१६	–१९/३२
शिव	२६–११	७१–१५	४५–००	–१८/१६
समदड़ी	२५–४९	७२–३५	३९–४०	–१२/५६
सिन्दरी	२५–३३	७१–५५	४२–२०	–१५/३६
सिवाना	२५–३६	७२–२७	४२–१२	–१३/२८
बारां				
अटरू	२४–५०	७६–३३	२३–४८	+२/५६
किशनगंज	२५–०६	७६–३९	२३–२४	+३/२०
छबड़ा	२४–४०	७६–५०	२२–४०	+४/०४
छीपाबड़ोद	२४–३६	७६–४३	२३–०८	+३/३६
थानाकस्बा	२५–१३	७७–२०	२०–४०	+६/०४
देवरी	२५–२२	७७–१२	२१–१२	+५/३२
बारां	२५–०६	७६–३१	२३–५६	+२/४८
भंवरगढ़	२५–०६	७६–५०	२२–४०	+४/०४
मनोहरथाना	२५–२२	७६–०९	२५–२४	+१/२०
मांगरोल	२५–२०	७६–३०	२४–००	+२/४४
शाहबाद	२५–२०	७७–०८	२१–२८	+५/१६
बांसवाड़ा				
अर्थुना	२३–३५	७४–०६	३३–३६	–६/५२
कलिंजरा	२३–२१	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कुशलगढ़	२३–१०	७४–२७	३२–१२	–५/२८
खांटू	२३–२८	७४–२२	३२–३२	–५/४८
गढ़ी	२३–३६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
घाटोल	२३–४६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
दानपुर	२३–३२	७४–४४	३१–०४	–४/२०
परतापुर	२३–३६	७४–१०	३३–२०	–६/३६
बागीदौरा	२३–२५	७४–१८	३२–४८	–६/०४
बांसवाड़ा	२३–३०	७४–२४	३२–२४	–५/४०
लौहरिया	२३–४८	७४–१५	३३–००	–६/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बीकानेर				
ककराला	२८–३८	७२–५९	३८–०४	–११/२०
कपुरीसर	२८–३९	७३–५६	३४–१६	–७/३२
कालू	२८–२२	७३–५२	३४–३२	–७/४८
कोलायत	२७–५०	७२–५७	३८–१२	–११/२८
गजनेर	२७–५८	७३–०४	३७–४४	–११/००
चारणवाला	२७–५३	७२–१०	४१–२०	–१४/३६
चीलो	२७–२२	७३–३०	३६–००	–९/१६
छतरगढ़	२८–४१	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
जसरासर	२७–४५	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जोधासर	२८–०७	७३–४०	३५–२०	–८/३६
दांतौर	२८–२६	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
देशनोक	२७–४८	७३–२१	३६–३६	–९/५२
नापासर	२७–५८	७३–३३	३५–४८	–९/०४
नोखा	२७–३५	७३–२९	३६–०४	–९/२०
नोरंगदेसर	२८–०५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
पूगल	२८–३१	७३–४७	३८–५२	–१२/०८
बज्जू	२७–५९	७३–३०	३६–००	–९/१६
बीकानेर	२८–०१	७३–२०	३४–४०	–९/५६
महाजन	२८–४८	७३–५३	३४–२८	–७/४४
लूणकसर	२८–३०	७३–४५	३५–००	–८/१६
धौलपुर				
धौलपुर	२५–२९	७५–५१	२६–३६	+०/०८
बसईनवाब	२५–२४	७६–०६	२५–३६	+१/०८
बसेड़ी	२५–१८	७५–५६	२६–१६	+०/२८
बाड़ी	२५–२७	७५–४०	२७–२०	–०/३६
राजाखेड़ा	२५–४५	७५–५७	२६–१२	+०/३२
वनसराय	२५–३६	७६–१२	२५–१२	+१/३२
सरमथुरा	२५–३४	७५–३०	२८–००	–१/१६
भरतपुर				
कामां	२७–४०	७७–१६	२०–५६	+५/४८

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
कुम्हेर	२७–१९	७७–२३	२०–२८	+६/१६
डीग	२७–२८	७७–२०	२०–४०	+६/०४
नदबई	२७–१४	७७–१२	२१–१२	+५/३२
नगर	२७–२६	७७–०६	२१–३६	+५/०८
पहाड़ी	२७–४१	७७–०६	२१–३६	+५/०८
बयाना	२६–५४	७७–१७	२०–५२	+५/५२
बल्लभगढ़	२६–५८	७७–०६	२१–३६	+५/०८
भरतपुर	२७–१५	७७–३०	२०–००	+६/४४
रूपवास	२७–००	७७–३५	१९–४०	+७/०४
वैर	२७–००	७७–१२	२१–१२	+५/३२
सिकरीपट्टी	२७–२५	७७–०६	२१–३६	+५/०८
हेलाना	२७–०७	७७–१०	२१–२०	+५/२४
भीलवाड़ा				
आकोला	२५–१७	७४–५३	३०–२८	–३/४४
आसीन्द	२५–४२	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कोटड़ी	२५–२५	७४–५४	३०–२४	–३/४०
खमनोर	२५–४६	७४–४७	३०–५२	–४/०८
गंगापुर	२५–१४	७४–१७	३३–००	–६/१६
गुलाबपुरा	२५–५४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
जहाजपुर	२५–३८	७५–१८	२८–४८	–२/०४
पाटन	२५–४५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुरा	२५–१९	७४–३३	३१–४८	–५/०४
बनेड़ा	२५–३१	७४–४०	३१–२०	–४/३६
बिजोलिया	२५–१०	७५–२०	२८–४०	–१/५६
बिगोद	२५–१५	७५–००	३०–००	–३/१६
भीलवाड़ा	२५–२१	७४–२०	३१–२०	–४/३६
मांडल	२५–२७	७४–३६	३१–३६	–४/५२
माण्डलगढ़	२५–१२	७५–२४	२९–२४	–०/४०
रायपुर	२५–२५	७४–२४	३३–२४	–६/४०
लसाड़िया	२५–२२	७४–१२	३२–१२	–५/२८
शंभूगढ़	२५–५०	७४–२०	३२–२०	–५/३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
शाहपुरा	२५–४०	७४–५०	३०–४०	–३/५६
सहाड़ा	२५–१२	७४–१६	३२–५६	–६/१२
हुरड़ा	२५–५५	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजसमन्द				
आमेट	२५–२०	७३–५९	३४–०४	–७/२०
कांकरोली	२५–०४	७३–५४	३४–२४	–७/४०
कुम्भलगढ़	२५–०९	७४–३६	३५–३६	–८/५२
खेतश्वर	२५–५८	७३–५१	३४–३६	–७/५२
देवगढ़	२५–३०	७३–५४	३४–२४	–७/४०
नाथद्वारा	२५–५६	७३–५०	३४–४०	–७/५६
भीम	२५–३९	७४–०९	३३–२४	–६/४०
राजसमन्द	२५–०४	७३–५२	३४–३२	–७/४८
रेलमगरा	२५–०३	७४–१२	३३–१२	–६/२८
राजसमन्द				
खण्डार	२६–०१	७६–३७	२३–३२	+३/१२
गंगापुर	२६–२९	७६–४५	२३–००	+३/४४
बोनली	२६–१९	७६–१४	२५–०४	+१/४०
भगवतगढ़	२६–०९	७७–१५	२१–००	+५/४४
मलारनाडूंगर	२६–१७	७६–२९	२४–०४	+२/४०
रणथम्भौर	२६–०२	७६–२७	२४–१२	+२/३२
वामनवास	२६–३३	७६–३३	२३–४८	+२/५६
सवाईमाधोपुर	२५–५८	७६–२५	२४–२०	+२/२४
सिरोही				
अनादरा	२४–३५	७२–३८	३९–२८	–१२/४४
आबूरोड	२४–२९	७२–४७	३८–५२	–१२/०८
आबू	२४–३७	७२–४५	३९–००	–१२/१६
पिंडवाड़ा	२४–४९	७३–०५	३७–४०	–१०/५६
रेवदर	२४–३७	७२–३१	३९–५६	–१३/१२
शिवगंज	२५–०९	७३–०४	३७–४४	–११/००
स्वरूपगंज	२४–४०	७२–५६	३८–१६	–११/३२
सिरोही	२४–५३	७२–५४	३८–२४	–११/४०

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
सीकर				
अजीतगढ़	२७–२५	७५–४८	२६–४८	–०/०४
कावंट	२७–३६	७५–४२	२७–१२	–०/२८
कोछोर	२७–२६	७५–१६	२८–५६	–२/१२
खण्डेला	२७–३७	७५–३२	२७–५२	–१/०८
खाटूश्यामजी	२७–२२	७५–२५	२८–२०	–१/३६
दातारामगढ़	२७–१५	७५–१२	२९–१२	–२/२८
दातां	२७–१८	७५–१२	२९–१२	–२/२८
धोद	२७–२४	७५–०१	२९–५६	–३/१२
नीम का थाना	२७–४४	७५–४८	२६–४८	–०/०४
पलसाना	२७–२५	७५–२६	२८–१६	–१/३२
पाटन	२७–४८	७५–५९	२६–०४	–०/४०
फतेहपुर	२८–००	७५–००	३०–००	–३/१६
रामगढ़	२८–१०	७४–५९	३०–०४	–३/२०
रींगस	२७–२१	७५–३४	२७–४४	–१/००
लक्ष्मणगढ़	२७–४५	७५–०४	२९–४४	–३/००
लोसल	२७–२६	७४–५४	३०–२४	–३/४०
श्रीमाधोपुर	२७–२५	७५–३६	२७–३६	–०/५२
सीकर	२७–३६	७५–०९	२९–२४	–२/४०
हनुमानगढ़				
कानसर	२८–५८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
टीबी	२९–३३	७४–३१	३१–५६	–५/१२
नोहर	२९–११	७४–४६	३०–५६	–४/१२
पल्लू	२८–५६	७४–१३	३३–०८	–६/२४
पीलबिंगा	२९–३६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
बड़ोपल	२९–२१	७४–०५	३३–४०	–६/५६
भादरा	२९–०५	७५–१५	२९–००	–२/१६
मलसीसर	२८–४५	७५–०५	२९–४०	–२/५६
रावतसर	२९–१६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
संगरिया	२९–४८	७४–२५	३२–२०	–५/३६
सादुलशहर	२९–५४	७४–१२	३३–१२	–६/२८
हनुमानगढ़	२९–३५	७४–२१	३२–३६	–५/५२

❀ भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी ❀

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर **देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)**

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अकोला	२०–४३	७७–०२	–२१/५२	+४/५२	कारगिल	३०–३०	७६–१३	–२५/०८	+१/३६	जलपाईगुड़ी	२६–३२	८८–४४	+२४/५६	+५१/४०	पटियाला	३०–२२	७६–२५	–२४/२०	+२/२४
अल्मोड़ा	२९–३७	७९–४०	–११/२०	+१५/२४	कालका	३०–४७	७६–५७	–२२/१२	+४/३२	जलगांव	२१–०१	७५–३९	–२७/२४	–०/४०	पठानकोट	३२–१८	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
अलीगढ़	२७–५४	७८–०५	–१७/४०	+९/०४	कालीकट	११–१५	७५–४५	–२७/००	–०/१६	जमशेदपुर	२२–५०	८६–१०	+१४/४०	+४१/२४	पणजी	१५–४१	७३–१०	–३७/२०	–१०/३६
अयोध्या	२६–४८	८२–१४	–१/०४	+२५/४०	काशी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४	जामनगर	२२–२७	७०–०५	–४९/४०	–२२/५६	प्रयागराज	२५–२५	८१–५३	–२/२८	+२४/१६
अमेठी	२६–०८	८१–४८	–२/४८	+२३/५६	कुरूक्षेत्र	३०–००	७६–४८	–२२/४८	+३/५६	जालंधर	३१–१९	७५–३५	–२७/४०	–०/५६	पाण्डिचेरी	११–५६	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
अम्बाला	३०–२१	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	कुभकोणम	१०–५८	७९–२३	–१२/२८	+१४/१६	जींद	२९–१९	७६–२३	–२४/२८	+२/१६	पानीपत	२९–२७	७६–५९	–२२/०४	+४/४०
अगरतला	२३–४९	९१–१८	+३५/१२	+६१/५६	कूचबिहार	२६–२०	८९–२५	+२७/४०	+५४/२४	जूनागढ़	२१–३२	७०–२७	–४८/१२	–२१/२८	पालनपुर	२४–११	७२–२७	–४०/१२	–१३/२८
अहमदाबाद	२३–०२	७२–२७	–३९/३२	–१२/४८	कोचीन	१०–००	७६–१५	–२५/००	+१/४४	जोनपुर	२५–४३	८२–४३	+०/५२	+२७/३६	पीलीभीत	२८–४२	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
आइजोल	२३–४५	९२–४५	+४१/००	+६७/४४	कोल्हापुर	१६–४१	७४–१३	–३३/०८	–६/२४	झाँसी	२५–२६	७८–३४	–१५/४४	+११/००	पालमपुर	३२–०७	७६–३२	–२३/५२	+२/५२
अमृतसल	३१–३७	७४–५३	–३०/२८	–३/४४	कोहिमा	२५–४१	९४–००	+४६/००	+७२/४४	टाटानगर	२४–४६	८६–१३	+१४/५२	+४१/३६	पूर्णिया	२५–४९	८७–३१	+२०/०४	+४६/४८
आगरा	२७–११	७८–०२	–१७/५२	+८/५२	कोन्नूर	११–२०	७६–४८	–२२/४८	+३/५६	टूंड़ला जं.	२७–१३	७८–१३	–१७/०८	+९/३६	पुरूलिया	२३–२०	८६–२४	+१५/३६	+४०/२०
आरा (बि.)	२५–३६	८४–४२	+८/४८	+३५/३२	खण्डवा	२१–५०	७६–२०	–२४/४०	+२/०४	टेहरी गढ़वाल	३०–२३	७८–३०	–१६/००	+१०/४४	पूंछ	३३–५१	७४–०८	–३३/२८	–६/४४
आदिलाबाद	१९–४०	७८–३१	–१५/५६	+१०/४८	खण्डाला	१८–४५	७३–२२	–३६/३२	–९/४८	डिबरूगढ़	२७–२९	९४–५६	+४९/४४	+७६/२८	पूना	१८–३१	७३–५२	–३४/३२	–७/४८
आसनसोल–बि.	२४–१४	८७–१५	+१९/००	+४५/४४	खंभांत	२२–१९	७२–३६	–३९/३६	–१२/५२	तिरूपति	१३–४०	७९–२०	–१२/४०	+१४/०४	पोर्टब्लेयर	११–५०	९२–४६	+४१/०४	+६७/४८
इटानगर	२६–५४	९३–३६	–४४/२४	+७१/०८	खडगपुर	२२–२०	८७–१९	+१९/१६	+४६/००	त्रिचनापल्ली	१०–५०	७८–४६	–१४/५६	+११/४८	पोरबन्दर	२१–३८	६९–३६	–५१/३६	–२४/५२
इन्दौर	२२–४३	७५–५३	–२६/२८	+०/१६	खेडब्रह्म	२४–०३	७३–०४	–३७/४४	–११/००	त्रिवेन्द्रम	८–३०	७६–५७	–२२/१२	+४/३२	फतेहपुरसिकरी	२७–०६	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
इम्फाल	२४–५४	९३–५४	+४५/३६	+७२/२०	गुड़गांव	२८–२७	७७–०४	–२१/४४	+५/००	दरभंगा	२६–१०	८५–५५	+१३/४०	+४०/२४	फरीदकोट	३०–४०	७४–४५	–३१/००	–४/१६
इलाहाबाद	२५–२८	८१–५२	–२/३२	+२४/१२	गयाजी	२४–४८	८५–०१	+१०/०४	+३६/४८	दार्जिलिंग	२७–०३	८८–१७	+२३/०८	+४९/५२	फिरोजपुर	३०–५७	७४–३६	–३१/३६	–४/५२
एलोरा	२०–०५	७५–१०	–२९/२०	–२/३६	ग्वालियर	२६–१४	७८–१०	–१७/२०	+९/२४	दिल्ली	२८–३८	७७–१४	–२१/०४	+५/४०	फिरोजाबाद	२७–०९	७८–२४	–१६/२४	+१०/२०
उज्जैन	२३–११	७५–४४	–२७/०४	–०/२०	गंगटोक	२७–२०	८८–२५	+२३/४०	+५०/२४	दिसपुर	२६–२०	९२–१०	+३८/४०	+६५/२४	फैजाबाद	२६–४७	८२–०८	–१/२८	+२५/१६
उधमपुर	३२–५५	७५–०७	–२९/३२	–२/४८	गुना	२४–४०	७७–३०	–२०/००	+६/४४	देवप्रयाग	३०–०९	७८–३७	–१५/३२	+११/१२	बक्सर	२५–३४	८३–५९	+५/५६	+३२/४०
ऊँझा	२३–४७	७२–२४	–४०/२४	–१३/४०	गुरूदासपुर	३२–०३	७५–२७	–२८/१२	–१/२८	देहरादून	३०–१९	७८–०४	–१७/४४	+९/००	बंगलौर	१२–५८	७७–३५	–१९/४०	+७/०४
औरंगाबाद महा.	१९–५२	७५–१९	–२८/४४	–२/००	गौहाटी	२६–११	९१–४५	+३७/००	+६३/४४	दौलताबाद	१९–५७	७५–१२	–२९/१२	–२/२८	बड़ौदा	२२–१८	७३–१२	–३७/१२	–१०/२८
औरंगाबाद बि.	२४–४५	८४–२५	+७/४०	+३४/२४	गौरखपुर	२६–४७	८३–२४	+३/३६	+३०/२०	धनबाद	२३–४७	८६–३०	+१६/००	+४२/४४	बद्रीनाथ कर्ना.	१५–३४	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
कन्नौज	२७–०२	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६	गोवा	१५–२५	७३–४७	–३४/५२	–८/०८	धारवाड़	१५–२८	७५–०२	–२९/५२	–३/०८	बद्रीनाथ उ.प्र.	३०–४४	७९–३२	–११/५२	+१४/५२
कन्याकुमारी	०८–०४	७७–३६	–१९/३६	+७/०८	चण्डीगढ़	३०–४०	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	नडियावाद	२२–४१	७२–५२	–३८/३२	–११/४८	बरेली	२८–२२	७९–२४	–१२/२४	+१४/२०
करनाल	२९–४२	७७–०२	–२१/५२	+४/५२	चिकमंगलूर	१३–१९	७५–४७	–२६/५२	–०/०८	नागपुर	२१–०९	७९–०६	–१३/३६	+१३/०८	बलिया	२४–४४	८४–०९	+६/३६	+३३/२०
कलकत्ता	२२–३५	८८–२४	+२३/३६	+५०/२०	चित्रकूट	२५–१२	८०–५४	–६/२४	+२०/२०	नारनौल	२८–०२	७६–०७	–२५/३२	+१/१२	बहराइच	२७–३४	८१–३७	–३/३२	+२३/१२
कटक	२०–२८	८५–५४	+१३/३६	+४०/२०	चेरापूंजी	२५–१६	९१–४५	+३७/००	+६३/४४	नासिक	२१–००	७३–४७	–३४/५२	–८/०८	बागलकोट	१६–१२	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
कटनी	२३–५०	८०–२३	–८/२८	+१८/१६	छपरा (बी)	२५–४७	८४–४७	+०९/०८	+३५/५२	नीमच	२४–२८	७४–५१	–३०/३६	–३/५२	बाराबंकी	२६–५६	८१–१०	–५/२०	+२१/२४
कोण्णूर	११–५१	७५–२१	–२८/३६	–१/५२	छतपरपुर	२४–५५	७९–३६	–११/३६	+१५/०८	नैनीताल	२९–२५	७९–२७	–१२/१२	–१४/३२	बारामूला	३४–१०	७४–२०	–३२/४०	–५/५६
कांगड़ा	३२–०९	७६–१८	–२४/४८	+१/५६	जगन्नाथपुरी	१९–४६	८५–५०	+१३/२०	+४०/०४	पंचमढ़ी	२२–३०	७८–२२	–१६/३२	–१०/१२	बिलासपुर म.प्र.	२२–०५	८२–१०	–१/२०	+२२/२४
कांचिपुरम्	१२–५१	७९–५३	–१०/२८	+१६/१६	जबलपुर	२३–१८	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६	पंचकूला	३०–४२	७६–५२	–२२/३२	+४/१२	बिलासपुर हि.प्र.	३१–१९	७६–५०	–२२/४०	+४/०४
कानपुर	२६–२७	८०–२१	–८/३६	+१८/०८	जम्मूकश्मीर	३२–४४	७४–५४	–३०/२४	–३/४०	पटना	२५–३७	८५–१३	+१०/५२	+३७/३६	बीजापुर	१६–५०	७५–४२	–२७/१२	–०/२८

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बुलन्दशहर	२८–२४	७७–५२	–१८/३२	+८/१२
बेलगाँव	१५–५५	७४–३१	–३१/५६	–५/१२
बेल्लारी	१५–११	७६–५४	–२२/२४	+४/२०
भटिंडा	३०–११	७४–५७	–३०/१२	–३/२८
भंडारा	२१–१०	७९–४०	–११/२०	+१५/२४
भद्रावती	१३–५२	७५–४०	–२७/२०	–०/३६
भागलपुर	२५–१३	८६–५९	+१७/५६	+४४/४०
भावनगर	२१–४७	७२–१०	+४१/२०	–१४/३६
भिवानी	२८–४८	७६–०८	–२५/२८	+१/१६
भुवनेश्वर	२०–५४	८५–५२	+१३/२८	+४०/१२
भोपाल	२३–१६	७७–२३	–२०/२८	+६/१६
मणिपुर	२४–२०	९३–५८	+४५/५२	+७२/३६
मथुरा	२७–२८	७७–४१	–१९/१६	+७/२८
मद्रास	१३–०५	८०–१७	–८/५२	+१७/५२
मुदरई	९–५५	७८–०७	–१७/३२	+९/१२
महेन्द्रगढ़	२८–१७	७६–०९	–२५/२४	+१/२०
मुम्बई	१८–५५	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
मुगलसराय	२५–१७	८३–११	+२/४४	+२९/२८
मुजफ्फरपुर	२६–०७	८५–२७	+११/४८	+३८/३२
मुजफ्फरनगर	२९–३०	७७–४४	–१९/०४	+७/४०
मुजफ्फरबाद	३४–३३	७३–२७	–३६/१२	–९/२८
मेघालय	२५–५७	९२–००	+३८/००	+६४/४४
मेरठ	२९–०१	७७–४५	–१९/००	+७/४४
मैसूर	१२–२९	७६–४०	–२३/२०	+३/२४
मैनपुरी	२७–१३	७९–०२	–१३/५२	+१२/५२
रत्नागिरी	१६–५९	७३–१९	–३६/४४	–१०/००
रतलाम	२३–१९	७५–०६	–२९/४८	–३/०४
राँची	२३–२०	८५–२०	+११/२०	+३८/०४
राजकोट	२२–१८	७०–५०	–४६/४०	–१९/५६
रामेश्वरम्	९–१७	७९–१८	–१२/४८	+१३/५६
रायगढ़	२१–५८	८३–२६	+३/४४	+३०/२८
रायपुर	२१–१५	८१–३८	–३/२८	+२३/१६
रायबरेली	२६–१४	८१–१३	–५/०८	+२१/३६
रेवाड़ी जं.	२८–१२	७६–४०	–२३/२०	+३/२४

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
रोपड़	३०–५७	७६–३०	–२४/००	+२/४४
रोहतक	२८–५४	७६–३८	–२३/२८	+३/१६
लखनऊ	२६–५१	८०–५९	–६/०४	+२०/४०
लद्दाख	३३–००	७८–४८	–१४/४८	+११/५६
लुधियाना	३०–५५	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
लेह	३४–१०	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
लोहारू	२८–२६	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
वर्धा	२०–४५	७८–३९	–१५/२४	+११/२०
वाराणसी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
विजयवाड़ा	१६–३०	८०–३६	–७/३६	+१९/०८
विशाखपट्टनम्	१७–४२	८३–१८	+३/१२	+२९/५६
शाजापुर	२३–२४	७६–१४	–२५/०४	+१/४०
शाहदरा	२८–४०	७७–२०	–२०/४०	+६/०४
शिमला	३१–०६	७७–१०	–२१/२०	+५/२४
शिलांग	२५–३४	९१–५४	+३७/३६	+६४/२०
श्रीनगर	३४–०६	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
सिरसा	२९–३२	७५–०४	–२९/४४	–३/००
सिंहभूम	२२–२४	८५–३०	+१२/००	+३८/४४
सीतापुर	२७–३६	८०–४०	–७/२०	+१९/२४
सीतामढ़ी	२६–३५	८५–२९	+११/५६	+३८/४०
सूरत	२१–१२	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
सेलम	११–३९	७८–१५	–१७/००	+९/४४
सोनपुर	२०–५१	८३–५५	+५/४०	+३२/२४
सोमनाथ	२१–०१	७०–२६	–४८/१६	–२१/३२
सोनीपत	२८–५९	७७–०१	–२१/५६	+४/४८
सोलन	३०–५५	७७–०९	–२१/२४	+५/२०
सोलापुर	१७–४०	७४–४८	–३०/४८	–४/०४
हजारीबाग	२४–००	८५–२३	+११/३२	+३८/१६
हरिद्वार	२९–५८	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
हापुड़	२८–४३	७७–५०	–१८/४०	+८/०४
हिसार	२९–१४	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
हुबली	१५–२०	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
हैदराबाद	१७–२७	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
होशंगाबाद	२२–४६	७७–४३	–१९/०८	+७/३६
होशियारपुर	३१–३२	७५–५५	–२६/२०	+०/२४

विश्व के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी नगर का नाम कोष्ठक में देश का नाम	अक्षांश उत्तर / दक्षिण	रेखांश पूर्व / पश्चिम	क्षेत्रीय स्टेट से स्थानीय समयान्तर मि. सै.	ग्रीनवीच समय से क्षेत्रीय स्टे अन्तर घ. मि.	भारतीय स्टेट से क्षेत्रीय स्टैट समयान्तर घ. मि.
अंकारा (तुर्किस्तान)	३९–५२ उ.	३२–५९ पू.	+११/५६	+२/००	–३/३०
अर्जेन्टाइना (द.अमेरिका)	२६–१२ द.	६४–४५ प.	+४१/००	–५/००	–१०/३०
कोटावा (कनाडा)	४५–२६ उ.	७५–४१ प.	–२/४४	–५/००	–१०/३०
अदन (एडन)	१३–२५ उ.	४५–०० पू.	+००/००	+३/००	–२/३०
अमन (जोर्डन)	३१–५७ उ.	३५–५७ पू.	+२३/४८	+२/००	–३/३०
एडन (एडन)	१२–५८ उ.	४५–०१ पू.	+०/०४	+३/००	–२/३०
एथेन्स (ग्रीस)	३७–५९ उ.	२३–२० पू.	–२६/४०	+२/००	–३/३०
करांची (पाकिस्तान)	२४–५१ उ.	६७–०० पू.	–३२/००	+५/००	–०/३०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४–३१ उ.	६९–१२ पू.	+६/४८	+४/३०	–१/००
काहिरा (मिश्र)	३०–०१ उ.	३१–१३ पू.	+४/५२	+२/००	–३/३०
ग्रीनविच (इंग्लैण्ड)	५१–२९ उ.	०–०० पू.	+०/००	+०/००	–५/३०
जकार्ता (इण्डोनेशिया)	७–५७ द.	११०–२० पू.	–८/४०	+७/३०	+२/००
जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)	४६–१२ उ.	६–०९ पू.	–३५/२४	+१/००	–४/००
टोकियो (जापान)	३५–३९ उ.	१३९–४५ पू.	+१९/००	+९/००	+३/३०
ढाका (बांग्लादेश)	२३–४३ उ.	९०–२५ पू.	+१/४०	+६/००	+०/३०
तेहरान (इरान)	३५–४४ उ.	५१–२७ पू.	–४/१२	+३/३०	–२/००
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०–४३ उ.	७४–०० पू.	+४/००	–५/००	–१०/३०
पीकिंग (चीन)	३९–५० उ.	११६–२० पू.	–१४/४०	+८/००	+२/३०
पेरिस (फ्रांस)	४८–५० उ.	२–२० पू.	–५०/४०	+१/००	–४/३०
बगदाद (ईराक)	३३–१८ उ.	४४–३० पू.	–२/००	+३/००	–२/३०
बर्लिन (प. जर्मनी)	५२–३२ उ.	१३–२४ पू.	–६/२४	+१/००	–४/३०
बेल्ग्रेड (यूगोस्लाविया)	४४–५० उ.	२०–३७ पू.	+२२/२८	+१/००	–४/३०
बैंकाक (स्याम)	१३–४५ उ.	१००–३० पू.	–१८/००	+७/००	+१/३०
ब्रुसेल्स (बेल्जियम)	५०–५१ उ.	४–२१ प.	–४२/३६	+१/००	–४/३०
मैड्रिड (स्पेन)	४०–२५ उ.	३–४५ प.	–७५/००	+१/००	–४/३०
मास्को (रूस)	५५–४५ उ.	३७–३५ पू.	–२९/४०	+३/००	–२/३०
मांडले (बर्मा)	२२–०० उ.	९६–०५ पू.	–५/४०	+६/३०	+१/००
मैक्सिको (मैक्सिको)	१९–२५ उ.	९९–१७ प.	–३७/०८	–६/३०	–११/३०
रियादं (सऊदी अरब)	२४–५० उ.	४६–१८ पू.	+५/१२	+३/००	–२/३०
रोम (इटली)	४१–४५ उ.	१२–२९ पू.	–१०/०४	+१/००	–४/३०
रंगून (बर्मा)	१६–४८ उ.	९६–०८ पू.	–५/२८	+६/३०	+१/००
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१–३२ उ.	०–०५ प.	–०/२०	–०/००	–५/३०
ल्हासा (तिब्बत)	२९–४० उ.	९१–०८ पू.	+३४/३२	+५/३०	+०/००
वाशिंगटन (अमेरिका)	३८–५३ उ.	७७–०४ प.	–८/१६	–५/००	–१०/३०
वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड)	४१–१९ द.	१७४–४६ पू.	–२०/५६	+१२/००	+६/३०
सिंगापुर (मलाया)	१–१६ उ.	१०३–४७ पू.	–३४/५२	+७/३०	+२/००
सियोल (द. कोरिया)	३७–४० उ.	१२७–०० पू.	–३२/००	+९/००	+३/३०
हांगकांग (हांगकांग)	२२–१८ उ.	११४–१० पू.	–२३/२०	+८/००	+२/३०

✲ मासफल २०७९ ✲

- डॉ. पारसनाथ ओझा

(२ अप्रैल २०२२ से २१ मार्च २०२३ तक)

✲ चैत्रशुक्ल - वैशाखकृष्ण २ अप्रैल-३० अप्रैल

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त, ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार देश के उच्च स्तरीय राजनेताओं में परस्पर आन्तरिक विरोध, निम्नस्तरीय तथा नीच प्रवृत्ति के लोगों द्वारा चोरी, डकैती, अपहरण, छिनैती जैसी अशोभनीय घटनाएँ होंगी। अनेक रोगों से जनता में भय तथा मानसिक तनाव बना रहेगा। जंगली जानवरों के लिए क्षतिकारक रहेगा। जौ, गेहूँ, दूध, ईख आदि में औसतन मन्दी रहेगी। झंझावात के साथ यत्र-तत्र खण्डवृष्टि होगी। जिससे चैती फसल के लिए क्षतिकारक रहेगा। *बुधेऽश्विन्यां तु पीडयन्ते गोधूमश्च यवादयः। इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घ च घृतादिषु।।*

✲ वैशाखशुक्ल - ज्येष्ठकृष्ण १ मई-३० मई

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में चोरी, डकैती, अपहरण, छिनैती आदि की घटनाएँ होंगी। राजनेताओं के आपसी विवाद से देश की मान सम्मान पर ठेस पहुँचेगा। जौ, गेहूँ, और तरलीय पदार्थो मन्दी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी मे तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। तिल, वस्त्र, कपास, सुपाड़ी, नारियल आदि में तेजी रहेगी।

'पूभामहीजे तिलवस्त्र सूत्र कर्पास पूगादि महर्घता वा''

✲ ज्येष्ठशुक्ल - आषाढकृष्ण ३१ मई-२९ जून

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र सचार के अनुसार इस मास के प्रारम्भ में झंझावात के साथ अल्पवृष्टि होगी। मास के उत्तरार्ध में कृषियोग्य वृष्टि होगी। तुष्य, धान्य, कपास, सूत, तिल, तिलहन, दलहन, डीजल, पेट्रोल, गैस आदि के दामों में तेजी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा तथा गृह निर्माण की वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुभिक्ष रहेगी। अन्न, धन, लक्ष्मी से प्रजा प्रसन्न रहेगी। रोग की अधिकता देखी जायेगी।

सौख्यं सुभिक्षं क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगाः बहुधान्यलक्ष्मी।

✲ आषाढशुक्ल - श्रावणकृष्ण ३० जून-२८ जुलाई

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार मास के पूर्वार्ध में झंझावात के साथ कृषि योग्य वर्षा होगी। गेहूँ, यव, तिल, मसूर, मटर, चना, तेलहन, दलहन आदि में तेजी रहेगी। मास के उत्तरार्ध में उपर्युक्त वस्तुओं में औसतन न्यूनता आयेगी। यत्र-तत्र ग्रहपात्, आकाशीय विद्युत पात, जलपात, जलप्रवाह आदि से धन की क्षति होगी। शिशुओं के लिए कष्टप्रद रहेगा। विप्रगण अपने-अपने कर्मों से च्युत होते दिखाई देंगे, जिससे सत्कर्मों में न्यूनता देखी जायेगी। *गोधूमतिलमाषादि समर्घ सुखिनो जनाः। आर्द्रायां वृष्टिरतुला ग्रहपाता प्रवाहतः ।।*

✲ श्रावणशुक्ल - भाद्रकृष्ण २९ जुलाई-२७ अगस्त

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में यत्र-तत्र वर्षाधिक्य के चलते धान्य की फसल की क्षति, जनधन की क्षति, प्रजा में भय की स्थिति, राजनेताओं में परस्पर तनाव की स्थिति, सीमा विवाद की स्थिति पूर्ववत् रहेगी। मास के उत्तरार्ध में धान्य तुष धान्य, गेहूँ, चावल, दलहन, तेलहन, चाँदी, सोना, दूधाऊ पशुओं में तेजी रहेगी। आश्रमवासियों के लिए उत्तम नहीं रहेगा।

सर्वदिशग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता।
कृत्तिकायां देशभंगो पीडा तापस आश्रमे ।।
पूफायां नृप संग्रामः क्षेत्रबाधान मन्दता ।

✲ भाद्रशुक्ल - आश्विनकृष्ण २८ अगस्त-२५ सितम्बर

चन्द्रदर्शन मुहूते ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार पूर्वार्ध में कृषि योग्य वर्षा होगी। मास को - उत्तरार्ध में खण्डवृष्टि होगी। धान में रोग की सम्भावना अधिक रहेगी। जनता में अनेक प्रकार के रोग, कष्ट रहेंगे। प्रजा भययुक्त रहेगी। वृक्षों मे रोग व्याप्त रहेगा। पालतु जानवरों के लिए कष्टप्रद रहेगा। कपास, सूत में तेजी रहेगी।

वृक्षपीडाश्चापदानां रोगः स्याद्रोहिणी कुजे ।
महर्घतापि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः ।।

✲ आश्विनशुक्ल - कार्तिककृष्ण २६ सित.- २५ अक्टू.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार को अनुसार इस मास के पूर्वार्ध में कृषियोग्य वर्षा होगी। मास के उत्तरार्ध में खण्डवृष्टि होगी। कन्याबुधः बहुधान्यसौख्यम्' अर्थात् कार्तिकी धान की उपज अच्छी होगी। गुड़, खण्ड, लवण, घी, धान्य, कपास, तेलहन, दलहन आदि में तेजी-रहेगी। विक्री करने वाले को चतुर्गुणित लाभ होगा। *लवणं घृत तैलादि सर्वधान्यमहर्घता। कार्पासस्यार्थ सम्प्रासिः लाभः तेषां चतुर्गुणः।।*

✲ कार्तिक शुक्ल - मार्गशीर्षकृष्ण २६ अक्टू.-२३ नव.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में यत्र-तत्र खण्डवृष्टि होगी। प्रजा में सुखशान्ति तथा सुभिक्ष की स्थिति रहेगी। पालतु जानवरों में रोगादि की बाहुल्यता देखी जायेगी। तरलीय पदार्थों में डीजल, पेट्रोल, शाली गुड़, शुगर, घी, तेल आदि में तेजी रहेगी। साथ ही साथ कपास, सूत, सूती वस्त्र, सुवर्ण तथा सुवर्ण से निर्मित वस्तुओं में औसतन तेजी रहेगी। *सुभिक्षमनुराधायां पक्षिपीडा प्रजासुखम्। ज्येष्ठायामिक्षु शाल्याज्यमहर्घताश्च रोगिता।।*

✲ मार्गशीर्षशुक्ल - पौषकृष्ण २४ नव.-२३ दिस.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में शीताधिक रहेगी। धान की ऊपज अच्छी होगी। धान के भाव में औसतन तेजी रहेगी। गेहूं, चावल, दलहन, तेलहन, पन्सारी की वस्तुओं में तेजी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा, लोह में आदि में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रजा में प्रसन्नता रहेगी। पशु, पक्षी, बालक, फल, पुष्प, वृक्षादि के लिए पीड़ाप्रद रहेगा। कुरू देश के राजा के लिए उत्तम नहीं रहेगा। *मूले पक्षि पशूनां च बाल पीडा विजायते। धान्यं मन्दं च पूषायां व्याधिग्रीष्मेपि वर्षणम्।।*

✲ पौषशुक्लपक्ष - माघकृष्ण २४ दिस. २०२२-२१ जन २०२३

इस मास में कड़ाके की ठंढ़ी रहेगी। पशु, पक्षी, शिशु, फल, पुष्प, वृक्षादि में रोगाधिक्य होगी। विशेषकर ब्राह्मण क्षत्रियों में लिए कष्टदायक रहेगा। धान्य, गेहूँ, चावल, बाजरा, दलहन, तेलहन, मूँग, मक्का तथा पन्सारी की वस्तुओं में तेजी का रूख रहेगा। पीली धातु, चाँदी, ताँबा, अष्टधातुओं में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। शुक्र के सुवर्ण द्वार में होने से प्रजा में सुख शान्ति तथा सुभिक्ष की स्थिति बनी रहेगी। *श्रुत्यादिससके शुक्रोदये सुखं बहु। कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ।*

✲ माघशुक्ल - फाल्गुनकृष्ण २२ जन. से २० फर.

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में शीताधिक्य रहेगी। धान, शाली, तुष्य, घी, तेल, दूध, दही, फल-फूल, खाद्यान्न तथा पन्सारी वस्तुओं के कीमतों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में औसतन तेजी का रूख बना रहेगा। अन्न की ऊपज अच्छी होगी। विशेषकर आठ वर्षों तक के बालकों के लिए कष्टकारी रहेगा। *उषायां सस्यनिष्पतिः अष्टवर्ष शिशूक्षयः ।*

✲ फाल्गुनशुक्ल - चैत्रकृष्ण २१ फर. से २१ मार्च

चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त एवं ग्रहों के राशि नक्षत्र संचार के अनुसार इस मास में गर्मी का प्रारम्भ हो जायेगा, विदेशी मुद्राओं में स्थिरता बनी रहेगी। देश के उच्चस्तरीय राजनेताओं में परस्पर विरोध की स्थिति बनी रहेगी। जिससे देश की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ेगा। सुवर्ण, चाँदी, ताँबा में तथा इनसे निर्मित वस्तुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। धान, चना, मंसूर, मटर, अरहर, मूँग-आदि के भाव में स्थिरता बनी रहेगी। कपास कृषि क्षतिकारक तथा खण्डवृष्टि होगी। *कापस नाशः प्रबलं सुभिक्षं। मृगे कुजे भूः जलपूरितेव।।*

पुरुष की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दुःखी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्ट स्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीर पीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी, गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दुःखी	धनहानि	पराक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दुःखी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्री रोगी	रोगी	देन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दुःखी	मूर्ख	सबल	स्त्री हानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

स्त्री की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दुःखार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सुःखार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्य	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्य	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्य	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दुःखिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दुःखनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दुःखिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दुःखिनी	दुःखार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दुःखिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

गोचर कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठम्	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

※ पर्व-त्यौहारों की प्रामाणिकता व एकरूपता के लिए सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता ※

गत २ दशकों से पर्वों की एकरूपता में भयावह संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। एकादशी आदि अनेक पर्व दो या तीन दिन हो जा रहे हैं। यदि पर्वों की तिथि में यह वैषम्य सिद्धान्तगत हो तो यह माननीय है परन्तु गणितागत दोष से पर्वों में विखण्डन की स्थिति धर्मशास्त्रीय फल की नाशक है। ध्यातव्य है कि एकादशी को लेकर विभिन्न सिद्धान्त सम्प्रदाय परम्परा के भेद से शास्त्रों द्वारा कथित हैं। स्मार्त्त परम्परा में एकादशी तिथि होने पर दशमी विद्धा एकादशी में भी व्रत होता है। परन्तु वैष्णव परम्परा में एकादशी यदि दशमी विद्धा हो तो वह त्यागकर द्वादशी में व्रत होता है। रामानन्द, गौड़ीय, वल्लभ एवं अन्य वैष्णव सम्प्रदायों में ५५ घटी से अधिक की दशमी का वेध माना जाता है, अर्थात् दशमी मान यदि ५५ घटी से अधिक हो, सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व एकादशी प्रारम्भ न हो तो ऐसी एकादशी विद्धा होकर व्रत के लिए त्याज्य होती है। निम्बार्क सम्प्रदाय में मध्यरात्रि का वेध माना जाता है, अर्थात् मध्यरात्रि में एकादशी उपस्थित हो तभी अगले दिन व्रत होता है। यह शास्त्र आधारित भेद परम्परा से पालनीय होता है।

आज से २ दशक पूर्व जब अधिकांश पञ्चाङ्ग सूर्यसिद्धान्तीय रीति से प्रकाशित होते थे तब पर्वों में ऐसा सिद्धान्तगत भेद बहुत कम हुआ करता था व समाज में पर्व की दिनांक को लेकर भ्रम नहीं रहता था। परन्तु जब से '**बाणवृद्धिरसक्षयः**' सिद्धान्त का अपलाप करने वाले दृश्य गणित आधारित पञ्चाङ्ग बढ़े तब से पर्वों का यह सरस संयोग भी टूट गया व एक ही पर्व दो दो दिन होने लग गया।

व्रतपर्वों के काल निर्धारण का सर्वमान्य ग्रन्थ निर्णयसिंधु है, जिसे सभी पञ्चाङ्ग मानते हैं। निर्णयसिन्धुकार आचार्य कमलाकर भट्ट ने पर्व निर्णय हेतु अदृष्ट सूर्यसिद्धान्तीय गणित को वेद के समान कहकर स्वीकार किया है। स्पष्ट है कि व्रत पर्व का सटीक निर्धारण इसी गणित से हो सकता है। पर जब आचार्य कमलाकर के इस निर्णय को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को छोड़ दिया जाएगा व भौतिक स्थूल दृश्य गणित अपनाकर उन्हीं के ग्रन्थ से व्रत पर्वों का निर्णय किया जाएगा तो वह निर्णय शास्त्रसम्मत कैसे हो सकेगा?

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद् युक्तितः कुरु।
गणितं यद्धि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा।

– आचार्य कमलाकर भट्ट, सिद्धान्ततत्त्वविवेक, मध्य० ३२६

अर्थात् एकादशी आदि व्रत अदृष्टफल के जनक हैं, इनका निर्णय सूर्यसिद्धान्त-साधित ग्रहों द्वारा करे और जो सूर्यग्रहण आदि प्रत्यक्ष आकाश में दर्शनीय हैं, उनका दृश्यगणित से करे।

आचार्य आनन्दगिरि ने स्मृतिसमुच्चय में कहा है,

सूर्यसिद्धान्तशास्त्रेण सम्मानीता ग्रहाः सदा।
नित्ये कर्मण्युपादेया न तु दृग्गणितागताः।।
सूर्यसिद्धान्तपंचांगं विलोक्यैव प्रवर्तयेत्।
प्रमाणं तदिति ज्ञेयमन्यथा व्याकुलं भवेत्।।

अर्थात् सूर्यसिद्धान्तीय रीत्या प्राप्त ग्रह ही सदा सम्माननीय व नित्यकर्म में उपादेय हैं, दृग्गणित के ग्रह नहीं। सूर्यसिद्धान्त पञ्चाङ्ग का अवलोकन करके ही व्रत उपवसादि शास्त्रीय कर्मों को करना चाहिए। यह पञ्चाङ्ग ही (कालनिर्णय के लिए) प्रमाण है, ऐसा जानना चाहिए अन्यथा किया गया कर्मानुष्ठान व्याकुल (निष्फल या अल्पफल वाला) ही होता है।

सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग में व्रत पर्वों का भेद केवल साम्प्रदायिक सिद्धान्त के भेद के कारण आता है अतः बहुत ही कम दृष्टिगोचर होता है, व पर्वों में एकरूपता रहती है। सूर्यसिद्धान्तीय गणित के पञ्चाङ्ग में कभी गणित के दोष से व्रत त्यौहार का विखण्डन नहीं होता। उदाहरणतया वर्तमान संवत् २०७९ में सूर्यसिद्धान्तीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग में केवल एक एकादशी- मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी, वैष्णव(२०नवम्बर) स्मार्त्त(१९ नवम्बर) में विभक्त हुई है। जबकि जयपुरस्थ दृक् पंचांगों में २४ में से ६ एकादशियाँ वैष्णव स्मार्त्त भेद के कारण विखण्डित हुई हैं। यह हैं ज्येष्ठ शुक्ल, भाद्रपद कृष्ण, भाद्रपद शुक्ल, मार्गशीर्ष शुक्ल, फाल्गुन कृष्ण, फाल्गुन शुक्ल। ऐसे ही यदि पिछले संवत् २०७८ पर दृष्टि डालें तो वहाँ सूर्यसिद्धान्तीय **श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग** में २ एकादशियाँ वैष्णव-स्मार्त्त भेद में विभक्त हुई हैं, व दृश्य पंचांगों में ६ एकादशियाँ विभक्त हुई हैं। जितनी भी अतिरिक्त एकादशियाँ गणितभेद से विखण्डित हुई हैं, उसमें त्रुटिपूर्ण तिथि पर बिना पर्व के व्रत करने पर व्रती को कैसे पुण्यफल प्राप्त होगा? अन्य व्रत पर्वों की भी ऐसी ही स्थिति है। स्वयं विचार कीजिए, क्या ऐसा पर्व विखण्डन का कुचक्र शास्त्रसम्मत है?? शास्त्रों के स्वानुकूल अंशों को ले लेना, मोहवश अन्यांशों का प्रतिकूलता के कारण छोड़ देना और अनपेक्षित अंशों का अनुष्ठान करना पतन का निदान है।

– मुदित मित्तल

※ अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के प्रकाशन ※

आचार्य कामेश्वर उपाध्याय
(राष्ट्रीय महासचिव, अ.भा.विद्वत् परिषद्)
द्वारा विरचित एवं संपादित सद्ग्रन्थ

श्रीसप्तशती	१००/-
ज्योतिषशास्त्र	५००/-
स्वप्नविद्या	२५०/-
हिन्दू जीवन पद्धति	२००/-
नवग्रह-विज्ञान	२००/-
वास्तु विद्या	१००/-
राजनीतिक मार्गदर्शिका श्रीमद्भागवद्गीता	१००/-
देवीकवचार्गलाकीलकस्तोत्राणि	१००/-
प्रपा (निबन्धसंग्रह)	१००/-
हिन्दू अंक प्रतीक	५०/-
सूर्य आराधना	५०/-
श्रीमहामृत्युञ्जय-मंत्रसाधना	२५/-
प्राग्जन्मसंस्कार	२५/-
कालसर्प/नागशापशांति	२५/-
नारायणकवच	१०/-
बजरंगबाण	१०/-
मंगलागौरीस्तोत्र	१०/-
वंशवृद्धिकरवंशकवच	१०/-
अभिलाषाष्टकस्तोत्र	१०/-
भारतवर्ष	२५/-
ध्वज का इतिहास	२५/-
शतपथ जीवन	२५/-
उपनिषत् त्रयी	२५/-
कुम्भ-विवाह	५०/-
तत्त्वसमासः	५०/-
दाल्भ्यस्मृतिः	५०/-
इतिहास का उपहास (आचार्य विनय झा)	२५/-

देवतायन, ९६, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी, उत्तरप्रदेश-२२१००६, मोबाइल नं.- ९४५१३८३०५१

धर्मनगरी जयपुर के आराध्य देव

श्रीमोतीडूंगरी गणेशजी

श्रीसूर्यनारायण जी, गलताजी

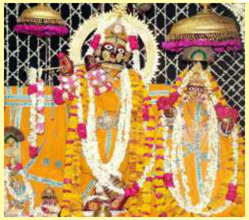

श्रीराधागोविन्ददेवजी

श्रीताड़केश्वर महादेवजी

श्रीशिला माता, आमेर

श्री खोले के हनुमानजी

गत कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर श्रीअलबेलीमाधुरीशरणजी महाराज सरस निकुंज जयपुर, महन्त श्रीबनवारीशरण जी जूसरी नागौर, महन्त श्रीवृन्दावनदास जी वृन्दावन, श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी जयपुर, महन्त श्रीसर्वेश्वरदास जी नायला, प्रो. बनवारीलाल जी गौड़, प्रो. सतीशचन्द्र जी शास्त्री, प्रो. मोहनलाल जी शर्मा, प्रो. भास्कर जी श्रोत्रिय, पं. अमित शर्मा, पं. रमाकान्त जी शर्मा, मुदित मित्तल, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद जी शर्मा, प्रो. नरेन्द्र जी अवस्थी, प्रो. अशोक जी तिवाड़ी, प्रो. राजधर जी मिश्र, प्रो. रामकुमार जी शर्मा, प्रो. उमेश जी नेहपाल, प्रो. लक्ष्मीनारायण जी शर्मा, प्रो. कमलचन्द जी योगी, प्रो. कौशलेन्द्र जी शास्त्री, प्रो. सत्यम कुमारी जी बसन्त जी जैन द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर प्रभु और श्रीनिम्बार्क भगवान को समर्पित किया।

संरक्षक–मार्गदर्शक

श्रीमहन्त
श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी
महाराज 'काठिया बाबा'
सुखचर

महन्त
श्रीबनवारीशरण
जी महाराज, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी
महाराज, महामंत्री अ.भा.
श्रीनिम्बार्क महासभा, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

श्रीमहन्त श्रीपद्मनाभशरण
देवाचार्य जी महाराज,
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम
प्रन्यासी श्रीनिम्बार्क परिषद्

आचार्य श्री विनय झा
गणितज्ञ
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग

पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक
जयविनोदी जयपुर पंचांग

आ. श्री कामेश्वर उपाध्याय
राष्ट्रीय महासचिव
अ.भा. विद्वत्परिषद्

पं. श्री गंगाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि
शिलापूजन, आयोध्या

श्री सुराचार्यः

श्री भूमिपुत्रः

श्री जयादित्यः

श्री भार्गवः

श्री सौम्यः

श्री सूर्यनन्दनः

श्री सोमः

यह सूक्ष्म गणित श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग, श्रीनिम्बार्क परिषद, जयपुर ने
सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज से छपवाकर प्रकाशित किया।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

-:: पञ्चाङ्ग प्राप्ति स्थल ::-

श्रीसर्वेश्वर निम्बार्क सेवाधाम
36 ई (डी), बालाजी ब्लैसिंग 20, श्रीमंगलम गार्डन
से पहले, गणतपुरा रोड, भांकरोटा, जयपुर-26
मो.: 9571108902

मन्दिर श्रीसरसबिहार जी
मुख्य बाजार, कलवाड़ा
जयपुर-302037
मो.: 7425824413

पंडित मोहित शर्मा
शिवशक्ति ज्योतिष केन्द्र, 22, कैलाशपुरी
न्यू सांगानेर रोड, सोडाला, जयपुर-302019
मो.: 9829486839

मन्दिर श्रीवैकुण्ठनाथ जी
हरि मार्ग, शिव कॉलोनी
टोंक फाटक, जयपुर-302015

श्री सिंहिकायुतः

श्री ध्वजाकारः

Email : ssjayadityapanchang@gmail.com
Website : www.nimbarkparishad.com

मुद्रक : बसन्त जैन मित्तल, सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज
चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

₹ 85/-